नया उपन्यास

अनिल मोहन

खलबली

विजय बेदी, जो कि आदतन डरपोक था। उसके सिर में गोली आ फंसी थी और उस गोली को निकलवाने के लिए उसे बारह लाख रुपये की जरूरत थी। सिर में फंसी गोली कभी भी उसकी मौत की वजह बन सकती थी और उसे अपनी जान बहुत प्यारी थी।

comicsmylife.blogspot.in
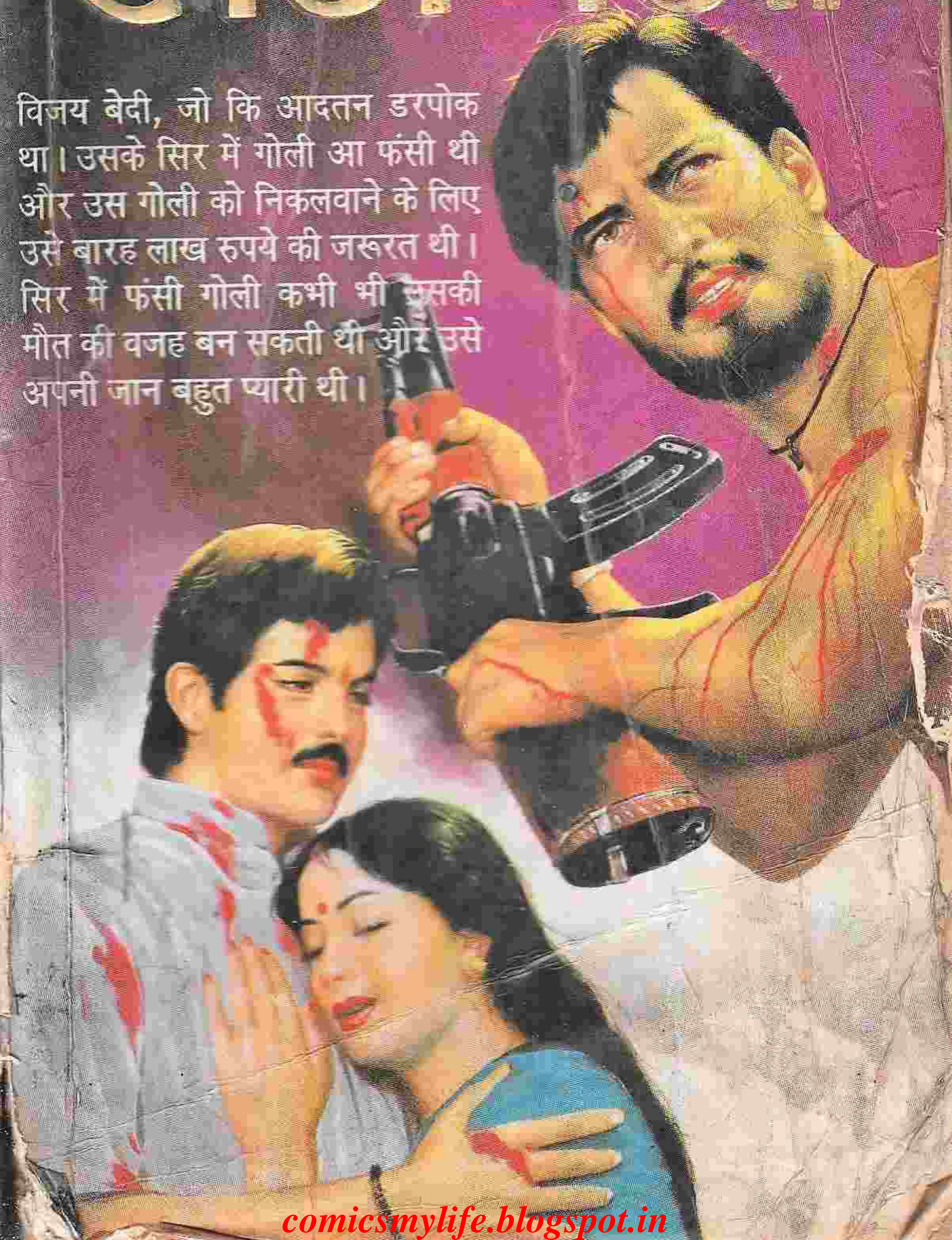
अपने प्यारे-प्यारे पाठकों को
अनिल मोहन का नमस्कार,

पूर्ण आशा है कि हमेशा की तरह आप स्वस्थ होंगे।

हाल ही में आपने मोना चौधरी सीरीज का नया उपन्यास "कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना" पढ़ा। मुझे बेहद खुशी हुई आपके मिलने वाले पत्रों से यह जानकर कि उपन्यास आपको बेहद पसंद आया। कई पाठकों ने स्पष्ट लिखा कि लाहौर से दिल्ली आने वाली बस को बम से उड़ाने की योजना को जिस तरह मैंने पन्ने पर उतारा, वो बहुत पसंद आया। ताजे और नए मुद्दे पर पढ़े जाने वाले उपन्यास का मजा ही कुछ और होता है। सच जानिए, लिखते समय मेरी भी यही कोशिश थी कि इस नए मुद्दे को बेहतरीन ढंग से पाठकों के सामने पेश कर सकूं। जिसमें कि पाठकों के मुताबिक मैं कामयाब भी रहा।

और अब आपके सामने पेश है नया सितारा—विजय बेदी।

दोस्तों आज से ग्यारह साल पहले मैंने अपने उपन्यासों का पात्र आपके सामने पेश किया था—देवराज चौहान। जो आज कामयाबी के साथ, आपका हीरो बनकर आपके दिलों पर 'राज' कर रहा है। आपका हमसफर बन चुका है। इसी तरह छः साल पहले मैंने अपने उपन्यासों की नायिका मोना चौधरी को बनाया। मोना चौधरी भी देवराज चौहान की तरह, आपकी करीबी, चहेती पात्र बन गई। छः साल पहले ही जुगल-किशोर सीरीज भी आपके सामने पेश की, पैंतीस हजारी वाली, हालांकि जुगल किशोर के उपन्यास कम ही लिखे हैं, परन्तु उपन्यासों को आपने [illegible] ज्यादा किया और पाठक अक्सर जुगल किशोर के [illegible] बात शीघ्र ही पूरी लिखने को कहते हैं, और पाठकों [illegible] की जा रही है।

आपके इन तीन प्रिय पात्रों के अलावा आज एक नया पात्र 'विजय बेदी' आपके सामने पेश कर रहा हूं। विजय बेदी जो अब उपन्यास जगत का थम्ब बनने जा रहा है। जो आपके दिलों पर 'राज' करने आ रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि 'विजय बेदी' के इस उपन्यास के बाद आपको हमेशा 'विजय बेदी' के उपन्यासों का ही इन्तजार रहेगा। क्या करें, अपने बेदी साहब हैं ही ऐसे।

विजय बेदी ऐसी ''खलबली'' के साथ आपके हाथों में है कि उपन्यास समाप्त होने पर भी आपको चैन नहीं लेने देगा। आपके दिलो-दिमाग में ''ख़लबली'' ही मची रहेगी।

मेरा आगामी उपन्यास भी 'विजय बेदी' को लेकर ही लिखा जा रहा है। जिसका नाम है ''चाबुक'' जो कि मनोज पब्लिकेशन्स के आगामी सैट में होगा।

तो अब ''खलबली'' शुरू करते हैं। फिर मुलाकात होगी, 'विजय बेदी' के साथ ही ''चाबुक'' में।

मैं जानता हूं पाठकों को बेसब्री से इन्तजार है 'जीत का ताज' का जिसमें ''देवराज चौहान और मोना चौधरी'' एक साथ हैं। ''जीत का ताज'' भी बहुत जल्द आपके हाथों में पहुंचने वाला है।

शेष फिर

आपका अपना
अनिल मोहन
930, एल.आई.जी. फ्लैट्स
हस्तसाल
नई दिल्ली-110059

खलबली

स्टॉप पर बस रुकते ही विजय बेदी नीचे उतरा तो बस आगे बढ़ गई। उस सड़ती दोपहरी में, स्टॉप पर कोई भी नहीं खड़ा था। बेदी ने दाएं-बाएं निगाह मारी और हाथ में थाम रखा ब्रीफकेस नीचे रखकर सांस को रोक रही टाई की गांठ ढीली की फिर ब्रीफकेस उठाकर आगे बढ़ गया। इतनी गर्मी में भी टाई लगानी पड़ती थी, क्योंकि यह टाई, नौकरी की घंटी थी। काम पर रहना है तो पतलून से ज्यादा टाई जरूरी थी।

सड़ती गर्मी में सड़ता-सड़ता बेदी एक बंगले के गेट पर जाकर ठिठका। गेट के भीतरी तरफ झोंपड़ी टाइप, लकड़ी का केबिन बना हुआ था। जिसमें उस वक्त एक दरबान मौजूद था और गर्मी से परेशान उकताए अंदाज में गेट की तरफ ही देख रहा था, कुर्सी पर बैठा। बेदी को गेट पर आया देखकर, बड़बड़ाते हुए एहसान भरे ढंग से उठा।

''इतनी गर्मी में भी लोगों को चैन नहीं। हर वक्त भागते रहते हैं।'' इसके साथ ही वह केबिन के दरवाजे पर आया और ऊंचे स्वर में बोला, ''क्या है साहबजी, किससे मिलना है?''

''सेठ जी से। सेठ पिशोरीलाल से।'' बेदी ने गले पर आए पसीने को साफ किया।

''क्या नाम है आपका?''

''विजय बेदी। रायल सेफ कम्पनी से आया हूं।''

दरबान पलट कर भीतर चला गया। आधे मिनट बाद ही वह नजर आया और केबिन से निकल कर गेट की तरफ बढ़ता हुआ बोला।

''आज के आने वालों में आपका नाम भी है।'' इसके साथ ही उसने विशाल गेट के भीतर लगा छोटा-सा दरवाजा खोला—''जाइए। सेठ जी भीतर ही हैं।''

बेदी ने भीतर प्रवेश किया और दरबान पर निगाह मार कर, रास्ता तय करता हुआ कुछ दूर नजर आ रहे बंगले के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा।

दरवाजे के पास पहुंच कर, वहां लगी कालबेल बजाई।

कुछ ही पलों बाद दरवाजा खुला। बाईस वर्षीया नौकरानी नजर आई, जो कि खूबसूरत थी और कपड़े भी कीमती पहन रखे थे।

छब्बीस वर्षीय बेदी फौरन सड़ती गर्मी से बाहर आ गया। चेहरे पर मीठी मुस्कान नाच उठी। एक हाथ टाई पर पहुंचा और नॉट हिलाकर बोला।

"अगर मुझे मालूम होता कि दरवाजा खोलने वाली इतनी खूबसूरत होगी तो, आपको पेश करने के लिए गुलाब का फूल अवश्य लाता।"

उस युवती ने बेदी को घूरकर देखा।

"मैं हर किसी से फूल नहीं लेती।" युवती ने मुंह बनाकर कहा।

"ऐसा मत कहो। मैंने पहली बार किसी को फूल देने की बात कही है।" बेदी जल्दी से कह उठा।

"पहली बार?"

"हां। कसम से।"

"लगता तो नहीं है तुम्हारा चेहरा देखकर।" युवती ने तबीयत से बेदी के खूबसूरत चेहरे को देखा।

"मैं सच कह रहा हूं। मैंने आज तक किसी को फूल नहीं दिया। मुझे बहुतों ने दिए। लेकिन मैंने नहीं लिए।" विजय बेदी अपने अच्छेपन पर मोहर लगाते हुए बोला।

"क्यों?"

"वह मुझे अच्छी नहीं लगीं। ऐसी कोई मिली नहीं कि आपकी तरह एक ही बार में।"

"क्या, एक ही बार में...?"

"आपने अपना नाम नहीं बताया।" बेदी जल्दी से कह उठा।

"राधा।"

"सच। बहुत खूबसूरत हो तुम। मैं...।"

तभी पीछे से नौकर को आते देखकर बेदी चुप हो गया। राधा को भी पीछे किसी के आने का अहसास हुआ तो वह बोली।

"किससे मिलना है आपको?"

"मैं विजय बेदी हूं। रायल सेफ कम्पनी से आया हूं। सेठजी से अप्वाइंटमेंट है।"

"भीतर आइए।" फिर पास आ चुके नौकर से बोली—"सेठ जी से कहो, सेफ कम्पनी से साहब आए हैं।"

नौकर तुरन्त सिर हिलाकर चला गया।

राधा पलटी और फर्श हिलाने वाली चाल चलती, बेदी को शानदार हॉल ड्राइंगरूम में ले गई। गहरी-गहरी सांसें लेता बेदी, उसकी चाल पर मरा जा रहा था।

राधा ने सोफे की तरफ इशारा करते हुए मुस्करा कर कहा।

"बैठिए। सेठ जी आ रहे हैं।"

बेदी सिर हिलाकर आगे बढ़ा और सोफे पर बैठता हुआ बोला।

"आप नहीं बैठेंगी राधा जी।"

राधा ने होंठ सिकोड़ कर, बेदी की तरफ देखा, फिर कह उठी।

"मालूम नहीं आदमी कैसे हो। लेकिन जैसे भी हो, दिलचस्प हो।"

"वो तो मैं नहीं जानता। लेकिन आज मैं बहुत खुश हूं।" बेदी मीठे स्वर में बोला।

"क्यों?"

"इसलिए कि आज कोई तो ऐसा मिला, जो अच्छा लगा। दिल को।"

"आपको ठण्डे पानी की जरूरत है।" राधा ने बेदी को घूरते हुए कहा और पलट कर चली गई।

बेदी ने गहरी सांस लेकर हाथ से टाई की नॉट को हिलाया।

"विजय।" वह बड़बड़ा उठा—"तेरी सेल्समैनी, इसके आगे फेल हो गई लगती है। कोई बात नहीं। आज नहीं तो फिर कभी सही। सेल्समैनी का दूसरा गुर इस पर टिकाऊंगा।"

❑❑

अड़तालीस वर्षीय मटके के आकार का पेट वाला सेठ पिशोरीलाल शहर का माना हुआ ज्वैलर्स था। जिस्म पर सिल्क का धोती-कुर्ता। सिर पर सुनारों वाली टोपी। गले में सोने की मोटी चेन नजर आ रही थी। उंगलियों में हीरों की बेशकीमती अंगूठियां थीं।

"आयो है भायो।" पिशोरीलाल अपने मटके जैसे पेट पर हाथ फेरता वहां पहुंचा।

"नमस्ते सेठ जी।" उसे आया पाकर बेदी तुरन्त उठता हुआ बोला।

"भायो। नमस्ते-वमस्ते बाद में करयो। पैले तू म्हांका बता, आने में देर क्यों करे। थारे इन्तजार में राह तकते-तकते म्हांका तो बैंड बजने जा रयो था।"

"वो सेठ जी...।" बेदी का हाथ टाई की नॉट पर पहुंचा—"मैं तो बहुत पहले आ गया होता। रास्ते में जरा सा काम था। वहां ऐसा अटका कि होते-होते देर हो गई। नौकरी में तो सब काम पूरे करने पड़ते हैं।"

"मतबल भायो तू घणां काम करणे वाले छोरों में से एक सै।"

बेदी हौले से सिर हिलाकर मीठे अंदाज में मुस्कराया।

पिशोरीलाल धोती संभालकर, आलथी-पालथी मार कर सोफे पर बैठा।

"तू ता खड़ा हो। बैठ जा।"

बेदी वापस सोफे पर जा बैठा।

"बोल भायो। क्यों आयो?"

"सेठ जी आपने कम्पनी को फोन...।"

"हां, आ गये यादो। अभी यादो भी था। म्हारे को सेफ चाहिए।"

"आपको कैसी सेफ चाहिए। हल्की-भारी या फिर–।"

पिशोरीलाल दांत फाड़कर हंसा। मटका भी हिलने लगा।

"भायो, म्हारे यहां हलकी सेफ का कां काम हौवे। म्हांका तो भारी से भारी सेफ चाहो। जिसे हजार आदमी भी न ठां सकें। म्हांकी बात समझयो या न समझयो।"

"हमारी कम्पनी आपको भारी से भारी सेफ देगी।" बेदी का हाथ टाई की नॉट पर गया। फिर मुस्कराते हुए नीचे रखा ब्रीफकेस उठाया और उसे खोलकर उसमें से बुकलेट निकाली—"इस किताब में हमारी कम्पनी द्वारा बनाई गई सेफों की तस्वीरें हैं। सेफ पसन्द कीजिए, शाम तक यहां पहुंच जाएगी।"

"देख भायो...।" पिशोरीलाल हाथ से बुकलेट को परे करने वाले ढंग में कह उठा—"थां की फोटुओं से म्हांका काम न बनयो। तू म्हांका साथ, म्हारे बैडरूम में चल। मैं थां का बतायो कि म्हांका कैसी सेफ चाहिए। समझयो या न समझयो?"

विजय बेदी ने फौरन सहमति से सिर हिला दिया।

पिशोरीलाल मटके जैसी तोंद पकड़कर उठा और धोती संभालकर, बेदी को पीछे आने का इशारा करते हुए डम-डम करता आगे चल पड़ा।

पिशोरीलाल के साथ बेदी, खूबसूरत बेडरूम में पहुंचा। कोने में रखी सेफ की तरफ इशारा करता, पिशोरीलाल कह उठा।

"यो पीपणी सी सेफ अब म्हांके काम की नहीं रई। इसमें बड़ी सेठानी के गैणे ही आ सको। म्हारे को धंधे के लिए भी बड़ो गहणे रखने हौवे। म्हारे को घणी बड़ी सेफ चाहिए। बात को समझयो या न समझयो। दोबारा बोलूं का?"

"समझ गया।" बेदी ने फौरन सिर हिलाया—"यह बताइए कि आपको कैसी सेफ चाहिए?"

"बता ही तो रयो हूं। पन थारी समझ में कोई बात ही न आवे।" पिशोरीलाल मुंह बनाकर कहते हुए सेफ की तरफ बढ़ा—"अच्छी तरह समझयो कि म्हांका कैसी सेफ चाहिए।"

कहने के साथ ही अपने मटके को संभालते पिशोरीलाल सेफ के पास पहुंचकर ठिठका और कम्बीनेशन नम्बर पर इस तरह हाथ घुमाए कि विजय बेदी चाहकर भी नम्बरों को न समझ पाए। उसके बाद सेफ का दरवाजा खोलता हुआ बोला।

"म्हांका इससे भी चार गुना बड़ी सेफ चाहिए। गौर से देख ले भाया। भीतर से जो डिजाइन हौवे, वैसा ही बड़ी सेफ में हौवे। बड़े-बड़ो और गहरे खाने हौवे। ये तो छोटे हैं। थारो कम्पनी ऐसी सेफ म्हारे को दे सके तो बता, नेई तो राम-राम। समझयो या न समझयो।"

विजय बेदी की आंखें कुछ ज्यादा ही फैल चुकी थीं। सेफ में रखे, ठसाठस भरे कीमती जेवरातों से उसकी निगाहें हटने का नाम नहीं ले रही थीं। इतने जेवरातों से तो एक बढ़िया दुकान खोली जा सकती थी। बेदी कीमत का अंदाजा नहीं लगा सका कि सामने पड़े जेवरातों की कीमत कितनी होगी। लेकिन इतना तो समझ ही चुका था कि कम से कम करोड़ को छू रहे हैं, जेवरात।

"भायो। अब मन्ने या बता दे कि थांकी कम्पनी म्हांके मतलब की सेफ बना सके या ना बनो...।"

बेदी ने कठिनता से खुली तिजोरी से निगाहें हटाईं। हाथ टाई की नॉट पर पहुंचा और उसे हिलाकर चेहरे पर मीठे भाव लाकर, मुस्करा कर, पिशोरीलाल को देखा।

"आप फिक्र मत कीजिए सेठजी। हमारी कम्पनी ऐसी ही बड़ी सेफ, बहुत बढ़िया बना कर देगी। कल ही मैं कम्पनी के फोटोग्राफर को भेज दूंगा जो सेफ की तस्वीरें ले लेगा, डिजाइन के लिए। उसके बाद इसी तरह का सेफ, बहुत जल्द आपके सामने हाजिर होगी।"

"छोरे।" पिशोरीलाल मटके पर हाथ फेरते, मुस्कराया—"तू तो म्हांकी सारी बात समझो। तू तो घणां हुश्यार जान पड़ौ से।"

बेदी मुस्कराया। निगाहें बार-बार खुली तिजोरी पर जा रही थीं।

तभी राधा ने भीतर प्रवेश किया। दोनों हाथों में थाम रखी छोटी सी ट्रे में पानी के दो गिलास मौजूद थे। वह सीधा बेदी के पास पहुंची।

"साहब जी पानी।" राधा बोली।

बेदी ने राधा को मुस्कराकर देखते, पानी का गिलास उठाया।

"ला। मन्ने भी पाणी पिलायो।"

राधा ने ट्रे पिशोरीलाल के आगे कर दी।

बेदी ने गिलास खाली करके, वापस ट्रे में रखा।

"राधा बेटी।" पिशोरीलाल गिलास ट्रे में रखकर तिजोरी की तरफ बढ़ा और उसे बंद करते हुए कह उठा—"यो घणां समझदार हौवे। ज्यादा दूधोवाली, घणी मलाई मार कर इसे चाय पिलायो और...।"

"नहीं सेठजी।" बेदी कह उठा—"चाय फिर कभी सही।"

"बार-बार क्यों तू म्हारे को तकलीफ देवे। एक ही बारो में सबो काम।"

"मुझे कहीं और भी जाना है। देर हो रही है। इसलिए...।"

"ठीको। ठीको। म्हारी तिजोरी बढ़िया बनावो। राधा, इसो बाहर छोड़ आवो।"

"जी।" राधा बोली फिर बेदी को देखा—"आइए।"

राधा, बेदी को लेकर बेडरूम से बाहर निकली और मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ी।

बेदी, एक कदम आगे बढ़ाकर राधा के साथ चलने लगा।

"राधा।" बेदी मीठे स्वर में बोला।

राधा खामोश रही।

"दोबारा जब आऊंगा तो तुम्हारे लिए गुलाब का फूल लेकर आऊंगा।"

राधा ने चलते-चलते गर्दन घुमाकर बेदी को देखा। फिर सामने देखने लगी।

"मैं जानता हूं यहां से जाने के बाद तुम्हें भूल नहीं सकूंगा। यूं समझो कि तुम्हारी खूबसूरती का भूत मेरे सिर पर सवार हो चुका है, जो कि अब आसानी से उतरने वाला नहीं।"

"तो कैसे उतरेगा भूत?" राधा ने होंठ सिकोड़कर पूछा।

"मैं तुम्हें गुलाब का फूल लाकर दूंगा। तुम उस फूल को मुस्कराकर लेना और अपने बालों में लगाने की कोशिश करना। वह तुमसे नहीं लगेगा तो तुम मुझे लगाने को कहोगी। मैं तुम्हारे बालों में फूल लगाऊंगा। ऐसे में तुम्हारे बालों की जानलेवा महक मेरी सांसों में समा जाएगी। उसके बाद...।"

बेदी को खामोश पाकर राधा ने पूछा।

"उसके बाद।"

विजय ने गहरी सांस ली।

"पहले बालों में फूल तो लगवा लो। उसके बाद जो होगा, तुम्हारे सामने ही तो होगा।" बेदी प्यार से बोला।

तब तक वह दोनों मुख्यद्वार तक पहुंच चुके थे। वे ठिठके।

"जाइए।" राधा बोली।

बेदी ने खुले दरवाजे को देखा फिर सिर हिलाकर कह उठा।

"ठीक है। जाता हूं।"

राधा उसे देखती रही।

बेदी आगे बढ़ा। दरवाजा पार कर गया।

"सुनिए।" पीछे से राधा ने पुकारा।

बेदी ठिठक कर पलटा।

"दोबारा जब आएं तो फूल लेकर आइएगा।" एकाएक राधा मुस्करा उठी।

"क्या...क्या लाऊं?" बेदी के होंठों से निकला।

"फूल।" कहकर राधा हंसी और पलट कर भीतर भागती चली गई।

बेदी के चेहरे पर मुस्कान उभरी। हाथ टाई की नॉट पर

पहुंचा।

"बेदी बेटे।" वह बड़बड़ा उठा–"तू ग्रेट सेल्समैन है। बहुत तरक्की करेगा तू। जब कोई लड़की एक ही मुलाकात में, बालों में फूल लगवाने को तैयार हो जाए तो, तेरी सेल्समैनी में कोई कमी नहीं। खुद को इसी तरह चैक करता रहा कर। इस तरह विश्वास बढ़ता है और इसी विश्वास के दम पर कम्पनी में तरक्की करेगा।"

❑ ❑

स्टॉप पर बस रुकते ही विजय बेदी बस से उतरा और धूप-गर्मी से परेशान, टाई की नॉट ढीली करता, ब्रीफकेस थामे तेजी से आगे बढ़ गया।

यह शहर का व्यस्त इलाका था। बिजनेस प्वाइंट था। भीड़ थी हर तरफ। धूप का यहां किसी पर असर नहीं हो रहा था। सब अपने काम में भागे-दौड़े नजर आ रहे थे। उन्हीं लोगों में से गुजरते बेदी कुछ आगे जाकर ठिठका और एक इमारत में प्रवेश कर गया। इमारत का ज्यादातर बाहरी हिस्सा तरह-तरह के बोर्डों से ढंका हुआ था। उनमें एक बोर्ड रायल सेफ कम्पनी का भी था।

बेदी इमारत की पहली मंजिल पर पहुंचा। पहली मंजिल का आधा हिस्सा रायल सेफ कम्पनी के पास था। कम्पनी के शीशे के मुख्य दरवाजे पर स्टूल पर चौकीदार बैठा था। बेदी को पास आते देखकर उसने बैठे-बैठे लापरवाही से कहा।

"नमस्कार साहब जी।"

बेदी ने उसे घूरा। ठिठका।

"तेरे को कितनी बार कहा है कि आते देखकर, कम से कम खड़ा तो हो जाया कर।"

"क्या फायदा साहब जी। सलाम ही तो मारना है, वह बैठे-बैठे भी मारा जा सकता है।"

"सही कहता है।" बेदी ने तीखे स्वर में कहा और भीतर प्रवेश कर गया।

सामने रिसेप्शन पर सपना मौजूद थी।

बेदी वहां पहुंचा और घूम कर रिसेप्शन के पीछे, सपना के पास मौजूद खाली कुर्सी पर बैठा। ब्रीफकेस नीचे रखा और टाई की नॉट ढीली करते हुए गहरी सांस ली।

"क्या बात है बेदी साहब।" सपना मुस्कराकर बोली।

"पानी पिलाओ। ठंडा।"

सपना ने इंटरकॉम पर पानी के लिए कहा।

"तुम लोग यहां ए.सी. की हवा में मजा लेते हो। और मुझे बाहर सड़ती धूप में धकेल देते हो।"

"आप अपनी ड्यूटी करते हैं और मैं अपनी।" सपना पुनः मुस्कराई–"फिर यह भी तो कहिए कि आपको मुझसे तीन गुना ज्यादा तनख्वाह मिलती है। और भी कई सुविधाएं कम्पनी की तरफ से आपको मिली हुई हैं।"

"हां।" बेदी सड़े स्वर में कह उठा–"सबसे बड़ी सुविधा तो यह है कि मरने वाली धूप-गर्मी में टाई लगाकर रहना पड़ता है। अब तुम ही बताओ कि टाई लगाए बिना काम नहीं हो सकता क्या?"

"कम्पनी के कर्मचारियों को क्या पहनना है। यह तो ऊपर से ही आर्डर आता है।

"ऊपर से...? वे सब तो मजे से बैठे होंगे। गर्मी क्या होती है। उन्हें क्या पता। गर्मी शुरू होते ही अपना ऑफिस दार्जिलिंग ले जाते हैं। अपनी सारी कम्पनियों के लोगों को भी दार्जिलिंग...।"

तभी ऑफिस का चपरासी संतोष सिंह पानी का जग और गिलास लेकर वहां पहुंचा। ट्रे रिसेप्शन पर रखी कि उसकी निगाह कुर्सी पर बैठे बेदी पर पड़ी।

"साहब जी, आप यहां क्या कर रहे हैं मैडम के पास।" संतोष सिंह के होंठों से निकला।

"तुझे क्या–तू क्यों पूछ रहा है।" बेदी ने खा जाने वाले स्वर में पूछा।

"नहीं पूछता।" संतोष सिंह के स्वर में भी तीखापन आ गया। वह जग-पानी वहीं छोड़कर चला गया।

सपना ने गिलास में पानी डालकर बेदी को दिया।

दो मिनट बीतने पर बेदी ने राहत सी महसूस की।

"तुम कैसी हो?" बेदी ने सपना को देखा।

"ठीक हूं।"

"आजकल खूबसूरत होती जा रही हो। सब ठीक तो है।" बेदी मुस्कराया।

"खूबसूरती का विटामिन तो आपसे मिल रहा है मुझे।" सपना हंसी।

"मुझसे? मैंने तो अभी तक तुम्हें कोई विटामिन नहीं दिया।"

"हर रोज आपको देखती हूं और खूबसूरत हो जाती हूं। पहले मैं ऐसे ही बैठी थी। आप आए तो मेरी खूबसूरती में आपको देखते ही मिलने वाले विटामिन से चांद लगने शुरू हो गए।"

बेदी ने सपना को घूरा।

"खींच रही हो मुझे।"

"आप भी तो मुझे खींच रहे हैं। क्या आपको नहीं मालूम कि मैं पहले से ही खूबसूरत हूं।"

"तौबा।" बेदी ने गहरी सांस ली, "कैसा जमाना आ गया है। लड़कियां अपने मुंह से अपनी खूबसूरती की तारीफ ऐसे करती हैं, जैसे खाया-पिया बता रही हों।"

"बेदी साहब।" सपना मुस्कराकर बोली—"आपका बचपन कहां बीता?"

"गांव में। वहीं पढ़ा। दसवीं वहीं की। गाय-भैंसों का दूध निकालना भी वहीं सीखा। उसके बाद बाकी की पढ़ाई शहर आकर की। पिछले दस सालों से इसी शहर में हूं।"

"तो अब तक आपको पता नहीं चला कि लड़कियां...।"

तभी फोन की बैल बजी। सपना ने रिसीवर उठाया।

"रायल सेफ कम्पनी।"

"हैलो।" दूसरी तरफ से दिलकश आवाज आई—"मैं अंजना बोल रही...।"

"वन मिनट मैडम।" सपना ने कहा फिर माउथपीस पर हाथ रखकर बेदी से कहा—"तुम्हारी होने वाली बीवी का फोन।"

बेदी ने रिसीवर लिया।

"कैसी हो अंजना।"

"अच्छी हूं।" अंजना का प्यारा स्वर कानों में पड़ा—"दो दिन से तुम मिले नहीं।"

"बहुत व्यस्त था।" बेदी फोन पर मुस्करा कर बोला—"आज शाम को क्या कर रही हो?"

"तुम्हारा इंतजार।" साथ ही अंजना की हंसी कानों में पड़ी।

बेदी के होंठों पर भी मुस्कान उभरी।

"इन्तजार करने की जगह बताऊं।"

"बताओ।"

"अमरदीप सिनेमा पर।"

"वक्त भी बता दो।"

"शाम को पांच बजे।"

"ठीक है। लेकिन फिल्म दिखा कर खाली-खाली मत टरका देना।" दूसरी तरफ से अंजना का चंचल स्वर बेदी के कानों में पड़ा—"आज तो मैं...।"

"चिन्ता मत करो। पूरा भर दूंगा तुम्हें। शाम को मिलेंगे।"

"वक्त पर पहुंचना।"

"पक्का।" कहने के साथ ही बेदी ने रिसीवर रख दिया।

सपना मुस्कराकर उसे देख रही थी।

बेदी भी उसे देखकर मुस्कराया।

"सपना।"

"हूं।"

"कभी तुम भी मेरे साथ फिल्म चलो, वहां...।"

"बेदी साहब।" सपना मुस्करा कर बोली—"आपकी होने वाली बीवी के फोन मैं ही अटैंड करती हूं। कहें तो उसे बता दूं कि आप मुझे भी फिल्म के लिए कह रहे हैं।"

"कह दो।" बेदी हंसा।

"आपको फर्क नहीं पड़ेगा।"

"नहीं।"

"वो आपको छोड़ भी सकती है।" सपना ने आंखें फैलाकर कहा।

"तो क्या हो गया। तब तक तुम तो मुझे पकड़ ही चुकी होगी।" बेदी ने मुस्करा कर आंख मारी।

"क्या?" सपना दांत भींचकर चीखी—"तुम...।"

तभी चपरासी संतोष सिंह वहां पहुंचा।

"क्या हुआ?"

सपना ने उसे देखा—कहा कुछ नहीं।

"क्या बात है?" बेदी ने मुंह बनाकर उसे देखा।

"खास कुछ नहीं।" संतोष सिंह ने मुंह बनाया—"आवाजें आ रही थीं तो पूछा, क्या हो रहा है?"

"तेरे को नजर नहीं आता?"

"नहीं।"

"क्यों, अंधा है क्या?"

"आंखें हैं। लेकिन मेरी आंखें काउंटर के पार नहीं देख सकतीं और आप दोनों काउंटर के पीछे हैं सिर्फ गर्दन तक ही नजर आ रहा है। अब मुझे क्या मालूम काउंटर के पीछे क्या हो रहा है।"

सपना ने होंठ सिकोड़ कर, बेदी को देखा।

बेदी गुस्से से संतोष सिंह से कुछ कहने वाला था कि संतोष सिंह जल्दी से बोला।

"आपको बड़े साहब पूछ रहे हैं। शायद उन्हें मालूम हो गया है कि आप आ गए हैं।"

"तुमने बताया होगा।" विजय बेदी ने खा जाने वाले स्वर में कहा।

"मैं क्यों बताऊंगा।" संतोष सिंह अड़ा।

"क्योंकि मैं यहां बैठा था।"

"मुझे इससे क्या। आप यहां बैठिए। वहां बैठिए। जहां बैठिए। मेरी तो घर में बीवी है। मुझे क्या।"

"घर में बीवी है।" बेदी ने तीखे स्वर में कहा—"इसका क्या मतलब?"

सपना हंसी।

"अब जवाब भी मैं दूं तो साहब, मेरा सवाल करने का क्या फायदा।"

"संतोष सिंह तू...।"

❑ ❑

"सेठ पिशोरीलाल से मिले?" प्राणनाथ मल्होत्रा की निगाह बेदी पर जा टिकी। वह पचास बरस का स्वस्थ व्यक्ति था। रायल सेफ कम्पनी की इस ब्रांच का मैनेजर था।

"यस सर।"

"काम बना?"

"जी। वह...।"

"कौन-सा मॉडल पसन्द किया?" प्राणनाथ मल्होत्रा ने हौले से सिर हिलाया।

"सेठ पिशोरीलाल अपनी पसन्द की सेफ बनवाना चाहता है। उसने...।"

"अपनी पसन्द की। हूं—किस तरह की?"

"वही तो बता रहा हूं सर।" बेदी अपनी झल्लाहट पर काबू पाते कह उठा—"उसने अपनी सेफ दिखाई है। वह उसी तरह की भारी सेफ चाहता है। बड़ी।"

"ठीक है। कम्पनी के फोटोग्राफर को कल पिशोरीलाल के यहां भेज देना। वह उस छोटी सेफ की तस्वीरें ले आएगा और उसी तरह की बड़ी सेफ बना दी जाएगी।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने कहा।

बेदी ने सिर हिलाया।

"अब तुम्हारे हाथ में, और क्या काम है?"

"सर। शाम को मुझे किसी से मिलना है। इसलिए...।"

"छुट्टी चाहते हो?"

"जी।"

"ठीक है।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने सिर हिलाया—"सेठ बन्ने राम का फोन आया था। उसकी तिजोरी के लॉक में थोड़ी सी गड़बड़ है। जाते-जाते बन्ने राम के यहां से होते जाना।"

"लेकिन, सेफ का लॉक मैं कैसे—सर मैं सेल्समैन हूं। सेफ बेचता हूं। ठीक नहीं करता।"

प्राणनाथ मल्होत्रा ने बेदी को घूरा।

"तुम आजकल ऑफिस में, सपना से बहुत बातें करते हो।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने शांत स्वर में कहा।

"बातें—सपना से—मैं...।" बेदी सकपकाया—"किसी ने कम्पलेंट की है क्या?"

"नहीं। अभी तक तो मुझे खबर ही मिली है। कम्पलेंट भी आ जाएगी। ऐसे में तुम्हारी नौकरी पर बन सकती है। हम लोग महिला कर्मचारी को पूरी इज्जत देते...।"

"सर। मैं बन्ने राम की तिजोरी का लॉक देख लूंगा।"

"गुड।"

"लेकिन ऐसे कामों में मैं एक्सपर्ट नहीं हूं। हो सकता है; ठीक न कर सकूं तो...।"

"कोई बात नहीं। सेफ रिपेयर वाला दो दिन की छुट्टी पर है। वह आकर कर देगा। लेकिन तुम कोशिश पूरी करना कि ठीक हो जाए। बन्ने राम जल्दबाजी मचा रहा है।"

"यस सर।" बेदी उठ खड़ा हुआ।

"जा रहे हो।"

"जी।"

"सपना से जरा कम बातें किया करो। आज तुम उसके पास, रिसेप्शन डेस्क के पीछे बैठकर बातें करते हो। कल को ऐसा कुछ किसी दूसरे ने किया तो सपना चिल्ला...।"

"सर।" बेदी ने जल्दी से कहा—"मैं सपना को समझा दूंगा।"

"समझा दोगे।" प्राणनाथ मल्होत्रा के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे—"क्या समझा दोगे।"

"यही कि...।" बेदी बौखला सा गया था—"मुझसे कम बात किया करे।"

"वह तुमसे बात करती है।" प्राणनाथ मल्होत्रा के होंठों से निकला।

"ज...जी सर।"

"सच कह रहे हो?"

"ह...हां सर। मैं झूठ क्यों—!"

"मिस्टर बेदी।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने तीखे स्वर में कहा—"अगर सपना की आदत बातें करने की होती तो वह सबसे या फिर आधे स्टाफ से, या उससे भी आधे स्टाफ के लोगों से बातें मारती। तुम इतने भी न्यारे नहीं हो कि तीस में से वह सिर्फ तुम्हें ही...।"

"सर, बन्ने राम की तिजोरी ठीक करनी है। शाम को किसी से मिलना है। कल सुबह ऑफिस आकर आपको यकीन दिलाऊंगा कि मैं बहुत शरीफ बंदा हूं। जो आपके कान भरते हैं। वह मुझसे जलते हैं। चलता हूं सर। कल हाजिर हो जाऊंगा।" बेदी फौरन बाहर निकलता चला गया।

ऑफिस का छोटा सा हॉल पार कर रहा था कि एकाउंटेंट शर्मा ने टोका।

"क्या बात है। बहुत तेजी से दौड़े जा रहे हो।"

बेदी ठिठका, दो कदम बढ़ा कर शर्मा के पास पहुंचा।

"एक बात तो बता शर्मा...।" बेदी तीखे स्वर में कह उठा।

"क्या?"

"ये प्राणनाथ मल्होत्रा जैसे बूढ़े इतने घिसे हुए क्यों होते हैं।"

"इसलिए कि वो बूढ़ा है। और इंसान बूढ़ा तभी होता है, जब घिसता है।" शर्मा मुस्कराया।

"तुम्हारा मतलब कि हर बूढ़ा, घिसा हुआ होता है।"

"हां।"

"ठीक है। माना, लेकिन बड़ी-बड़ी कम्पनियों के मैनेजर, बूढ़े ही क्यों होते हैं?"

"क्योंकि वे घिसे हुए होते हैं और हर मामला आराम से संभाल लेते हैं।" शर्मा हौले से हंसा—"लगता है, मल्होत्रा साहब से टीं-टां हो गई है।"

"वो तो होती ही रहती है।" कहकर बेदी आगे बढ़ने को हुआ।

"बेदी, एक मिनट।"

"क्या?"

"बगल में बैंक है ना। यह चैक, जाते-जाते बैंक के दरबान को थमाते जाना।"

"लेकिन इस वक्त तो बैंक बंद हो चुका है। वो...।"

"मालूम है। उसकी तुम फिक्र मत करो। बोलना शर्मा ने चेक भेजा है। सुबह वो जमा करा देगा। वक्त पर सुबह क्लीयरिंग में निकल जाएगा। तुम तो जानते ही हो कि मैं बारह बजे ऑफिस आता हूं। उसके बाद चेक जमा कराऊंगा तो परसों की क्लीयरिंग में निकलेगा। आज भूल गया कि...।"

"ठीक है। ठीक है।" बेदी ने उसके हाथ से चेक और चेक से पिन लगा रखा फार्म लिया और आगे बढ़ गया।

बाहर निकलते वक्त रिसेप्शन पर ठिठका।

"अंजना से मिलने जा रहे हो।" सपना ने मुस्करा कर टोका।

"अभी नहीं। अभी वक्त है। अगर तुम प्रोग्राम बनाओ तो मैं इसी वक्त तैयार हूं।"

"कल मैं अपनी मां को आपके यहां भेजती हूं।"

"मां को—लेकिन मैं तो तुम्हारी बात कर रहा हूं।" बेदी सकपका कर कह उठा।

"मेरी मां भी, मेरी ही बात करने आपके पास आएगी।" सपना हंसी।

"कौन-सी बात?"

"शादी की।"

"लेकिन मैंने कब कहा कि मैं तुमसे शादी की बात कर रहा हूं। मैं तो प्रोग्राम की बात कर...।"

"प्रोग्राम के बाद शादी का ही प्रोग्राम बनता है मिस्टर बेदी।" सपना ने गहरी सांस लेकर कहा—"शादी के बाद मेरे नाम के आगे बेदी लगेगा। सपना बेदी—ओह कितना अच्छा...।"

"अपनी मां को मेरे घर का रास्ता कभी मत बताना। कोई फायदा नहीं होगा। मैंने अंजना से ही शादी करनी है। वही मेरे लिए सब कुछ है।" बेदी बौखला कर कह उठा—"दो बातें हंस कर क्या कर ली, अपने नाम के आगे बेदी लगाने के सपने देखने लगी। खबरदार जो फिर कभी मुझसे ऐसी बात की।" कहने के साथ ही बेदी बाहर निकलता चला गया।

बेदी की घबराहट देखकर सपना हंस पड़ी।

उसी पल संतोष सिंह वहां पहुंचा।
"आप बेदी साहब से शादी करने जा रही हैं।" वह मजे लेने वाले ढंग में कह उठा।
"नहीं।" सपना हंसी रोकते हुए बोली—"मैं बेदी साहब को अच्छी तरह जानती हूं। वह लड़कियों से मजाक तो करते हैं। लेकिन अंजना को दिलोजान से चाहते हैं। शादी भी उसी से करेंगे।"
"मैंने भी शादी की थी। अब तक वह छः बच्चे जन चुकी है और...।" संतोष सिंह ने अपना हाल बताना शुरू किया सपना को कि, विजय बेदी का भी यही हाल होने वाला है।
❑❑
ठण्डक भरे ऑफिस से बाहर निकलते ही बेदी पुनः सड़ती गर्मी में घिर गया।
"क्या मुसीबत है। गर्मियों में काम-काज तो रात को होने चाहिए।" बड़बड़ाते हुए बेदी बगल की इमारत की तरफ बढ़ गया। जहां बैंक था।
चलते-चलते उसने सिगरेट सुलगाई।
आधे मिनट में ही वह बैंक के गेट पर था। बैंक की लोहे की ग्रिल जंजीर लगाकर बंद की हुई थी। सिर्फ एक फीट ही खुली थी कि आने-जाने वाला कठिनता से उसमें से निकल सके।
वहां पहुंचकर बेदी ठिठका। क्योंकि रोज की भांति बैंक का चौकीदार मोहनलाल वहां न होकर कोई और ही खड़ा था। बेदी जल्दी में था। उसने ग्रिल में से भीतर जाना चाहा।
उस आदमी ने बेदी को वहीं रोक दिया।
"नजर नहीं आता, बैंक बंद है। शाम के चार बज रहे हैं।" उसने शांत स्वर में कहा—"भीतर कहां जाता है?"
"मोहनलाल से काम है।" बेदी के होंठों से निकला।
"कौन मोहनलाल?"
"बैंक का चौकीदार, और कौन?"
"वो नहीं है।" उसने लापरवाही से कहा—"आज छुट्टी पर है। कल आना।"
बेदी को उसका जवाब अजीब सा लगा, जाने क्यों?
"तुम कौन हो?"
"देख नहीं रहे। सरकारी नौकर हूं। ड्यूटी पर खड़ा हूं।" उसने बेदी को बर्दाश्त करते हुए कहा।

"मोहनलाल की जगह हो?"
"हां।"
"लेकिन मोहनलाल तो गन के साथ खड़ा होता था। तुम तो खाली-खाली खड़े हो।"
उसने जेब थपथपाई।
"रिवॉल्वर है। एक दिन के लिए आया हूं। इसलिए रिवॉल्वर ही बहुत है। मेरा ट्रांसफर यहां हो जाता तो गन के साथ आता।"
"ठीक है। जब आया हूं तो मुझे मनचंदा साहब से ही मिल लेने दो।" बेदी कह उठा।
"तुम हो कौन?"
"रायल सेफ कम्पनी में काम करता हूं। वो बगल वाली इमारत में है। बैंक का आधा स्टाफ मुझे जानता है।" कहकर बेदी ने एक फीट खुली ग्रिल से भीतर जाना चाहा तो उसने अपनी टांग फंसा दी।
बेदी की निगाह उस पर टिकी।
"नहीं जाने दोगे?" बेदी ने मुंह बनाया।
"कल सुबह आना।"
जाने क्यों बेदी को उसके रंग-ढंग कुछ ठीक नहीं लगे। उसने बैंक की तरफ नजर मारी।
"ठीक है। मैं यहीं खड़ा हूं। तुम बैंक में से किसी को भी बुला दो।" बेदी जिद भरे स्वर में कह उठा।
"क्यों?"
"काम है। दरबान होकर ज्यादा सवाल-जवाब मत करो। तुमने कहा है, भीतर नहीं जाना। ठीक है नहीं जाता। मैंने कहा है बैंक में से किसी को बुला दो तो बुला दो। तुम्हारा क्या जाता है।" बेदी ने होंठ सिकोड़े।
"साले। सीधी तरह नहीं मानेगा तू।" एकाएक वह गुर्रा उठा। हाथ जेब पर गया।
"क्या मतलब?" बेदी को हैरानी से भरा झटका लगा।
"मतलब की औलाद हम बैंक को लूट रहे हैं। तू फेरे करवाने बीच में क्यों आ गया।" कहने के साथ ही उसका हाथ जेब में गया और रिवॉल्वर पर जा टिका।
बेदी जैसे खुद को हवा में उड़ता महसूस कर रहा था।
"अबे...।" बेदी के होंठों से निकला—"सच कह रहा है, या मजाक कर रहा है। बैंक ऐसे लूटा जाता है।"

"पागल की औलाद।" वो दांत भींचकर दरिन्दगी भरे स्वर में गुर्राया—"ग्रिल से भीतर आ और मेरी टांगों के पास पड़े स्टूल पर बैठ जा। जब हम अपना काम खत्म कर लें तो, बाद में जो मर्जी करना। चल भीतर आ। जो मैंने कहा है। वही कर। नहीं तो गोली मार दूंगा।"

बेदी समझ गया कि मामला खतरे से भरा है। जान भी जा सकती है।

"तू...।" बेदी ने दाएं-बाएं देख के अपनी औकात और हिम्मत से बाहर की बात कही—"मुझे गोली मारेगा तो गोली की आवाज गूंजेगी। तब तुम डकैती भी नहीं कर सकोगे और पकड़े जाओगे। मुझे जो काम है, वो मैं कल कर लूंगा। चलता हूं। चिन्ता मत कर। मैं किसी से कहूंगा नहीं कि...।"

"खामोश।" वो दांत भींचकर गुर्राया—"भीतर आ।"

बेदी को अपनी जान का खतरा नजर आ रहा था। यह आदमी खतरनाक है। इसके साथी जो भीतर बैंक लूट रहे हैं। वो और भी खतरनाक होंगे। डकैती के बाद, जाते वक्त उसे गोली मार गए तो? उसकी तो खामखाह में जान गई। और जान के बारे में बेदी शुरू से ही कंजूस था। जो भी हो उसे जान बहुत प्यारी थी। इस वक्त उसे बचने का एक ही रास्ता नजर आया कि यहां से भाग ले। लेकिन भागने से पहले वह ग्रिल के पास खड़े आदमी का आधे मिनट के लिए इन्तजाम करना जरूरी था।

बेदी ने इस तरह का दिखावा किया कि जैसे वह उसकी बात मान कर भीतर आ रहा है। एक पांव उठाया, जैसे आगे बढ़ा रहा हो। दूसरे ही पल बिजली की सी फुर्ती से उसने हाथ आगे बढ़ाया और उसकी छाती पर हाथ रखकर पूरी ताकत से धक्का दिया।

वह खुद को संभाल न सका और नीचे जा गिरा।

बेदी के लिए इतना वक्त ही बहुत था। वह पलटा और बदहवासी की हालत में भागने को हुआ। तभी बैंक की तरफ से, साइलेंसर लगी रिवॉल्वर से बेआवाज गोली आई और उसके सिर में जा धंसी। बेदी एक कदम भी न उठा सका कि गोली लगने की वजह से फिरकी की तरह घूम कर नीचे जा गिरा। तभी गिरने वाला बदमाश उठा और फुर्ती के साथ बेदी को घसीट कर ग्रिल को थोड़ा-सा और खोला और भीतर खींच लिया। ग्रिल पहले की ही तरह बंद कर ली।

धूप-गर्मी की वजह से शाम के चार बजे आसपास कोई नहीं था। इसलिए सारा मामला बिना किसी की निगाहों में आए दबा का दबा ही रह गया। सारे काम से फुर्सत पाकर वहां खड़े बदमाश ने राहत भरी निगाह बैंक के प्रवेश द्वार पर मारी। परन्तु वहां कोई नजर नहीं आया।

वह जानता था कि भीतर से भी एक आदमी बैंक के बाहर की निगरानी कर रहा है। उसने बाहर का बिगड़ता मामला देखकर, इसका निशाना ले लिया होगा।

बहरहाल भीतर पहले की तरह ही डकैती जारी थी।

बेदी का शरीर एक तरफ पड़ा था। सिर में जहां गोली लगी थी। वहां से खून बह रहा था।

❑❑

शुक्रा।

मां-बाप की इकलौती औलाद था। अब तो दोनों चल बसे थे।

चौबीस साल थी उसकी उम्र। उसके मां-बाप शादी के बाद प्यारी सी औलाद चाहते थे कि जिसे पढ़ा कर वह बड़ा आदमी बना सकें। दुनिया की हर कोशिश कर ली। लेकिन बीस साल तक कोई औलाद नहीं हुई। जब हुई तो वह दोनों बूढ़े होने को थे।

फिर भी मां-बाप ने उसके पैदा होने की खुशियां मनाईं।

वह खुद भी ठीक तरह से नहीं जानता था कि उसका नाम क्या है। शुक्रा-शुक्रा ही सब कहते थे उसे। इसकी वजह भी थी। जिस दिन वह पैदा हुआ शुक्रवार था। उसके पैदा होने पर मां-बाप ने शुक्र किया कि वह पैदा हुआ, मरने से पहले उन्हें औलाद वाला बना गया। शुक्र है कि अन्तिम वक्त पर उन्हें कोई आग दिखाने वाला तो, उनका अपना आया।

उसकी हर बात के शुक्र लगता रहा और धीरे-धीरे वह शुक्रा बनता रहा। हर कोई उसे शुक्रा ही कहने लगा। यह भी शुक्र रहा कि वह पैदा हो गया था, वरना बुढ़ापे में उसके मां-बाप भूखे ही मरते। क्योंकि जब वह सोलह साल का हुआ तो उसके पिता को बीमारी ने घेर लिया। वह काम करने के काबिल नहीं रहे। तब शुक्रा पढ़ाई छोड़कर कमाने और मां-बाप को खिलाने में लग गया।

बीस की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते मां-बाप चल बसे।

शुक्रा ने खुद को जिन्दगी से हमेशा अकेले ही जूझते पाया।

मां-बाप के बाद भी वह अपना पेट भरने का जुगाड़ करता रहा। इस वक्त वह मोटर ड्राइविंग कालेज में नौकरी करता था और लोगों को कार चलाना सिखाता था। जो मिलता था, उससे उसका अच्छा गुजारा हो जाता था।

वही शुक्रा।

शुक्रा के चेहरे पर इस वक्त हवाइयां उड़ रही थीं। वह स्वस्थ कद-काठी का आकर्षक नजर आने वाला युवक था। उसके हाव-भाव से चुस्ती झलकती थी।

आंधी-तूफान की तरह शुक्रा ने उदयवीर के छोटे से गैराज में प्रवेश किया।

''उदय-उदय—कहां मर गया तू?'' शुक्रा चिल्लाया।

दो लड़के एक कार के साथ चिपके, उसे ठीक करने में व्यस्त थे। वह दोनों फौरन अपना काम छोड़कर शुक्रा की तरफ बढ़े।

''क्या हुआ शुक्रा साहब।''

''उदय कहां है?''

''वो उधर।'' एक ने कोने में बने छोटे से केबिन की तरफ इशारा किया—''केबिन...।''

शुक्रा तेजी से केबिन की तरफ बढ़ गया।

उदयवीर कुर्सी पर अधलेटा, टांगें टेबल पर फैलाए नींद में था। केबिन में प्रवेश करके शुक्रा तेजी से उसे हिलाते हुए, तीखे स्वर में कह उठा।

''उल्लू के पट्ठे। यह क्या सोने का वक्त है।''

उदयवीर ने आंखें खोली। शुक्रा को देखा।

''सोने का कोई वक्त नहीं होता शुक्रे। नींद आई तो आंखें बंद कर लीं।'' उदयवीर टांगें सीधी करके कुर्सी पर बैठते हुए सिगरेट सुलगाने लगा—''तेरे को मेरे सोने से क्यों घबराहट हो रही है। अपना चेहरा देखा है।''

''अभी तेरा चेहरा भी, मेरे जैसा हो जाएगा।''

''अच्छा।'' उदयवीर के चेहरे पर व्यंग्य के भाव आए—''मेरा चेहरा भी, अपने जैसा बना कर दिखा।''

''अपने विजय को गोली लग गई है।''

उदयवीर इस तरह उछला। जैसे कुर्सी के नीचे बम फट गया हो।

''क्या बोला तू?'' उसके हाथ से सिगरेट छूट गई थी—''विजय को गोली लगी है।''

''हां।'' शुक्रा व्याकुल स्वर में कह उठा—''इस वक्त वो हस्पताल में है। हमें उसके पास होना चाहिए। रास्ते में से राघव को भी ले लेंगे। डॉक्टर को कुछ चाहिए होगा तो, कौन लाकर देगा।''

''मैं एम्बैसेडर निकालता हूं।'' उदयवीर केबिन से बाहर भागा। विजय बेदी को गोली लगने की खबर सुनकर वह बदहवास हो उठा था।

❑❑

बुरे हाल में दिन बिता रही वो एम्बेसेडर कार तीव्र झटके के साथ 'राघव इलेक्ट्रिक शॉप' के सामने रुकी तो दुकान पर बैठे सोलह साल के छोकरे ने फौरन उन्हें देखा।

''काके।'' उदयवीर गला फाड़कर चिल्लाया—''उस साले, बिजली वाले को बुला।''

''बिजली वाला?'' उस लड़के के होंठों से निकला।

''ओए, राघव की बात कर रहा हूं।'' उदयवीर झल्ला कर बोला।

''कैसे-कैसे नमूनो को राघव दुकान पर बिठा देता है।''

''मामा जी तो सामान लेने बाजार गए हैं।'' उसने कहा।

''अभी मरना था सामान लेने उसे।''

''इसे हस्पताल और विजय के बारे में बता दे और निकल यहां से?''

उदयवीर ने कार से हाथ हिलाकर कहा।

''इधर आ।''

वह लड़का पास पहुंचा।

उदयवीर ने उसे विजय को गोली लगने और हस्पताल के बारे में बताया और तेजी से कार आगे बढ़ा दी। अजीब ढंग से झटके खाती एम्बेसेडर भाग खड़ी हुई।

❑❑

बेदी वक्त पर नहीं पहुंचा तो गुस्से से भरी अंजना ने ऑफिस फोन किया। वहां सपना से तो नहीं अलबत्ता संतोष सिंह से, उसकी बात अवश्य हुई।

''मिस्टर विजय से बात कराइए।'' अंजना वास्तव में गुस्से में थी।

''वह तो नहीं हैं।'' संतोष सिंह का गंभीर स्वर कानों में पड़ा—''आप कौन हैं।''

"मैं अंजना बोल रही... ।"
"आप वही हैं, जिसके साथ विजय साहब की शादी होने वाली है।"
"हां—मैं... ।"
"मैडम।" संतोष सिंह का गम्भीर स्वर उसके कानों में पड़ा—"अगर हौसला कायम हो तो बुरी ख़बर सुनाऊं।"
"बुरी खबर।"
"हां।"
अंजना का दिल जोरों से धड़का।
"क...क्या?"
"कुछ देर पहले विजय साहब को गोली लग गई है।"
"गोली?" अंजना की समझ में कुछ नहीं आया—"क...कैसी गोली?"
"रिवॉल्वर—बन्दूक—राइफल—गन की गोली।"
"ल...लेकिन यह कैसे हो सकता है?" अंजना की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या सुन रही है।
"मैडम।" संतोष सिंह के स्वर में ठहराव था—"मैंने पहले ही पूछा था कि हौसला कायम हो तो बुरी खबर सुनाऊं। मैंने कहा है, विजय साहब को गोली लगी है। इस वक्त वे लोहिया हस्पताल में हैं।"
"क...कब लगी गोली?"
"दो घंटे तो हो ही गए।"
"कि...किसने मारी। विजय तो... ।"
"हमारे ऑफिस की बगल की बिल्डिंग में बैंक है। डकैत वहां डकैती कर रहे थे और विजय साहब बैंक जा पहुंचे। वहीं डकैतों की गोली उन्हें लगी। वह... ।"
अंजना ने आगे सुना ही नहीं। रिसीवर वापस रखकर, वह हड़बड़ाए अन्दाज में पी.सी.ओ. बूथ से बाहर निकली और ऑटो की तलाश में इधर-उधर बैचेन निगाहें दौड़ाने लगी।
तभी स्कूटर पर आता उसे राघव दिखाई दिया।
"राघव—राघव।" अंजना जोरों से चिल्लाई।
आवाज सुनते ही राघव ने स्कूटर रोका। अंजना को घबराया देखकर, उसके चेहरे पर उलझन के भाव उभरे। अंजना भाग कर पास पहुंची।
"राघव, जल्दी से लोहिया हस्पताल चलो। विजय को गोली

लगी है। वह वहां है।"
"गोली?" राघव ने पूछना चाहा।
तब तक अंजना स्कूटर पर बैठ चुकी थी।
"यहां से चलो। बातें रास्ते में भी हो जाएंगी। वैसे भी मुझे ज्यादा कुछ नहीं मालूम।"
राघव ने जल्दी से स्कूटर आगे बढ़ा दिया।
❑❑
ऑपरेशन थियेटर पर लाल रंग का बल्ब जल रहा था।
एक-दो बार नर्स बाहर निकली तो शुक्रा और उदयवीर तेजी से उसकी तरफ बढ़े बेदी का हाल जानने के लिए। परन्तु नर्स दोनों बार हाथ से उन्हें खामोश रहने को कहकर आगे बढ़ गई।
उदयवीर मुंह बनाकर कह उठा।
"मुंह से दो शब्द कहने में भी इसे तकलीफ होती है।"
शुक्रा और उदयवीर की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। रह-रहकर उनकी निगाह जलते लाल बल्ब पर जा रही थीं। जब वह यहां पहुंचे तो विजय बेदी के ऑफिस के दो बंदे वहां मौजूद थे। उन्हें आया पाकर, एक-एक करके वे चले गए थे।
सब-इंस्पेक्टर, दो सिपाहियों के साथ वहीं मंडरा रहा था। बेदी का बयान लेने के लिए। आखिरकार सब-इंस्पेक्टर उन्हें यह कहकर चला गया कि वह बयान लेने फिर आ जाएगा।
"इन्हें बयान की पड़ी है।" शुक्रा तीखे स्वर में कह उठा—"क्या मालूम विजय बचता भी है कि... ।"
"ऐसा मत बोल शुक्रे।" उदयवीर तड़प कर बोला—"विजय को कुछ नहीं होगा।"
"मैं कब कह रहा हूं हो। मैं तो... ।"
"हौसला रख।" जबकि उदयवीर का अपना हौसला कमजोर होता जा रहा था—"भगवान पर भरोसा रख। अपना बेदी ठीक रहेगा। उसे कुछ नहीं होगा। वह पहले की ही तरह हमारे बीच बैठेगा।"
"उसके सिर में गोली लगी है।" शुक्रा थके स्वर में कह उठा—"और सिर एक ऐसी जगह होती है। जहां कुछ भी लगे, जान जाने का बहुत ज्यादा खतरा होता है। सिर में लगी मामूली सी चोट भी इंसान की जान ले लेती... ।"
"ओ, ले लेती होगी।" उदयवीर दांत भींचकर बोला—"कान खोलकर सुन ले अपने बेदी को कुछ नहीं होगा। हम सब की

दुआएं उसके साथ हैं। विजय ने भी कभी कोई बुरा काम नहीं किया। कुल मिलाकर, भगवान उसका ध्यान रखेगा।"

शुक्रा की आंखें गीली हो गईं।

"इसी बात का तो रोना है कि विजय ने कोई बुरा काम नहीं किया।" शुक्रा तड़प कर कह उठा—"तेरे को नहीं मालूम भगवान अच्छे लोगों को जल्दी उठा लेता है। अगर उसने दो-चार बुरे काम किए होते तो मैं यकीन के साथ कह सकता था कि उसे कुछ नहीं होगा। लेकिन अब...।"

उदयवीर की आंखें भी गीली हो गईं। उसने शुक्रा को गले लगा लिया।

"मैं तुझे तसल्ली दे रहा हूं तो तू भी मुझे तसल्ली दे।" उदयवीर के स्वर में रोना था—"तू तो ऐसी बातें करके मुझे रुला रहा है। शर्म भी नहीं आती तुझे...।"

❑❑

बदहवासी की हालत में राघव और अंजना एक की जगह दो-दो सीढ़ियां फलांग रहे थे। उनके चेहरों पर परेशानी थी। दिल बुरी तरह आशंका में डूबे हुए थे।

कुछ ही देर में वे दोनों ऑपरेशन थियेटर के सामने पहुंचे तो उदयवीर और शुक्रा से मालूम हुआ कि विजय बेदी खतरे से बाहर है तो उन्होंने चैन की सांस ली।

खतरा टल चुका था।

ऊपरवाला अभी विजय को अपने पास नहीं बुलाना चाहता था। यकीनन वह विजय के हाथों कई खास कामों को अंजाम दिलवाना चाहता होगा।

अभी डॉक्टर ने विजय से, किसी को नहीं मिलने दिया। ऑपरेशन थियेटर से जब उसे बाहर ले जाया गया तो वह बेहोश था। बारह घंटे तक उसको खास देख-रेख की जरूरत थी। विजय को हॉस्पिटल के छोटे से अलग कमरे में रखा गया, जहां उसके पास नर्स की ड्यूटी थी।

उन चारों में से कोई विजय बेदी से नहीं मिल सका।

❑❑

सब-इंस्पेक्टर, विजय बेदी का बयान ले रहा था। दो सिपाही पास खड़े थे।

बेदी की हालत अब पहले से बेहतर लग रही थी।

"तो गोली लगने के कारण, आप अन्य डकैतों को नहीं देख

पाए?" सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।

"नहीं। एक को ही देखा था, उसका हुलिया आपको बता दिया।" बेदी धीमे स्वर में बोला।

"कोई और खास बात—मामूली बात जो तुमने वहां देखी हो।"

"नहीं।" बेदी बोला—"डकैतों को तो बैंक वालों ने भी देखा होगा, वे भीतर...।"

"नहीं। नहीं देखा। उन सबने अपने चेहरे कपड़ों से छिपा रखे थे।" सब-इंस्पेक्टर ने कहा—"तो तब आप बैंक के चौकीदार को चेक देने गए थे। यही बताया था आपने?"

"हां।" विजय अब कमजोरी महसूस कर रहा था।

"लेकिन शाम के चार बजे बैंक में चेक नहीं दिया जाता। उस वक्त तो।"

"प्लीज इंस्पेक्टर।" बेदी ने आंखें बंद कर लीं—"इस सिलसिले में आपने जो बात करनी हो। कम्पनी के एकाउंटेंट से बात कीजिए। क्योंकि यह काम करने को उसी ने मुझे कहा था।"

"आपने उस बदमाश को धक्का देकर, भागने की कोशिश की तो...।"

"इंस्पेक्टर।" बेदी कमजोर से स्वर में कह उठा—"जो बातें मैंने आपको बताई हैं। उसके अलावा बताने को मेरे पास कुछ नहीं है। आप बार-बार एक ही बात को कुरेदकर...।"

"आपको दोबारा बताने में परेशानी हो रही है क्या?"

"हां। मैं बहुत कमजोरी महसूस कर रहा हूं। आराम करना चाहता हूं।" बेदी ने कहा।

सब-इंस्पेक्टर ने उसे देखते सिर हिलाया।

"ठीक है। आप आराम कीजिए। जब आप कुछ ठीक हो जाएंगे मैं तब आऊंगा आपसे बात करने। इस बीच अगर कोई खास बात याद आए तो मुझे खबर दीजिएगा।" कहने के साथ ही सब-इंस्पेक्टर उठ खड़ा हुआ।

❑❑

दो दिन बाद।

हॉस्पिटल के कमरे में बेदी अपने दोस्तों और अंजना से घिरा बैठा था। उसकी हालत अब पहले से बहुत बेहतर थी। और लगभग पहले वाले अंदाज में ही बातें कर रहा था।

"उदय।" विजय बेदी ने उदय पर नजर मारी—"तेरी वर्कशॉप कैसी चल रही है?"

"बेकार।" उदयवीर ने मुंह बनाया—"खास काम नहीं आ रहा। मक्खियां मारता हूं। आज चार ही हत्थे चढ़ीं। दो नर थीं और दो मादा।"

"तूने कैसे पहचाना कि कौन-सी मक्खी नर थी और कौन-सी मादा।"

"समझना और समझाना, मामूली सी बात थी। दो मेरी सिगरेट के आसपास मंडरा रही थीं और दो शीशे के सामने बैठी थीं।" उदयवीर ने मुंह लटका कर, कुछ इस तरह कहा कि सब हंस पड़े।

तभी नर्स भीतर आई और बेदी के करीब पहुंच कर, मुस्करा कर बोली।

"मिस्टर विजय। अब आपकी तबीयत कैसी है?"

"एकदम ठीक।" बेदी ने मुस्करा कर नर्स को देखा—"आप लोगों ने मुझे बचा लिया। वरना मेरी जान ही चली जाती। वास्तव में आप लोगों ने मुझ पर एहसान...।"

"शुक्रिया अदा करना है तो पहले भगवान का कीजिए। फिर डॉक्टर साहब का।" नर्स बोली।

"जरूर। मैं डॉक्टर साहब से मिलना चाहता हूं। वह मिल सकेंगे।"

"क्यों नहीं। वो भी आपसे मिलना चाहते हैं।" नर्स ने कहा—"अगर आप खुद को बिल्कुल ठीक महसूस कर रहे हों तो आप जाकर उनसे मिल सकते हैं। पास ही उनका कमरा है।"

"वह खुद भी मुझसे मिलना चाहते हैं।" बेदी ने नर्स को देखा।

"हां। कह रहे थे, कोई जरूरी बात करनी है।"

"ओह! शायद वो मुझे हस्पताल से छुट्टी देना चाहते हैं।" बेदी ने सिर हिलाकर कहा।

नर्स वापस चली गई।

विजय बेदी ने सब पर निगाह मारी।

"तुम लोग गप्पें मारो। मैं डॉक्टर से मिलकर आता हूं।"

"जाओ-जाओ।" राघव मुस्करा कर बोला—"हम यहीं बैठे हैं।"

□□

अब कैसे हो मिस्टर विजय?" डॉक्टर शिवचरण ने विजय को देखकर, मुस्करा कर पूछा।

"आपकी मेहरबानी से सांसें ले रहा हूं।" बेदी आभार भरे स्वर में कह उठा—"मुझे बचाकर आपने वास्तव में मुझ पर एहसान लाद दिया कि...।"

"इन बातों को रहने दो। मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया।" डॉक्टर शिवचरण ने टोका—"यहां तो हर रोज ही जाने कितने ऐसे आते हैं जो बचने की आशा गंवा चुके होते हैं, लेकिन बच जाते हैं कोई बदकिस्मत नहीं भी बच पाता। हमारे लिए यह सब मामूली बातें हैं। रोजमर्रा की बातें हैं।"

विजय बेदी आभार भरे ढंग में सिर्फ सिर हिलाकर रह गया।

डॉक्टर शिवचरण कई पलों तक बेदी को देखता रहा फिर गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम जानते हो, तुम्हारे सिर में गोली लगी थी।"

"हां। आपने उस गोली को निकाल कर...।"

"नहीं।" डॉक्टर शिवचरण ने हाथ उठाकर गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने वह गोली नहीं निकाली।"

"आपने नहीं निकाली।" बेदी के होंठों से निकला—"तो क्या किसी दूसरे डॉक्टर ने गोली को...।"

"नहीं। किसी डॉक्टर ने गोली को नहीं निकाला।"

बेदी न समझने वाले भाव में डॉक्टर को देखता रहा।

डॉक्टर ने उसके उलझन भरे चेहरे पर निगाह मारी।

"मिस्टर विजय।" डॉक्टर शिवचरण ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम शायद इस बात से वाकिफ नहीं हो कि जो गोली तुम्हारे दिमाग में धंसी थी वह अभी तक वहीं फंसी हुई...।"

बेदी चिहुंक उठा।

"यह आप क्या कह रहे हैं डॉक्टर।" बेदी का मुंह खुला का खुला रह गया—"गोली अभी भी मेरे सिर में फंसी हुई है। य...यह कैसे हो सकता है।"

"ऐसा हुआ पड़ा है।"

"तो आपने गोली को निकाला क्यों नहीं?" बेदी की आंखों में आतंक नजर आने लगा।

"क्योंकि गोली को निकालने की चेष्टा में आपकी जान भी जा सकती थी।"

"क...क्या मतलब?" बेदी की जान खुश्क हो रही थी। उसके चेहरे के भाव देखने के लायक थे।

डॉक्टर शिवचरण के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

"मिस्टर विजय।" डॉक्टर शिवचरण ने गम्भीर स्वर में कहा—"हमारा दिमाग दो हिस्सों में बंटा होता है। बाईं तरफ का दिमाग, शरीर के बाईं तरफ के अंगों को कंट्रोल करता है और दाईं तरफ का दिमाग दाईं तरफ के अंगों को कंट्रोल करता है। इन दोनों तरफ के दिमागों के ठीक बीच जैसे बंटवारे की लचकदार लाइन-सी होती है। गोली ठीक वहीं, समझो दोनों दिमागों के बीच फंसी हुई है। ऐसी नाजुक जगह का ऑपरेशन हर कोई नहीं कर सकता। पूरी गारण्टी के साथ नहीं कर सकता, यूं समझो कि छोटा ऑपरेशन हो या बड़ा, हर में इस बात का तो खतरा रहता ही है कि वह असफल हो सकता है। ऐसे में तुम्हारा ऑपरेशन तो बहुत ही नाजुक है।"

"नाजुक। पागल तो नहीं हो गए आप। तो क्या गोली फंसी रहेगी। आखिर एक दिन तो उसे निकालना ही है। फिर अब क्यों नहीं निकालते आप गोली को।" बेदी का चेहरा गुस्से से भर उठा।

"आप कहें तो मैं अभी डॉक्टरों की टीम को इकट्ठा करके गोली निकाल देता हूं।"

"इसमें सोचने की क्या बात है। जल्दी कीजिए। मैं यहां से ठीक होकर घर जाना चाहता हूं।"

डॉक्टर ने परेशानी भरे अन्दाज में सिर हिलाया।

"ठीक है। हम गोली निकालने की कोशिश करते...।"

"कोशिश?" बेदी चिल्ला उठा—"कोशिश से आपका क्या मतलब। मैं चाहता हूं गोली...।"

"मिस्टर विजय।" डॉक्टर शिवचरण परेशान स्वर में कह उठा—"कोशिश का मतलब है कि आपके बचने के चांस आधे-आधे होंगे, तब। ऑपरेशन कामयाब भी हो सकता है और नाकामयाब भी। गोली निकालते वक्त अगर वह अपनी जगह से जरा भी हिल गई तो उसका जहर फौरन फैलकर आपकी जान ले लेगा।"

बेदी फटी-फटी आंखों से डॉक्टर को देखता रहा। चेहरा फक्क होकर पीला पड़ चुका था। टेबल पर पड़ी बांहें-हाथ जैसे सुस्त से होने लगे।

"मिस्टर विजय।" डॉक्टर ने टोका।

बेदी को जैसे होश आया।

"डॉक्टर।" बेदी का स्वर कांपा—"आप-आप जानते हैं, मुझे सिर्फ एक ही चीज से प्यार है। दौलत से मैंने कभी प्यार नहीं किया। जमीन-जायदाद से कभी प्यार नहीं किया। अगर किसी इंसान से प्यार करता हूं तो वह भी किसी गिनती में नहीं। मुझे-मुझे सिर्फ अपनी जान से प्यार है और आप मेरी जान का खतरा ही बता रहे हैं। डॉक्टर साहब। औरत हाथ से चली जाए तो दूसरी आ सकती है। दौलत हाथ से चली जाए तो, और कमाई जा सकती है। लेकिन जान चली जाए तो...तो वह तो फिर वापस नहीं आएगी। क्यों डॉक्टर। मैं...।"

डॉक्टर शिवचरण ने व्याकुल भाव में टोका।

"मैं आपकी हालत समझ रहा हूं। लेकिन मैं मजबूर हूं। गारंटी के साथ आपके सिर का ऑपरेशन करके गोली नहीं निकाल सकता। बचने और मरने के आधे-आधे चांस हैं।"

"नहीं डॉक्टर।" बेदी दबे स्वर में चीखा—"अभी मेरे मरने की बात मत करो। मैं मरना नहीं चाहता। जीना चाहता हूं। बहुत लम्बा, बहुत ज्यादा जीना चाहता हूं। इस छोटी सी उम्र में मेरी जान मत लो। मत लो।" कहते-कहते बेदी फफक उठा। आंखों से आंसू बह निकले।

डॉक्टर शिवचरण उसे देखता रहा। बोला कुछ नहीं।

बेदी को ऐसा लग रहा था जैसे उस पर पहाड़ टूट पड़ा हो। उसकी आत्मा को किसी ने मुट्ठी में पकड़कर भींच दिया हो। सारी दुनिया अंधेरी हो गई हो। सब कुछ जैसे अंत पर आकर ठहर गया हो।

कई पलों तक उनके बीच खामोशी रही।

बेदी ने आंखों से बहते आंसू पोंछे।

"डॉक्टर साहब, आखिर कोई तो रास्ता होगा कि, सिर में फंसी गोली निकाली जा सके।" बेदी ने भर्राए स्वर में कहा—"मौत का बोझा सिर पर उठाकर, मैं कैसे जी सकता हूं।"

डॉक्टर शिवचरण ने व्याकुलता से सिर हिलाया।

"अगर गोली न निकाली गई तो करीब दो महीने बाद गोली का जहर खुद-ब-खुद सिर के भीतर ही भीतर फैलना शुरू हो जाएगा और दिमाग तक पहुंचते ही जिंदगी खत्म कि...।"

"नहीं डॉक्टर। मैं मरना नहीं चाहता।" बेदी चीखा।

"मेरी बात सुनते रहो। हो सकता है गोली अपनी जगह छोड़ दे। ऐसा होते ही चौबीस घंटों में आपकी मौत हो जाएगी। उस...।"

"डॉक्टर-डॉक्टर।" बेदी गला फाड़कर चीखा—"मैं जितना मौत से दूर भागने की कोशिश कर रहा हूं तुम उतना ही मुझे मौत—मौत की याद दिलाते जा रहे हो। खामोश रहो। भगवान के लिए चुप हो जाओ।"

डॉक्टर शिवचरण ने, बेदी की आंखों में देखा। वहां चमकते पानी को देखा।

"मिस्टर विजय। मेरे खामोश होने से आप बच जाएंगे।"

बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"मैंने आपको बताना बेहतर समझा कि आपके साथ कब, कहां कैसे हो सकता है।"

"प्लीज डॉक्टर।" बेदी का स्वर कांप रहा था—"आप—आप मुझे यह बताइए, सिर्फ यह बताइए कि मैं कैसे बच सकता हूं। मेरी जिंदगी मुझसे दूर हो गई है। उसे फिर से कैसे करीब ला सकता हूं।"

"आपके सिर में फंसी गोली तो कोई भी सर्जन निकाल सकता है। मैं भी, दूसरा भी। कोई भी। लेकिन सौ प्रतिशत की गारंटी कोई नहीं दे सकता कि वह सफलता से ऑपरेशन कर देगा।"

"अ...आपका मतलब कि मैं नहीं बच पाऊंगा। मैं...मैं...।" बेदी का चेहरा निचुड़ गया था।

"सिर्फ एक ही डॉक्टर गारण्टी के साथ तुम्हें बचा सकता है। मेरी निगाहों में उसके द्वारा ऑपरेशन करना ही, गारण्टी का दूसरा नाम है।"

"कौन-सा डॉक्टर? कौन? कहां रहता है वह? बताओ मुझे डॉक्टर, बताओ, वह कहां है?" बेदी पुनः गला फाड़ कर चीख उठा—"मैं मरना नहीं चाहता। मुझ बचा लो डॉक्टर।"

"तुम्हारे सिर का सफलता से ऑपरेशन करके, दिमाग में फंसी गोली को सिर्फ डॉक्टर वधावन ही निकाल सकता है। वह तुम्हें बचा सकता है। जिस जिन्दगी से तुम्हें प्यार है। वह तुम्हें वही दे सकता है। उसकी उंगलियों में जादू है। कहने वाले तो कहते हैं कि वह आंखें बंद करके ऑपरेशन करता है, लेकिन कामयाब रहता है।"

विजय बेदी का चेहरा खुशी से भर उठा।

"थैंक्यू डॉक्टर। थैंक्यू-थैंक्यू। मेरी जान बचाने का बहुत-बहुत शुक्रिया। अब मैं बच जाऊंगा। मुझे कुछ नहीं होगा। मैं बच जाऊंगा।" खुशी से कहते-कहते एकाएक विजय बेदी ठिठका—"वह-वह डॉक्टर वधावन रहता कहां है?"

"पहले डॉक्टर वधावन अमेरिका में प्रैक्टिस करता था। तीस साल उसने अमेरिका में बिताए। लेकिन पिछले तीन सालों से वह हिन्दुस्तान में है। इसी शहर में है और अब यहीं प्रैक्टिस करता है। अमेरिका हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ आया है। सुनने में आया है कि वह अपना अन्तिम वक्त अपनी जन्मभूमि पर ही बिताना चाहता है।"

"आप उसका पता बताइए।"

डॉक्टर शिवचरण ने एक कागज पर डॉक्टर वधावन का पता लिख दिया।

बेदी ने पते वाला कागज देखा। पढ़ा। खुशी-खुशी उसे जेब में डाला।

"ठीक है डॉक्टर। अब मैं बच जाऊंगा।" बेदी के स्वर में विश्वास भरा पड़ा था।

"लेकिन मैं तुम्हें डॉक्टर वधावन के बारे में कुछ बताना चाहूंगा।"

"क्या?"

"वधावन बहुत खर्चीला डॉक्टर है। आम इंसान उसके पास जाने का हौसला भी नहीं कर सकता।"

"मैं समझा नहीं।"

"अगर तुम डॉक्टर वधावन से अप्वाइंटमेंट लेते हो तो वधावन से बात करने से पहले उसके असिस्टेंट को अप्वाइंटमेंट की फीस तीस हजार रुपया जमा करानी होगी। वह तीस हजार, वधावन के उस वक्त की कीमत होगी जो वह तुम्हें देगा। तुम्हारे साथ अपनी बात वह दो मिनट में भी खत्म कर सकता है और बीस मिनट में भी।"

"ओह!"

"ऑपरेशन करने की उसकी कम से कम फीस बारह लाख रुपये हैं।"

"बारह लाख?" बेदी हक्के-बक्के अंदाज में बोला।

"हां। जबकि यह ऑपरेशन कोई दूसरा डॉक्टर पच्चीस-पचास हजार में भी कर दे। लेकिन उसमें तुम्हारे बच पाने की पूरी गारंटी

शामिल नहीं होगी। जबकि वधावन बारह लाख लेकर ऑपरेशन करेगा तो पूरी गारंटी होगी। यूं समझ लो कि पचास हजार ऑपरेशन के और साढ़े ग्यारह लाख वह गारंटी देने के लेता है।''

''यह तो सरासर गलत बात है।''

''वधावन के अपने उसूल हैं। वह बहुत सख्त डॉक्टर है। किसी के लिए भी अपने उसूल नहीं तोड़ता। सुनने में आया है कि उसकी फीस में से एक रुपया भी कम हो तो वह ऑपरेशन नहीं करता और यह भी तय है कि कम से कम हिन्दुस्तान में उससे बड़ा और सफल सर्जन दिमाग के ऑपरेशन के मामले में दूसरा नहीं। तुम जिन्दा रहना चाहते हो। चाहते हो कि इस गारंटी के साथ ऑपरेशन हो कि गोली दिमाग से निकल जाए तो, तुम्हें वधावन से ही ऑपरेशन कराना चाहिए। शक की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी और तुम जिन्दा रहोगे।''

''लेकिन बारह लाख मैं कहां से लाऊंगा।''

''यह तुम जानो।''

बेदी, डॉक्टर शिवचरण को देखता रहा।

''मैं डॉक्टर वधावन से मिलूंगा।'' बेदी ने एकाएक सिर हिलाकर कहा।

''किस वास्ते?''

''शायद वह मुझ गरीब पर दया कर दे और पचास-सत्तर हजार में ऑपरेशन कर दे।''

डॉक्टर शिवचरण मुस्कराया।

''बहुत गलत सोच रहे हो। मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूं कि वह एक रुपया कम नहीं करता और पचास-सत्तर कहकर तुम तो उसके मुंह पर चांटा मारने वाली बात कह रहे हो। याद रखो, उससे अप्वाइंटमेंट लेनी है तो तब भी तुम्हें तीस हजार रुपया पहले जमा कराना होगा। पैसे के मामले में वह विशुद्ध बिजनेसमैन है। उसे डॉक्टर तब समझना जब उसकी पसन्दीदा फीस उसे हासिल हो जाए। हिन्दुस्तान में बहुत पैसा है। इतनी फीस देने वाले भी बहुत हैं। डॉक्टर वधावन की दुकानदारी बढ़िया चल रही है। ऐसे में वह उस इंसान का क्यों ऑपरेशन करेगा, जो उसकी अप्वाइंटमेंट की फीस भी न दे सके।'' डॉक्टर शिवचरण बरबस ही मुस्करा पड़ा।

बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा।

''मैं डॉक्टर वधावन से जरूर मिलूंगा।''

''जो मन में आए करो। मैंने तुम्हें सफल ऑपरेशन का रास्ता बता दिया है।'' डॉक्टर शिवचरण बात खत्म करने वाले ढंग में कह उठा—''तुम जिन्दा रहो। भगवान तुम्हारी सहायता करे। मैं यही शुभकामना दे सकता हूं।''

बेदी को मन ही मन इतनी तो तसल्ली थी कि बचने का कोई रास्ता मिला। मन ही मन उसे विश्वास था कि डॉक्टर वधावन को ऑपरेशन के लिए तैयार कर लेगा, कम पैसों में ही।

''थैंक्यू डॉक्टर।'' बेदी उठता हुआ बोला—''थैंक्यू, अब मैं बच जाऊंगा।''

डॉक्टर शिवचरण से मिलकर बेदी बाहर निकला। मन इसी उधेड़बुन में था कि आगे क्या होगा?

❑❑

उदयवीर के बाद शुक्रा भी अपने चुटकलों पर आ गया था। सब हंस रहे थे। परन्तु बेदी चुप-चुप सा था। उसकी सोचों में गोली—बारह लाख और डॉक्टर वधावन थे।

वह सब हस्पताल से बाहर आ चुके थे।

''एक डॉक्टर ने अपने पुराने रोगी से कहा कि उसकी तबीयत ठीक लग रही है। तो जानते हो रोगी क्या बोला।''

''क्या?''

''रोगी ने कहा कि इस बार आपने जो दवा दी थी, उस शीशी पर लिखी हिदायत का पूरा पालन किया।''

''मतलब?''

''शीशी पर लिखा था, ढक्कन को हमेशा कसकर बंद रखें। दवा को हवा न लगे।''

सब जोरों से हंस पड़े।

एम्बेसेडर में जा बैठे।

तभी राघव बोला।

''मैं अपने स्कूटर पर चलता हूं।''

''ठीक है।'' उदयवीर बोला—''मेरी खटारा में बैठने की तेरी औकात नहीं है।''

राघव ने मुंह बनाया, बाकी हंसे। एम्बेसेडर आगे बढ़ गई।

बेदी खामोशी से, परेशान सा बैठा खिड़की के बाहर देखे जा रहा था।

❑ ❑

उदयवीर ने कार बेदी के फ्लैट के सामने रोकी। परन्तु सोचों में गुम, बेदी वैसे ही बैठा रहा। अंजना ने उसका कंधा थपथपाया।

"कहां खोए हुए हो?"

"ओह!" बेदी को जैसे होश आया—"कहीं नहीं। यूं ही सोच रहा था।"

"तुम्हारा फ्लैट आ गया।"

"ओह! मुझे ध्यान ही नहीं रहा।"

"तबीयत तो ठीक है?" शुक्रा ने पूछा।

"हां। कुछ थकान सी है। शायद कमजोरी। आराम करके ठीक हो जाऊंगा।" बेदी कार का दरवाजा खोलते हुए बोला।

"किसी चीज की जरूरत पड़े तो उदय को फोन कर देना।"

बेदी सिर हिलाकर कार से बाहर निकल आया।

"ओ.के. डियर।" अंजना मुस्कराकर बोली—"मैं कल आऊंगी।"

बेदी ने सहमति से सिर हिलाया।

उदयवीर ने कार आगे बढ़ा दी।

लॉक खोलकर बेदी ने अपने फ्लैट में प्रवेश किया और टूटे अंदाज में बैड पर जा लेटा आंखें बंद कर लीं। चेहरे पर सोचें और बैचेनी नजर आ रही थीं।

❑ ❑

"मिस्टर विजय बेदी आप ही हैं।"

"जी हां। कहिए।"

बेदी ने साठ साल के उस कमजोर आदमी को देखा। जिसका मुंह पिचका हुआ था। बाल पूरे के पूरे सफेद थे। जिस्म भी थोड़ा सा आगे को झुका हुआ था। उसके हाथ में ब्रीफकेस थमा था।

"मैं शोलापुर से आया हूं।" बूढ़े ने कमजोर स्वर में कहा—"वहां मैं प्लांट लगाने जा रहा हूं। उस प्लांट को लगाने के लिए मुझे तुम्हारे मकान और बंजर जमीन की जरूरत है। उसे बेचना चाहोगे?"

"नहीं।" बेदी ने लापरवाही से कहा।

"क्यों?"

"उस मकान की जो थोड़ी सी कीमत मिलेगी। उसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम पच्चीस हजार दे दोगे या पचास

दे दोगे। ज्यादा दानी निकले तो लाख।"

"आपका कहना ठीक है। लेकिन उस जगह की हमें सख्त जरूरत है। नहीं तो हमारा काम पूरा नहीं होता। इसलिए उसकी आपको मुंहमांगी कीमत भी दी जा सकती है। बोलो, क्या मांगते हो?"

बेदी का दिमाग तेजी से दौड़ा। उस मकान को बेचने की उसे कोई जरूरत नहीं थी। क्योंकि वह जानता था कि उसका कुछ नहीं मिलने वाला। अगर इसे उस जगह की वास्तव में सख्त जरूरत है तो क्या बारह लाख दे देगा। उसे बारह लाख की जरूरत थी।

"तो क्या सोचा आपने?" बूढ़े की निगाह बेदी के चेहरे पर टिकी।

"जो मैं मागूंगा, वह आप दे नहीं सकेंगे।" बेदी ने कहा।

"मैं जाना-माना उद्योगपति रामजी लाल हूं। तुम बोलो, उस जगह की क्या कीमत लगाते हो?"

"सवाल जमीन के दाम का नहीं, मेरी जरूरत का है। और मुझे बारह लाख की जरूरत है।"

"ठीक है। मैं तुम्हें बारह लाख दे देता हूं।"

बेदी ने हैरानी से उसे देखा।

"अ...आप बारह लाख दे रहे हैं।" उसके होंठों से अविश्वास भरा स्वर निकला।

जवाब में उसने ब्रीफकेस खोला जो नोटों की गड्डियों से भरा पड़ा था। उसने पांच-पांच सौ की नोटों की गड्डियों का ढेर बेदी के सामने लगा दिया।

बेदी फटी-फटी आंखों से गड्डियों को देखे जा रहा था।

"यह पूरे बारह लाख हैं।"

"क्या?"

हक्के-बक्के से बेदी का मुंह खुला का खुला ही रह गया। किस्मत उस पर मेहरबान थी। बारह लाख मिल गया। इन पैसों से वह डॉक्टर वधावन से सिर का ऑपरेशन करा कर, उसमें फंसी गोली को निकलवा लेगा। जो मौत बनी हर पल उसके साथ चल रही है। सब ठीक हो गया। वह तो खामखाह ही चिन्ता कर रहा था। ऊपर वाले ने तकलीफ दी तो निकलने का रास्ता भी दे दिया।

तभी बेदी को लगा कोई जोर-जोर से उसके मस्तिष्क को

ठकठका रहा है। जब वह ठकठकाहट नहीं रुकी, तो वह एक झटके के साथ, गहरी नींद से निकलकर, बैड पर उठ बैठा। उसे ध्यान आया कि वह गहरी नींद में था। सपना देख रहा था। बारह लाख तो क्या, उसे बारह रुपये भी नजर नहीं आए।

बाहर कोई दरवाजा थपथपा रहा था।

बेदी का चेहरा बुझ सा गया। कितना खुश था, बारह लाख मिलने पर। अगर वह सपना न होकर हकीकत होता तो कितना अच्छा होता।

बाहर अंजना थी। क्योंकि अब उसके पुकारने की आवाजें भी आने लगी थीं।

बेदी बैड से उतरा और थके अंदाज में आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

उस पर निगाह पड़ते ही अंजना ने झल्ला कर कहा।

"नींद की गोलियां खाकर सो रहे थे क्या? कितनी देर बैल बजाती रही। आवाजें देती रही। पड़ोसी बाहर आ गए। लेकिन तुम तक कोई आवाज नहीं पहुंची। ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ।"

बेदी ने कुछ नहीं कहा और पलट कर कुर्सी पर जा बैठा। आंखें बंद कर ली।

अंजना ने गहरी निगाहों से उसे देखा फिर आगे बढ़कर दोनों हाथों में विजय का चेहरा थामा और नीचे झुककर गालों पर प्यार किया।

"विजय डियर।" अंजना बगल में पड़ी कुर्सी पर बैठती हुई बोली—"क्या बात है। परेशान क्यों हो?"

बेदी खामोश रहा।

अंजना हाथ बढ़ाकर उसके बालों में उंगलियां फिराने लगी।

"बताओ डियर। क्या बात है। मेरे होते हुए तुम्हें परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। बोलो क्या बात...।"

बेदी की आंखों से आंसू बह निकले।

"विजय।" अंजना तड़प उठी।

बेदी फफक-फफक कर रो पड़ा।

"विजय। बोलो तो, क्या बात है। मुझे बताओ। तुम्हें रोते देखकर मेरी जान निकली जा रही है।" अंजना ने तड़पकर बेदी का सिर अपने सीने पर रख लिया—"कुछ तो बोलो, हुआ क्या?"

"मैं...मैं।" बेदी अपने आंसुओं पर काबू पाता कह उठा—"मैं मर जाऊंगा अंजना।"

"मर जाओगे। पागल हो गए हो, जो ऐसी बातें कर रहे हो।" अंजना ने उसका सिर चूमा।

"मैं सच कहता हूं अंजना।" उसके सीने से सिर उठाकर बेदी, आंसुओं से भरी आंखें साफ करता हुए भर्राए स्वर में कह उठा—"मौत हर वक्त मेरे साथ चिपकी हुई है। मैं जिन्दा लाश बना हुआ हूं।"

अंजना ने गहरी निगाहों से विजय को देखा।

"मैं...मैं शायद तुम्हारे लायक भी नहीं रहा।"

"पागल हो गए हो तुम। दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा। ऐसा क्या है जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो।"

बेदी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला कि एकाएक उसके सिर में पीड़ा की तीव्र लहर उठी। उसके बदन में जोरों का कम्पन हुआ। दोनों हाथों से उसने सिर को जोरों से पकड़ लिया। होंठ भिंच गए। पीड़ा के कारण चेहरा लाल सुर्ख हो उठा। वह तड़प कर कुर्सी से नीचे जा गिरा।

"विजयऽऽऽ।" अंजना के होंठों से चीख निकली। वह तुरन्त बेदी की तरफ लपकी।

फर्श पर तड़पते बेदी को उसने बांहों में लेना चाहा।

"तुम्हें क्या हो गया है विजय। क्या हुआ, होश में आओ। मेरी जान मत लो। मैं...।"

तभी देखते ही देखते बेदी की हालत सामान्य होने लगी। जिस तरह हालत बिगड़ी थी। ठीक वैसे ही फौरन हालत में सुधार हो गया। फर्श पर पड़ा वह गहरी-गहरी सांसें ले रहा था। यह बात फौरन उसके मस्तिष्क में आ गई थी कि सिर में फंसी गोली की वजह से ही सिर में पीड़ा का तूफान उठा था कि उसे कुछ भी होश नहीं रहा था। वरना ऐसा दर्द होने की, कोई और वजह नहीं थी।

❑❑

बेदी बैड पर तकिए के सहारे अधलेटा सा था। अंजना ने उसे चाय बनाकर दी थी। छोटे-छोटे घूंट भर रहा था वह चाय के। चेहरा कुछ कमजोर सा लग रहा था। आंखों में भरी निराशा स्पष्ट नजर आ रही थी। चेहरे पर भी ऐसे भाव थे जैसे उसका सब कुछ खत्म हो गया हो।

अंजना पास ही बेड पर बैठी एकटक उसे देख रही थी।

कमरे में खामोशी थी। बेदी, अंजना को सिर में फंसी गोली और बारह लाख के बारे में बता चुका था कि अगर दो महीने के भीतर गोली न निकाली गई तो, फिर वह बच नहीं सकेगा।

अंजना के चेहरे पर गंभीरता के भाव थे। वह भी उलझन में फंसी लग रही थी।

''अंजना।'' बेदी भारी स्वर में बोला।

''हां।''

''मुझे बचा लो। मैं मर जाऊंगा। भगवान के लिए मुझे बचा लो। मैं मरने से बहुत डरता हूं। बचा लो मुझे।'' कहते-कहते बेदी की आंखों से आंसू बह निकले।

''हौसला रखो विजय। इस तरह हिम्मत छोड़ने से काम नहीं चलेगा। सब ठीक हो जाएगा।'' जबकि अंजना खुद भी नहीं समझ पा रही थी कि कैसे सब ठीक होगा।

''यूं ही तसल्ली दे रही हो।''

''नहीं। मैं सोच रही हूं कि कहीं से बारह लाख का इन्तजाम हो जाए तो सारी दिक्कतें खत्म हो जाएं।''

बेदी, अंजना को देखने लगा।

''तुम्हारे पास कितना पैसा होगा विजय?''

''मेरे पास?'' कुछ पल सोचकर उसने गहरी सांस ली--''गांव की जमीन, बैंक का पैसा और इस फ्लैट को मिलाकर कुल, तीन-चार लाख रुपया होगा। और फौरन जरूरत है बारह लाख की।''

लम्बी सोच के बाद अंजना बोली।

''विजय। मेरे पास कुछ गहने पड़े हैं। उन्हें बेचकर...।''

''कितने के गहने होंगे। दस-बीस-पचास हजार के।'' बेदी गहरी सांस लेकर कह उठा—''इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मुझे अपनी जान बचाने के लिए बारह लाख रुपये की जल्दी से जल्दी जरूरत है।''

''लेकिन इतनी बड़ी रकम का इन्तजाम कैसे हो सकता है विजय।'' अंजना बोली।

''यही तो मैं कह रहा हूं कि अब मेरे पास बचने का कोई रास्ता नहीं। मैं मर जाऊंगा। मैं...।''

''हिम्मत मत हारो डियर। सब ठीक हो जाएगा।''

बेदी की आंखों में आंसू चमक उठे।

''तुमने अपने दोस्तों से बात की।''

''नहीं।''

''क्यों?''

''वक्त नहीं मिला।'' बेदी ने गहरी सांस ली—''अब करूंगा। वह भी सुनकर परेशान होंगे।''

''सब ठीक हो जाएगा। जब सारे बैठेंगे तो कोई न कोई रास्ता तो निकलेगा ही।''

बेदी के चेहरे पर भी ऐसे भाव आए, जैसे सब कुछ ठीक हो जाएगा।

❑❑

कमरे में पुराने पंखे की खड़-खड़ गूंज रही थी।

हालांकि वह पंखा गर्मी और पसीना दूर करने के काबिल नहीं रहा था। परन्तु उसकी आवाज से दिल को इस बात की तो तसल्ली थी कि छत पर लटका पंखा घूम रहा है।

उदयवीर कुर्सी पर बैठा, उंगली में चाबी का छल्ला फंसाए घुमा रहा था।

राघव एक टायर पर बैठा, सामने ढेर लगे पुराने टायरों को देखे जा रहा था।

शुक्रा कश लेता वहां टहल रहा था।

बेदी नीचे चटाई बिछाए उस पर लेटा बारी-बारी सबको देख रहा था। यह खामोशी लम्बी होती जा रही थी और लग रहा था जैसे पंखे की खड़-खड़ तेज हो गई हो।

''विजय।'' उदयवीर गम्भीर स्वर में कह उठा—''तू फिक्र न कर। तेरा ऑपरेशन होगा। तू ठीक हो जाएगा। मैं अपना गैराज और जो भी है। सब कुछ बेच दूंगा। हम बारह लाख इकट्ठा कर लेंगे।''

''विजय को बचाने के लिए मैं बिजली की दुकान बेच दूंगा।'' राघव कह उठा।

शुक्रा ठिठका। उसने सब पर नजर मारी, फिर गहरी सांस लेकर कह उठा।

''मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। बेचने के लिए। खाली हूं। एक महीने की एडवांस तनख्वाह ही ले सकता हूं मोटर ड्राइविंग कालेज से। जहां लोगों को ड्राइविंग सिखाने का काम करता हूं।''

बेदी ने लेटे ही लेटे सब पर निगाह मारी।

''उदय।'' बेदी ने भारी स्वर में कहा—''तू अपना गैराज

बेचेगा तो, बड़ी बहन के हाथ कैसे पीले करेगा। जिसका सपना तू कब से देख रहा है। ऊपर से तेरी मां की बीमारी। उसके इलाज में भी तो पैसा लगता है। गैराज नहीं रहेगा तो, यह सब कैसे होगा। सोच कर बात किया कर कि...।''

उदयवीर के चेहरे पर गंभीरता के भाव थे।

''विजय। तेरी बात ठीक है। मैं मानता हूं कि गैराज के दम पर ही मेरे घर की गाड़ी चल रही है। सब कुछ मैंने गैराज से होने वाली कमाई पर ही करना है। लेकिन इन सबसे जरूरी तेरी जिन्दगी है। तू तलवार की धार पर बैठा है। गोली अपनी जगह से हिली और तेरी जान खत्म।''

''उदय।'' बेदी ने कस कर आंखें बंद कर लीं—''भगवान के लिए मरने वाली बातें मत कर।''

''हमें तेरी जान बचानी है विजय।'' राघव बोला—''इसलिए छोटी-छोटी बातों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। तू बच गया तो यह सब तो हम फिर भी बना लेंगे।''

शुक्रा ने कश लेकर सहमति से सिर हिलाया।

''दोनों ठीक कह रहे हैं विजय। पहले तेरी जान। बाकी बातें बाद की हैं।''

बेदी चटाई पर सीधा होकर बैठ गया। चेहरे पर परेशानी और तनाव नाच रहा था।

''लेकिन ऐसा करने से भी मेरी समस्या हल नहीं होगी।''

''वो क्यों?''

''मेरे पास तीन-चार लाख रुपया है। क्यों राघव, तेरी दुकान कितने की बिकेगी?'' बेदी ने उसे देखा।

''छोटी सी दुकान है। लाख-डेढ़ लाख तो मिल जाएगा।''

बेदी ने उदयवीर को देखा।

''और तुम्हारा गैराज—कितनी कीमत लगाते हो इसकी?''

''गैराज की हालत, काम की हालत देखते हुए ढाई लाख से ज्यादा नहीं बिकने वाला।'' उदयवीर बोला।

''ढाई—डेढ़—तीन-चार लाख। मतलब कि कुल मिलाकर इकट्ठा हुआ सात-आठ लाख। जब इन्तजाम किया जाएगा तो जल्दबाजी में बेचने के चक्कर में, लाख-पचास हजार कम भी हो सकता है।'' शुक्रा गम्भीर स्वर में कह उठा—''जबकि ऑपरेशन के लिए कम से कम बारह लाख की फौरन जरूरत है।''

शुक्रा की बात पर वहां खामोशी छा गई।

विजय बेदी का चेहरा बेजान सा नजर आने लगा।

''एक बात समझ में नहीं आ रही।'' राघव बोला।

''क्या?''

''सिर के ऑपरेशन के लिए बारह लाख बहुत ज्यादा है। यह फीस हुई कि लूट।''

''हर डॉक्टर के अपने रेट होते हैं। फिर डॉक्टर वधावन काबिल डॉक्टर है। वह सफल ऑपरेशन करने की गारंटी लेगा। जबकि दूसरे डॉक्टर ऐसी कोई गारंटी नहीं लेंगे।'' शुक्रा बोला—''किसी और डॉक्टर से ऑपरेशन करा कर, मौत का खतरा मोल नहीं लिया जा सकता।''

''शुक्रा ठीक कहता है।'' उदयवीर कह उठा।

''बात फिर वहीं आ गई है कि बारह लाख का इंतजाम कैसे होगा?'' शुक्रा कह उठा।

''सोचते हैं। कहीं न कहीं से तो इंतजाम करना ही होगा।'' उदयवीर गंभीर स्वर में कह उठा।

एकाएक बेदी उठ खड़ा हुआ।

''क्या हुआ।'' राघव ने उसे देखा।

''मैं अपने ऑफिस से बात करता हूं। शायद वहां से किसी तरह का लोन मिल सके।'' बेदी का स्वर बेचैन था।

''ओह।'' उदयवीर ने कहा—''इस तरफ तो हमने सोचा भी नहीं था।''

बेदी बाहर निकलता चला गया।

तीनों की गम्भीर निगाहें एक-दूसरे से मिलीं।

''मुझे नहीं लगता कि विजय को ऑफिस से इतना लोन मिल सके कि ऑपरेशन हो जाए।'' शुक्रा बोला।

''क्यों?''

''वो प्राइवेट कम्पनी है। उनकी अपनी सीमाएं हैं और विजय वहां सिर्फ सेल्समैन है। अगर बड़ा ऑफिसर होता तो आशा भी की जा सकती थी, ज्यादा पैसा मिलने की।'' शुक्रा ने गहरी सांस लेकर कहा।

''तो फिर—फिर क्या होगा।''

शुक्रा ने दोनों के चेहरों को देखा फिर पक्के स्वर में कह उठा।

''हम विजय को इस तरह मरने नहीं दे सकते। कैसे भी हो। पैसे का इंतजाम तो करना ही होगा।''

❑ ❑
प्राणनाथ मल्होत्रा ने अजीब सी निगाहों से बेदी को देखा।
"क्या कहा तुमने?"
"सर।" बेदी धीमे स्वर में कह उठा—"मुझे बारह लाख रुपया लोन चाहिए।"
"बारह लाख।" प्राणनाथ मल्होत्रा के होंठों से निकला—"इस ब्रांच का मैनेजर होने के बावजूद भी मुझे बारह लाख नहीं मिल सकता। फिर तुम्हें इतना बड़ा लोन कैसे मिल जाएगा।"
"सर। मेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है।" बेदी का स्वर भर्रा उठा—"सिर में फंसी गोली दो महीनों में मेरी जान ले लेगी। अगर इसे ऑपरेशन करके न निकलवाया गया।"
"विजय। मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूं। लेकिन...।"
"प्लीज सर।" बेदी ने अपने कांपते हाथ जोड़े—"कुछ तो कीजिए। मैं...।"
"सॉरी। मैं तुम्हें अंधेरे में नहीं रखना चाहता।" प्राणनाथ मल्होत्रा गम्भीर स्वर में कह उठा—"ज्यादा से ज्यादा, तुम्हें लाख-डेढ़ लाख का लोन ही दिलवा सकता हूं। यूं समझो कि यह भी ज्यादा कह गया। तुम तो अच्छी तरह जानते हो कि कम्पनी भी अपने कायदों से बंधी है। हर बात का सिस्टम होता है।"
"सर।" बेदी भर्राए स्वर में कह उठा—"पिछले पांच सालों से मैंने दिलो-जान से कम्पनी की सेवा की है। मेरा रिकॉर्ड देख लीजिए। कम्पनी की ज्यादा से ज्यादा सेफ मैंने बिकवाई हैं। आपकी यह ब्रांच सेल के मामले में दूसरे नम्बर पर आ चुकी है। इसमें मेरी बहुत बड़ी मेहनत है सर।"
"मैं...।"
"कम्पनी के पास पैसे की कमी नहीं है। बारह लाख मामूली रकम है कम्पनी के लिए। वह...।"
"बच्चों जैसी बातें मत करो। तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि तुम हवाई बात कर रहे हो। धरातल पर रह कर बात करो। कम्पनी के पास पैसा है तो वह किसी एक इंसान का नहीं है। बहुतों का है। कम्पनी का है। एक-एक पैसे का हिसाब रखा जाता है। सॉरी विजय—मैं मजबूर हूं। इतना पैसा तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं मिल सकता। चाहो तो खुद ही ऊपर वालों से बात कर सकते हो।"

आंखों में गीलापन लिए बेदी, प्राणनाथ मल्होत्रा को देखता रहा।
"विजय।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने बेचैन स्वर में कहा—"भगवान पर भरोसा रखो। वह जरूर कोई रास्ता निकालेगा मैं तुम्हारे दिल की हालत समझ रहा हूं कि...।"
"सर।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"आप मुझे पांच लाख दिला दीजिए।"
"पांच लाख?"
"हां। बाकी का सात लाख मैं किसी तरह से इकट्ठा...।"
"सॉरी। मेरे बस में लाख-डेढ़ लाख ही है। इससे ज्यादा कम्पनी तुम्हें पैसा नहीं दे सकती। तुम...।"
"सर मैं दिन-रात मेहनत करके सारा पैसा चुका दूंगा। मैं...।"
"मेरी अपनी भी सीमाएं हैं।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने समझाने वाले ढंग में कहा—"अगर मैं तुम्हारे लिए इससे ज्यादा कर सकता तो, यकीनन मुझे खुशी होती। पब्लिक के दम पर चल रही कम्पनी कभी भी इतना पैसा नहीं दे सकती। तुम्हारे दुख को मैं समझ रहा हूं। परन्तु मेरे हाथ बंधे हैं। बार-बार कह कर मुझे शर्मिन्दा मत करो।"
❑ ❑
बेदी, बगल की इमारत में मौजूद बैंक में पहुंचकर मैनेजर से मिला।
"सर।" बेदी, बैंक मैनेजर से बोला—"जब इस बैंक में डाका पड़ रहा था, तभी मुझे गोली लगी।"
"तो?" बैंक मैनेजर के माथे पर बल पड़े।
"मेरा मतलब है उस वक्त मैं बैंक में प्रवेश करने की चेष्टा कर रहा था, जब मुझे गोली मारी गई।"
"तो फिर मैं क्या करूं?" मैनेजर ने उखड़े स्वर में कहा।
"मैं अगर बैंक नहीं आता तो यह सब मेरे साथ न होता। मैं...।"
"सुना-सुना—लेकिन तुम मेरे पास क्यों आए हो, यह बताओ।"
"वह गोली अभी भी मेरे दिमाग के ठीक बीचोंबीच फंसी हुई है।"
"तो मैं क्या डॉक्टर हूं। डॉक्टर के पास जाओ और गोली निकलवा लो।"

''वह, वह डॉक्टर फीस मांगता है।'' बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

''तो तुम क्या समझते हो वह मुफ्त में तुम्हारा ऑपरेशन करेगा। पैसे तो वह लेगा ही।''

''बारह लाख रुपये मांगता है।''

''बारह लाख मांगे या बारह करोड़। यह सब मुझे क्यों सुना रहे हो?'' मैनेजर झल्लाया।

''सर इसी बैंक में मुझे गोली लगी है। जिसकी वजह से इस वक्त मैं मरा-मरा घूम रहा हूं। ऐसे में मेरे ऑपरेशन का खर्चा आपके बैंक को देना चाहिए कि...।''

''लगता है दिमाग में फंसी गोली ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है।'' मैनेजर ने तीखे स्वर में कहा—''यह सरकारी बैंक है। दुकान नहीं। तुम अगर बैंक कर्मचारी होते तो जुदा बात थी। बाहर के लोगों का बैंक ने ठेका नहीं ले रखा। शाम के चार बजे बैंक में आने का कौन-सा वक्त होता है।''

''वो—वो सर...।''

''देखो नौजवान।'' मैनेजर ने बात समाप्त करने वाले ढंग में कहा—''तुम्हें फूटी कौड़ी भी नहीं मिलने वाली। अपना और मेरा वक्त खराब मत करो। ज्यादा ही उछल-कूद करने का मन कर रहा है तो बैंक पर केस ठोक दो। जो होगा, अदालत में बात हो जाएगी। तुम्हारा वकील तेज हुआ तो तुम्हें बारह लाख दिलवा देगा, नहीं तो बात खत्म। आठ-दस साल तो केस चलेगा ही। उसके बाद...।''

''आठ-दस साल।'' बेदी के होंठों से निकला।

''क्यों—क्या हुआ?''

''सर, डॉक्टर ने कहा है अगर गोली न निकाली गई तो दो महीने से ज्यादा मेरी जिंदगी नहीं है।''

''यह तो बहुत बुरा हुआ। फिर तो तुम केस करने के भी काबिल नहीं हो।'' मैनेजर मुस्कराया।

''आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।''

''ऐसी बात नहीं है। मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हूं कि तुम बेकार की जगहों पर भागादौड़ी कर रहे हो। यही वक्त ठीक जगह पर कोशिश करने में लगाओ तो, शायद कुछ हासिल भी हो जाए।''

बेदी के चेहरे पर गुस्सा नाचने लगा।

''कोशिश तो मैं ठीक जगह कर रहा हूं।''

''वह कैसे?''

''आपकी ब्रांच में बहुत पैसा रहता है।'' बेदी शब्दों को चबाकर बोला।

''सरकारी पैसा है।''

''पैसा किसी का सगा नहीं होता। सरकारी नहीं होता। किसी इंसान का नहीं होता। वह सिर्फ पैसा होता है।'' बेदी ने दांत भींचकर कहा—''अगर कहीं से बारह लाख का इंतजाम न हुआ तो यहीं आऊंगा।''

''डकैती डालने?'' बैंक मैनेजर ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा।

''हां। डकैती डालने।'' दांत भींचकर कहने के साथ ही बेदी पलटा और केबिन से बाहर निकल गया।

❑❑

एक ही दिन में बेदी बरसों पुराना मरीज लगने लगा था। आज तो कपड़े भी बदलने का ख्याल नहीं रहा था। कल के कपड़े, अब मैले से हो रहे थे।

बारह लाख की सख्त जरूरत है।

सिर में फंसी गोली अपनी जगह से फिसल गई तो वह मारा जाएगा। ऐसा कुछ नहीं भी हुआ तो डॉक्टर के मुताबिक उस जगह पर दो महीने से ज्यादा देर गोली फंसी की फंसी नहीं रह सकती।

यानी कि हर हाल में ऑपरेशन होना, जल्दी होना जरूरी था।

इन्हीं सोचों में वह फुटपाथ पर लोगों की भीड़ का हिस्सा बना, आगे बढ़ा जा रहा था।

''इस तरह बारह लाख नहीं मिलेंगे। उसे कहीं चोरी करनी होगी। चोरी?'' बेदी बड़बड़ाया।

अगले ही पल बेदी को अपना गला खुश्क होता हुआ महसूस हुआ। चोरी कर पाएगा वह। इतनी काबिलियत है उसमें? भय के कारण अपने हाथों में कम्पन सा महसूस हुआ।

नहीं। यह ख्याल खामखाह ही उसके दिमाग में आ गया। वह भला चोरी कैसे कर पाएगा। वह सेल्समैन है। चीज बेचनी हो, किसी को टिकानी हो तो उसके लिए मामूली काम है। लेकिन चोरी, यह गलत ख्याल उसके मन में कैसे आ गया?

कोशिश करनी चाहिए उसे। एक ही दिन में हिम्मत हारना तो बेवकूफी है। दुनिया में आए दिन कोई न कोई करिश्मा होता

है। उसके साथ भी शायद कोई करिश्मा हो जाए। बारह लाख की ही तो बात है। करिश्मे के साथ उसे बारह लाख मिल भी तो सकता है।

इन सोचों के साथ उसकी हिम्मत बंधी कि सब ठीक हो जाएगा।

सड़ती गर्मी और पसीने से बेखबर बेदी परेशान हाल आगे बढ़ता जा रहा था।

❑❑

"तो कम्पनी ने पैसा देने से मना कर दिया।" राघव कह उठा।

"लाख-डेढ लाख से ज्यादा नहीं मिल सकता।" बेदी भारी स्वर में बोला—"इतने का कोई फायदा नहीं।"

"बात तो सही है।" उदयवीर कह उठा।

"सही-गलत छोड़ो।" राघव ने उदयवीर पर नजर मारी—"असल मुद्दा है विजय भाई के सिर से गोली निकलनी चाहिए। यह कब तक मौत अपने साथ लिए घूमता रहेगा।"

"इसी बात का तो इन्तजाम करने में लगे हुए हैं।"

शुक्रा ने उदयवीर को देखा।

"कैसे कर रहे हो इन्तजाम।" शुक्रा कड़वे स्वर में कह उठा—"सोचों में। बातों-बातों में।"

"तो?"

"हकीकत में करो इन्तजाम। कुछ करके, करो इन्तजाम। इन्तजाम करके दिखाओ।" शुक्रा ने शब्द चुकाए।

"शुक्रा ठीक कहता है।" राघव ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस तरह तो हम वक्त बरबाद कर रहे हैं।"

बेदी की बेचैन निगाह बार-बार तीनों के चेहरों पर फिर रही थी।

तभी उदयवीर के गैराज में मौजूद फोन की घंटी बजी। वह सब केबिन से बाहर, शेड के नीचे बैठे थे। आज कोई गाड़ी भी मौजूद नहीं थी गैराज में, जो ठीक हो रही हो। छोकरे कहीं दाएं-बाएं होंगे।

"राघव। तू जाकर फोन पर बोल दे। आज गैराज बंद है। कल गाड़ी ठीक होगी।"

राघव उठा और तेज-तेज कदम उठाता हुआ गैराज में प्रवेश कर गया।

"हैलो।" राघव ने फोन उठाया।

दूसरी तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

"अरे भाई कुछ बोलोगे भी या नहीं।" राघव उखड़े स्वर में कह उठा।

"राघव।" बेहद फुसफुसाती धीमी आवाज कानों में पड़ी।

राघव जोरों से चौंका। अगले ही पल संभला।

"तुम...?" उसके होंठों से निकला।

"हां। विजय का क्या रहा?"

"कुछ खास नहीं।" राघव ने छिपी निगाह केबिन के बाहर मारी, वहां वह तीनों नजर आ रहे थे—"कम्पनी से पैसे मांगने गया था। बात नहीं बनी। बैंक वालों से भी बात हुई। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।"

"मतलब कि कहीं से भी पैसे का इन्तजाम नहीं हो रहा।" वही फुसफुसाती आवाज आई।

"नहीं। और मुझे नहीं लगता कि इन्तजाम होगा।"

"यह बहुत बढ़िया मौका है हमारे पास।"

"कैसा मौका?"

"विजय को भड़काओ। उसे समझाओ कि कहीं से भी पैसे का इन्तजाम नहीं होगा। अगर जिन्दगी बचानी है तो कहीं चोरी करे। डाका मारे। यानी कि कैसे भी पैसे का इन्तजाम करे।"

"लेकिन...।"

"राघव समझा करो। इसी में हमारा फायदा है। आगे की बात बाद में।" इसके साथ ही लाइन कट गई।

राघव ने आहिस्ता से रिसीवर रखा। चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे। केबिन से निकल कर वह वापस पहुंचा तो उदयवीर ने कहा।

"किसका फोन था, जो इतनी देर लगा रहा।"

"मेरे पहचान वाले का था। उसे यहां का नम्बर दे रखा था।" लापरवाही से कहता राघव बैठ गया।

वह सब खामोश ही रहे।

"तो क्या हुआ।" राघव बोला—"बारह लाख के इन्तजाम के बारे में क्या सोचा।"

"मैंने कुछ सोचा है।" शुक्रा गम्भीर स्वर में कह उठा।

"क्या?"

"यही कि बैठे-बैठे, सोचने से कुछ नहीं होने वाला। हाथ-पांव

तो हिलाने ही पड़ेंगे।"

"सीधी बात कर, क्या कहना चाहता है।"

"सीधी बात।" शुक्रा के चेहरे पर कठोरता नाचने लगी—"सीधी बात तो यह है कि हाथ में पकड़ा जाए चाकू और किसी सेठ के घर में घुसकर चाकू उसकी गर्दन पर रखकर, बारह लाख की वसूली की जाए।"

बेदी की आंखों के सामने सेठ पिशोरीलाल की जेवरातों से भरी तिजोरी नाची। परन्तु उसने फौरन ही आंखें बंद कर ली। ऐसा कुछ कर गुजरने का हौसला नहीं था उसमें।

शुक्रा की बात पर उदयवीर चौंका।

राघव की आंखें सिकुड़ीं।

"क्या बकवास कर रहा है तू।" उदयवीर के होंठों से निकला।

"क्यों? इसमें बकवास की बात कहां से आ गई।" शुक्रा ने उदयवीर को घूरा—"विजय की जान बचानी है कि नहीं। उसके सिर से गोली निकलवानी है कि नहीं या इसे मरने के लिए छोड़ दिया जाए और दो महीने बाद इसे आग दिखा दे।"

"नहीं।" बेदी चीख उठा—"तुम लोग क्यों बार-बार मेरे मरने की बात करते हो। चुप हो जाओ।"

तीनों की निगाह बेदी की तरफ उठी।

बेदी का चेहरा लाल सुर्ख हुआ पड़ा था। आंखों में गुस्सा था।

"तुम लोग इसी तरह बातें करते रहोगे और यह इसी तरह, मौत के खौफ में डूबा चीखते-चीखते अपनी जान गंवा देगा।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा—"कुछ करना है तो करो। बातें मत करो।"

कई पलों तक वहां खामोशी रही, जिसे राघव ने तोड़ा।

"शुक्रा ठीक कहता है। इस रास्ते के अलावा, पैसों के इन्तजाम होने का कोई और रास्ता नहीं है। लेकिन ऐसे काम करने की हम लोगों की हिम्मत भी तो नहीं है।"

बेदी उखड़ा-सा, बारी-बारी तीनों के चेहरे पर निगाहें दौड़ाए जा रहा था।

❑❑

सूरज डूब चुका था।

अंधेरा छाने लगा था।

पंछी अपने-अपने घोंसले में लौट आए थे और बेदी अपने फ्लैट पर।

सारा शहर रोशनियों से जगमगा रहा था। परन्तु फ्लैट में उसने रोशनी करने की जरूरत महसूस नहीं की थी। जाने क्यों उसे अंधेरा ही अच्छा लग रहा था। कुर्सी पर बैठा, कश लेते वह अपने बारे में ही सोच रहा था कि अगर वह मर गया तो क्या होगा?

क्या होगा? कुछ भी नहीं होगा।

सब कुछ, सारी दुनिया, उसकी पहचान वाले, सारे ऐसे ही चलते रहेंगे। मौत से बचने के लिए उसे बारह लाख की जरूरत थी। जो कि दूर-दूर तक आता नजर नहीं आ रहा था। जाने क्यों उसे सारे रास्ते बंद से नजर आ रहे थे। मौत आने वाली है, यह सोचकर वह बुझे दिए की तरह हो गया था।

दरवाजा खुला ही था।

कदमों की आहट पर उसने सिर घुमाया। कोई भीतर आया। उसने लाइट जलाई।

आने वाली अंजना थी।

अंजना ने गहरी निगाहों से उसे देखा फिर पास आकर दुखी स्वर में बोली।

"घर में अंधेरा क्यों कर रखा है विजय। क्यों दिल छोटा करते हो। सब ठीक हो जाएगा।"

"कुछ ठीक नहीं होगा।" बेदी ने भारी स्वर में कहा—"झूठी बातें कहकर मेरा दिल मत बहलाओ।"

"विजय।" अंजना तड़प कर उसके पास बैठ गई। उसका हाथ हाथों में ले लिया—"तुम ही बताओ कि मैं तुम्हारे लिए ऐसा क्या करूं कि, बारह लाख का इन्तजाम हो सके। बोलो विजय।"

"कोई कुछ नहीं कर सकता। कोशिश करके भी कोई कुछ नहीं कर सकता।"

"भगवान को मानते हो?"

"वैष्णो माता को ज्यादा मानता हूं। दूसरे सब भगवानों को भी मानता हूं।"

"तो उसी वैष्णो माता पर भरोसा रखो। सब ठीक हो जाएगा। किसी पर तो भरोसा रखो। खुद ही सोचते हो और खुद ही किसी फैसले पर पहुंच जाते हो। अभी तुम्हारे पास दो महीने हैं। वह...।"

"उन दो महीनों से दो दिन निकल चुके हैं।" बेदी बुझे स्वर में बोला।

"इस तरह दिन मत गिनो विजय। मैं...।"

"ठीक कहती हो तुम। दिन नहीं महीने गिनने में मुझे आसानी होगी। एक महीना। दो महीना। बस। ज़िन्दगी खत्म। खेल खत्म। सब कुछ खत्म। मैं खत्म। मेरी कहानी खत्म।" बेदी गहरी सांस लेकर कह उठा।

"तुम तो हौसला छोड़ चुके हो विजय।" अंजना दुखी स्वर में कह उठी।

"मेरी जगह कोई भी होता तो, वह भी अपना हौसला छोड़ देता। जवान मौत की दहशत ही बहुत होती है।"

अंजना उसे देखती रही। बोली कुछ नहीं।

बेदी ने उसे देखा।

"अंजना।"

"हां।"

"मेरा साथ छोड़ दो। मुझमें अब कुछ नहीं रखा। किसी और से शादी कर लो।" बेदी भारी स्वर में कह उठा।

अंजना इस तरह चौंकी, जैसे बेदी ने उसे चांटा जड़ दिया हो। आंखें फाड़े वह अविश्वास भरी निगाहों से उसे देखने लगी।

"क्या-क्या कहा तुमने?" शायद उसे बेदी के शब्दों पर यकीन नहीं आया था।

"जो तुमने सुना, ठीक सुना है।" बेदी ने उसे देखा।

"मैं-मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि तुम-तुम मुझे ऐसा भी कह सकते हो।" अंजना की आवाज भर्रा उठी—"मैंने-मैंने तो तुम्हें अपना सब कुछ माना है। तुम-तुम...।"

"बात को समझने की कोशिश करो अंजना। पैसे का इन्तजाम कहीं से नहीं हो रहा। मैं हर पल, हर मिनट, हर घंटे मौत की तरफ बढ़ता जा रहा हूं। मैं उस जहाज की तरह हूं जिसके पेंदे में छेद हो चुका है। देर-सबेर में जहाज ने डूबना ही है। मेरे साथ जो भी रहेगा वह भी डूबेगा। मेरी आंखें तो कभी भी बंद हो सकती हैं। अपने लिए कोई अच्छा-सा लड़का तलाश कर लो और...।"

बेदी बात पूरी भी न कर पाया था कि आंखों में आंसू लिए अंजना उसके पास पहुंची और दोनों हथेलियों में उसका चेहरा जकड़ लिया।

"एक बात तो बताओ विजय?"

बेदी सवालिया निगाहों से उसे देखने लगा।

"मानो कि अगर हमारी शादी हो गई होती और तब ये मुसीबत आती तो? क्या तब भी तुम मुझे ऐसा ही कहते। तब भी हम दोनों मिलकर इस मुसीबत से लड़ते। तो अब क्यों नहीं लड़ सकते।"

बेदी ने बेचैनी से पहलू बदला।

"अंजना, ये सब अब बेकार की बातें हैं कि ये होता तो ये हो जाता, नहीं तो ये होता, तो यह हो जाता। इन बातों का अब कोई फायदा नहीं। जो सच है, सिर्फ उसे सामने रखकर बात करनी चाहिए।"

"ठीक है विजय।" अंजना भारी स्वर में कह उठी—"जो भी हो, लेकिन तुम मुझे किसी दूसरे लड़के के बारे में नहीं कहोगे। तुम मेरे हो, जैसे भी हो। सिर्फ मेरे हो, मैंने सिर्फ तुम्हें प्यार किया है। तुम्हारे अलावा मेरी जिन्दगी में कोई दूसरा नहीं आ सकता।"

बेदी ने आंखें बंद कर ली।

वहां छाई खामोशी में भारीपन मौजूद रहा।

"दोस्तों से क्या बात हुई?"

"कुछ खास नहीं।" बेदी ने आंखें खोलकर गहरी सांस ली—"उनमें से कोई इस काबिल नहीं कि चाहकर भी मेरी सहायता कर सके। वह लोग अपना सब कुछ बेचकर भी दें तो, बारह लाख पूरा नहीं हो पाता।"

"ओह!" अंजना चिंतित नजर आने लगी।

"अब एक ही रास्ता बचा है।" बेदी बेचैनी से कह उठा।

"क्या?"

"मरना तो है ही, ऐसे में फिर क्यों न जिन्दगी बचाने के लिए, इस मुर्दा जिस्म को दांव पर लगा दूं।"

"मैं समझी नहीं।"

बेदी ने अंजना को देखा, मन-ही-मन हिम्मत इकट्ठी की।

"अंजना, बारह लाख पाने के लिए मैं कहीं चोरी करूंगा।"

अंजना को ऐसा लगा जैसे किसी ने पहाड़ उठाकर उसके सिर पर फेंक दिया हो।

"चोरी तुम? विजय क्या कह रहे हो?" उसके होंठों से फंसा-फंसा सा स्वर निकला।

बेदी ने अंजना की आंखों में झांका।
''क्यों, मेरी बात पसन्द नहीं आई?'' बेदी का स्वर बेहद शांत था।
''नहीं विजय, तुम चोरी जैसा काम नहीं करोगे।''
''ठीक है नहीं करता।'' बेदी पहले वाले स्वर में बोला—''अपनी जान बचाने के लिए मुझे बारह लाख की जरूरत है। यह रुपया मुझे कहीं से भी ला दो। ताकि मैं अपनी जिन्दगी खरीद सकूं।''
अंजना, बेदी को देखती रही।
''यह गलत है विजय।'' अंजना जैसे हारे स्वर में कह उठी—''ऐसा किया तो पुलिस तुम्हें नहीं छोड़ेगी।''
''बारह लाख का इन्तजाम न हुआ तो पुलिस मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। क्योंकि दो महीने बाद मेरी लाश को गिरफ्तार करने में पुलिस की कोई दिलचस्पी नहीं होगी।''
अंजना कुछ न कह सकी।
''मुझे अपनी जान बचानी है अंजना। मैं जीना चाहता हूं। मौत से मुझे नफरत है और जिन्दगी से प्यार है। अपनी जिन्दगी को मैं बहुत चाहता हूं। शायद-शायद तुमसे भी ज्यादा। जब मेरी जिन्दगी ही नहीं रहेगी तो तुम्हें चाहकर मैं क्या करूंगा। इसलिए सबसे पहले मुझे अपने सांसों की जरूरत है। जो चलती रहे। उसके लिए बारह लाख और बारह लाख के लिए, कहीं चोरी करना बहुत जरूरी है। मैं तिल-तिल करके मरना नहीं चाहता। चाहता हूं एक ही बार में फैसला हो जाए कि जो होना है हो जाए।''
अंजना की आंखों से आंसू बह निकले। वह बेदी के साथ जा लिपटी।

❑❑

अगले दिन सुबह शुक्रा उसके पास पहुंचा।
तब बेदी नाश्ता करके हटा था।
''क्या हाल है?'' शुक्रा कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।
बेदी ने कुछ नहीं कहा, सिगरेट सुलगा ली।
''क्या सोच रहा है।'' शुक्रा ने गम्भीर निगाहों से उसे देखा।
''बारह लाख के बारे में।'' बेदी एकाएक परेशान हो उठा—''कि उसका इन्तजाम कैसे होगा?''
''कैसे होगा?''

''चोरी करके—ऐसी जगह चोरी करूंगा, जहां से एक ही बार में बारह लाख मिल सकें।''
कई पलों तक वहां खामोशी रही। फिर शुक्रा धीमे स्वर में कह उठा।
''हम अपराधी नहीं हैं। यह काम हमारे बस का नहीं है। फंस जायेंगे।''
''इसके अलावा मेरे पास दूसरा कोई रास्ता भी तो नहीं, एक बात तो बता शुक्रा।''
''क्या?''
''मैं बच जाऊंगा। मरूंगा तो नहीं।'' कहने के साथ ही बेदी की आंखों में पानी चमकने लगा।
''हां।'' शुक्रा ने अपने होंठ भींच लिए—''तू बचेगा विजय, तेरे को कुछ नहीं होगा।''
''झूठी तसल्ली देता है।'' बेदी के होंठों पर अजीब-सी गीली मुस्कान आ गई।
''तसल्ली तो दे रहा हूं।'' शुक्रा के होंठ भिंचे हुए थे—''लेकिन यकीन मान दोस्त झूठी नहीं है। अब सच्ची है कि नहीं, यह तो मैं भी नहीं जानता। कुछ समझ में नहीं आ रहा मुझे...।''
बेदी, शुक्रा को देखता रहा।
''तू साथ देगा, मेरा?''
''किस बात में?''
''चोरी करने में, बारह लाख इकट्ठे करने में, मेरी जान बचाने में।''
''कैसी बात करता है, तेरी जान बचाने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं विजय।'' शुक्रा ने शब्दों पर जोर देकर कहा।
''मैं जानता था। तू ऐसा ही कहेगा।'' बेदी ने गम्भीर-भारी स्वर में कहा—''उदय से और राघव से भी बात कर लेना। वह भी साथ देने के लिए तैयार हो जाए तो मुझे पूरा विश्वास है कि बारह लाख हम पा ही लेंगे।''
''तू क्या समझता है वह इन्कार करेंगे।'' शुक्रा कह उठा—''वह भी साथ देंगे विजय।''
बेदी ने मुस्कराना चाहा, लेकिन मुस्करा न सका, सिर हिलाकर रह गया।

❑❑

उदयवीर के दोनों चेले-चपाटे एक कार के साथ चिपके, काम

में व्यस्त थे। कभी-कभार ठक-ठक की तेज आवाज़ वहां गूंज उठती थी।

गैराज के केबिन में उदयवीर, राघव और शुक्रा बैठे थे।

"तो विजय ने पक्का इरादा कर लिया कि वह चोरी करेगा।" राघव कह उठा।

"हां।" शुक्रा ने सिर हिलाया—"इसके अलावा उसके पास कोई और रास्ता भी तो नहीं।"

"तूने विजय को समझाया क्यों नहीं कि यह काम उसके बस का नहीं है।" उदयवीर बोला।

"क्या समझाऊं।" शुक्रा का स्वर तीखा हो गया—"यह बोलूं कि दो महीने, मौत के इंतजार में बिता ले। उसके बाद मर जा, हम हैं तेरे को कंधा देने वाले। निपटा देंगे तेरे को। नक्की कर देंगे।"

"मेरा यह मतलब नहीं।"

"उदय।" शुक्रा ने उसे घूरा—"तेरे को पता हो कि तू दो महीने बाद मर जाएगा। उसी सूरत में बच सकता है कि जब तेरे को बारह लाख मिल जाए। जो कि तेरे पास नहीं है तो ऐसे में तू क्या करेगा।"

उदयवीर, शुक्रा को देखता रहा।

राघव ने बेचैनी से पहलू बदला।

"तब तू किसी का गला काटकर भी बारह लाख हासिल करेगा। विजय तो सिर्फ चोरी करने को कह रहा है।"

"हां।" राघव ने गम्भीरता से सिर हिलाया—"जान तो सबको प्यारी होती है। भरी जवानी में कौन मौत को गले लगाना चाहेगा। ऐसा वक्त आए तो उसे बचाने की पूरी कोशिश करेगा, इन्सान।"

"विजय भी ऐसा ही करने जा रहा है।"

"कहना आसान है। लेकिन यह सब करना कठिन है।" उदयवीर कह उठा—"यह काम शरीफ लोगों के बस का नहीं है। इस काम को वही करते हैं जो बचपन से ही बुरे रास्ते पर पड़ गए हों।"

"जरूरत पड़ने पर हर काम, हर कोई कर लेता है।" शुक्रा ने सख्त स्वर में कहा।

"तू चोरी वाली बात की बहुत पैरवी कर रहा है।" उदयवीर ने उसे देखा।

"तो क्या न करूं? ठीक तो सोचा है उसने। इसके अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं।" शुक्रा ने दोनों को देखा—"तुम दोनों अपनी कहो, क्या कहते हो?"

"किस बारे में?"

"विजय का साथ देते हो?"

"चोरी करने के लिए?" राघव के होंठों से निकला।

"हां।"

"यह कैसे हो सकता है।" राघव बेचैनी से कह उठा—"मैं तो मामूली-सा दुकानदार हूं। चोरी जैसे कामों से मेरा क्या वास्ता। यह सब सोचकर भी डर लगता है मुझे।"

"डर लगता है।" शुक्रा ने कड़वी निगाहों से उसे देखा।

"वो तो लगेगा ही।"

"बहुत कमीना है तू। दोस्ती को इतनी आसानी से धक्का दे रहा है और हाथ भी नहीं कांप रहे।" शुक्रा ने उसे घूरा।

"राघव ठीक कहता है शुक्रा।" उदयवीर गम्भीर स्वर में कह उठा—"विजय की सहायता करने का कोई और रास्ता है तो वह बता, चोरी जैसे काम में साथ देना हम लोगों के बस का नहीं है।"

"तो मेरे बस का कैसे हो गया?" शुक्रा के चेहरे पर गुस्सा उभरा।

"अपनी बात तू जान।"

शुक्रा ने दांत भींचकर उन दोनों को घूरा, फिर उठ खड़ा हुआ।

"ठीक है, तुम दोनों ने जो बात कही है। वह विजय को बता दूंगा।" कहने के साथ ही शुक्रा पलटा और तेजी से बाहर निकलता चला गया।

उदयवीर और राघव गम्भीर निगाहों से एक-दूसरे को देखते, बैठे रहे।

❑ ❑

घंटी बजाने से पहले चपरासी संतोष सिंह ने हथेली पर सुरती मसली, फिर उसे नीचे वाले होंठ के भीतर फंसाकर तसल्ली भरे अंदाज में बैल बजाई।

बेदी ने दरवाजा खोला।

"तुम?" उसे देखते ही बेदी के होंठों से निकला।

"राम-राम।" संतोष सिंह अपने उखड़े अंदाज में कह उठा।

बेदी ने हौले से सिर हिलाया।

"कहो।"
"कह भी देंगे साहब जी। भीतर-वीतर आने को तो बोल दो।" संतोष सिंह ने मक्खी उड़ाने वाले अंदाज में कहा।
बेदी एक तरफ हट गया। संतोष सिंह भीतर आया और कुर्सी पर जम गया।
"क्यों आए हो?" बेदी उसे घूर रहा था।
"साहेब जी, दफ्तर नहीं आना क्या? बड़े साहेब ने आपकी खबर लेने भेजा है।"
"बोल देना, खबर ले आया हूं। विजय बेदी मस्ती से वक्त गुजार रहा है।" बेदी ने कड़वे स्वर में कहा।
"मैं समझा नहीं साहेब जी।"
"मुझे नौकरी नहीं क़रनी।"
"क्यों साहेब जी।"
"तुम ज्यादा सवाल-जवाब मत करो।"
"वो तो ठीक है, लेकिन जमी-जमाई नौकरी को छोड़ना कहां की अक्लमंदी है। वैसे भी आजकल नौकरी मिलती ही कहां है। मेरी मानिए तो नौकरी छोड़ने की सोचिए भी नहीं।"
"इस नौकरी से मुझे फौरन बारह लाख नहीं मिल सकते।" बेदी ने दांत भींचकर कहा।
"बारह लाख!" संतोष सिंह ने अजीब-सी निगाहों से उसे देखा।
"हां।"
"लेकिन आपने बारह लाख का करना क्या है? इतनी बड़ी रकम तो वैसे भी पास रखना ठीक नहीं होता।"
"तुम जाओ यहां से।" बेदी उखड़े स्वर में कह उठा—"मैं अपना इस्तीफा भेज दूंगा।"
"मतलब कि आपको नौकरी नहीं करनी।"
"नहीं।"
"मुझे तो समझ नहीं आ रहा कि इतनी बढ़िया नौकरी आप खामखाह क्यों छोड़ रहे हैं।"
"छोड़ इन बातों को।" एकाएक बेदी ने अपने गुस्से पर काबू पाया—"तूने कई साल मुझे ऑफिस में चाय पिलाई है। आज तू पहली बार मेरे घर आया है। तेरे लिए चाय बनाता हूं।"
"आप बनाएंगे।"
"हां।"

"मैं बना लेता हूं। आप बैठिए।" संतोष सिंह ने कहा, जबकि उसका उठने का इरादा नहीं लग रहा था।
"मैं बनाकर पिलाऊंगा।"
"जैसी साहेब की मर्जी, वैसे यह इरादा पक्का है कि आप नौकरी नहीं करेंगे।"
"हां, उस ऑफिस में अब तुम मेरी सूरत नहीं देखोगे।"
"सपना मेम साहेब आपको याद कर रही थीं।" संतोष सिंह मुस्कराया।
बेदी ने उसे घूरा।
"तो?"
"कुछ नहीं, यूं ही बता रहा था कि सपना मेम साहब हर रोज आपके बारे में...।"
"तू चाय पी और चलता बन। ऑफिस की बात मेरे सामने करने की जरूरत नहीं...।
"मैं तो इधर-उधर की खबरें दे रहा हूं आपको।" संतोष सिंह मुस्कराया—"वो बंसल साहेब हैं ना, तीस के हो गए। शादी अभी तक नहीं की, वही आजकल सपना के गिर्द ज्यादा ही मंडरा रहे हैं। आप वहां होते हैं तो बंसल साहेब की हिम्मत भी नहीं होती, सपना मेम साहेब के पास फटकने की।"
बेदी ने उसे घूरा, कहा कुछ नहीं और किचन की तरफ बढ़ गया।

❑ ❑

संतोष सिंह के जाते ही शुक्रा वहां पहुंच गया।
"विजय।" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा—"उदय और राघव ने तो इन्कार कर दिया।"
"कैसा इन्कार?"
"चोरी में हमारा साथ देने के लिए, वे कहते हैं, इस काम में साथ नहीं दे सकते।"
बेदी के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।
"ठीक है। इसमें नाराज होने की क्या बात है? उन्हें यह काम पसन्द नहीं होगा।"
"पसन्द तो हमें भी नहीं है।" शुक्रा गुस्से से भरे स्वर में कह उठा—"हमें कौन-सी खुशी होगी, जब हम चोरी कर रहे होंगे। यह सब तो मजबूरी है कि हमें ऐसा करना पड़ रहा है।"
"तुम...।"

"यह तो यारी में दगाबाजी वाली बात हो गई, दोनों कमीने हैं और...।"

"ऐसा मत कहो शुक्रा।" बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा—"हम सब शरीफ लोग हैं। चोरी जैसा काम करने की सोचकर घबराएंगे ही। उनके लिए अपने मन में कुछ मत रख।"

"न रखूं, तो भी आ जाता है कि...।"

"छोड़ इस बात को, तू तो मेरे साथ ही है ना?"

"साथ नहीं, मैं एक कदम आगे हूं तुम्हारे।" शुक्रा कह उठा।

"फिर क्या चिन्ता, हम दोनों बहुत हैं। हमें कौन-सा सारी उम्र यही काम करना है। एक ही बार में बारह लाख कहीं से चोरी करके, ऑपरेशन करवा लेना है। उसके बाद सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा।"

शुक्रा सोच भरी निगाहों से बेदी को देखता रहा।

"लेकिन एक समस्या है।"

"क्या?"

"सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि हम चोरी करेंगे कहां? ऐसी किसी जगह का हमें पता होना चाहिए। जहां कम से कम बारह लाख तो मौजूद हो।" शुक्रा ने कहा।

इसी पल बेदी की आंखों के सामने सेठ पिशोरीलाल की तिजोरी नाच उठी। मन में बेचैनी उभरी। व्याकुलता की लहर बदन में दौड़ी। अगले ही पल उसने खुद पर काबू पाया।

"है एक ऐसी जगह।"

"कहां?"

"शाम को बताऊंगा। मुझे कुछ सोच लेने दो।"

"ठीक है।" शुक्रा उठते हुए बोला—"तुम आराम से सोचो। मैं शाम को आता हूं और आगे की बात तय करते हैं।"

"शुक्रा...।"

"हां।"

"मैं-मैं बच तो जाऊंगा ना?" कहते-कहते बेदी की आंखों में पानी चमक उठा।

"ओए बेवकूफ।" शुक्रा का स्वर भर्रा उठा। आगे बढ़कर उसने बेदी को गले लगा लिया—"रोता क्यों है। मेरे होते हुए तुझे कुछ नहीं होगा। शुक्रा अपनी जान दे देगा, लेकिन तेरी जान नहीं जाने देगा। वो जो भगवान है ना? ऊपर खामोशी से बैठा देखता सब है लेकिन बोलता नहीं। वो भी तेरे साथ

है तो फिर कैसा घबराना, हौसला रख, हौसला रख।"

□□

"मैं शुक्रा हूं, शुक्रा।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा—"तुम दोनों की तरह नाशुक्रा नहीं कि यार को जरूरत पड़ी तो मुंह फेर लिया। तुम...।"

"शुक्रा तू...।" राघव ने दांत भींचकर कहना चाहा।

"ओए चुप!" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा—"बस बहुत हो गया, मेरा मुंह मत खुलवा। भूल गया तू वो सारा वक्त। यार होकर यार मारी करता है। दुकान खोलने के लिए तेरे को लाख रुपये की जरूरत थी। जरूरत लाख की और पल्ले फूटी कौड़ी नहीं। पच्चीस हजार रुपया हाथ में लेकर घूम रहा था और रोता फिर रहा था कि पचहत्तर हजार का कहीं से इन्तजाम कर दो। तब किसने दिए तेरे को पचहत्तर हजार। किसने किया इंतजाम? विजय ने। उसने तेरी दुकान खुलवा दी। तेरी रोजी-रोटी का जरिया बना दिया और आज जब उसे तेरी जरूरत पड़ी तो पतलून उठाकर भागने को तैयार हो गया।"

राघव ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी, उससे कुछ कहते न बना।

शुक्रा की गुस्से से भरी निगाह उदयवीर की तरफ उठी।

"और तू, जो सबको दोस्त-दोस्त कहता फिरता है। शाम को बोतल खोल हर बार नारा लगाता है कि ये जाम दोस्ती के नाम। अब कहां है वो जाम और वो दोस्ती। शराब की बोतल के साथ पी गया क्या या फिर सुबह जब होश आता है तो अपने नारे को भूल जाता है।"

उदयवीर शुक्रा को देखता रहा।

"याद है, जब एक्सीडेंट में तेरी टांग टूट गई थी। काम-धाम तेरा रुक गया था। घर के खर्चे को भी तंगी आ गई थी और तेरे रिश्तेदारों ने लंगोट दिखा दिया था और तू अपने दाने तक बेचने को तैयार हो गया था। तब तेरे को विजय ने ही अपने कम्पनी से तीस हजार रुपया लोन लेकर दिया था। जिसे चुकाने में दो साल लगा दिए थे तूने और उसका ब्याज विजय ने अपने पल्ले से भरा था। सब भूल गए। मतलब निकला, वक्त निकला, बात खत्म। तब यह नहीं सोचा था तुम दोनों ने कि कभी विजय को भी तुम लोगों की जरूरत पड़ सकती है। लेने की आदत है तो सोचना चाहिए था कि कभी देने का भी वक्त आ सकता है। तुम लोगों के लिए शराब की बोतल ही दोस्ती है। उसके

बाद... ।"

"शुक्रा तू बात को... ।"

"चुपकर।" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा—"तुम लोगों के पास मेरी बात का जवाब नहीं है। जो जवाब दोगे गलत कहोगे। मेरा गुस्सा बढ़ गया तो लोग तमाशा देख लेंगे कि... ।" गुस्से में शुक्रा अपने शब्द पूरे नहीं कर सका। दोनों को खा जाने वाली निगाहों से देखता बाहर निकलता चला गया।

राघव और उदयवीर की आंखें मिलीं।

"पागल हो गया है शुक्रा।" राघव कह उठा।

"पागल नहीं, वो ठीक लानत भेज रहा है हमें... ।" उदयवीर ने गम्भीर स्वर में कहा—"आज विजय को हमारी जरूरत है तो हमें उसका साथ देना चाहिए।"

"लेकिन वो चोरी जैसा काम करने को कह रहा.... ।"

"यहीं तो दिक्कत आ रही है। कोई और काम होता तो सबसे आगे मैं होता।" उदयवीर गहरी सांस लेकर कह उठा।

❑ ❑

बेदी के फ्लैट के कमरे में शुक्रा और अंजना मौजूद थे।

बेदी आंखें बंद किए कुर्सी पर बैठा था। इस वक्त उनके बीच मुद्दा था कि बारह लाख इकट्ठे करने के लिए कहां पर चोरी की जाए। शुक्रा और अंजना अपनी-अपनी राय बता रहे थे।

"मैं एक बात कहना चाहती हूं।" एकाएक अंजना ने गम्भीर स्वर में कहा।

बेदी की आंखें खुलीं और अंजना पर जा टिकीं।

शुक्रा ने भी उसे देखा।

"बारह लाख के लिए हमने चोरी करनी है।" अंजना ने धीमे स्वर के कहा—"मान लो हमें बारह लाख मिल गए, ऑपरेशन हो गया, तुम्हारे सिर से गोली निकल गई। उसके बाद क्या होगा?"

"क्या होगा?" बेदी के होंठों से निकला।

"उसके बाद।" दो पल की सोच के बाद अंजना पुनः बोली—"हो सकता है उस चोरी की वजह से पुलिस देर-सबेर तुम तक पहुंच जाये, हम तक पहुंच... ।"

"यह नहीं हो सकता।" शुक्रा कह उठा।

"क्यों नहीं हो सकता।" अंजना ने उसे देखा—"आखिर हम कच्चे चोर हैं। हमने पहले कभी भी चोरी नहीं की। हमारे साथ

कुछ भी हो सकता है।"

"यह ठीक कहती है।" बेदी ने धीमे स्वर में कहा।

शुक्रा ने बेचैनी से पहलू बदला।

अंजना की निगाह दोनों पर थी।

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"मैं... ।" अंजना गम्भीर थी—"कहना चाहती हूं कि अगर हम जैसे शरीफ लोगों को चोर बनना ही है। पुलिस का खतरा उठाना ही है तो फिर बारह क्यों, पचास लाख की चोरी की जाए।"

"पचास लाख।" बेदी के होंठों से निकला।

शुक्रा चौंका।

"क्या कह रही हो भाभी?"

"मैं ठीक कह रही हूं।" अंजना ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा—"पचास लाख की रकम हाथ में आ जाने पर हम काफी हद तक सुरक्षित हो जाएंगे, क्योंकि यह काम करने के बाद हमें हमेशा-हमेशा के लिए यह शहर छोड़ना पड़ेगा, ताकि पुलिस का खतरा हमारे पास न आ सके। इसी शहर में रहेंगे तो हर वक्त डर लगा रहेगा कि हम कभी भी पकड़े जा सकते हैं।"

"भाभी ठीक कहती है।" शुक्रा ने फौरन सहमति दी।

"कुछ पैसा पास भी होना चाहिए। कल को हमारी शादी होनी है। बच्चे होंगे, पैसा पास होगा तो बच्चों का भविष्य सुरक्षित होगा। चैन से जिन्दगी बीत सकेगी और फिर शुक्रा भैया भी उन पैसों से कोई ढंग का काम करके अपना घर बसा सकेंगे। इसलिए मैं कह रही हूं कि जब चोरी की ही जा रही है तो फिर पचास की की जानी चाहिए। कम हो, ज्यादा हो, चोरी तो चोरी ही होती है।"

बेदी और शुक्रा की निगाहें मिलीं।

अंजना की निगाह जैसे एक साथ दोनों पर टिकी थी।

"मैंने तो ठीक कहा है। अगर मेरी बात पसन्द न आई हो तो बात जुदा है।" अंजना कह उठी।

"विजय, भाभी ठीक कह रही है।"

बेदी ने शुक्रा को देखते हुए सोच भरे ढंग में सिर हिलाया।

"हां, अंजना का कहना वास्तव में ठीक है कि इस चोरी के बाद हमें, ऑपरेशन कराकर, इस शहर को हमेशा के लिए छोड़ना

होगा। नहीं तो हर पल पुलिस का खतरा बना रहेगा।"

अंजना के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"तो फिर यह पक्का रहा।" शुक्रा कह उठा—"हम बारह के बदले पचास लाख की चोरी करेंगे।"

"यह काम इतना आसान नहीं है, जितना कि तुम लोग सोच रहे हो।" अंजना कह उठी—"हमें तो यह भी नहीं मालूम कि कहां हाथ मारा जाए, जहां से पचास लाख मिल सकें।"

"भाभी तुम्हारा दिमाग बहुत चलता है।" शुक्रा बोला—"पते की बात कही।"

उनके बीच खामोशी छा गई।

बेदी कुछ बेचैन-सा नजर आने लगा।

"विजय।" शुक्रा ने कहा।

"हूं।"

"हमें भागदौड़ करके ऐसी जगह तलाश करनी चाहिए, जहां चोरी करके पचास लाख पाया जा सके। दस-पंद्रह दिन तो इसी काम में लग जाएंगे।" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा।

बेदी ने शुक्रा को, अंजना को, दोनों को देखा।

"क्या हुआ?"

"ऐसी जगह है मेरे पास।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कहां?"

"सेठ पिशोरीलाल।"

"पिशोरीलाल, यह कौन है?"

बेदी ने पिशोरीलाल के बारे में बताया।

"इसकी तिजोरी में बारह लाख नहीं, पचास लाख नहीं, करोड़ से ऊपर का माल है।"

"करोड़ से ऊपर!" शुक्रा के होंठों से निकला।

अंजना की आंखें चमकने लगीं।

"सुनकर मेरे तो हाथ-पांव कांप रहे हैं।" शुक्रा गहरी सांस लेकर कह उठा।

"उस दिन पिशोरीलाल ने डिजाइन की खातिर तिजोरी खोलकर, मुझे दिखाई थी। तब मैं नहीं जानता था कि उन्हीं जेवरातों को लूटने के लिए एक दिन मुझे सोचना पड़ेगा।"

"भगवान रास्ते पहले तैयार करता है और मुसीबतें बाद में देता है।" अंजना कह उठी—'लेकिन पिशोरीलाल की तिजोरी तक पहुंचना आसान काम तो होगा नहीं।"

"तुम ठीक कहती हो अंजना।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—"जहां करोड़ों का माल हो, वह भी ग्राहकों का, तो उसकी हिफाजत भी ढंग से, अच्छे ढंग से की जाती होगी।"

"तो फिर?"

बेदी ने शुक्रा को देखा।

"पिशोरीलाल ने नई तिजोरी का आर्डर दिया था।"

शुक्रा ने सिर हिलाया।

"तुम मालूम करो। कम्पनी ने नई तिजोरी उसे तैयार करके दे दी है या नहीं।"

"यह बात तो तुम फोन करके भी मालूम कर सकते हो।" शुक्रा ने कहा।

"बेवकूफी वाली बातें मत करो। उसी तिजोरी को हम लूटने जा रहे हैं। उसी के बारे में पूछताछ करें तो चोरी के बाद कल को सीधा पहला शक मुझ पर किया जाएगा।" बेदी खीझ भरे स्वर में कह उठा।

"यह तो ठीक बोला तू...।" शुक्रा ने सिर हिलाया।

"शुक्रा भैया।" अंजना ने कहा—"तुम जाकर उस तिजोरी के बारे में मालूम करो।"

शुक्रा उठ खड़ा हुआ।

"ठीक है, मैं मालूम करता हूं कि पिशोरीलाल को नई तिजोरी मिली कि नहीं। पिशोरीलाल का पता क्या है?"

बेदी ने बताया।

शुक्रा बाहर निकल गया।

"अंजना।" बेदी ने आशाभरी निगाहों से अंजना को देखा—"मैं बच जाऊंगा।"

अंजना मुस्कराकर उठी और आगे बढ़कर बेदी की गोदी में जा बैठी।

"मेरे विजय को कुछ नहीं हो सकता। यमराज भी आएगा लेने तो उससे भी छीन लूंगी, अपने प्यार को। तुम नहीं जानते कि मेरे सच्चे प्यार में कितनी ताकत है।"

बेदी ने उसे बांहों में भींच लिया।

❑❑

शुक्रा सेठ पिशोरीलाल के बंगले पर पहुंचा। बाहर दो दरबान मौजूद थे।

"कहिए साहब, किससे मिलना है।" एक दरबान ने पूछा।

"किसी से नहीं।" शुक्रा मुस्कराकर कह उठा।
"तो फिर फालतू का यहां खड़ा होना मना है। आगे बढ़िए।" दूसरे दरबान ने कहा।
"वो तो ठीक है। मैं रायल सेफ कम्पनी की तरफ से आया हूं। कम्पनी ने सेफ भेजी थी मिली की नहीं, आई कि नहीं, पहुंची कि नहीं।" शुक्रा ने पूछा।
"अभी तो आप कह रहे थे कि कोई काम नहीं है।"
"वो तो मैं अब भी कहता हूं कि कोई काम नहीं है। यह कोई काम है कि कम्पनी वालों ने भेज दिया कि जाओ मालूम करके आओ। भला यह बात तो फोन पर पूछी जा सकती थी। क्या करूं भाई नौकरी है। हुक्म तो बजाना ही पड़ता है, हां तो सेफ पहुंची कि नहीं?"
"पहुंच गई।"
"कब?"
"दो दिन हो गए, आज दूसरा दिन है, कौनहू खास बात?"
"नहीं, वो सेफ ठेले पर आई या टैम्पू पर?"
"यह क्या बात हुई।" दरबान अजीब से स्वर में बोला—"फिर पूछेंगे कि सेफ को कितने आदमियों ने हाथ लगाकर पहुंचाया और...।"
"ऐसा कुछ नहीं है भाई। बाल की खाल मत निकाल, मैं कम्पनी का चैकिंग इंस्पेक्टर हूं। कम्पनी का सामान पहुंचाने वाले ठेकेदार लोग आजकल धांधलेबाजी कर रहे हैं। वे कम्पनी से भाड़ा तो टैम्पों का लेते हैं और माल ठेले पर पहुंचा देते हैं। इन्हीं लोगों के लिए कम्पनी ने मुझे इंस्पेक्टर बनाया है। अगर तुम जवाब नहीं देना चाहते तो सेठ जी से मेरी मुलाकात करवा दो, मैं उन्हीं से...।"
"अब इत्ती-सी बात की खातिर सेठ जी को क्यों तकलीफ दयो हो।" दरबान ने कहा, फिर दूसरे दरबान से बोला—"तेरे को मालूम है सेफ किस पर आई थी?"
"हां।" दूसरा बोला—"टैम्पो पर।"
"सच बोल रहा है?"
"बिल्कुल साहेब। हम का चेहरे से झूठे लगते हैं।"
"मैंने कब कही यह बात। मैं तेरी कही बात को अच्छी तरह पक्की कर रहा था। क्योंकि ठेकेदार ने भी यही कहा था कि सेफ टैम्पो पर ही यहां पहुंचाई थी।" शुक्रा मुस्कराया—"चलता हूं अब।"

शुक्रा वापस बेदी के पास पहुंचा।
तब तक अंजना जा चुकी थी।

❑ ❑

"बहुत जल्दी आ गया।" बेदी उसे देखते ही बोला।
"हां, काम हो गया, तिजोरी पिशोरीलाल के यहां पहुंच गई है।" शुक्रा बैठते हुए बोला।
"गुड!" बेदी के चेहरे पर तसल्ली के भाव उभरे।
"अब तेरा क्या प्लान है।" शुक्रा की निगाह बेदी पर जा टिकी।
बेदी की निगाह शुक्रा पर जा टिकी।
"प्लान तो वही है। पिशोरीलाल की तिजोरी में मौजूद माल का मालिक बनना।"
"लेकिन कैसे?"
"बताऊंगा, लेकिन पहले मैं डॉक्टर वधावन से मिलूंगा।"
"वो ही वधावन, जिससे तुम ऑपरेशन करवाना चाहते हो?" शुक्रा के होंठों से निकला।
"हां।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसके बारे में जो सुना है, दूसरे से सुना है। एक बार उससे भी मिलना चाहिए। हो सकता है, वह अच्छा बंदा हो।"
"अच्छा बंदा?"
"हां, वो बारह लाख न लेता हो या फिर मेरे जैसे मजबूर का ऑपरेशन मुफ्त में कर दे। वह भला इन्सान हो और हमें कहीं चोरी करने की जरूरत ही न पड़े।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—"वैसे भी उससे एक बार मिलकर अपने सिर का हाल बताना चाहिए। यह तो नहीं कि आधी रात को उसके सामने पैसे रखकर कहें कि चल ऑपरेशन कर तो वह बिना जानकारी के क्या करेगा?"
"यह बात तो ठीक है।" शुक्रा ने सहमति में सिर हिलाया।
"फोन डायरेक्ट्री से, नाम के द्वारा उसका अता-पता मालूम करके उससे मिलने का वक्त तय कर, मेरे को डॉक्टर ने उसका पता दिया था, लेकिन भूल गया।"
"मैं मालूम कर लूंगा।" कहने के साथ ही शुक्रा उठा और बाहर निकल गया।
डेढ़ घंटे बाद शुक्रा लौटा।

"बेदी।" शुक्रा बैठता हुआ थके स्वर में कह उठा–"यार डॉक्टर के पी.ए. से बात हुई है। डॉक्टर वधावन से मुलाकात करने की, तीस हजार फीस मांगता है।"

बेदी के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।

"तीस हजार, तो इसका मतलब, उस डॉक्टर ने ठीक कहा था कि वो ऑपरेशन करने के बारह लाख ही लेगा। एक रुपया भी कम होगा तो ऑपरेशन नहीं करेगा।"

शुक्रा बेदी को देखता रहा।

"तो अब क्या करना है।"

"एक बार तो ऑपरेशन से पहले डॉक्टर से मिलना ही पड़ेगा।" बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा।

"तो उसे तीस हजार देगा मुलाकात के लिए?"

"नहीं। उससे जबरदस्ती मुलाकात की जाएगी। शुक्रा तू डॉक्टर वधावन के बारे में मालूम कर।"

"क्या मालूम करूं?"

"उसका आगा-पीछा। वह कब घर से निकलता है। कब क्लीनिक जाता है। उसके बारे में सब कुछ मालूम कर।"

"लेकिन मिलेगा कहां उससे?"

"रास्ते में किसी सड़क पर। उसकी कार को रोक कर सबसे आसान यही रास्ता है। तू साथ है ना मेरे?"

"कितनी बार कहूं, मैं हमेशा तेरे साथ हूं।"

"ठीक है, मालूम कर। एक बार सिर का हाल तो उसके सामने रखकर देखें, वह क्या कहता है।" बेदी सोच भरे स्वर में एक-एक शब्द चबाकर, पक्के स्वर में कह उठा।

❑ ❑

डॉक्टर वधावन।

चालीस साल अमेरिका में प्रैक्टिस करने के पश्चात वापस हिन्दुस्तान में आ बसा था। सारी जिन्दगी पैसा कमाने में लगा दी थी और अब आराम से बाकी का वक्त बिताना चाहता था। परन्तु यहां भी उसने प्रैक्टिस जमा ली थी। बहुत कम केस ही वह हाथ में लेता था।

साठ वर्षीय स्वस्थ शरीर का मालिक था वधावन।

दो घंटे दिन में क्लीनिक जाता था और शाम को कभी-कभी जाता था। पैंतीस साल की उम्र में अमेरिकन औरत से शादी की। जिसने एक बच्ची को जन्म दिया। फिर पांच साल के बाद

वह किसी के साथ भाग गई, उसके बाद उसका कुछ पता नहीं चला।

डॉक्टर वधावन ने उसकी परवाह भी नहीं की। सब कुछ भूल कर बच्ची को पालने लगा। अमेरिका का माहौल उसे रास नहीं आया, उस वक्त उसका तो वहां रहना उसकी मजबूरी थी। परन्तु बेटी को हिन्दुस्तान के देहरादून के दून स्कूल में बोर्डिंग में करवा दिया।

बच्ची वहीं पढ़ने लगी।

डॉक्टर वधावन साल में दो बार आकर बेटी से मिल जाता था। खैर, अब तो उसकी बेटी बाईस साल की हो चुकी थी और वह भी हिन्दुस्तान में था। दोनों साथ ही रहते थे। डॉक्टर वधावन को मन ही मन इस बात की तसल्ली थी कि बेटी पर उसकी मां की छाया नहीं पड़ी। भारतीय संस्कारों वाली उसकी बेटी समझदार है।

इस वक्त उसकी विदेशी कार को ड्राइवर चला रहा था। डॉक्टर वधावन पीछे बैठा था। दिन का एक बज रहा था। वह क्लीनिक से घर लौट रहा था। मन में कई बार आ चुका था कि हिन्दुस्तान में शुरू की प्रैक्टिस को बंद कर दे और चैन से जिन्दगी बिताए। जिन्दगी में इतनी भागदौड़ कर ली थी कि अब मरीजों को देखने का दिल नहीं करता था।

मोड़ काटते ही ड्राइवर ने फौरन ब्रेक लगा दिए।

कार तीव्र झटके के साथ रुकी। वधावन ने खुद को संभाला। यह कुछ सुनसान-सी जगह थी। रास्ते का थोड़ा-सा हिस्सा यही पड़ता था।

"क्या हुआ?"

"जी आगे, सड़क के बीच कार खड़ी है। शायद खराब हो गई है।" ड्राइवर बोला।

वधावन ने सामने देखा, उदयवीर वाली एम्बेसेडर कार सड़क पर इस तरह खड़ी थी कि उस छोटी-सी सड़क में, उसकी बगल से निकल पाना सम्भव नहीं था। कार का बोनट उठा हुआ था।

"ये क्या टूटी-फूटी कारें लाकर सड़क के बीच खड़ा कर देते हैं।" वधावन ने तीखे स्वर में कहा–"तुम नीचे उतरो और कार को धक्का लगाकर साइड कर दो।"

ड्राइवर फौरन नीचे उतरा और एम्बेसेडर की तरफ बढ़ा।

वधावन गहरी सांस लेकर इधर-उधर देखने लगा।

शुक्रा बोनट खोले लापरवाही से खड़ा था। बेदी कार के भीतर पीछे वाली सीट पर बैठा, गर्दन घुमाए पीछे रुकने वाली डॉक्टर वधावन की कार को देख रहा था। फिर ड्राइवर को बाहर निकलकर, आगे बढ़ते देखा। बेदी सतर्क हो गया।

शुक्रा दो दिन से डॉक्टर वधावन पर नजर रखे था। वधावन के आने-जाने का सारा वक्त नोट करने के बाद ही आज उस पर हाथ डालने का प्रोग्राम बनाया था।

ड्राइवर, बोनट खोले शुक्रा के पास पहुंचा।

''क्या हुआ?'' ड्राइवर ने पूछा।

''कार खराब हो गई है।'' शुक्रा ने उसे देखा।

''तो साइड लगा लो, रास्ता रुका हुआ है।'' ड्राइवर ने कहा।

''कैसे लगा लूं। एम्बेसेडर है। अकेला कैसे धक्का लगा सकता हूं। मालिक तो भीतर बैठे हैं। वो धक्का नहीं लगाएंगे।''

''मैं लगा देता हूं।''

''भला होगा तुम्हारा।'' कहने के साथ ही शुक्रा ने बोनट गिराया और आगे बढ़कर बेदी से बोला—''मालिक आप जरा बाहर आ जाइए। कार को धक्का लगाकर साइड करना है।''

बेदी ने पास रखा लिफाफा उठाया और कार से बाहर आ गया।

''चल भाई।'' शुक्रा ने ड्राइवर से कहा—''लगा धक्का।''

उधर बेदी बिना रुके पलटा और वधावन की कार के पास पहुंचा और फुर्ती के साथ ड्राइविंग डोर खोलकर भीतर बैठा और स्टार्ट करके कार को साइड लगा दिया।

''यह क्या कर रहे हो?'' वधावन उलझन-भरे स्वर में कह उठा।

''कार को साइड कर रहा हूं।'' बेदी ने शांत स्वर में कहा—''पीछे से कोई वाहन आ गया तो वाहनों की लाइन लग जाएगी। कोई बुरा किया क्या?''

''अजीब इन्सान हो, आगे वाली कार हट रही है, यहां मैंने पड़ाव तो डालना नहीं है जो...।''

बेदी इंजन बंद करके पलटा। वधावन को देखा।

''मैं डॉक्टर वधावन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूं?'' बेदी ने कहा।

वधावन की आंखें सिकुड़ीं।

''तुम मुझे जानते हो?''

''आप जैसी बड़ी हस्ती को कौन नहीं जानता।''

''इतनी बड़ी हस्ती तो हूं नहीं कि हर सड़क पर जाता आदमी मुझे पहचानने लगे।''

''लेकिन मैं आपको जानता हूं।''

''यह अलग बात है।'' वधावन ने लापरवाही से कहा—''अब कार से निकलो। मुझे जल्दी है।''

''आप तभी जाएंगे, जब आपका ड्राइवर आएगा।'' बेदी ने संभले स्वर में कहा—''और ड्राइवर तभी आएगा जब मैं यहां से वापस उस कार तक चला जाऊंगा।''

''क्या मतलब?'' डॉक्टर वधावन की आंखों में शक के साए उभरे।

''सुना है आपसे बात भी की जाए तो, उसकी फीस आप तीस हजार रुपया लेते हैं।''

''मैं समझा नहीं, तुम...।''

''मैं समझाता हूं।'' बेदी ने वधावन को घूरा—''मुझे तुमसे बात करनी है। लेकिन मेरे पास देने को तीस हजार रुपया हराम का नहीं है। इसलिए मुलाकात के लिए यह जगह तय करनी पड़ी।''

''ओह! तो यह बात है।'' वधावन के होंठों से निकला।

''हां, यही बात है।''

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे को देखते रहे।

''बात शुरू करूं?''

''यह तुम ठीक नहीं कर रहे।''

''मेरी निगाहों से देखोगे तो समझ जाओगे कि मैं जो कर रहा हूं, बिल्कुल दुरुस्त कर रहा हूं।''

''क्या चाहते हो?'' डॉक्टर वधावन ने होंठ भींचकर कहा।

बेदी ने लिफाफा उसकी तरफ बढ़ाया।

''इसे खोलो।''

वधावन ने लिफाफे को देखा फिर बेदी को।

''तुम्हारी बात मानने की मैं जरूरत नहीं समझता।'' वधावन ने तीखे स्वर में कहा—''मेरा वक्त खराब मत करो। तुम्हारी रिपोर्ट पुलिस में कर दूंगा। मुझे इस तरह रोकने...।''

अगले ही पल बेदी ने जेब से लम्बे फल वाला चाकू निकाल

लिया।
वधावन की आंखें सिकुड़ीं।
"मैं जो कहूं, वही करो।" बेदी ने कठोर स्वर में कहा।
"मैं तो तुम्हें शरीफ इन्सान समझ रहा था। लेकिन तुम तो बदमाश हो।" कहने के साथ ही वधावन ने लिफाफा लेकर उसे खोला तो बीच में एक्स-रे था।
"एक्स-रे को बाहर निकालो।"
न चाहते हुए भी वधावन ने एक्स-रे बाहर निकाला। कार के शीशे की तरफ करके, रोशनी में उसे देखा तो अगले ही पल उसके होंठ सिकुड़ गए।
बेदी उसे देखे जा रहा था।
"एक्स-रे में क्या देखा?" बेदी ने पूछा।
"ये किसी की खोपड़ी का एक्स-रे है।" वधावन ने एक्स-रे को लिफाफे में डालते हुए कहा—"उसके दिमाग के दोनों भागों के बीच गोली फंसी हुई है।"
"यह मेरे सिर का एक्स-रे है।"
"तुम्हारे सिर का—तुम्हारे दिमाग में गोली फंसी है।" वधावन के होंठों से निकला।
"हां।"
"किस्मत वाले हो, जो अभी तक जिन्दा हो।"
"खबरदार जो मेरे मरने की बात कही।" बेदी दांत भींचकर कह उठा—"मैं जिन्दा रहना चाहता हूं।"
वधावन ने गहरी निगाहों से बेदी के गुस्से से भरे सुर्ख चेहरे को देखा।
"यह बताओ कि अब मेरा क्या होगा? गोली क्या रंग दिखाएगी, जो मेरे सिर में...।"
"अभी तो गोली फंसी हुई है।" वधावन ने गम्भीर स्वर में कहा—"लेकिन जब भी गोली ने अपनी जगह छोड़ी तब बीस घंटों में जहर फैलाकर तुम्हारी जिन्दगी खत्म हो जाएगी।"
"बीस घंटे।" बेदी बड़बड़ाया—"गोली कब अपनी जगह छोड़ेगी डॉक्टर?"
"कभी भी, अभी भी हो सकता है और बाद में भी। इस बात में कब का दावा नहीं किया जा सकता।"
बेदी की निगाह वधावन के चेहरे पर टिक चुकी थी।
"तुम बताओ डॉक्टर, अब मैं क्या करूं?"

"बचने का एक ही रास्ता है, ऑपरेशन करवाकर गोली निकलवा लो।" वधावन ने कहा।
"तुम करोगे मेरा ऑपरेशन?"
"मुझसे मत करवाओ।"
"क्यों?"
"तुम्हारी हालत मुझे कुछ खास बेहतर नहीं लगती कि मेरी फीस दे सको। शहर में ऐसे कई डॉक्टर हैं, जो सस्ते में तुम्हारा आपरेशन कर देंगे।"
"या फिर सस्ते में मुझे मौत के हवाले कर देंगे।" बेदी के दांत भिंच गए।
"क्या मतलब?"
"डॉक्टर तुम अच्छी तरह जानते हो कि यह ऑपरेशन मजाक नहीं है।" बेदी एक-एक शब्द पर जोर देकर कह उठा—"जरा-सी लापरवाही से मेरी जान जा सकती है। ऑपरेशन करने वाले तो पचासों मिल जाएंगे। लेकिन इस बात की गारण्टी नहीं देंगे कि वह सफलता से ऑपरेशन करके, मेरी जान बचा लेंगे। मुझे पांवों पर खड़ा कर देंगे।"
वधावन की निगाह बेदी के चेहरे पर टिकी रही।
"लेकिन डॉक्टर, तुम-तुम सफल ऑपरेशन करके मुझे बचाने की गारण्टी ले सकते हो?"
वधावन बेदी को देखता रहा।
"बोलो डॉक्टर, जवाब दो।"
"हां, मैं तुम्हें बचा सकता हूं।"
बेदी के शरीर में जोरों का कम्पन हुआ, हाथ में थाम रखा चाकू उसने सीट पर रख दिया अपने दोनों कांपते हाथ वधावन के सामने जोड़ दिए।
"डॉक्टर साहब।" बेदी का स्वर भर्रा उठा—"मुझे बचा लीजिए। मैं जीवन भर आपका आभारी रहूंगा। आपकी सेवा में रहूंगा, सिर के बल आपका हुक्म...।"
"मिस्टर—क्या नाम है तुम्हारा?" वधावन ने गम्भीर स्वर में कहा।
"बेदी, विजय बेदी।"
"मिस्टर विजय बेदी।" वधावन ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं डॉक्टर जरूर हूं, लेकिन बिजनेसमैन हूं। मैं कोई भी काम किसी के हाथ जोड़ने पर नहीं करता। सामने वाले को इलाज चाहिए

और मुझे पैसा। तुम जब भी चाहो मैं तुम्हारे सिर का ऑपरेशन करके गोली निकाल दूंगा।''

''बदले में पैसा लोगे?''

''हां, अपनी फीस।''

''कितनी?''

''वैसे तो इस काम के मैं किसी पैसे वाले से बीस लाख से कम नहीं लेता, लेकिन तुम्हारी हालत देखते हुए रियायत कर देता हूं, बारह लाख में यह ऑपरेशन कर दूंगा।''

''बारह लाख!''

''किसी भी ऑपरेशन का मैं बारह लाख से कम नहीं लेता। बारह लाख से मेरी फीस शुरू होती है और तुमसे सबसे कम, शुरू की फीस ले रहा हूं।'' वधावन ने ठोस स्वर में कहा।

''लेकिन यह तो बहुत ज्यादा है।''

''तभी तो मैंने पहले ही कहा है कि किसी और डॉक्टर से ऑपरेशन करा लो।''

''किसी और से कराकर मैं मरना नहीं चाहता, मेरा ऑपरेशन तुम ही करोगे डॉक्टर।''

''तो जब भी बारह लाख मेरे सामने रख दोगे, ऑपरेशन करके गोली निकाल दूंगा।''

''और अगर बारह लाख का इन्तजाम न हो सका तो?''

''यह तुम्हारी सिरदर्दी है, मेरी नहीं।''

''डॉक्टर।'' बेदी की आंखों में आंसू चमक उठे—''मेरी जिन्दगी का सवाल है। कुछ तो रहम करो। मैं शायद इतना पैसा इकट्ठा न कर पाऊं। रकम कम कर लो। चार-पांच लाख मैं इकट्ठा कर लूंगा। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूं। प्लीज मेरा ऑपरेशन...।''

''मिस्टर बेदी।'' वधावन ने बात खत्म करने वाले अंदाज में कहा—''बेकार की बातें करके मेरा वक्त खराब मत करो। मैं स्पष्ट तौर पर कह चुका हूं कि बारह लाख लूंगा और बारह लाख से एक पैसा भी कम नहीं होगा। इस बारे में बात करके मेरा कीमती वक्त खराब मत करो। हिन्दुस्तान में लोगों के पास बहुत पैसा है और मैं सिर्फ पैसे वालों का ही डॉक्टर हूं, तुम जैसों...।''

दांत भींचकर बेदी ने चाकू उठाया और वधावन के आगे कर दिया।

''अब बोलो, तुम्हें अभी खत्म कर दूं तो?'' बेदी गुर्रा उठा।

वधावन ने बेदी की आंखों में झांका।

''मुझे खत्म करके तुम अपने आपको खतरे में डालोगे। मैं जिन्दा रहा तो तुम्हें इस बात की आशा तो रहेगी कि बारह लाख इकट्ठा होने पर, तुम्हें गारण्टी से बचाने वाला तो कोई है। वरना मेरे मरने के बाद वह वक्त भी आ सकता है कि तुम्हारे पास बारह लाख तो हों लेकिन मेरे जैसा कोई डॉक्टर न मिल सके जो गारण्टी देकर तुम्हारे सिर में फंसी गोली निकाल सके। ऐसे में तुम्हारे लिए मेरा जिन्दा रहना बहुत जरूरी है। मेरी जान लेकर अपनी जान खतरे में मत डालो।''

गहरी सांस लेकर बेदी ने चाकू वाला हाथ पीछे कर लिया।

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे को देखते रहे।

''तुम बारह लाख से कम में नहीं मानोगे?'' बेदी क्षीण स्वर में कह उठा।

''इससे कम रकम पर मैं ऑपरेशन टेबल के पास भी नहीं जाता।'' वधावन ने दृढ़ स्वर में कहा।

बेदी ने चाकू जेब में डाला और थके अंदाज में कार से बाहर निकल आया।

''तुम्हारा एक्स-रे।'' कार में से वधावन की आवाज आई।

''रख लो डॉक्टर, एक दिन तुम्हें इसी एक्स-रे की जरूरत पड़ेगी।'' बेदी व्याकुल स्वर में कह उठा—''एक दिन आऊंगा, बारह लाख लेकर, तुम्हारे पास।''

बेदी के पास पहुंचने पर शुक्रा ने ड्राइवर को जाने दिया। ड्राइवर फौरन कार तक पहुंचा और देखते-ही-देखते कार भगा ले गया।

''क्या रहा?'' शुक्रा ने बेदी को देखा।

''बारह लाख का इन्तजाम करना ही पड़ेगा।'' बेदी थके स्वर में कह उठा।

❑❑

''अब क्या किया जाए?'' शुक्रा ने बेदी को देखा।

दोनों इस वक्त फ्लैट पर थे और उनके पहुंचने से पहले अंजना वहां मौजूद थी।

''वो तिजोरी सेठ पिशोरीलाल के पास पहुंच चुकी है। करोड़ों के जेवरात उसने हमारी कम्पनी की तिजोरी में रख दिए होंगे।'' बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा—''मुझे रायल सेफ कम्पनी के

ऑफिस जाना होगा।"

"क्यों?"

"किसी तरह यह मालूम करने कि पिशोरीलाल की तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर क्या है।"

"यह तो बहुत सीक्रेट बात होगी।" अंजना कह उठी—"नम्बर मालूम करना आसान काम नहीं होगा।"

"तुम ठीक कहती हो।" बेदी ने सिर हिलाया—"लेकिन नम्बर को मालूम करना बहुत जरूरी हैं। उसके बिना तिजोरी में रखे जेवरातों को नहीं पाया जा सकता। हमारी कम्पनी का लॉक सिस्टम विदेशी होता है और मजबूत होता है। बिना नम्बर जाने इसे खोल पाना लगभग असम्भव ही है।"

"ठीक है।" शुक्रा बोला—"तुम मालूम करो।"

"अब कम्पनी जाओगे?" अंजना कह उठी।

"हां, मैं इस काम के लिए वक्त बरबाद नहीं करना चाहता।" बेदी बेचैनी से कह उठा।

"काम सोच समझकर करना।" अंजना ने उसे सावधान किया—"किसी को शक न हो।"

बेदी उसे देखकर मुस्कराया।

"मुझे तुम्हारी बहुत चिन्ता है विजय।" अंजना भारी स्वर में कह उठी—"मैं-मैं...।"

"ऐसा करके तुम विजय की हिम्मत तोड़ रही हो भाभी।" शुक्रा कह उठा।

"ओह सॉरी!" अंजना ने खुद को संभाला—"मैं चलती हूं, बाद में आऊंगी, पूछने कि नम्बर का क्या हुआ।" कहने के साथ ही अंजना फ्लैट से बाहर निकल गई।

शुक्रा ने भी विजय से विदा ली। उसने उदयवीर की कार लौटानी थी।

बेदी ने फ्लैट बंद किया और बस स्टाप की तरफ बढ़ गया, रॉयल सेफ कम्पनी जाने के लिए।

❑ ❑

चौराहे पर बने फोन बूथ से अंजना ने फोन किया और बात की।

"हां, मैं बोल रही हूं, तुम कैसे हो...ठीक है अब मेरी बात सुनो। तीर निशाने पर लगा है। सारा काम वैसे ही हो रहा है, जैसे हमने सोचा था। विजय करोड़ो के जेवरातों पर हाथ मारने

का फैसला कर चुका है। मशहूर ज्वैलर्स पिशोरीलाल के यहां। उसके पास रॉयल सेफ कम्पनी ने नई तिजोरी भिजवाई थी। विजय उसी तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर मालूम करने ऑफिस गया है। आगे जो भी होता रहेगा। तुम्हें खबर देती रहूंगी। तुम अपनी तैयारी पूरी रखना...बाय।" कहने के साथ ही अंजना ने रिसीवर रख दिया। चेहरे पर जहर बुझी मुस्कान तैर रही थी।

❑ ❑

बेदी पर नजर पड़ते ही संतोष सिंह हथेली पर पड़ी सुरती मसलना भूल गया।

"साहेब आप?"

"क्यों?" बेदी ने मुस्कराकर उसके कंधे पर हाथ रखा—"मैं नहीं आ सकता क्या?"

"क्यों नहीं आ सकते। मैंने तो पहले ही कहा था कि इतनी बढ़िया नौकरी...।"

"मैं नौकरी करने नहीं आया।"

"तो?"

"इस्तीफा देने आया हूं।"

संतोष सिंह ने मुंह बिगाड़ा।

"साहेब आपने तो सारा मूड खराब कर दिया। इस्तीफा तो आप डाक से भी भेज सकते थे। वैसे मुझे पूरा विश्वास है कि बड़े साहेब आपका इस्तीफा लेंगे नहीं।" संतोष सिंह ने सिर हिलाया।

रिसेप्शन डेस्क के पीछे किसी को न देखकर बेदी बोला।

"सपना छुट्टी पर है क्या?"

"आज आठ तारीख है।"

"तारीख का छुट्टी से क्या मतलब?"

"आपको नहीं मालूम?"

"नहीं।"

"सपना मेम साहब हर महीने आठ तारीख को छुट्टी करती हैं।"

"आठ तारीख को?"

"जी हां।"

"क्यों?"

"कमाल है, सीधे-सीधे बता रहा हूं। फिर भी बात समझ में नहीं आ रही। वो आपकी जिससे शादी होने वाली है। उनसे

पूछिएगा कि कोई जवान युवती हर महीने आठ तारीख को छुट्टी करे तो फिर क्या होता है?''

बेदी ने संतोष सिंह को घूरा।

''अपनी शरारतों से बाज आ जा, सुधर जा।''

''क्या करूं साहेब। नौकरी ही ऐसी है। अन्दर-बाहर हर तरफ की खबर रखनी पड़ती है। आंखें भी खुली रखनी पड़ती हैं। साहेब लोग ऑफिस आकर सो जाते हैं लेकिन मैं तो सो भी नहीं सकता। क्या मालूम मेरी आंख लगते ही पीछे से क्या गड़बड़ हो जाए। चपरासी की पोस्ट ही ऐसी है।''

बेदी ने गहरी सांस ली और आगे बढ़ गया।

''आओ विजय।'' प्राणनाथ मल्होत्रा उसे देखते ही मुस्कराया—''बैठो, कैसे हो? देखने में तो एकदम फिट नजर आ रहे हो। वो जो दिमाग में गोली फंसी है, उसका क्या हुआ?''

बेदी कुर्सी पर बैठते हुए बोला।

''वो तो अभी वहीं है सर।''

''चिन्ता मत करो, भगवान पर भरोसा रखो। सब ठीक हो जाएगा।'' प्राणनाथ मल्होत्रा ने भरपूर निगाहों से उसे देखा—''मेरा बड़ा भाई जो कि आज भी जिन्दा है। करीब बीस साल पहले किसी बात पर उखड़कर बीस साल पहले उसने सिर में गोली मार कर खुदकशी करने की कोशिश की। लेकिन किस्मत से वो बच गया। तब से सामान्य जिन्दगी जी रहा है। लेकिन वो गोली जो उसने अपने सिर में मारी थी, वो अभी तक दिमाग में ही फंसी हुई है। ठीक वहीं, जहां तुम्हारे दिमाग में फंसी है।''

''क्या सर?'' बेदी हैरानी से कह उठा।

''मैं ठीक कह रहा हूं। तुम चाहो तो मेरे बड़े भाई से मिल भी सकते हो। बीस सालों से गोली उसके सिर में फंसी है। लेकिन इस बारे में उसे कभी कुछ भी महसूस नहीं होता। गोली निकलवाने में जान का खतरा था। इसलिए घरवालों के जोर देने पर उसने गोली नहीं निकलवाई।''

''ओह!''

''जाने क्यों मेरा विश्वास है कि मेरे भाई की तरह, तुम्हें भी कुछ नहीं होगा। इस तरह घबराना छोड़ो और अपने काम की

तरफ ध्यान दो। अभी तुम्हें बहुत तरक्की करनी है। बहुत आगे जाना है।''

बेदी हौले से सिर हिलाकर रह गया।

''तुम कई दिन से ऑफिस नहीं आए। कोई बात नहीं, मैं सब संभाल लूंगा।'' प्राणनाथ मल्होत्रा ने कहा और ड्राअर से फाइल निकालकर बोला—''ये सेठ धर्मदास की सेफ की कम्बीनेशन नम्बर की फाइल है। अभी हैडक्वार्टर से आई है। इसे बेसमेंट में मौजूद स्ट्रांग रूम में रख दो। उसके बाद तुम एक चक्कर सेठ पिशोरीलाल के यहां लगा आना। उसकी सेफ में कहीं गड़बड़ है, वो भी देख लेना।''

''सेफ का मैकेनिक अभी छुट्टी से नहीं लौटा?''

''नहीं, उसका फोन आया था कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। एक-दो दिन की छुट्टी पर जाते हैं और फिर तबीयत खराब कर लेते हैं। तभी तो मैं इन्हें छुट्टी नहीं देता।'' प्राणनाथ मल्होत्रा ने उखड़े स्वर में कहा।

बेदी उठ खड़ा हुआ।

''तुम फाइल को स्ट्रांग रूम में रखो और पिशोरीलाल से मिलकर आओ।''

❑❑

बेदी ने किसी बहाने से स्ट्रांग रूम में ही जाना था। सेठ धर्मदास की फाइल रखने का बढ़िया मौका उसके हाथ आ गया था।

बेदी कम्पनी के ऑफिस के स्ट्रांग रूम में पहुंचा।

स्ट्रांग रूम ज्यादा बड़ा नहीं था। बाहर कुर्सी पर स्ट्रांग रूम का चौकीदार गन के साथ मौजूद था।

''सलाम साब।'' वो विजय को देखते ही बोला।

''सलाम।'' फाइल थामे बेदी मुस्कराया—''कैसे हो?''

''ठीक हूं। आपको बहुत दिन बाद देखा।''

''हां, तबीयत ठीक नहीं रही। आज ही ऑफिस आया हूं।'' बेदी ने कहा और भीतर प्रवेश कर गया।

बीस फीट चौड़ा और बीस फीट लम्बा स्ट्रांग रूम का कमरा था। दीवारों के साथ-साथ चारों तरफ फाइलिंग केबिनेट थी। जो कि कोड वर्ड से ही खुलती थी।

बेदी यहां का विश्वसनीय कर्मचारी माना जाता था। इसलिए वह हर केबिनेट का कोड वर्ड जानता था। उसने सेठ धर्मदास

की फाइल कम्बीनेशन रिकार्ड में रखी और 'पी' से पिशोरीलाल की फाइल 'पी' वाले सर्कल में तलाशने लगा। 'पी' वाला सारा केबिनेट उसने छान मारा।

परन्तु पिशोरीलाल की फाइल कहीं नहीं मिली।

बेदी ने उस केबिनेट को बंद किया।

फाइल के यहां मौजूद न होने का मतलब था कि अभी वह हैडक्वार्टर से तैयार होकर नहीं आई। वह जानता था कि कुछ ही दिनों में कम्पनी के जनरल मैनेजर हेमन्त लाल हैडक्वार्टर से आने वाले हैं। यह भी हो सकता है कि आते वक्त वो फाइल साथ ही लेते आएं।

❑❑

बेदी, सेठ पिशोरीलाल के बंगले पर पहुंचा तो उसे याद आया कि राधा के लिए गुलाब लाने का वायदा किया था। भाड़ में गई राधा और गुलाब। यहां अपनी जान की पड़ी है। उस वक्त राधा भी कहीं नजर नहीं आई। नौकर उसे पिशोरीलाल के पास पहुंचा गया। जहां तिजोरी भी रखी थी।

पिशोरीलाल बेदी को देखते ही कह उठा।

"देख भायो।" बोलते हुए उसने अपने मटके पर हाथ फेरा—"ये वो तिजोरी जो थारी कम्पनी ने म्हारे सिर पर मंड दी, तिजोरी क्या ताबूत है। जिसमें म्हारी सारी माया दो दिन से बंद है। भायो मैं तो रखके परेसाण हो गयो। जां का बबाल रख के। मैंने थारे को सेफ के लिए कहा था। ताबूत के लिए नहीं कहा। समझ रयो हो कि नहीं समझ रयो। दोबारा समझाऊं के?"

तिजोरी को देखते-देखते बेदी का दिल जोरों से धड़क रहा था। यही वो तिजोरी थी, जिसमें मौजूद करोड़ों के जेवरातों पर हाथ साफ करने की, उसने सोच ली थी।

"कां गुम हो गयो?"

"मैं।" बेदी ने अपने मन के भावों पर काबू पाया—"तिजोरी देख रहा था। बहुत बढ़िया बनाई है कम्पनी ने।"

"पण म्हारे को तो फंसा ही दियो।"

"दिक्कत क्या है सेठ जी?"

"जा का जीरो नम्बर कई बार सटका दे चुको है। ससुरा कभी तो ठीक से लगो तो कभी अपणी हैंकड़ी दिखाणें लगो। भाया, जा का जीरो नम्बर का काण घणी तरह उमेठ दे ताकि

वो मुझे ओ से परेशान न करो। समझ रयो है कि नहीं समझ रयो।"

"मतलब कि इसका जीरो नम्बर अटक जाता है।" बेदी ने कहा।

पिशोरीलाल ने तारीफ करने वाले अंदाज में उसे देखा।

"भायो, तू तो घणा हुशियार जान पड़ रा सै।"

बेदी आगे बढ़ा और बंद तिजोरी को थपथपाया। मन-ही-मन यह सोच रहा था कि इसमें मौजूद करोड़ों के जेवरात उसके बनेंगे?

"कित खो गयो भायो?" पिशोरीलाल ने बेदी को देखा।

बेदी ने पिशोरीलाल को देखा।

"सेठ जी, ये टैक्नीकल प्रॉब्लम है। इसे तो कम्पनी का मैकेनिक ही ठीक कर सकता है।"

"तो फिर तू क्यों आयो? मैकेनिक को भेजना था भायो।"

"वो कुछ दिन की छुट्टी पर है।"

"तो थारे को, थारे मालिक ने मुंह दिखाणे के लिए यां भेजो।" पिशोरीलाल उखड़ा।

बेदी मुस्कराया।

"कोई और खराबी होती तो शायद मैं ठीक कर देता। लॉक से वास्ता रखती खराबी मैं ठीक नहीं कर सकता।"

"भायो।" पिशोरीलाल का चेहरा गुस्से में अजीब-सा हो रहा था—"इसमें मैंने गिराहको के ढेर सारे गहणें रखे हैं। वो उन्हें देने होते हैं। कभो नयो गहनो रखने हौवे। ऐसे में जीरो तंग करो। कभी-कभो अटक जायो। टराई तो कर, शैद थारे से ही ठीक हो जायौ तो सारो दिक्कतों भाग जायो।"

"सॉरी सेठ जी, ये काम मेरे बस से बाहर का है। आपको परेशानी तो होगी लेकिन अटकते जीरों के साथ तिजोरी खोलते रहिए। काम चला लीजिए। मैकेनिक के आते ही सबसे पहले उसे यहीं भेज दूंगा।"

सेठ पिशोरीलाल ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"थारी बात पर मजो न आयो। खैर, मिकैनिक को यां मत भेजना। दूसरे बंगले पर भेजना।"

"दूसरे बंगले पर?" बेदी की निगाह पिशोरीलाल पर अटकी।

"हां भायो, यो बंगला छौटा पड़ो हो। बड़ो बंगला खरीद लियो हो। वां झाड़ू-सफाई हौवे। कुछ दिनों में उसमें शिफ्ट होने जा

रया हूं।''

बेदी का दिल धड़का।

''तो सारा सामान भी आप वहीं ले जाएंगे।'' बेदी के होंठों से निकला।

''भायो, सामान या छोड़कर वां झाड़ू मारने जाऊं का। अजीबो ही बात करो हो। सामान तो क्या अपणी सेठानी को भी साथ ही ले जायो। समझो का कि नहीं?''

''समझा।'' बेदी का दिमाग तेजी से चल रहा था।

''मिकैनिक को नए बंगले पर ही भेजियो।''

''वो बंगला कहां है?''

पिशोरीलाल ने नए बंगले का पता बताया।

''ठीक है, जब आप नए बंगले में पहुंच जाएं तो कम्पनी में फोन कर दीजिएगा। मैकेनिक आ जाएगा।''

''ठीको, ठीको।''

बेदी की निगाह सेफ की तरफ गई।

''इतनी बड़ी सेफ किस पर ले जाएंगे आप?''

''टरक पर जाएगी, बोत संभालकर ले जाना होगा।''

''मैं आपकी मदद करूं?''

''किस वास्ते भायो?''

''ट्रक के बारे में। जो ठीक ढंग से आपकी तिजोरी को नए बंगले पर...।''

''मेहरबानी भायो। म्हारे पास टरक की कमी नहीं। वो जयपुर गोल्डन वाला हैवो ना? वो अपना खास पहचान वाला हैवे। एक फोन करूं तो वो दस टरक बाहर खड़ा कर दयो। पण म्हारे को तो एको की ही जरूरत हैवे। चिन्ता नहीं। सब काम घणी बढ़िया तरहो से हो जायो।''

बेदी ने सिर हिलाया।

''आज तो थारे को चाय भी न मिल पायो। राधा बाजार गयो शापिंग करने वास्ते। फिर कभी नयो बंगलो पर थारे को कॉफी पिलाए। नैसकैफे, नाम सुना है कि नाही भायो?''

''नैसकैफी बहुत बार पी है सेठजी।'' बेदी मुस्कराया।

''ठीको। तब लस्सी पीकर ही काम चला लियो। चल थारे को बाहर को पहुंचा दूं।'' अभी तो मन्ने शोरूम भी जाना हो। नयू सैकेट्री की इन्टरव्यू लेनी हैवे।''

बेदी ने सेफ पर निगाह मारी फिर पिशोरीलाल के साथ कमरे

से बाहर निकला।

''सेठ जी।'' बेदी बोला—''कोई और तिजोरी की जरूरत हो तो...।''

''ना भायो। ये ई बहुत है। पैले इसका जीरो तो ठीक होणें दे।'' पिशोरीलाल ने मुंह बनाकर कहा।

❑ ❑

रास्ते में बेदी ने अंजना को फोन करके शुक्रा के घर पहुंचने को कहा और जब वह शुक्रा के घर पहुंचा तो अंजना वहां पहुंच चुकी थी।

शुक्रा का पुराना-सा कुछ टूटा मकान था। जो उसके मां-बाप छोड़ गए थे।

''क्या रहा विजय?'' अंजना उसे देखते ही कह उठी—''तुम कम्बीनेशन नम्बर की फाइल...।''

''भाभी जी।'' शुक्रा फोल्डिंग कुर्सी खोलता हुआ बोला—''पहले विजय को सांस तो लेने दो।''

बेदी कुर्सी पर बैठा, शुक्रा ने उसे पानी पिलाया।

''पिशोरीलाल वाली फाइल ऑफिस के रिकॉर्ड में नहीं मिली।''

''नहीं मिली?'' अंजना व्याकुल हो उठी।

''नहीं, शायद हैडक्वार्टर से फाइल तैयार होकर नहीं आई, दो-चार दिन में आ जाएगी।''

''ओह!'' अंजना का चेहरा लटक गया।

दो पल वहां चुप्पी रही।

''अब-अब क्या करें?''

''मैं अभी पिशोरीलाल के यहां से आ रहा हूं।'' बेदी ने धीमे स्वर में कहा।

''पिशोरीलाल के यहां से?'' शुक्रा के होंठों से निकला।

''हां, ऑफिस की तरफ से गया था। कुछ काम था। वहां तिजोरी को देखा।'' बेदी गम्भीरता से कह रहा था—''पिशोरीलाल से मालूम हुआ कि अगले दो-चार, पांच दिनों में, वह नए बंगले में शिफ्ट हो रहा है। सारा सामान वहां जा रहा है। तिजोरी भी।''

तीनों एक-दूसरे को देखने लगे।

''और वो तिजोरी हमारे लिए किसी कुबेर के खजाने से कम नहीं है।'' बेदी के होंठ भिंच गए। जिस अंदाज में उसने यह बात कही थी, शुक्रा और अंजना चौंके।

"तुम-तुम!" अंजना का स्वर कांपा—"तुम कहीं शिफ्टिंग के दौरान रास्ते में ही तिजोरी पर हाथ डालने की तो नहीं सोच रहे हो?"

"यही सोच रहा हूं मैं।" बेदी ने दृढ़ स्वर में कहा।

शुक्रा और अंजना की आंखें मिलीं।

"ऐसा मत सोचो बेदी, इसमें खतरा है। चुपचाप घर में घुसकर हम चोरी करने की कोशिश तो कर ही सकते हैं। लेकिन सड़क पर खुले में तिजोरी को लूटना, बहुत ही गलत...।"

अंजना ने टोका।

"शुक्रा भैया, बीच में मत बोलो, विजय ने जो कहा है, उसका कुछ आधार तो होगा। पहले इसकी पूरी बात तो सुन लें कि इसके दिमाग में है क्या?"

"यह सब भी बताऊंगा।" बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा, फिर शुक्रा को देखा—"शुक्रा, तेरे को यह पता लगाना है कि सेफ कौन-से रूट से पिशोरीलाल के नए बंगले पर जाएगी। नया बंगला कहां है, वो मैं बता दूंगा। साथ में यह भी मालूम करना कि कौन-से ट्रक पर सेफ जाएगी।"

"ये सब मालूम करना टेढ़ा है।" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा—"फिर भी मालूम कर लूंगा। यह तो मालूम नहीं होगा कि तिजोरी ले जाने के लिए सेठ ने कौन-सी ट्रांसपोर्ट कम्पनी से बात की है।"

"जयपुर गोल्डन, पिशोरीलाल बता रहा था कि वहां उसकी बहुत जान-पहचान है। उसी कम्पनी से ट्रक आएगा तिजोरी ले जाने के लिए।"

"फिर तो मैं सब मालूम कर लूंगा। जयपुर गोल्डन ट्रांसपोर्ट में तीन-चार ड्राइवर मेरी खासी पहचान वाले हैं।"

बेदी ने शुक्रा को देखते हुए सोच भरे अंदाज में सिर हिलाया।

कई पलों के लिए वहां खामोशी छा गई।

"क्या सोच रहे हो विजय?" अंजना बोली।

बेदी ने दोनों पर निगाह मारकर सोच भरे स्वर में कहा।

"मैं सोच रहा हूं कि किसी तरह हमें सेठ पिशोरीलाल की हरकतों की खबर मिलती रहे तो यह बात हमारे लिए फायदे वाली होगी। पिशोरीलाल अपना प्रोग्राम बदलता है या फिर कोई और इन्तजाम करता है तो सब कुछ हमें मालूम होता रहेगा। इस काम में किसी भी मोड़ पर हम मात नहीं खा सकेंगे।"

"बात तो तेरी ठीक है।" शुक्रा तुरन्त कह उठा।

"लेकिन ऐसे किसी बंदे को कहां तलाश करें जो पिशोरीलाल की हर हरकत की खबर रखता हो।" अंजना व्याकुल हो उठी—"यह बात तो ठीक है कि तिजोरी को शिफ्ट करने के दौरान पिशोरीलाल कभी भी, अपना प्रोग्राम आगे-पीछे कर सकता है। ऐसे में हमें खबर मिलेगी तो, हम उसी के मुताबिक फौरन अपना प्रोग्राम बदल लेंगे। लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत तो यहां आ गई कि ऐसे इन्सान को कहां तलाश करें?"

तीनों एक-दूसरे को देखने लगे।

आखिरकार बेदी हिचकिचाकर कह उठा।

"एक है जो यह काम कर सकता है, लेकिन...।"

"क्या लेकिन।" अंजना कह उठी।

"कौन है वो?"

"राधा, सेठ पिशोरीलाल की नौकरानी।" बेदी गहरी सांस लेकर कह उठा—"वह हर वक्त पिशोरीलाल के बंगले पर रहती है।"

"वो तुम्हारी बात क्यों मानेगी?" अंजना ने पूछा।

"एक बार जब वह मिली तो लाइन मारने की कोशिश कर रही थी। मैं उसे कहूं तो वह मेरी बात मान जाएगी।" बेदी ने गहरी सांस लेकर कहा—"लेकिन वह मेरी सहायता करने के बदले फायदा उठाना चाहे।"

"कैसा फायदा?"

"मेरे साथ चिपकने का।"

"पागल हो तुम।" अंजना कह उठी।

"क्या?"

"मैंने कहा, पागल हो तुम, जो इस मामूली-सी बात को तूल दे रहे हो।" अंजना ने सिर को झटका दिया—"हमें तुम्हारी जिन्दगी चाहिए। जिसे बचाने के लिए पैसा चाहिए। अगर वह तुमसे चिपकती भी है तो चिपकने दो। तुमने उससे अपना मतलब निकालना है। वह निकालो और उसे नमस्ते कर दो। क्यों शुक्रा भैया।"

"हां-हां, भाभी ठीक ही तो कहती है।" शुक्रा के होंठों से निकला।

"लेकिन...।"

"विजय।" अंजना समझाने वाले स्वर में कह उठी—"तुम

कोई लड़की तो हो नहीं, जो इस काम में अपने कदम पीछे कर लो। तुम्हें सिर्फ अपनी जिन्दगी बचानी है और किसी चीज की तुम्हें परवाह नहीं।''

''राधा।'' बेदी ने उसे देखा—''राधा मेरे साथ चिपके या कुछ भी करे, तुम्हें एतराज नहीं?''

''एतराज है, बहुत बड़ा एतराज है। सबसे बड़ा एतराज मुझे है।'' अंजना अपने शब्दों पर जोर देकर कह उठी—''क्योंकि तुम मेरे हो। सिर्फ मेरे हो। मेरे अलावा कोई लड़की तुम्हें हाथ भी क्यों लगाए। लेकिन विजय जब तुम ही जिन्दा नहीं रहोगे तो मैं किसे प्यार करूंगी। मैंने पहले भी कहा है हमें सबसे पहले तुम्हारी जिन्दगी की जरूरत है। तुम ठीक रहोगे तो कोई कमी नहीं होगी। सब ठीक हो जाएगा।''

''विजय।'' शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा—''भाभी ठीक कहती है। तुम तो राधा से अपना काम निकालने जा रहे हो। ऐसे में वह तुम्हारे साथ कुछ करती है तो तुम्हें एतराज नहीं होना चाहिए, क्योंकि तुम तो दिल से भाभी के हो। ऐसे में राधा क्या करती है। परवाह मत करो।''

बेदी ने कुछ नहीं कहा।

''विजय।'' शुक्रा ने टोका।

''हां।'' बेदी सोचों से निकला।

''बिना वक्त गंवाए, जैसे भी हो राधा को अपने जाल में फांसो कि भीतर की खबर तुम्हें देती रहे।'' शुक्रा ने सोच भरे स्वर में कहा—''राधा को अपने काम के मुताबिक चलाना भी हमारे काम का हिस्सा है।''

''हां विजय।'' अंजना बोली—''राधा को काबू करने का काम अभी से शुरू कर दो।''

''अंजना, तुम्हें अजीब नहीं लगेगा कि राधा मेरे साथ...।''

''मैं फिर कहती हूं तुम पागल हो। तुम राधा से अपना काम निकलवा रहे हो। जो कि तुम्हारे लिए जरूरी है। ऐसे में मुझे क्यों एतराज होगा और फिर यह सब तो नाटक ही होगा। असल प्यार तो हम दोनों ही एक-दूसरे से करते हैं। छोड़ो इन बातों को। वक्त बरबाद न करके, राधा से मिलने की कोशिश करो।''

बेदी ने कुछ नहीं कहा। उसकी खामोशी में ही सहमति शामिल थी।

❑ ❑

बेदी अगले दिन सुबह ही उदयवीर के गैराज पर पहुंचा। तब नौ बज रहे थे। काम करनेवाले लड़के भी तभी आए थे। कुछ ही देर में उदयवीर आ पहुंचा एम्बेसेडर पर।

''हैलो विजय।'' उदयवीर मुस्कराकर बोला—''सुबह-सुबह, सब ठीक है न?''

''बढ़िया।'' बेदी मुस्कराया—''तुम कैसे हो?''

''एकदम ठीक।'' उदयवीर गम्भीर-सा कह उठा—''तुम्हारे ऑपरेशन का क्या हुआ? वो गोली...।''

''उदय मैं फिर बात करूंगा इस सिलसिले में। जल्दी में हूं, तुम्हारी कार फ्री है?''

''कार, हां आज कहीं नहीं जाना, फ्री है। गैराज में बहुत काम है।''

''ठीक है, मैं कार ले जा रहा हूं। शाम को वापस दे जाऊंगा।'' बेदी मुस्कराया।

''कोई जरूरी है क्या शाम को वापस देनी है कार। दो दिन बाद आ जायेगी। यारों से बात कर रहा है तो यारों वाली बात कर।'' उदयवीर ने हंस कर कहा।

बेदी ने उदयवीर की कार ली और पिशोरीलाल के बंगले की तरफ रवाना हो गया।

सेठ पिशोरीलाल के बंगले के सामने, सड़क पार जरा-सा हटकर बेदी कार में बैठा, बंगले पर ही निगाहें टिकाए था। उसकी नजरें राधा को तलाश रही थीं। लेकिन बंगले की चारदीवारी, उसके साथ लगे, भीतर की तरफ पेड़ और लोहे के बड़े गेट के पास खड़े दो दरबान ही नजर आ रहे थे। गेट के भीतर ड्राइव-वे पर खड़ी दो कीमती कारें नजर आ रही थीं।

करीब आधे घंटे बाद उसने पिशोरीलाल को कार पर बंगले से बाहर निकलते देखा। कार ड्राइवर चला रहा था। स्पष्ट था कि पिशोरीलाल शो-रूम जा रहा था।

उसके बाद भी आधा घंटा बीत गया।

राधा कहीं भी नजर नहीं आई।

आखिरकार बेदी कार से निकला और कुछ दूर मौजूद दुकान पर लगे फोन से, सेठ पिशोरीलाल के यहां फोन किया। घंटी

बजने के बाद उधर से रिसीवर उठाया गया।
बेदी का दिल धड़क उठा। कानों में पड़ने वाली आवाज राधा की ही थी।
"राधा।" बेदी ने अपनी आवाज में शहद घोल लिया।
"कौन?"
"पहचाना नहीं राधा?" बेदी ने अपनी आवाज में पूरा का पूरा शहद उड़ेल लिया।
"नहीं। कौन हो तुम?" राधा की आवाज में तीखापन आ गया।
"मैं, गुलाब के फूल वाला।"
"ओह!" राधा की आवाज फौरन कानों में पड़ी—"बाबू जी, आप!"
"मैं कल आया था। तुम मिली नहीं राधा।"
"जब आप आए तब मैं सामान खरीदने बाजार गई हुई थी।" राधा की आवाज में मुस्कान थी—"आपने गुलाब का फूल लाना था मेरे लिए। मैं तो कब से आपके फूल का इन्तजार कर रही हूं।"
"कल फूल भी लाया था तुम्हारे लिए।"
"सच!"
"हां, तुम नहीं जानती कि फूल को वापस ले जाते हुए मुझे कितनी तकलीफ हुई। किसी से तुम्हारे बारे में पूछ भी नहीं सकता था। अब तुम्हें क्या बताऊं। उसके बाद तो मुझे एक पल का भी चैन नहीं मिला। रात भर ठीक से नींद भी नहीं आई।" बेदी ने गहरी सांस लेकर कहा।
"क्यों?" राधा की आवाज में चंचलता थी।
"नींद तो तुमने चुरा ली। जब तक तुम्हें देखूंगा नहीं। चैन नहीं मिलेगा। मुझे लगता है मैं तुम्हें चाहने लगा हूं। क्यों राधा क्या इसी को प्यार कहते हैं।"
"मुझे क्या मालूम, मैंने तो कभी किसी से प्यार नहीं किया।" राधा के हंसने की आवाज आई।
"मुझसे मिल लो राधा, नहीं तो मुझे चैन नहीं मिलेगा।"
"आ जाइए, रोका किसने है?"
"मैं नहीं आ सकता, पिशोरीलाल को क्या कहूंगा कि मैं क्यों आया। राधा मैं बंगले के बाहर से ही बोल रहा हूं। तुम बाहर आ जाओ। इन्कार मत करना, मेरा दिल टूट जाएगा, मैं...।"

"आप बंगले के बाहर हैं?" राधा का हैरानी से भरा स्वर आया।
"हां राधा, रात भर सोया नहीं और अब तुम्हें देखने के लिए यहां आ गया। आ जाओ राधा, मैं तुम्हें देखकर तुमसे दो बातें करके, अपने दिल को...।"
"मुझे डर लग रहा है।" राधा की आवाज आई।
"क्यों—मेरे से डर क्यों?"
"मैं इस तरह कभी बंगले से बाहर नहीं मिली।"
"बंगले के भीतर ही मिली सबसे आज तक?"
"हां, जिसे मिलना होता है, बंगले में आ जाता है, आप...।"
"कोई बात नहीं।" बेदी ने गहरी सांस ली—"मेरे प्यार की खातिर आप बंगले से बाहर मिल लो। बोलो आ रही हो ना? मुझे तड़पाओ मत।"
राधा के हंसने की आवाज आई।
"राधा तुम...?"
"आती हूं बाबू साहेब।"
"किसी को बताकर मत आना कि मेरे साथ...।"
"इतनी समझ तो हममें है ही। आज से पहले भी हम ऐसी बातें किसी को नहीं बताते।"
"सच में बहुत समझदार हो। बंगले से निकलकर मार्किट की तरफ बढ़ना, मैं मिल जाऊंगा।" कहने के साथ ही बेदी ने रिसीवर रख दिया।

□□

बीस मिनट बाद राधा बंगले से बाहर निकली और मार्किट की तरफ बढ़ गई। उसने कमीज-सलवार पहना हुआ था। चेहरे पर मेकअप की परत थी। दो डिजाइनदार चुटियां लटककर कंधों तक जा रही थीं। इसमें कोई शक नहीं कि वह खूबसूरत थी और लग भी रही थी। उसे इस तरह सड़क पर जाते देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह नौकरानी है। इस वक्त उसकी चाल कुछ ज्यादा ही मस्तानी लग रही थी। बेदी को समझते देर न लगी कि यह सारी जहमत उसका दम निकालने के लिए ही उठाई जा रही है।
राधा जब कुछ आगे निकल गई तो उसने कार स्टार्ट की और उसके पास ले जाकर रोका।
कार में बेदी को देखकर राधा ठिठकी। अगले ही पल उसके

चेहरे पर ऐसी लाली दौड़ने लगी जैसे पहली बार किसी मर्द से यूं सड़क पर मिलने आई हो।

"हाय!" बेदी ने बेहद खुशी भरे लहजे में उसे पुकारा।

"धीरे बोलो बाबूजी, मैं बहरी तो नहीं हूं।" राधा ने जल्दी से कहा।

बेदी ने हाथ बढ़ाकर कार का दरवाजा खोला।

"आओ, भीतर आ जाओ।"

राधा फौरन भीतर बैठी, दरवाजा बंद कर लिया।

बेदी ने कार आगे बढ़ा दी।

"आपके पास तो कार भी है बाबूजी।"

"मेरे दोस्त की है, लेकिन राधा तुम मुझे बाबूजी मत कहा करो।" बेदी ने अपनेपन से कहा।

"क्यों, आप तो...।"

"मैं तुम्हारे लिए विजय हूं। तुम्हारा विजय, तुम्हारा सब कुछ और तुम अब राधा नहीं, मैं विजय नहीं। हम दोनों आशिक-माशूक हैं। जो बराबर होते हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। प्यार की दुनिया होती ही ऐसी है।"

राधा इस तरह शरमाई जैसे यह सब बातें उसे पहली बार किसी ने कही हों।

"समझ गई?"

"जी।" राधा ने अर्पित अंदाज में सिर हिला दिया।

कुछ ही देर बाद दोनों रैस्टोरेंट में बैठे थे।

"क्या खाओगी राधा?"

"दोसा।"

"दोसा या डोसा?" बेदी मुस्कराया।

"वही-वही, लम्बा-लम्बा, जिसके बीच में आलू होते हैं और साथ में पानी जैसी सब्जी।"

"पानी जैसी सब्जी नहीं सांभर। सांभर कहते हैं उसे।"

"हां, वही-वही।"

बेदी ने वेटर को डोसा लाने का आर्डर दिया।

रैस्टोरेंट में बैठी राधा बेहद खुश नजर आ रही थी।

"राधा।" एकाएक बेदी ने मुंह लटका कर कहा—"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं।"

"क्या?"

"जानती हो, मैं तुम्हें यहां क्यों लाया?"

"दोसा खिलाने।"

"नहीं, दिल की बात बताने।"

"दिल की बात?"

"हां, बताता हूं तुम्हें।" बेदी ने कुछ ज्यादा ही लम्बी सांस ली—"दो साल पहले किसी लड़की से मेरी शादी तय हो गई थी। उसका खूबसूरत चेहरा बिलकुल तुमसे मिलता था। लेकिन ट्रेन एक्सीडेंट से उसकी जान चली गई। मैं उसे बहुत चाहता था, अभी तक उसे भूल नहीं पाया।"

"ओह!"

"उसके बाद मुझे कोई लड़की अच्छी नहीं लगी। शादी करने को भी मन नहीं चाहा। लेकिन उस दिन मैंने तुम्हें सेठ जी के यहां देखा तो लगा जैसे मेरी शोभा लौट आई हो और...।"

"शोभा कौन?"

"वही जो ट्रेन एक्सीडेंट में...।"

"अच्छा-अच्छा, उसका नाम शोभा था?"

"हां, तुम्हें देखते ही लगा जैसे मेरी शोभा लौट आई हो। पागल हो उठा, मैं तुम्हें देखकर।" बेदी तड़प भरे स्वर में कहे जा रहा था—"वो मुझे हर रोज गुलाब का फूल दिया करती थी। अब क्या बताऊं—मैं तो शोभा के मरने के बाद भीतर-ही-भीतर खत्म हो गया था, लेकिन जब से तुम्हें देखा...।"

उसे खामोश पाकर राधा कह उठी।

"खामोश क्यों हो गए।"

बेदी, राधा के भीतर का उतावलापन खूब समझ रहा था।

"मैं-मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं राधा।"

"शादी?"

"हां, तुमसे शादी करके मेरी जिन्दगी की सारी खुशियां फिर से लौट आएंगी। मैं...।"

"लेकिन हममें बहुत फासला है विजय बाबू।"

"मैं दुनिया की हर दूरी मिटा दूंगा। प्यार करने वाले बड़े-से-बड़ा फासला तय कर लेते हैं।"

"आप समझते नहीं।" राधा गहरी सांस लेकर कह उठी—"मैं छठी पास नौकरानी हूं। आप पढ़े-लिखे साहब हैं। मेरा और आपका मिलन नहीं हो...।"

"मिलन तो हो चुका है राधा। मैं तुम्हारा हो चुका हूं। तुम मेरी हो चुकी हो। पूछो-पूछो अपने दिल से क्या मैं सच नहीं

कह रहा। अब तो तुम मेरी नींदों में आ चुकी हो। तुम...।''
तभी वेटर आया और डोसा रख गया।
''हमारी शादी होगी राधा। हमारे तीन बच्चे होंगे चार-पांच भी चल जाएंगे। फिर...।''
''चार...।''
''चार!'' बेदी ने उसे देखा।
''हां, मेरी मां के तीन बच्चे हैं, तो मैं उससे एक ज्यादा, चार करूंगी।'' राधा जिद्द भरे स्वर में कह उठी।
''ठीक है, चार कर लेना। मेरी कौन-सी मेहनत लगनी है।'' बेदी ठण्डी सांस भरकर कह उठा—''मुझे तो सिर्फ तुम्हारी जरूरत है। सिर्फ तुम्हारी। तुम्हें सामने बिठाकर, मैं घंटों-घंटों तुम्हें देखते रहना चाहता हूं। तुम्हें कोई काम नहीं करना पड़ेगा। घर में नौकर होगा जो...।''
''सुनो, मेरे मामे का लड़का है। काम की तलाश में है। उसे नौकर रख लेंगे।'' राधा खुशी से कह उठी।
''एक ही लड़का है मामे का।''
''क्या मतलब?''
''मेरा मतलब है कि हमें तो दो नौकर चाहिए। एक घर का काम करेगा, दूसरा बच्चों को खिलाएगा।''
''उसकी तुम फिक्र मत करो। मेरे ताऊ का लड़का भी शहर आने को कह रहा था। उसे रख लेंगे।''
''एक मामे का, दूसरा ताऊ का।'' बेदी ने एकाएक खुश होकर कहा—''फिर तो घर में बहार आ जाएगी। कभी मैं तुम्हारे पास तो कभी मामे-ताऊ का लड़का। तब तो...।''
तभी वेटर आया।
''डोसा ठण्डा हो रहा है।''
''डोसा—हां-हां—राधा तुमने इतनी देर लगा दी, अब तो लम्बा-लम्बा ठण्डा हो रहा है और ये पानी वाली सब्जी तो, बिल्कुल ही पानी हो गई होगी, मैं और मंगवा देता।''
''मैं ठण्डा करके ही खाती हूं।'' कहने के साथ ही राधा ने प्लेटों में से चम्मच-छुरी निकालकर टेबल पर रखे, फिर डोसे को उठाकर गोल-गोल किया और खाने लगी। उसके बाद सांभर की कटोरी उठाकर घूंट भरा। जिसकी आवाज कम-से-कम आठ-दस कदम तो दूर गई होगी।
बेदी ने सकपकाकर इधर-उधर देखा।

देखने वाले तो देखकर मुस्करा रहे थे।
''आप नहीं लेंगे क्या?''
''मैं...!'' बेदी खिसियाकर कह उठा—''मैंने खाकर क्या करना है। तुम्हारे मेरे में फर्क तो है नहीं। खा तुम रही हो और खुशबू मैं ले रहा हूं। सांभर का घूंट तुम भर रही हो। कान मेरे बज रहे हैं। दिल तो करता है तुम जिन्दगी भर इसी तरह खाती रहो और मैं बैठा ऐसे ही तुम्हें देखता रहूं। लेकिन दिल का क्या, वो तो बहुत कुछ कहता है। खाओ-खाओ, कहो तो एक और मंगवा दूं।''
''इडली मंगवा दीजिए। वो बहुत अच्छी लगती है।''
''उसे भी इसी तरह प्यार के साथ खाओगी या दूसरे लोगों की तरह।''
''मैं समझी नहीं।''
''जरूरत भी नहीं समझने की। तुम चालू रहो। मैं इडली मंगवा रहा हूं।'' बेदी मन-ही-मन सकपका रहा था कि कई लोग मुस्कराते हुए उन्हें देख रहे हैं।

❑ ❑

बेदी और राधा पार्क के पेड़ की छाया के नीचे बैठे थे। दिन के इस वक्त जैसे ठण्डी हवा उनके गर्म अरमानों को और भी भड़का रही थी। बेदी थोड़ा-सा फासला रखने की चेष्टा में था। परन्तु राधा थी कि ऊपर ही चढ़ी आ रही थी। आखिरकार बेदी को ही हार माननी पड़ी।
''राधा।'' बेदी अपनी आवाज में प्यार भरकर कह उठा—''बस, कुछ ही देर की बात है।''
''कौन सी बात?'' आंखें बंद किए राधा अपना सिर उसकी छाती पर रखे, प्यार की हवाओं में उड़ रही थी।
''हमारी शादी की बात। कुछ अड़चन है, वह दूर हो जाए तो मैं तुम्हें अपनी दुल्हन बनाऊंगा। लाल सुर्ख जोड़े में सोलह शृंगार किए, जब सेज पर बैठी होओगी और मैं तुम्हारे पास आऊंगा और-और पास, हमारी सांसें टकराएंगी। उसके बाद-उसके बाद...।''
''क्या उसके बाद?'' राधा की बंद आंखों के पीछे शादी के सपने मचल उठे थे।
''बस, बाकी शादी के बाद।''
''क्या शादी के बाद...अभी कुछ हुआ ही कहां है।''

"मेरा मतलब है यह बातें शादी के बाद।" बेदी ने गहरी सांस ली।

राधा ने सीधी होकर उसे देखा।

"तुम किस अड़चन की बात कर रहे हो?"

"है एक दिक्कत हमारी शादी में।"

"बताओ तो।"

"अब तुम्हें क्या बताऊं?" बेदी दुख भरे स्वर में कह उठा—"महीना भर पहले मुझे पचास हजार रुपए की सख्त ज़रूरत पड़ गई। कहीं से नहीं मिले। मैंने सेठ जी, मतलब कि तुम्हारे मालिक से बात की तो कहने लगे कि पचास हजार मिल जाएंगे, बदले में कोई चीज रखवा दो। क्या करता मुसीबत में था। मेरे पास पांच लखा खानदानी हार पड़ा था। पचास हजार के बदले मैंने वही गिरवी रखवा दिया। उसके बाद मैंने बहुत कोशिश की कि कहीं से पचास हजार का इंतजाम करके हार छुड़वा लूं। लेकिन पचास हजार का इंतजाम नहीं हुआ।"

"आप किसी अड़चन के बारे में बता...।"

"वही हार तो अड़चन है। वो पांच लखा हार, मेरा खानदानी हार है। हमारे खानदान में तब तक कोई शादी पूर्ण नहीं मानी जाती, जब तक कि दुल्हन के गले में वो पांच लखा हार न डाला जाए। वो हार अब तुम्हारे सेठ की तिजोरी में है। बात यहीं तक होती तो मैं शायद एक-आध महीना सब्र कर लेता।"

"यहीं तक होती—क्या मतलब?"

"मुझे मालूम हुआ है कि पिशोरीलाल मेरा पांच लखा हार हड़प जाना चाहता है। वह वैसा ही नकली हार बनवाकर अपनी तिजोरी में रख देगा और असली दबा लेगा। ऐसे में जब मैं उसे पचास हजार रुपया दूंगा तो वह नकली हार मुझे दे देगा। अब तुम ही बताओ, एक तो लाखों का नुकसान, ऊपर से नकली हार की वजह से हमारी शादी पवित्र नहीं हो सकेगी। मेरी तो समझ नहीं आता क्या करूं। सेठ से टक्कर भी नहीं ले सकता। वो पैसे वाला है।"

"ये तो गलत बात है। सेठ जी को ऐसा नहीं करना चाहिए।"

"यही तो मैं कहता हूं राधा, यही तो मैं कहता हूं।" बेदी जैसे तड़पकर कह उठा—"वो हार-हार नहीं, बल्कि हमारे विवाह के पवित्र बंधन का गवाह बनने वाला, खानदानी गवाह है। मैं क्या करूं?"

"तुम ठीक कहते हो। फिर तो ऐसा कुछ सोचना चाहिए कि जिससे वह हार वापस मिल सके।" राधा बोली।

"भला हम क्या सोचेंगे।"

"कुछ तो सोचना ही पड़ेगा।"

कई पलों तक उनके बीच खामोशी रही।

"एक काम तो हो सकता है।" एकाएक बेदी ने कहा।

"क्या?"

"नहीं।" बेदी ने गहरी सांस ली, कुछ लम्बी ही ली—"रहने दो।"

"बताओ ना, क्या बात है?"

"नहीं राधा, मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे गलत समझो, मैं...।"

"ये क्या बात कर रहे हैं, विजय जी, मैं आपको गलत समझूंगी, मैं...।"

"बस राधा, मैं ऐसी कोई बात नहीं कहना चाहता, जिसका तुम गलत मतलब निकालो और एक बंधन में बंधते-बंधते हम जुदा होते चले जाएं।" बेदी भारी स्वर में कह उठा।

"क्या आपको मुझ पर विश्वास नहीं।"

बेदी खामोश रहा।

"एक बार मुझे आजमा कर तो देखिए। आपकी राधा अपनी जान तक दे देगी।"

"सच!" बेदी एकाएक खिल उठा फिर मुंह लटकाकर कह उठा—"तुम तो अपनी जान यकीनन दे दोगी। मैं जानता हूं तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। लेकिन तुम्हारी जान से मेरी दिक्कत दूर नहीं होगी।"

"इसका मतलब विजय जी, आप मुझसे प्यार नहीं करते।" राधा रूठने वाले ढंग में कह उठी।

"ऐसा मत कहो राधा, इस दुनिया में एक तुम ही तो मुझे प्यारी हो।"

"तो फिर बताओ ना, क्या बात है?"

दो पल खामोश रहकर, बेदी कह उठा।

"राधा, वो हार सेठ जी की तिजोरी में है।"

"हां।"

"तुम मेरा साथ दो तो मैं तुम्हें कैमरा देता हूं। मौका पाकर कभी उस हार की तस्वीर ले लेना। मैं उस तस्वीर के सहारे वैसा

ही नकली हार बनवाकर तुम्हें दे दूंगा और तुम मौका पाकर, वो नकली हार, उस असली की जगह रख देना और असली उठा लेना। पिशोरीलाल को पता नहीं चलेगा।"

राधा हड़बड़ा उठी।

"ये तो चोरी हुई?"

"हां राधा, यह चोरी है। मैं ऐसा न करता, अगर सेठ जी उस हार को बेचने की कोशिश न कर रहे होते और अगर वह हार बिक गया तो फिर कभी भी हमारी शादी नहीं हो...।"

"ऐसा मत कहिए जी।" राधा जल्दी से कह उठी।

"तो फिर मैं क्या करूं?" बेदी खींझकर फंसे स्वर में कह उठा।

"आप एक बार सेठ जी से हार मांगकर तो देखिए।"

"राधा तुम अभी बच्ची हो। इन बड़े लोगों की बातों को नहीं जानती। यह लोग सिरे से ही बेईमान होते हैं और अगर एक बार इनके मन में बेईमानी आ जाए तो यह करके ही रहते हैं।" बेदी ने समझाने वाले ढंग में कहा।

"लेकिन...?" राधा कुछ सोचों में थी।

"मैं जानता था राधा हमारा प्यार इसी लेकिन के बीच आकर अटक जाएगा। मैं जानता था। मेरी राधा मुझे कभी नहीं मिलेगी।" बेदी का स्वर भारी हो गया—"अपनी-अपनी किस्मत है कि...।"

"ऐसा मत कहिए जी, हमारी शादी होगी।"

"कैसे होगी राधा—कैसे होगी?"

"आप जो कहेंगे, मैं वही करूंगी।" राधा दृढ़ता भरे स्वर में कह उठी।

"सच राधा?" बेदी का चेहरा खिल उठा।

"हां, लेकिन सेठ जी दो-चार दिन में बंगला शिफ्ट कर रहे हैं। नये बंगले में जा रहे हैं। यह काम नए बंगले में जाने से पहले नहीं हो सकेगा।"

"ओह! कब जाएंगे?" बेदी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"दो-चार दिन में।"

"यानी कि पक्के दिन का नहीं पता?"

"नहीं, लेकिन मालूम हो जाएगा।"

बेदी सोच भरे लहजे में कह उठा।

"ठीक है, हम अपना काम तब ही करेंगे, जब सेठ जी नए

बंगले में शिफ्ट कर जाएंगे। तब तक तुम एक काम करना।'' अपनापन दिखाते हुए बेदी ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

''क्या?''

''तुम सेफ पर नजर रखना। ध्यान रखना कि सेठ जी, सेफ में से कोई हार निकालकर बेचते तो नहीं हैं?''

राधा के चेहरे पर उलझन के भाव उभरे।

''अब इस बात का ध्यान मैं कैसे रख सकती हूं। तिजोरी तो सेठ जी के बेडरूम में होती है। वो...।''

''हां, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।' बेदी कह उठा—''अब एक ही रास्ता बचा है।''

''क्या?''

''तुम सेठ जी का हर फोन सुनने की कोशिश करना। जब कोई फोन आए या सेठ जी फोन पर बात करें तो तुम उसी लाइन का दूसरा फोन उठाकर, बातें सुन लिया करो।''

''हां।'' राधा ने सहमति में सिर हिलाया—''ये काम तो मामूली है।''

''सेठ जी की जो भी बात सुनो, मुझे बतानी है।'' कहकर बेदी ने अपना कार्ड निकालकर उसे थमाया—''हार के बारे में बात न भी हो तो तब भी बताना।''

''तब क्यों?''

''तुम नहीं समझोगी। यह बड़े लोग फोन पर भी बात को छिपा कर करते हैं। जैसे हार को हार न कहकर, डण्डा कह देंगे। बन्दूक कह देंगे। ताकि बीच में कोई उनकी बात सुने तो शक न करे।''

''ऐसा भी होता है?'' राधा आंखें फैलाकर बोली।

''बहुत कुछ होता है। धीरे-धीरे तुम समझदार हो जाओगी। आखिर तुम मुझसे शादी कर रही हो।''

''जल्दी कीजिए ना।''

''बस वो हार हाथ में आने दो। फिर देखना ठां-ठां कर दूंगा।''

''वो क्या होता है?''

''हर बात अभी समझने की कोशिश मत करो। जितना कह रहा हूं वही सुनो-समझो।''

''एक बात तो बताइए।''

''क्या?''

''हम हनीमून कहां मनाएंगे?''

''हनीमून।'' बेदी सकपकाया—''वो क्या होता है।''

''वो जो शादी के बाद करते हैं। उसे करने के लिए पहाड़ों पर जाते हैं।'' राधा शर्माकर बोली—''वो कौन से पहाड़ पर करोगे?''

''वो?'' बेदी से कुछ कहते न बना।

''हां, मैं वो ही बात कर रही हूं। वो कौन-से पहाड़ पर...?''

''वो।'' बेदी ने गहरी सांस ली—''उसके लिए तो मैंने उसी दिन टिकटें बुक करा ली थीं जब तुम्हें देखा था।''

''अच्छा।'' राधा खुश हो उठी—''कौन-से पहाड़ की टिकटें हैं?''

''हिमालय की।'' बेदी के चेहरे पर मौजूद अजीब से भाव देखने के लायक थे—''हिमालय की सबसे ऊंची चोटी पर प्लेन हमें उतार आएगा। बस अब और कुछ मत कहना-पूछना। इस बारे में बाकी बातें हिमालय पर करेंगे। मेरा तो दिल धड़क रहा है।''

''क्यों?''

''वो ही कि याद करके, बाकी फिर।''

❑❑

फोन की बैल होते ही राधा चौंकी। वह जल्दी से फोन की तरफ बढ़ी। तब तक फोन की घंटी बजनी बंद हो गई थी। राधा ने आहिस्ता से रिसीवर उठा लिया।

तभी कानों में सेठ पिशोरीलाल की आवाज पड़ी।

''देख भायो, एक नाल की बन्दूकों से काम नहीं चलेगा। मन्ने तो दो नाल वाली बंदूकें चाहिए। उसे चलाने वाले आदमी भी। समझ रयो कि नेई समझ रयो।''

''सेठजी।'' दूसरी तरफ से आवाज आई—''आप मुझ पर यकीन रखें और जरा भी चिन्ता न करें। मैं आपको दो नाली बन्दूक चलाने वाले ही गनमैन दूंगा। आपकी बात मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं।''

''भाया। तेरे को अन्दर की बात बताता हूं। मुझे दो नाली वाली बंदूक के गनमैन इसलिए चाहिए कि म्हारे माल की कीमत कम-से-कम डेढ़ करोड़ तो है। रुपया-अठन्नी इधर-उधर हौवे तो बात और हौवे। खैर, तो आजकल लूटपाट बोत हौवे है। कल ही अखबार में पढ़ो कि किसी का दो करोड़ का माल लूट लियो। आजकल लुटेरों का बोत बोलबाला हौवे। अपना तो

कमावें नाही और दूसरों के मालों पर नजर मारे। अपणों माल की सुरक्षा के वास्ते ही मन्नों दो नालो वाली चाहिए। एक नाल का निशाना चूको तो दूसरी नालों काम आ जायो। कोई कमीनो मेरे माल पर बुरी नजर डालों तो छूटते ही उसकी आंख में नाल कर दयो।''

''मेरे गनमैन आपके माल को पूरी सिक्योरिटी देंगे। आप इतना बता दीजिए कि माल कब शिफ्ट करना है ताकि मैं वक्त पर अपने गनमैन आपके पास भेज सकूं।''

''भायो, ये बात तो मैं थारे को बोत जल्द फोन पर बता दूंगा। समझ रियो कि नेई समझ रयो।''

''अच्छी तरह से समझ गया। आप जब भी कहेंगे, गनमैन वक्त पर पहुंच जाएंगे।''

''मन्ने थारे से येई उम्मीद थी। तू तो घणा हुश्यार जान पड़े से।''

''ये तो आपका बड़प्पन है। वरना खाकसार तो निहायत ही ही जाहिल और बेवकूफ आदमी है। अब मैं फोन बंद करता हूं। वक्त पर मुझे फोन कर दीजिएगा।''

सेठ पिशोरीलाल दांत फाड़कर हंसा।

''चिन्ता मत कर, म्हारे साथ कभी-कभी काम करो तो घणा समझदार बन जायो तू।''

''अब तो आपकी मेहरबानी की जरूरत रहेगी।''

उनकी बातचीत खत्म हो गई।

राधा ने सावधानी से रिसीवर रखा। उसका दिमाग तेजी से दौड़ रहा था।

❑❑

टेबल पर पैन से बनाया गया नक्शा बिछा था।

बेदी, शुक्रा और अंजना की निगाहें नक्शे पर थीं।

शुक्रा नक्शे पर उंगली रखे कह रहा था।

''यह है देवनगर का इलाका। यहां सेठ पिशोरीलाल ने नया बंगला खरीदा है।''

शुक्रा ने लाइनों पर उंगली चलाते हुए कहा।

''इस रास्ते से ट्रक, पिशोरीलाल की तिजोरी लेकर देवनगर पहुंचेगा।''

''तूने यह बात किससे पूछी?''

''ट्रक ड्राइवर से। बदले में शराब की बोतल की भेंट उसे

देनी पड़ी।'' शुक्रा मुस्कराया।

''ट्रक ड्राइवर ने पूछा नहीं कि तू यह बात क्यों पूछ रहा है?'' बेदी ने उसे देखा।

''पूछा था।'' शुक्रा पुनः मुस्कराया—''लेकिन तब तक मैंने बोतल का ढक्कन खोलकर शराब को गिलास में डाल दिया था। जब वो शराब उसके पेट में पहुंची तो दोबारा कुछ भी पूछना उसे याद नहीं रहा।''

''बढ़िया रहा।'' बेदी ने सिर हिलाया।

अंजना बोल उठी।

''पिशोरीलाल अपनी सेफ कब शिफ्ट कर रहा है?''

''इसी हफ्ते वीर या शुक्रवार को।''

''पक्का दिन नहीं पता?''

''नहीं, लेकिन अब ये बात मालूम करूंगा।'' शुक्रा उठते हुए कह उठा—''आज-कल में यह बात भी मालूम हो जाएगी। वैसे भी ऐसी बातें छिपती कहां हैं।''

''तेरी पूछताछ से किसी को शक न हो जाए कि...।''

''किसी को शक नहीं होगा।'' शुक्रा ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

बेदी ने उसकी तरफ कार की चाबी बढ़ाते हुए कहा।

''बाहर, उदय की कार खड़ी है, उसे दे देना।''

''ठीक है।'' शुक्रा ने कार की चाबी ली—''वो, राधा का क्या रहा?''

बेदी ने बताया।

''मतलब कि अब राधा पिशोरीलाल की हरकतों पर नजर रखेगी।''

''हां।'' यह जरूरी था कि पिशोरीलाल की हरकतों की खबर हमें मिलती रहे। सब काम हमने ध्यान से करने हैं। क्योंकि हम अनाड़ी लोग हैं, हमसे कहीं भी गलती हो सकती है।'' बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।

''भगवान ने चाहा तो सब ठीक...।'' शुक्रा कहते-कहते ठिठका।''

क्योंकि उसी पल बेदी ने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया था। चेहरे पर पीड़ा के भाव छा गए। एकाएक वह तड़पकर उठा। परन्तु खड़ा नहीं हो पाया। गिरने लगा तो शुक्रा ने थाम लिया।

"विजय।" शुक्रा हड़बड़ाया—"क्या हुआ तुझे। विजय-विजय...।"
"विजय...!" अंजना का स्वर कांप उठा।
"इसे क्या हुआ भाभी?" शुक्रा घबरा चुका था।
"एक बार पहले भी हुआ था। शायद दिमाग में फंसी गोली की वजह से, सिर में दर्द उठता है। उस दिन तो फौरन ही ठीक हो गया था।" अंजना सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कह उठी—"आज...।"
तभी बेदी की तबीयत संभलने लगी। वह गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। उसका चेहरा पसीने से भर चुका था। सुर्ख हो रही आंखों से उसने शुक्रा को देखा।
"अब ठीक है?" शुक्रा ने बेचैनी से पूछा।
बेदी ने हौले-से सहमति में सिर हिला दिया।
शुक्रा ने उसे आहिस्ता से कुर्सी पर बिठा दिया।
अंजना पानी लाई तो बेदी ने गिलास खाली कर दिया।
"यह सब क्यों हुआ विजय?" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में पूछा।
"दिमाग में फंसी गोली की वजह से।" बेदी गहरी-गहरी सांस लेता कह उठा—"सब ठीक हो जाएगा। दिमाग में फंसी गोली निकल जाएगी तो सब ठीक हो जाएगा। तू जा उदय को कार देते जाना।"
शुक्रा ने गम्भीर भाव में बेदी का कंधा थपथपाया और बाहर निकल गया।
बेदी अब पहले की तरह सामान्य हो चुका था।
"अपना ध्यान रखा करो विजय।" अंजना अपनपन में कह उठी।
"मैं ठीक हूं। फिक्र मत करो।"
अंजना आगे आई और कुर्सी पर बैठे बेदी की गोद में बैठ गई।
"अब तुम बहुत व्यस्त रहते हो। मेरे लिए भी वक्त नहीं तुम्हारे पास।" अंजना इठलाकर बोली।
"अब है वक्त।" बेदी ने उसे बांहों के घेरे में लिया—"सारी कसर निकाल...।"
तभी दरवाजे पर थपथपाहट पड़ी।
अंजना फौरन बेदी की गोदी से उतर गई।
"मैं देखता हूं।" कहने के साथ ही बेदी उठा और दरवाजे

की तरफ बढ़ गया।
दरवाजा खोलने पर बेदी ने सामने जिसे देखा तो हैरानी से उछल पड़ा।
❑❑
उदयवीर छोकरों के साथ एक गाड़ी ठीक करके वापस केबिन में पहुंचा तो राघव को वहां बैठे पाया। उदयवीर मुस्कराकर अपनी कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।
"अकेले-अकेले पंखे की हवा खा रहा है।"
"हां।" राघव मुस्कराया—"केबिन में नहीं बैठना हो तो, पंखा बंद करके जाया कर।"
"पंखा बंद कर दूंगा तो, तू गर्मी में सड़ेगा। इसलिए बंद नहीं करता।" कहकर उदयवीर हंसा।
राघव के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।
"क्या हुआ?"
"यार मैं विजय के बारे में सोच रहा हूं।" राघव ने उसे देखा।
उदयवीर के चेहरे पर भी गम्भीरता आ गई।
"सोचता तो मैं भी हूं। लेकिन कुछ समझ नहीं आता कि क्या किया जाए, मैं...।"
"फिर भी उससे मिलना तो चाहिए। खैर-खबर तो लेनी चाहिए।"
"ये तो मैं भी सोच रहा था। वैसे आज सुबह विजय आया था। जल्दी में था। कोई खास बात नहीं की। कार उसे चाहिए थी। वह ले गया। बात करने का मौका ही नहीं दिया।" उदयवीर ने गहरी सांस ली।
"हो सकता है उसके मन में हमारे लिए नाराजगी हो।"
"नहीं, राघव, वह नाराज नहीं हो सकता। नाराज तो तब हो जब हमारे पास पैसा हो और हम देने से इन्कार...।"
"लेकिन उसका साथ देने से तो इन्कार किया है।" राघव कह उठा।
"वो अलग बात है, चोरी करने जैसा काम, हम नहीं कर सकते। इस बात को वह भी जानता है और एक इन्कार से यारी-दोस्ती नहीं टूटती बरसों की।" उदयवीर की आवाज में विश्वास था।
"तो चलें आज?"
"विजय के पास?"

"बोतल लेकर।" राघव मुस्करा पड़ा।
"ठीक है, शाम को चलेंगे।"
तभी बाहर कार रुकने की आवाज आई।
"यह तो मेरी कार की आवाज है।" उदयवीर उठता हुआ बोला—"विजय ही आया है शायद।"
"बढ़िया रहा, आज गैराज पर ही प्रोग्राम बना लेते हैं।" राघव पुनः मुस्कराया।
"उदय।" तभी शुक्रा की आवाज कानों में पड़ी।
"शुक्रा भी साथ है। आज तो बहुत दिनों बाद टोली बैठेगी इकट्ठे।" उदयवीर हौले से हंसा।
तभी शुक्रा ने भीतर प्रवेश किया। उसने दोनों को देखा।
"हैलो दोस्तो!" शुक्रा कह उठा, "मजे हो रहे हैं।"
"विजय कहां है?" उदयवीर ने उसे देखा।
"मालूम नहीं, घंटा भर पहले ड्राइविंग स्कूल में आया था जहां मैं लोगों को कार चलाना सिखाता हूं।" शुक्रा ने लापरवाही से कहा—"तुम्हारी कार मेरे हवाले करके बोला कि तुम्हें दे दूं। कार लेकर आया हूं।" कहने के साथ ही शुक्रा ने कार की चाबी टेबल पर रख दी।
"तू बैठ कहां जा रहा है।"
"जल्दी है।"
"ऐसी भी क्या जल्दी जो...।"
"वास्तव में जल्दी है।"
"विजय का हाल कैसा है?" राघव ने पूछा।
"बढ़िया, पहले जैसा ही।" शुक्रा शांत भाव में मुस्कराया।
"और वो गोली, जो दिमाग में...?"
"वहीं है, अपनी जगह।" शुक्रा ने गहरी सांस ली।
"विजय क्या कर रहा है, उस गोली को निकलवाने के लिए, पैसे का इंतजाम हुआ कि...।"
"मैं नहीं जानता, पिछले दिनों से मैं व्यस्त हूं। आज वह जल्दी में था। बात नहीं हो पाई। हो सकता है शायद आज शाम उससे मुलाकात करूं।" शुक्रा बोला—"चलता हूं फिर...।"
"सुन, शाम को हमने विजय से मिलने का प्रोग्राम बनाया है। बोतल लेकर, तुम भी आ जाना। वहीं बातें होंगी।"
"देखूंगा।" कहने के साथ ही शुक्रा पलटा और केबिन से बाहर निकलता चला गया।

❑❑

सामने राधा खड़ी थी।
बेदी आशा नहीं कर सकता था कि इतनी जल्दी राधा फिर उसके सामने होगी। सामने देखकर सबसे ज्यादा तो वह इसलिए हड़बड़ा उठा था कि भीतर अंजना मौजूद थी। राधा से क्या कहेगा कि अंजना कौन है और भीतर क्या कर रही है।
राधा ने मस्ती भरे अंदाज में शरीर को बल दिया और अदा के साथ बोली।
"क्या हुआ विजय जी।"
विजय की पलकें ऐसे हिलीं जैसे नींद से जगा हो।
"तुम?" बेदी जबरन मुस्कराया—"मैं हैरान हो रहा हूं कि...।"
"इसमें हैरान होने की क्या बात है। आपने पते वाला कार्ड दिया तो हाजिर हो गई।"
"पते वाले कार्ड पर पड़ोस का फोन नम्बर भी था, फोन पर बात।"
"अब फोन पर बात करने की क्या जरूरत है। मैंने सोचा एक फेरा आपके घर का लगाकर तो देख लें कि कहीं घर में और बीवी तो नाही रखे हो। सो हम आ गए।"
बेदी उसे देखता रहा। यूं ही उसकी गर्दन हिली।
"हमें भीतर भी तो आने दो।" राधा ने गहरी सांस ली—"यहीं खड़े रखोगे क्या?"
इससे पहले बेदी हटता। राधा उसे लेती हुई भीतर आ गई।
तभी राधा की निगाह अंजना पर पड़ी तो उसके कदम जड़ हो गए। आंखें सिकुड़ गईं।
धक-धक करता बेदी कभी अंजना को देखता तो कभी राधा को। वह जानता था कि राधा की तरफ से कभी भी कयामत आ सकती थी। वह उसके सिर के बाल भी नोच सकती थी।
लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।
अंजना ने जैसे सब कुछ संभाल लिया। वह उठी और बेहद मीठे अंदाज में हाथ जोड़कर कह उठी—
"नमस्ते, आप राधा ही हैं ना?"
राधा का सिर हौले से हिला।
"फिर तो आप मेरी भाभी हुई, राधा भाभी।"
"भाभी?" राधा के होंठों से निकला।

अंजना ने मुस्कराकर विजय को देखा।
"भैया, मेरी भाभी तो चांद जैसी है। जैसा आपने बताया था। इतना बढ़िया नगीना कहां से ढूंढ़ लिया।"
राधा के चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ती चली गई।
बेदी ने मील भर लम्बी सांस ली। उसे सब कुछ ठीक होता नजर आया।
"अ...आप कौन हैं?" राधा के होंठों से निकला।
"मैं अंजना—विजय की चचेरी बहन हूं, लेकिन सगी से भी ज्यादा।"
"ओह!"
"तो आप क्या समझी थीं भाभी।" अंजना खिलखिलाकर हंस पड़ी।
"मैं-मैं-मैं समझी कि...कि...।"
"कि मैं बाहर की हूं और तुम्हारी तरह भैया ने मुझे भी फांस रखा है।" अंजना खिलखिला उठी।
राधा के चेहरे पर भी मुस्कान दौड़ गई।
"चिन्ता मत करना भाभी।" अंजना छेड़ने वाले लहजे में कह उठी—"तुम्हारे अलावा भैया ने किसी की तरफ आंख भी उठाई तो भैया की खैर नहीं।"
राधा के चेहरे पर शर्म के भाव उभरे।
"अच्छा मैं चलती हूं। फिर मिलूंगी।" कहकर अंजना जाने को हुई।
राधा ने उसकी बांह पकड़ ली।
"रुकिए ना। आप कहां जा रहीं...।"
"मैं तो काम से जा रही थी, भैया से मिलने के इरादे से यहां रुक गई। पहले से ही देर हो रही है। फिर मिलूंगी। अब मुझे जाना है। अच्छा भैया।" कहने के साथ ही अंजना निकलती चली गई।
बेदी को बड़ा अजीब लगा, अंजना का व्यवहार।
भैया? जिसकी गोदी में सैकड़ों बार बैठी हो। पचासों बार जिसके साथ सोई हो। जिसके साथ औरत होने के नाते जाने क्या-क्या किया हो—वह भैया?
कहते हुए अंजना की जुबान जरा भी नहीं कांपी।
कोई हिचक नहीं हुई।
ऐसे भाई कह दिया, जैसे वह वास्तव में बहन हो।

"क्या सोच रहे हो?"
राधा की आवाज पर वह ख्यालों से निकला।
अंजना जा चुकी थी।
"कुछ नहीं।" बेदी के होंठों से निकला।
राधा आगे बढ़ी। खुले दरवाजे के पल्ले बंद किए और पलट कर बिल्ली की तरह झपटी और बेदी से चिपककर उसे चूमने-चाटने लगी।
बेदी सकपकाया।
"क्या कर रही हो?"
"प्यार।"
"ओफ्फो—बैठो तो, यह बाद में हो जाएगा। पहले बताओ तुम यहां आई कैसे?" कहने के साथ ही बेदी ने राधा को अपने से जुदा किया और कुर्सी पर बिठा दिया।
राधा ने फोन पर सुनी, सेठ पिशोरीलाल की सारी बात बताई।
सुनकर बेदी के चेहरे पर गम्भीरता नजर आने लगी।
"किस सोच में डूब गए विजय जी?"
"कहीं नहीं, यह बात तो फोन पर कह देती। पड़ोस का नम्बर कार्ड पर छपा...।"
"जानते हो मैं यहां क्यों आई?"
"क्यों?"
"अपने विजय जी को प्यार करने।" राधा कहते हुए कुर्सी से उठी और बेदी से जा चिपकी।
"प्यार?" बेदी हड़बड़ाया—"यह तो शादी के बाद की बात...।"
"शादी के बाद तो होता ही है, पहले भी कर लेते हैं। क्या हर्ज है, हम हैं तो पति-पत्नी ही।"
"अभी नहीं, पहले वह हार। वो शादी, उसके बाद...।"
"आप भी क्या बात करते हैं, मेरे सेठजी, सेठानी जी से ऐसी ही बातें करके टरकाते हैं। मैंने छिप-छिपकर सुना है।"
"क्या?"
"यही कि सोमवार को शिवजी का दिन है इसलिए प्यार नहीं करना। मंगलवार को हनुमान जी का है, इसलिए नहीं करना। बुधवार को सेठ जी के कमर में मोच आ जाती है। वीरवार को माता का दिन होता है। इसलिए काम नहीं करना। शुक्रवार को सेठ जी को बहुत काम होता है। शनिवार को कुछ किया तो

शनि देवता नाराज हो जाएंगे। रही बात रविवार की तो सेठ जी कहते हैं वो छुट्टी का दिन होता है, इसलिए उन्हें आराम करने दिया जाए। आप भी कुछ सेठ जी की तरह ही बातें कर रहे हैं, जवान बनिए।''

''जवान?''

''हां।''

''वो कैसे बना जाता है?''

''ऐसे।''

उसके बाद राधा की चली। बेदी तो बात को समझने में ही लगा रहा और जब समझा तो तब समझने को बाकी कुछ भी नहीं रहा था।

दरवाजे की झिर्री से अंजना भीतरी हाल स्पष्ट देख रही थी और मुस्करा रही थी। अजीब-सी मुस्कान। चेहरे पर व्यंग्य के भाव नाच रहे थे।

❑❑

शुक्रा को मालूम हो चुका था शाम को उदयवीर और राघव ने बेदी के पास आना है। इसलिए अपना काम जल्दी निपटने पर वह पहले ही बेदी के पास पहुंच गया।

''बहुत जल्दी आ गए। मालूम किया पिशोरीलाल कब अपनी सेफ को नए बंगले में ले जा रहा है।'' बेदी उसे देखते ही बोला।

''हां।'' बैठने के बाद शुक्रा ने गहरी सांस ली—''वो शुक्रवार को सेफ नए बंगले में शिफ्ट कर रहा है।''

''आज!''

''बुधवार है।''

बेदी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

''मतलब कि हमारे पास सिर्फ दो दिन बचे हैं। आज का और कल का।''

''हां।''

''शुक्रा।'' बेदी ने गम्भीर निगाहों से उसे देखा—''अब हमें जो भी करना है। बहुत सोच-समझकर, सावधानी से करना है। हम अनाड़ी हैं। पहली बार ऐसा काम करने जा रहे हैं। कभी-कभी तो डर लगने लगता है।''

''डरता क्यों है विजय?''

''लगता ही है।'' बेदी बेचैन हो उठा।

''डरना है तो मौत से डर। जो दो महीने बाद कभी भी आ

सकती है।'' शुक्रा गम्भीर स्वर में कह उठा—''तू जो भी कर रहा है, अपनी मौत से बचने के लिए कर रहा है। इसलिए फिर डर कैसा?''

''मैं बहादुर नहीं हूं जो...।''

''बहादुर तो कोई भी नहीं होता। लेकिन जब जान पर बन आती है तो चींटी भी शेर से भिड़ जाती है। तेरी भी जान पर बनी हुई है। इसलिए अपनी जान बचा। डर को दूर कर दे।'' शुक्रा दांत भींचकर कह उठा।

बेदी गहरी सांस लेकर रह गया।

''अब बता क्या करना है। हमारे पास कम वक्त है।

''शुक्रा, पिशोरीलाल तिजोरी शिफ्ट करते वक्त साथ में गनमैन भी रखेगा।'' बेदी बोला।

''ओह! तेरे को कैसे पता चला?''

''राधा आई थी—वो बोली।''

''कब आई?''

''तेरे आने से पहले ही गई है।''

शुक्रा ने गहरी निगाहों से बेदी को देखा।

''कहीं भाभी का हक तो नहीं मार गई।''

''पूरा तो नहीं, थोड़ा-सा हक ले गई है।''

''यही तो गड़बड़ है। किसी को भी चैन नहीं।'' शुक्रा ने मुंह बनाया—''तो गनमैन भी साथ होंगे। वह तो होंगे ही। जब तिजोरी में इतना कीमती माल जा रहा है तो साथ में रखवाले भी तो होंगे।''

''वह हमें गोली भी मार सकते हैं, वो...।''

''यार ऐसा मत कहा कर।'' शुक्रा कह उठा—''गिरने को तो यह छत भी गिर सकती है, जिसके नीचे हम बैठे हैं। कभी भी कुछ भी हो सकता है। होने वाली बात मत किया कर। जो हो जाए, वो बताया कर।''

''तू मेरी बात को हवा में उड़ा रहा है।''

''मैं कुछ नहीं कर रहा। तेरे को कह रहा हूं कि आगे बढ़। बाद में जो भी होगा सामने आ जाएगा।''

दोनों कई पलों तक चुप रहे।

''विजय।'' शुक्रा यूं बोला, जैसे अचानक उसे याद आया हो।

''हां।''

"जब कार देने गया तो गैराज पर राघव भी मौजूद था, वो... ।"

"क्या हाल है राघव का?"

"भाड़ में जाए, जब हमें जरूरत पड़ी तो पीछे हट गया। हमें उसके हाल से क्या?" शुक्रा तीखे स्वर में कह उठा—"उन दोनों का प्रोग्राम यहां आने का था। बोतल को लेकर। वो कभी भी आ सकते हैं। शाम हो चुकी है। उनके आने से पहले ही बात कर लें कि तिजोरी को कैसे उड़ाना है।"

बेदी ने बेचैनी से पहलू बदला।

"सोच रखा है कि अभी यह बात सोचनी है।"

"सोच रखा है।"

"तो बता, कोई कमी-पेशी हुई तो रात भर में मैं सोच लूंगा।"

बेदी कहने को हुआ कि बाहर कार रुकने की आवाज आई।

शुक्रा जल्दी से उठा, दरवाजे से बाहर झांका—उदयवीर की एम्बेसेडर थी।

"विजय, उदय और राघव आ पहुंचे हैं।" पलटते हुए शुक्रा ने उखड़े स्वर में कहा।

"आने दे।" बेदी संभलता हुआ बोला—"बहुत दिन बाद बोतल के साथ बैठने जा रहे हैं।"

"बोतल गई कुएं में।" शुक्रा मुंह बनाकर कह उठा—"और सुन, उन्हें कुछ मत बताना कि हम क्या कर रहे हैं? मैं आज ही कई दिन बाद तुमसे मिला हूं। नशे में बोल मत देना उन्हें कि परसों क्या होगा। वो हमारे काम नहीं आ सकते। ऐसे में उन्हें किसी बात की जानकारी देना, हमारे लिए नुकसानदेह हो सकता है।"

बेदी का हाथ सर के उस हिस्से में गया जहां भीतर गोली फंसी हुई थी। अगले ही पल उसके होंठों पर अजीब-सी मुस्कान उभरी। उदयवीर और राघव के कदमों की आवाज उनके कानों में पड़ने लगी थी।

□□

अगले दिन सुबह।

बेदी, अंजना और शुक्रा के बीच गहरी खामोशी थी।

दोनों पर निगाह मारते हुए बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा।

"तुम दोनों अब अच्छी तरह समझ गये होगे कि शुक्रवार यानी कि कल सुबह हमने काम कैसे करना है। कैसे तिजोरी

को अपने कब्जे में करना है।"

शुक्रा और अंजना के सिर सहमति में हिले।

"जिस तरह तुमने बताया है, उस तरह तो शायद हम काम कर जाएं।" शुक्रा बोला।

"हां, लेकिन तुम दोनों अभी भी सोच लो। सफल होने के चांस कम और असफल होने के ज्यादा हैं क्योंकि ऐसे कामों में हम बिल्कुल अनाड़ी हैं। पकड़े भी जा सकते हैं और मैं नहीं चाहता कि पकड़े जाने पर तुम दोनों मन-ही-मन मुझे कोसो कि मेरी वजह से फंसे, मैं... ।"

शुक्रा उखड़े स्वर में कह उठा—

"बेकार की बात कहकर मूड मत खराब करो। तुम्हें इतनी भी समझ नहीं कि कैसे मौके पर क्या बात करनी है?"

बेदी ने अंजना को देखा।

"मुझे क्या देखते हो। तुम्हारा क्या ख्याल है मैं पीछे हट जाऊंगी?" अंजना कह उठी—"तुम्हारी जान बचाने के लिए मुझे अपनी भी जान देनी पड़े तो वक्त आने पर यह भी देख लेना।"

"मुझे समझ नहीं आता कि तुम दोनों का शुक्रिया अदा कैसे करूं कि... ।"

"देख भाई, शुक्रिया अदा कर लेना, मना नहीं करूंगा। लेकिन पहले काम तो हो लेने दे।" शुक्रा ने लापरवाही से कहा—"ये बता तिजोरी को उड़ाने के बाद, उसे रखना कहां है?"

"इस बात पर मैंने सोचा है।" बेदी ने सिगरेट सुलगा ली—"सेफ रखने की मुझे एक ही जगह नजर आती है।"

"कौन-सी?"

"गांव में मकान है, वहां।"

"वहां किसी को शक तो नहीं होगा कि... ।"

"शायद नहीं होगा, क्योंकि वह मकान मेरे मां-बाप ने कभी गांव से जरा हटकर खेतों में बनवाया था कि खेतों की रखवाली भी होती रहे। आमतौर पर लोगों का आना-जाना उस तरफ नहीं होता।" बेदी ने बताया।

"फिर तो वह जगह बढ़िया रहेगी।" शुक्रा ने कहा—"वहां लाइट का इन्तजाम है?"

"हां, लगभग हर चीज का इन्तजाम है।" बेदी सोच भरे स्वर में कह उठा।

"तब तो यह समस्या भी हल हो गई।" अंजना बोली।

"इस काम में कार की जरूरत है।" बेदी ने शुक्रा से कहा—"और कार उदय की इस्तेमाल की जा सकती है।"

"कहीं वह समझ न जाए कि हम कुछ कर रहे हैं।"

"ऐसे कैसे समझेगा। उसकी कार तो जरूरत पड़ने पर हम अक्सर ले लेते हैं।" बेदी ने कहा।

शुक्रा ने अंजना को देखा।

"भाभी।"

"हां।"

"आप कार तो अच्छी चला लेती हैं।"

"हां, क्यों?"

"उदय के गैराज से कार ले आना। मैं उसके सामने नहीं पड़ना चाहता। वो हमारा साथ नहीं दे रहा। गुस्से में मुंह से कुछ निकल गया तो ठीक नहीं होगा।" शुक्रा तीखे स्वर में कह उठा।

"ठीक है। कार मैं ले आऊंगी।" अंजना ने सिर हिला दिया।

शुक्रा ने बेदी को देखा।

"और कोई बात?"

बेदी ने बेचैनी से पहलू बदला।

"वैसे जरूरत तो नहीं है।" बेदी के स्वर में हिचकिचाहट थी—"लेकिन किसी मौके पर सामने वाले को डराने की जरूरत पड़ सकती है। किसी रिवॉल्वर का इंतजाम हो जाए तो ठीक रहेगा।"

"रिवॉल्वर?" अंजना ने बेदी को देखा—"डराने के लिए चाकू ही बहुत रहेगा।"

"विजय ठीक कहता है।" शुक्रा गम्भीर स्वर में कह उठा—"हम अंधेरी गली में किसी को लूटने नहीं जा रहे। जो कि चाकू से काम चल जाएगा। बड़ा काम करने जा रहे हैं। ऐसे में पास में रिवॉल्वर तो होना ही चाहिए कि वक्त आने पर सामने वाले को डराया जाए। हवा में गोली चलाई जाए। चाकू से आजकल लोग डरते ही कहां है। किसी ने हमारी ही गर्दन पकड़ ली तो क्या होगा?"

बेदी के चेहरे पर व्याकुलता नजर आ रही थी।

"ठीक है, जैसा तुम लोग ठीक समझो।" अंजना ने इस मामले में कोई सिरदर्दी नहीं ली।

बेदी और शुक्रा की निगाहें मिलीं।

"लेकिन रिवॉल्वर जैसी खतरनाक चीज का इन्तजाम होगा कैसे?" शुक्रा कह उठा।

"इस मामले में मेरी तो कोई पहचान नहीं है।" बेदी ने दोनों हाथ मलते हुए कहा—"सच पूछो तो मैं यह भी नहीं जानता कि रामपुरी चाकू कहां मिलता है।"

वहां खामोशी छा गई।

अंजना बारी-बारी दोनों के चेहरों को देख रही थी।

"रहने दो।" बेदी ने धीमे स्वर में कहा—"रिवॉल्वर जैसी खतरनाक चीज का इन्तजाम हम नहीं कर सकते।"

"बात तो तुम्हारी ठीक है, यह हमारे बूते से बाहर की बात है।" शुक्रा ने सोच भरे स्वर में कहा—"लेकिन मैं देखूंगा, कोई है, शायद उससे ऐसी कोई चीज मिल सके।"

"कौन है वो?"

"तुम नहीं जानते उसे।" शुक्रा ने बेदी पर निगाह मारी।

मामला अब कुछ कर गुजरने के किनारे आ पहुंचा था।

❑ ❑

शुक्रा अगले दिन सुबह ही रिवॉल्वर लेकर बेदी के पास पहुंच गया।

"ये देख, रिवॉल्वर भी मिल गई।"

"कहां से?"

"है एक मेहरबान। दस साल पहले उसे मकान की खुदाई में मिली थी। खुराफती दिमाग का है। छिपाकर रख ली। मुझे बताया हुआ था। मैं उससे ले आया। एक गली के दादे को जानता हूं। उसे पैसे दिए तो रातोंरात उसने छः गोलियों का इन्तजाम कर दिया। खोलकर देख ले, पूरे खाने फिट हैं।"

"मुझे क्या पता कैसे खोलते हैं।" बेदी के होंठों से निकला।

"यह देख, ऐसे।" शुक्रा ने खोलकर दिखाई—"ले तू भी देख।"

बेदी ने रिवॉल्वर लेकर देखी। रिवॉल्वर हाथ में आते ही उसके हाथ कांप रहे थे। ऊपर-नीचे हर तरह से उसने उसे देखा। वो पुरानी-सी, बदरंग सी थी। उसमें से तेल की खुशबू आ रही थी। जाहिर था कि उसे रगड़-रगड़कर साफ करके चमकाने की कोशिश की गई है।

"यह...।" बेदी ने शुक्रा को देखा—"चलती भी है?"

"मजाक मत कर यार। जरूर चलती होगी। आवाज तो कर

ही देती होगी। हमने कौन-सी किसी की जान लेनी है। जरूरत पड़ी तो निकालकर सामने वाले को दिखाना है, ताकि वो डर जाए।"

बेदी रिवॉल्वर को देखता रहा। उस पर हाथ फेरता रहा।

❑❑

शुक्रवार।

सुबह के नौ बजे।

पिशोरीलाल के बंगले के पोर्च में मीडियम साइज का बख्तरबंद ट्रक खड़ा था। जिसमें पिशोरीलाल की सेफ पड़ी नजर आ रही थी। ट्रक में ड्राइवर की बगल में दो गनमैन मौजूद थे। जो सिक्योरिटी कम्पनी से आए थे।

पिशोरीलाल ने पहचान वाले ए.सी.पी. से कहकर, सेफ को सुरक्षित दूसरे बंगले में पहुंचाने के लिये एक सब-इंस्पेक्टर और दो हवलदारों को बुलवा लिया था।

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण।

उसके कहने पर बख्तरबंद का खामखाह खुला दरवाजा बंद किया गया। जिससे कि तिजोरी नजर आनी बंद हो गई। अब वहां से चलने का समय हो रहा था।

सेठ पिशोरीलाल सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को एक तरफ ले जाकर उसके हाथ में पांच हजार की गड्डी थमाता हुआ, मक्खन भरे स्वर में कह उठा।

"सपैक्टर साब। यो छोटा सो तौफा म्हारी तरफ से बच्चों के लिए।" साथ ही उसने दांत दिखाए—"रखो भायो। रखो।"

रखना क्या वो गड्डी तो पहले ही जय नारायण की जेब में फिट हो चुकी थी।

"भायो म्हारी तिजोरी का, अपनी मां की तरह ध्यान रखियो, जैसे तू अपनी मां का ध्यान...।"

"मेरी मां तो बचपन में ही मर गई थी।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मुस्कराया।

"बाप तो होगा ना?"

"नहीं, तब मैं पुलिस ट्रेनिंग ले रहा था कि पीछे से बिना दवा-दारू के मर गया। चार दिन बाद तो मालूम हुआ कि अपने मकान में मरा पड़ा है।"

"इसो का तो कोई भी जिन्दा न हौवे।" पिशोरीलाल मटके पर हाथ फेरकर बड़बड़ा उठा।

"सेठ जी।" जय नारायण जेब में पड़ी गड्डी पर हाथ फेरता हुआ बोला—"आप तिजोरी की जरा भी फिक्र न करें। यह सही-सलामत दूसरे बंगले पर पहुंच जाएगी।"

"सच बोलो न तू...।"

"हां सेठ जी। सेफ का ध्यान रखना मेरी ड्यूटी है।"

"वो तो ठीक है।" पिशोरीलाल ने सिर हिलाया—"भायो मैं भी ट्रक में साथ ही चल्लो हूं।"

"बेशक चलिए। ये तो और भी अच्छा रहेगा।"

पिशोरीलाल फौरन आगे बढ़ा और पुलिस जिप्सी में जा बैठा। दोनों हवलदार भी जिप्सी में बैठे। एक ने स्टेयरिंग संभाल लिया था। सब-इंस्पेक्टर जय नारायण भी जिप्सी में आ बैठा।

सब तैयारियों के पश्चात् तिजोरी लिए छोटा-सा बख्तरबंद ट्रक और उसके पीछे पुलिस जिप्सी पिशोरीलाल के बंगले से बाहर निकलकर, नये बंगले की तरफ रवाना हो गई।

राधा की वजह से, बेदी के पास पूरी खबर थी कि यहां क्या हो रहा है?

❑❑

उदयवीर वाली पुरानी एम्बेसेडर कार पर बेदी, शुक्रा और अंजना अशोका रोड के चौराहे पर पहुंचे। तब नौ बज रहे थे और अंदाज के मुताबिक साढ़े नौ बजे उस बख्तरबंद ट्रक ने यहां से गुजरना था।

तीनों ने अपने रंग-रूप बदले हुए थे।

बेदी ने मैला-सा कुर्ता-पायजामा पहन रखा था। शक्लो-सूरत ऐसी बना रखी थी कि जैसे बरसों से बीमार हो। एक बारगी सीधे-सीधे उसे पहचानना आसान नहीं था।

शुक्रा ने चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें लगा रखी थीं। बदन पर मर्दाना कमीज-सलवार था। एक कान में सोने की छोटी सी बाली फंसा रखी थी, जो कभी उसकी मां पहना करती थीं। इसी से ही उसका रंग-रूप बहुत बदल गया था। देखने पर वह पंजाब का लग रहा था।

अंजना ने कमीज-पजामी पहनी हुई थी। बालों में सुर्ख रंग का परांदा लगाया हुआ था। देखने पर वह जैसे शुक्रा की बीवी लग रही थी।

तीनों के दिल जोरों से धाड़-धाड़ बज रहे थे।

जो काम वे करने जा रहे थे। ऐसा करना तो दूर, ऐसा कुछ

करने का उन्होंने सोचा भी नहीं था। वक्त बीतने के साथ-साथ उनके दिलों की धड़कनें भी बढ़ती जा रही थीं।

"शुक्रा।" बेदी कार में बैठे नजरें दौड़ा रहा था।

"हां।"

"अब क्या होगा?" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"क्या होना है?" शुक्रा ने उसे घूरा।

"मेरा मतलब है कि...।"

"अपना मतलब अपने पास रख और काम की तरफ ध्यान दे। साढ़े नौ बजने जा रहे थे।" शुक्रा ने स्वर को पक्का करके कहा। जबकि सच तो यह था कि तिजोरी लूटने की सोचकर वह भी मन-ही-मन हड़बड़ा उठता था।

बेदी ने किसी तरह अपनी हालत पर काबू पाया। खुद को समझाया कि मौत तो गोली के रूप में उसके सिर में घर बनाए बैठी है। ऐसे में उसे डरकर काम नहीं करना चाहिए। सफल रहा तो आगे शांत और शानदार जिन्दगी है। नहीं सफल रहा तो वैष्णों माता के सहारे।

बेदी कार का दरवाजा खोलते हुए बोला।

"पिशोरीलाल का बख्तरबंद आता ही होगा। साथ में पुलिस की कार है। तुमने ट्रक को देखते ही यहीं से कार घुमा कर, यू टर्न लेते हुए, जिप्सी को टक्कर मारनी है। सावधानी से काम करना।"

शुक्रा ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

"टक्कर ऐसी हो कि पुलिस कार को रुकना पड़े।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"रुकेगी।"

बेदी ने अंजना को देखा।

"टक्कर लगते ही शोर-शराबा होगा। तू-तू मैं-मैं होते ही तुम आगे हो जाना। औरत को सामने देखकर पुलिस वाले कुछ तो ढीले हो ही जाएंगे।"

"ठीक है।" अंजना ने व्याकुल भाव में सिर हिलाया।

"उस वक्त हमें थोड़ा-सा वक्त गुजारना है। बाकी का मैं देखूंगा कि क्या कर सकता हूं।"

"तुमने काम में सफल होना है।" शुक्रा ने बेदी को देखा—"इस बात को मत भूलना कि तुम्हारे सिर में फंसी गोली तभी निकल सकती है, तभी तुम्हारी जान बच सकती है, जब

तुम...।"

"मालूम है-मालूम है।" गहरी सांस लेकर कहने के साथ ही बेदी कार के पास से हट गया।

□□

और फिर वह वक्त भी आया जब छोटे से बख्तरबंद ट्रक को चौराहे पर हो चुकी लाल बत्ती पर रुकते देखा।

शुक्रा और अंजना सतर्क हो गए।

चौराहे पर ग्रीन लाइट होते ही वो बख्तरबंद ट्रक आगे बढ़ा तो सड़क के दूसरी तरफ खड़ी स्टार्ट एम्बेसेडर को शुक्रा ने आगे बढ़ाया।

अंजना उसकी बगल में बैठी थी।

शुक्रा का दिल धाड़-धाड़ बज रहा था। पसलियों से टकरा रहा था। घबराहट और उत्तेजना के कारण गले में कांटे से चुभ रहे थे।

"डर लग रहा है।" अंजना ने फीके स्वर में शुक्रा से कहा।

जवाब में शुक्रा ने मुस्कराने की कोशिश की।

उसकी कार सड़क का एक हिस्सा पार करके ट्रक के पास पहुंच चुकी थी। ज्यों ही ट्रक सामने से निकला, शुक्रा ने उसी पल एक्सीलेटर पर पांव दबा दिया। कार तीव्र झटके के साथ ऐसे आगे बढ़ी जैसे किसी चीते ने अपने शिकार पर छलांग लगाई हो और ट्रक के पीछे आ रही पुलिस जिप्सी से सीधे उसकी कार जा टकराई।

जोरों से टक्कर की आवाज गूंजी।

अभी तक तो वैसा ही हुआ। जैसा सोचा था। टक्कर लगते ही जिप्सी रुकी। उसकी कार भी रुक गई। दोनों को तीव्र झटका लगा था। ऐसा ही जिप्सी वालों के साथ हुआ था। जिप्सी चला रहे हवलदार का सिर विण्ड शील्ड से जा टकराया था। खैरियत रही कि सिर और शीशा सलामत रहा।

इस टक्कर के लगते ही वाहन रुकने लगे।

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण गुस्से में बड़बड़ाता हुआ, जिप्सी से नीचे उतरा और दांत भींचकर आगे बढ़ा और दरवाजा खोलकर, शुक्रा की कमीज का कॉलर पकड़कर उसे बाहर घसीट लिया। शुक्रा संभल भी नहीं पाया कि एक के बाद एक उसकी ठुकाई होने लगी।

तभी जल्दी से अंजना बाहर निकली और गला फाड़ कर

चिल्लाने लगी—

"बचाओ-बचाओ। मार दित्ता मेरे आदमी को। ओ कोई है, मेरे आदमी को बचा लो।"

अंजना का चीखना था कि वहां लोग इकट्ठे होने लगे। रुकने वाले वाहनों से भी लोग निकलने लगे। दो मिनट में ही भीड़ लग गई। अंजना गला फाड़कर चीखती रही। सब-इंस्पेक्टर जय नारायण अभी तक शुक्रा की ठुकाई कर रहा था। अंजना का रोना-चीखना-चिल्लाना बढ़ता जा रहा था।

लोगों ने बीच में आकर जय नारायण को रोका।

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने अपना पुलसियापन दिखाना चाहा, गुस्से में उबलते उसने रिवॉल्वर निकालकर लोगों की तरफ कर दिया। उसकी इस हरकत से पब्लिक और भड़क उठी।

हालात यह हो गए कि उन तीन पुलिस वालों से गुस्से से भरी भीड़ को संभालना कठिन हो गया। मामला तूल पकड़ने लगा। एक ने जय नारायण की रिवॉल्वर छीन ली। दूसरे ने उसे धक्का दिया। मुंह की लड़ाई तो कब से चल रही थी। भीड़ पर भीड़ बढ़ती जा रही थी। हर कोई जय नारायण के खिलाफ था।

बख्तरबंद ट्रक भी कुछ आगे जाकर रुक गया था। उसके भीतर बैठे गनमैनों ने जब भीड़ का हाल देखा तो उन्होंने ड्राइवर से कहा।

"तुम यहीं रहो, हम मामला संभालकर आते हैं।" एक गनमैन ने कहा।

फिर दोनों गनमैन ट्रक से उतरे और भीड़ की तरफ बढ़ गए।

कुछ कदमों के फासले पर खड़े बेदी को जैसे इसी पल का इन्तजार था। वहां से सड़क दाईं तरफ जा रही थी। जो सीधी माधोपुर जाती थी। मुख्य सड़क पर तो ट्रैफिक जाम हो चुका था।

ट्रक के पास पहुंचकर बेदी ने सावधानी से आसपास देखा फिर ड्राइवर से कह उठा।

"बादशाओ, ऐ गड्डी, पिशोरीलाल का सामान ले जा रही है?"

"आहो महाराज जी।" ट्रक ड्राइवर ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा।

"तो फिर यहां क्यों जमे हो। पिशोरीलाल बुला रया वे। तवाडे

सेठ जी ने बुलाबा पेजा वे।"

ड्राइवर ने पीछे लगी भीड़ पर नजर मारी।

"बाबूजी, गड्डी छोड़ के जाना ठीक नहीं, तुसी।"

"गड्डी की फिक्र मत करो जी, मैं खड़ा वां। तुसी जाओ। गल सुन आओ। मैं वेखदा वां कि कौन गड्डी नूं हथ भी लगादां वे।"

"ए गल वे।"

"पक्का।"

"ठीक है। मैं हुणे आंदा।" कहने के साथ ही वो ट्रक से उतरा—"गड्डी दा त्यान रखना।"

"चिन्ता न करो, बादशाहो।" बेदी ने धड़कते दिल के साथ ट्रक की बॉडी को थपथपाया।

ट्रक ड्राइवर भीड़ की तरफ बढ़ गया।

बेदी की टांगों में जोरदार कम्पन हुआ। आगे उसने जो करना था। वो सोचकर ही बुरा हाल हो रहा था। लेकिन करना तो था ही। अपनी जान तो बचानी थी ही।

उसने सूखे होंठों पर जीभ फेर कर आस-पास देखा।

कोई भी तो उसे नहीं देख रहा था। जबकि उसे लग रहा था कि जैसे सब उसे ही देख रहे हैं। उसके बाद बेदी ने एक पल की भी देरी नहीं की। वह उछला। ट्रक की ड्राइविंग सीट पर बैठा, चाबी लगी थी। एक ही बार में ट्रक स्टार्ट हो गया। अगले ही पल उसने ट्रक को माधोपुर जाने वाली सड़क पर दौड़ा दिया।

पीछे क्या हुआ, उसने परवाह नहीं की। ओखली में सिर दे दिया था। परन्तु पिशोरीलाल के चीखने-चिल्लाने की अस्पष्ट-सी आवाज उसके कानों में पड़ी थी।"

"अरे रोको। कोई टरक को रोको। जां में मेरे गाढ़े पसीने की कमाई है। कोई टरक को...।"

❑❑

वो सारी सड़क इस तरह घिरी पड़ी थी कि पुलिस चाहकर भी बख्तरबंद के पीछे न जा सकी। वहां खड़ी भीड़ ने उन्हें हिलने न दिया।

उधर मौका देखकर शुक्रा को हस्पताल ले जाने के बहाने अंजना ने शुक्रा को कार में बिठाया, चूंकि मामला हस्पताल जाने का था, इसलिए लोगों ने फौरन रास्ता छोड़ दिया और कार लेकर

अंजना वहां से चलती बनी।

शुक्रा की ठुकाई जरूर हुई थी, परन्तु ऐसी नहीं कि हस्पताल जाने की या फिर डॉक्टर को दिखाने की भी जरूरत पड़ती। बहरहाल सब कुछ भूलकर उसे खुशी थी कि बेदी अपनी कोशिश में कामयाब हो गया है। अब उसका ऑपरेशन हो जाएगा। वह जिन्दा बचा रहेगा।

❑ ❑

शोलापुर गांव।

पांच सौ घरों वाली आबादी का छोटा-सा गांव, माधोपुर रोड पर ही स्थित था। गांव से जरा-सा हटकर खेतों की जमीन पर मकान बना हुआ था। अब वहां खेती-बाड़ी नहीं होती थी, इसलिए जमीन बेकार पड़ी थी। उसके मां-बाप ने मकान खेतों के बीच इसलिए बनवाया था कि खेतों की रखवाली हो सके। जो मकान कभी आबाद, हरा-भरा रहता था। जहां गाय-भैंसों को बांधा जाता था। अब वह वीरान पड़ा खंडहर की तरह लग रहा था। गाय-भैंसों के लिए बनी नांद, जिसमें भूसा डाला जाता था, अब भी मौजूद थी। नांद के ऊपर एक छप्पर था, जो कोने से काफी हद तक उधड़ चुका था। किसी तरह चार-पांच बल्लियों पर खड़ा अपने अस्तित्व को टिकाए हुए था। भीतर की तरफ दो कोठरियां थीं। जो कभी गोदाम का काम किया करती थीं।

बेदी ने बख्तरबंद को इस तरह भीतर ले जाकर खड़ा किया कि बाहर से नजर न आ सके। वैसे भी जगह उजाड़ थी। किसी गांव वाले ने देख लिया तो खास चिन्ता की बात नहीं थी।

तब शाम के पांच बज रहे थे।

बेदी बेचैनी से बख्तरबंद के पास ही टहल रहा था। उसे इन्तजार था शुक्रा और अंजना का जो अभी तक नहीं पहुंचे थे। जबकि उन्हें आ जाना चाहिए था। कहीं पुलिस ने उन्हें पकड़ न लिया हो। उसके मन में बार-बार यही ख्याल आ रहा था।

एकाएक उसकी निगाह बख्तरबंद की तरफ उठी तो आंखों में चमक आ गई।

"अब मेरा इलाज हो जाएगा। मैं मरूंगा नहीं। जिंदा रहूंगा। बहुत रकम है तिजोरी में।. बाकी की जिन्दगी भी आराम से कटेगी। सब खुश रहेंगे। मेरे छोटे से घर में अंजना होगी, बच्चे होंगे। कहीं अच्छा-सा मकान लूंगा। कोई चिन्ता उनके पास भी नहीं फटकेगी।"

तभी इंजन की आवाज कानों में पड़ी। बेदी फौरन आगे बढ़ा। उसने बाहर देखा, एम्बेसेडर कार पास आ आती जा रही थी। उन्हें आया पाकर, बेदी ने मन-ही-मन चैन की सांस ली।

भीतर आते ही शुक्रा, बेदी के गले जा लगा।

"हम कामयाब हो गए विजय।"

"हां।" बेदी के स्वर में भी खुशी की झलक थी।

"तिजोरी देखी।" अंजना कह उठी।

"नहीं, अभी तो बख्तरबंद का दरवाजा बंद है।" बेदी मुस्कराया—"कोई जल्दी नहीं, सब कुछ अपने पास है और अपना है। बहुत जल्द हमारे सारे अरमान पूरे होंगे।"

अंजना की चमक भरी निगाह, बख्तरबंद पर टिक चुकी थी।

बेदी आगे बढ़ा और बख्तरबंद दरवाजे के बाहर लटक रहे मोटे ताले को छूकर बोला—

"शुक्रा, इस ताले का क्या करें?"

शुक्रा ने आगे आकर, मोटे ताले को चैक किया।

तभी अंजना कह उठी।

"विजय तुम्हारे पास रिवॉल्वर है।"

"तो?" बेदी ने उसे देखा।

"गोली चलाकर, ताला तोड़ सकते हो।" अंजना तेज स्वर में कह उठी।

"नहीं, गोली चलाना ठीक नहीं होगा।" बेदी ने सिर हिलाया—"गोली की आवाज दूर-दूर तक जाएगी। कोई गोली की आवाज पहचान कर, इधर आ गया तो मामला, बिगड़ सकता है।"

"तो फिर क्या करें?" अंजना के होंठों से निकला।

"तुम चिन्ता मत करो। कोई रास्ता निकल आएगा।" बेदी की निगाह ताले की तरफ उठी।

"इसे लोहे की आरी से काटना पड़ेगा।" शुक्रा ने कहा।

"आरी?" बेदी की निगाह शुक्रा पर गई—"लेकिन आरी तो है नहीं।"

"आ जाएगी, बाजार से मिल जाएगी।"

"बाजार तो शहर में...।"

"गांव के बाजार में भी मिल जाएगी। आरी जैसी चीज हर जगह मिल जाती है!" शुक्रा ने कहा।

"ठीक है। तुम जल्दी से आरी लेकर आओ। शाम हो रही

है। गांव की दुकानें जल्दी बंद हो जाती हैं।''

शुक्रा फौरन बाहर निकल गया।

❑❑

बेदी और अंजना ने जरूरत का वक्ती तौर पर इस्तेमाल होने वाला सामान एक जगह इकट्ठा कर लिया था और झाड़ू सफाई करके मकान को रहने लायक बना लिया था।

बल्ब जल रहा था। लेकिन वोल्टेज कम होने के कारण वह लालटेन जैसा ही लग रहा था।

बेदी और अंजना कमरे की एक ही चारपाई पर लेटे हुए थे। अंजना का सिर बेदी की छाती पर था। बेदी उसके बालों में उंगलियां फिराते छत को देखे जा रहा था।

शुक्रा को गए देर हो चुकी थी। वह अभी तक नहीं लौटा था।

''क्या सोच रहे हो डियर।'' अंजना उसकी छाती पर हाथ फेरकर बोली।

बेदी सोचों से बाहर आया और अंजना के गालों को थपथपाकर कह उठा।

''जाने क्यों यह सब मुझे ठीक नहीं लग रहा। ऐसा लगता है जैसे यह काम करके अपनी आत्मा पर कोई बोझ रख लिया है। मन में जाने क्यों डर-सा आ गया है। पिशोरीलाल की तिजोरी छीन कर ठीक नहीं किया। यह उसके खून-पसीने की कमाई है और...।''

अंजना हड़बड़ा कर उठ बैठी।

''इसमें तुम्हारी जान बंद है।'' वो कह उठी।

''तुम ठीक कहती हो।'' बेदी भी उठ बैठा—''मुझे सिर्फ बारह लाख की जरूरत है और तिजोरी में करोड़ से कम के जेवरात नहीं। मैं पिशोरीलाल से मिलकर उससे बात करता हूं। वो मुझे बारह लाख दे दे ताकि मैं ऑपरेशन करा लूं और उसकी तिजोरी उसे वापस दे दूंगा। नहीं तो उसकी हालत...।''

''पागल तो नहीं हो गए तुम?'' अंजना के होंठों से निकला, अंजना को ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने डण्डा उठाकर उसके सिर पर मार दिया हो या उसकी जायदाद पर डाका डाल लिया हो।

''इसमें पागल की क्या बात है?''

''बहकी-बहकी बातें कर रहे हो।'' अंजना खीझ भरे स्वर

में कह उठी—''हमने इतना खतरा उठाकर, तिजोरी हासिल की है और तुम उसे लौटाने की बात कर रहे हो। इसमें आत्मा पर बोझ डालने वाली कोई बात नहीं है। मैं तो बहुत खुश हूं कि यह काम किया, क्योंकि इससे तुम्हारी जान बच जाएगी।''

''लेकिन...।''

''विजय, तुम घबरा रहे हो। कायरों वाली बात कर रहे हो।'' अंजना की आवाज में खीझ के भाव थे।

''शायद, हो सकता है क्योंकि मैं कभी भी बहादुर नहीं रहा।'' बेदी थके स्वर में कह उठा।

अंजना ने बेदी को गहरी निगाहों से देखा।

''बात को समझो विजय, जो हमने किया है, वह बच्चों का खेल नहीं है। आगे निकल आए हैं हम। जहां से वापस नहीं जाया जा सकता। खुद ही सोचो, सेठ पिशोरीलाल तुम्हें बारह लाख क्यों दे देगा। पागल है वो, वह सीधा हमारी खबर पुलिस को देगा और हम जेल में होंगे। यह सब मजाक नहीं है।''

अंजना पर नजर मारकर, बेदी ने पहलू बदला।

अंजना उसके जख्मों पर मरहम लगाते कह उठी।

''तुम क्या समझते हो यह सब करके मुझे या शुक्रा को बहुत खुशी हुई है। हमने तुम्हारा साथ दिया है विजय। तुम्हारे लिए ही तो यह गलत काम किया कि तुम बच सको, तुम मेरा प्यार हो विजय। प्यार, जिसके सहारे मैंने सारी जिन्दगी बितानी है। जाने कितने सपने देख रखे हैं मैंने। क्या मेरे सपनों को पूरा नहीं होने दोगे? मैं हर कीमत पर तुम्हारा ऑपरेशन करवा कर रहूंगी। तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी। यह तो कुछ भी नहीं। देखना अगर कभी मुझे अपनी जान भी देनी पड़े तो पहले मैं दूंगी। शुक्रा भैया बाद में ही दे पाएंगे।''

''अंजना।'' बेदी का स्वर कांप उठा।

''विजय, मेरे प्यार।''

अगले ही पल दोनों एक-दूसरे की बांहों में थे।

बेदी की आंखों में पानी था। आंसू थे और अंजना की आंखों में अजीब-सी चमक नाच रही थी।

❑❑

शुक्रा आठ बजे लौटा।

आरी के चार ब्लेड और खाने-पीने का सामान लाया था। लेट होने की एक मात्र वजह यह रही कि खाना पैक कराने के

लिए, बढ़िया होटल की तलाश में दूर चला गया था। वहां मौजूद बर्तनों को अंजना धोकर साफ कर चुकी थी। वह खाना डालने लगी।

बेदी और शुक्रा बख्तरबंद ट्रक का ताला, आरी के ब्लेड से काटने लग गए।

इसी दौरान काम छोड़कर उन्होंने खाना खाया।

करीब दो घंटे की मेहनत के बाद वो ताला कटा।

तीनों के चेहरों पर खुशी-ही-खुशी नजर आ रही थी। ट्रक का दरवाजा खोला गया। वहां फैली मध्यम रोशनी में भीतर पड़ी वह तिजोरी नजर आई।

अंजना तो जैसे पागल हो गई। वह ट्रक के ऊपर चढ़ कर सेफ के पास जाना चाहती थी। परन्तु अपनी इस हरकत पर उसने काबू पाया। उसके बाद तीनों कमरे के भीतर सिर-से-सिर जोड़कर बैठ गए।

मुद्दा था तिजोरी कैसे खोली जाए?

❑❑

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण सिर से पांव तक झुंझलाहट में भरा पड़ा था। जब से तिजोरी वाला ट्रक कोई ले भागा था, तब से होंठ सख्ती से बार-बार भिंच रहे थे। ऑफिसरों को जवाब देना उसे भारी पड़ रहा था। उसने शोलापुर और माधोपुर वाली सड़क को अच्छी तरह छान मारा था। वह भुस में से सुई ढूंढ़ने जैसा काम कर रहा था और सुई यानी कि ट्रक ले जाने वाले कहीं नहीं मिले।

ऑफिसरों से बात करने में वो बच रहा था।

इस वक्त रात के दस बज रहे थे और वह पिशोरीलाल के बंगले पर मौजूद था।

पिशोरीलाल का चेहरा पीलेपन की हद को भी पार कर रहा था। लग रहा था जैसे बरसों का मरीज हो और ढूंढ़ने पर भी दवा न मिली हो। चेहरे की रौनक दूसरे शहर जा चुकी थी। सूखे होंठ बार-बार चिपक रहे थे और होंठों के कोनों में झाग चमकने लगती थी।

"सेठ जी।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण अपनी झुंझलाहट पर काबू पाकर कह उठा—"मैं पक्के तौर पर कह सकता हूं कि आपकी तिजोरी ले उड़ने में, किसी बीच के बन्दे का हाथ था। वह जानता था कि तिजोरी के लिए क्या-क्या सिक्योरिटी

है। हमने किस-किस रास्ते से गुजरना है। सब कुछ ध्यान में रखकर ही उन्होंने अपना काम किया है। इट इज ए इन साइड जॉब। आपके ही किसी आदमी ने तिजोरी लूटने वालों को सारे प्रोग्राम के बारे में बताया है। आप सोच कर बताइए कि ऐसा कौन-सा आदमी हो सकता है।"

"नई भायो, म्हारे पास कोई आदमी ही न हौवो। तो बतावे कौन। म्हारे साथ तो तू था। थारे साथ दो पुलिस वालो थे। येई आदमी थे म्हारे पासो तो।"

"प्लीज सेठ जी, यह करोड़ से ऊपर का मामला है। जो पूछ रहा हूं उसका सोच-समझकर जवाब दीजिए। हम तिजोरी की सुरक्षा के लिए मौजूद थे। उसे लूटने के लिए नहीं।"

"का मालूम, कौन किस वास्ते मौजूद हौवे।" पिशोरीलाल कल्पे स्वर में कह उठा—"बंगले में तो म्हारो एक नौकरानी राधा हौवो। बेटी की तरह हौवो। अम उसो के बाप की तरह हौवो। वो का किसी से बात करे।"

"और कौन है बंगले में।"

"दरबान है, उसो पर भी म्हारे को कोई शको नहीं। वो तो कब से म्हारी सेवा करो हो। म्हारे को उन पर घणा विश्वास हौवे। इसो के अलावा म्हारे पास कोई और न हौवो, शको करने के वास्ते।"

"आपके परिवार वाले।"

"परिवार के नाम पर तो म्हारी सोनी-सोनी बीवी हौवे। जो मायके में अपने दिमाग का इलाज करावे हो।"

"वो पागल है क्या?"

"पागल हो थारी बीवी। म्हारी बीवी के दिमाग में थोड़ी-सी गड़बड़ हौवे। कभी ठीक हो जावे, कभी नेई।"

तभी राधा वहां चाय लेकर आई।

जय नारायण ने गहरी निगाहों से राधा को देखा। उसकी पैनी निगाह राधा के जिस्म पर फिरी। उसके हाव-भाव देखे। जाने क्यों उसे राधा से पूछताछ करने की जरूरत-सी महसूस हुई।

राधा चाय रखकर चली गई थी।

"सेठ जी, मैं आपकी नौकरानी राधा से पूछताछ करना चाहता हूं।" जय नारायण बोला।

"किस वास्ते, भायो?"

"यह पूछताछ हमारी रूटीन पूछताछ होती है।"
"यो रूटीनो बाद में दिखायो। पैले म्हारी तिजोरी लेकर आ।" पिशोरीलाल गुस्से में कह उठा—"थारे को अपणी नौकरी की परवाह हौवे कि नाही। तू म्हारे को जाने ना। अम, थारे को नचाकर रख दयो। म्हारी तिजोरी न मिलो तो, अम थारा वो हाल करे कि तू म्हारी शक्ल भी फिर कभी न देखना चाहो।"
"सेठ जी मैं आपकी तिजोरी ढूंढ़ रहा...।"
"तो ढूंढ़ों न भायो। म्हारे बंगलो में—म्हारे सिरों पर क्यों खड़ा हौवो।" पिशोरीलाल झुंझलाकर कह उठा।
"मैं आपकी नौकरानी राधा से...।"
"अम थारे को कै चुके, वो म्हारी बेटी हौवे। तू जाकर म्हारी तिजोरी को ढूंढ़। जब तन्ने म्हारी तिजोरी मिलो तो आके राधा से भी पूछ-ताछो कर लयो, जा।"
सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने नापसन्दी निगाहों से पिशोरीलाल को देखा।
"मैं आपसे फिर मिलूंगा सेठ जी।"
"जरूर मिलयो भायो। पण तिजोरी के साथ। नेई तो मैं बरबाद हो जाऊंगा। लोगों का पैसा कौण देगा?" पिशोरीलाल ने फीके स्वर में कहा, चेहरे पर उजड़ापन स्पष्ट बरस रहा था।
❑❑
"यह बात तो मैं पक्के तौर पर कह सकता हूं कि पिशोरीलाल किसी भी सूरत में तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर नहीं बताएगा।" बेदी अपने शब्दों पर जोर देकर कह उठा।
"मेरा भी यही ख्याल है।" अंजना कह उठी—"वह नम्बर नहीं बताएगा।"
"मैं पिशोरीलाल को उठाकर यहां ले आता हूं। देखता हूं साला कैसे नहीं बताता।" शुक्रा कह उठा।
"इस बात का कोई फायदा नहीं। अगर जरूरत पड़ी तो बाद में देखा जाएगा।" बेदी बोला।
"तो फिर तिजोरी कैसे खुलेगी?"
"मेरे ख्याल में दो-तीन दिन तक हैडक्वार्टर से सेठ पिशोरीलाल के सेफ की फाइल ऑफिस के स्ट्रांग रूम में पहुंच जाएगी। उस फाइल से तिजोरी के कम्बीनेशन नम्बर को आसानी से जाना जा सकता है।"
"वो फाइल देखेगा कौन?"

"मैं, ऑफिस में मेरा आना-जाना है।"
"तो दो-तीन दिन तक हम क्या करें।" अंजना ने उसे देखा—"हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहें।"
"बात तो सोचने वाली है।" शुक्रा ने फौरन सिर हिलाया।
करीब मिनट भर उनके बीच खामोशी रही।
"मेरे ख्याल में अब हमारे पास ऑपरेशन के लिए पैसा तो आ ही गया है।" बेदी ने दोनों पर सोच भरी नजर मारते हुए कहा—"दो-चार दिन में तिजोरी खुल ही जाएगी। उसके बाद ऑपरेशन के लिए हमें डॉक्टर वधावन की जरूरत पड़ेगी। सोचने की बात यह है कि इस तरह तिजोरी ले भागने के बाद, क्या सीधे-सीधे जाकर डॉक्टर वधावन से ऑपरेशन कराया जा सकता है।"
"क्या मतलब?"
"हो सकता है किसी तरह यह बात खुल गई हो कि इस काम में हमारा हाथ है या फिर एक-दो दिन में पुलिस को मालूम हो गया तो मैं ऑपरेशन कैसे करवा सकूंगा।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।
"तुम यूं ही डर रहे हो विजय।" अंजना बोली—"ऐसा कुछ नहीं होगा।"
"मैं कहता हूं ऐसा हो गया तो क्या होगा? नहीं होगा, यह तो मैं भी कह सकता हूं।"
शुक्रा और अंजना की नजरें मिलीं।
"तुम कहना क्या चाहते हो?"
"खुद को बचाने के लिए, सिर में फंसी गोली निकालने के लिए एक अपराध तो हम कर ही चुके हैं।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"ऐसे में एक अपराध और कर लिया जाए तो क्या हर्ज है।"
"क्या मतलब?" अंजना के होंठों से निकला।
"विजय।" शुक्रा गम्भीर स्वर में बोला—"एक-एक अपराध करके ही सौ अपराध बन जाते हैं। कहने को एक अपराध होता है और जब गिनती की जाती है तो लम्बी लिस्ट बन जाती है। मुझे नहीं मालूम तुम क्या करने की सोच रहे हो, लेकिन मैं तुम्हें सलाह नहीं दूंगा कि कोई और गलत काम करो।"
बेदी कुछ नहीं बोला।
"तुम कहना क्या चाहते हो विजय?"

"मैं यह कहना चाहता हूं कि तिजोरी खुलने के बाद भी बारह लाख लेकर डॉक्टर वधावन के पास नहीं जाया जा सकता। कैसी भी मुसीबत गले पड़ सकती है। इसलिए जो दो-तीन दिन का वक्त हमारे पास है। उसे इस्तेमाल करते हुए किसी तरह डॉक्टर वधावन को उठाकर यहां रख लें।"

"यहां?"

"हां।" बेदी ने सिर हिलाया—"उससे यहां भी ऑपरेशन कराया जा सकता है। उसे जिस सामान की जरूरत होगी, उसका इन्तजाम उसे कर दिया जाएगा। इस तरह हम किसी तरह के फालतू के खतरे में नहीं पड़ेंगे।"

यहां ऑपरेशन वाली बात अंजना को बचकानी लगी, लेकिन वह खामोश रही।

"बात तो तुम्हारी ठीक है।" शुक्रा कह उठा।

"तो वधावन को उठाकर यहां लाया जाए?" बेदी ने व्याकुल निगाहों से उसे देखा।

"हां, आगे का काम करने में आसानी होगी।" शुक्रा ने कहा—"लेकिन पहले की तरह इस बार उसकी कार को नहीं रोका जा सकता। वह इस मामले में सावधान हो गया होगा। कोई और रास्ता निकालना होगा।"

बेदी सिर हिलाकर रह गया।

अंजना इस मामले में कुछ नहीं बोली।

❑❑

अगले दिन सुबह ही बेदी और शुक्रा एम्बेसेडर पर सवार होकर, शहर चल पड़े। डॉक्टर वधावन के बारे में बारीकी से पूछताछ की तो मालूम हुआ कि आज शाम देश-विदेश के डॉक्टरों का सम्मेलन हो रहा है। वधावन ने उस सम्मेलन में शामिल होना है।

दोनों ने डॉक्टर वधावन के इन्तजार में सारा दिन गुजार दिया।

दिन ढलने पर वधावन सम्मेलन वाली इमारत में पहुंचा। दोनों ने उसे कार में आते देखा। वहां तो जैसे मेला लगा हुआ था। कारें आ रही थीं। डॉक्टर उतरकर इमारत में प्रवेश करते जा रहे थे।

"हमें डॉक्टर के बाहर निकलने का इन्तजार करना होगा।" शुक्रा बोला।

"हां।" बेदी ने इधर-उधर देखा—"पार्किंग में खड़ी उसकी कार के पास चलते हैं। ताकि जब वह आए तो हमें उसी वक्त मालूम हो जाए। रास्ते में कहीं, उसका अपहरण करेंगे।"

"इस काम में ज्यादा परेशानी नहीं आएगी। ड्राइवर के साथ वह अकेला ही आया है।"

रात के ग्यारह बजे डॉक्टर वधावन अपनी कार तक पहुंचा। साथ में दो-चार लोग थे जो उसे कार तक छोड़ने आए थे। अपनी कार में विदा होकर वधावन वहां से चल पड़ा।

दोनों ने एम्बेसेडर पीछे लगा दी।

परन्तु वधावन की नई कार का मुकाबला, वो एम्बेसेडर क्या करती।

"ये कार है या खटारा।" बेदी ने मुंह बनाकर कहा।

"मैकेनिक की कार है, इतना ही बहुत है कि सरक रही है।" शुक्रा कड़वे स्वर में बोला।

"अब क्या करें?"

"मेरे ख्याल में चिन्ता की कोई बात नहीं।" शुक्रा बोला—"वधावन का घर मैंने देखा हुआ है। वह अपने बंगले पर ही जा रहा है। वहीं पर देखते हैं कि उसका क्या किया जा सकता है।"

"पागल हो क्या? बंगले से उसे उठाओगे क्या?" बेदी हड़बड़ाकर कह उठा।

"कुछ तो करना ही पड़ेगा।"

"शुक्रा! बंगले में घुसकर वधावन को उठाना मेरे बस की बात नहीं है।" बेदी की आवाज में घबराहट थी।

"तेरे बस में कुछ है भी।" शुक्रा झुंझला उठा।

जवाब में बेदी खामोशी से गहरी सांस लेकर रह गया।

"विजय।" शुक्रा कुछ पलों बाद बोला—"दरअसल हम लोग शरीफ हैं। ऐसे काम हमने कभी किए नहीं। किए नहीं क्या, करने की कभी सोची भी नहीं कभी ऐसा करने का सपना भी नहीं आया। और वही काम हमें करने पड़ रहे हैं तो घबराहट होना लाजिमी है। लेकिन इन कामों को हम तभी अंजाम दे पाएंगे, जब अपने में हौसला-हिम्मत रखेंगे।"

"हिम्मत-हौसला ही तो नहीं है।" बेदी थके स्वर में कह उठा। शुक्रा ने कार ड्राइव करते उसे देखा, लेकिन कहा कुछ नहीं।

वो बहुत बड़ा बंगला था जो डॉक्टर वधावन का था।

वधावन की कार उसी बंगले में खड़ी थी। बाहरी गेट से ही स्पष्ट नजर आ रही थी। पोर्च में हल्की-सी रोशनी में कार चमक रही थी।

गेट के भीतरी तरफ स्टूल पर चौकीदार बैठा था। पास ही में लकड़ी का केबिन बना था। इसके अलावा और कोई नजर नहीं आ रहा था। बेदी और शुक्रा ने हर तरफ देख लिया था।

बंगले के दो-तीन कमरों की लाइटें रोशन थीं।

बेदी और शुक्रा सब कुछ देख-दाखकर, एक तरफ सरक गए।

"अब क्या किया जाए?" बेदी फुसफुसाहट भरे लहजे में कह उठा।

"डॉक्टर वधावन पर हाथ डालना है और क्या?"

"लेकिन वो तो बंगले में है।"

"उसे किसी तरह बंगले से बाहर निकालना होगा।" शुक्रा के स्वर में सोच के भाव थे।

"वो पागल है जो रात को बारह बजे बाहर निकलेगा।" बेदी बोला—"अब तो नींद लेने की तैयारी में होगा।"

"बेदी, यह बंगला ऐसा बना है कि इसके भीतर जाकर किसी को उठाकर नहीं लाया जा सकता।" शुक्रा कह उठा—"डॉक्टर पर काबू पाने के लिए जरूरी है कि उसे बंगले से बाहर निकाला जाए।"

"वो इस वक्त बंगले से बाहर नहीं निकलेगा।"

"मैं कब कह रहा हूं कि वो निकलेगा। उसे निकालना पड़ेगा, कोई रास्ता सोच।"

बेदी ने सिगरेट सुलगा ली।

"दो-चार कश मुझे भी दे देना।" शुक्रा ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

आधी सिगरेट समाप्त होने पर बेदी ने सिगरेट उसे दी।

"शुक्रा, एक रास्ता है डॉक्टर को बाहर निकालने का।"

"क्या?"

"यहां कहीं फोन बूथ होगा?"

"है, सडक के कोने में, क्यों?"

"तेरे को डॉक्टर के बंगले का फोन नम्बर मालूम है।" उसकी बात पर ध्यान न देकर बेदी बोला।

"हां, उसके क्लीनिक-घर सब नम्बर मेरे दिमाग में हैं। जब वधावन के बारे में छानबीन की थी, तब सबसे पहले फोन नम्बरों के बारे में ही जानकारी मालूम की थी।"

"इस बंगले का नम्बर बता।"

वधावन के बंगले का फोन नम्बर बताकर शुक्रा ने उलझन भरे स्वर में पूछा।

"लेकिन तू करना क्या चाहता है।"

"शुक्रा, डॉक्टर सम्मेलन से लौटा है। यूं समझ कि रास्ते में एक्सीडेंट मारा है। अब उसी एक्सीडेंट के सिलसिले में थाने से फोन आता है तो वो डॉक्टर क्या करेगा?" बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा।

शुक्रा उसे देखने लगा।

"बता, क्या करेगा?"

"पुलिस को आने के लिए कह देगा कि आकर बात...।"

"हो सकता है वह खुद ही पुलिस स्टेशन जाए और...।"

"मेरे ख्याल में इस वक्त वह बंगले से निकलना पसन्द नहीं करेगा।"

"देखते हैं, मैं पुलिस वाला बनकर फोन पर उससे बात करता हूं। तू कार तैयार रख।"

बेदी ने फोन पर, बूथ से, डॉक्टर वधावन से बात की। आवाज को थोड़ा-सा बदलकर बात की कि कहीं, उसकी आवाज को वह पहचान न ले।

"हैलो।" वधावन की आवाज उसके कान में पड़ी।

"सॉरी डॉक्टर वधावन।" बेदी फौरन संभलकर बोला—"रात के इस वक्त आपको तकलीफ दी। वैसे मुझे इंस्पेक्टर अशोक लाल कहते हैं। मैं पास ही के थाने का इंचार्ज हूं।"

"कहिए, इस वक्त मुझसे क्या काम पड़...।"

"डॉक्टर, आप कुछ देर पहले बाहर से लौटे हैं?" बेदी एक-एक शब्द संभालकर बोल रहा था।

"जी हां, सम्मेलन से अभी लौटा हूं और...।"

"आप जैसे डॉक्टर से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी। सड़क पार करते बेचारे बूढ़े को, कार से टक्कर मारकर, दूर फेंक दिया और दोबारा उसका हाल भी नहीं पूछा और भाग निकले, मैं...।"

"यह आप क्या कह रहे हैं इंस्पेक्टर कि मेरी कार ने एक्सीडेंट किया।" वधावन का तेज स्वर बेदी के कानों में पड़ा—"आपको किसी ने गलत खबर दी है। ऐसा कुछ नहीं हुआ।"

"मैं जानता था जो एक्सीडेंट करके भागेगा, वो ऐसा ही कहेगा, लेकिन दो गवाह हैं, जिन्होंने आपकी कार का नम्बर नोट ही नहीं किया बल्कि आपको भीतर बैठे भी देखा वे आपको पहचानते भी हैं। ऐसे में आप क्या कहेंगे कि...।"

"वो गवाह झूठे हैं, कार से...।"

"डॉक्टर वधावन।" बेदी के स्वर में सख्ती आ गई—"अभी बात हद में है। ले-देकर मामला दबाया जा सकता है। बेहतर होगा आप पुलिस स्टेशन आ जाइए। नहीं तो मैं जीप भरकर पुलिस वालों को, आपको गिरफ्तार करने के लिए भेजता हूं।"

"क्या—आप मुझे गिरफ्तार करेंगे, मुझे...।"

"क्यों नहीं कर सकता। आप बूढ़े व्यक्ति को टक्कर मारकर भाग सकते हैं तो मैं आपको गिरफ्तार क्यों नहीं कर सकता। यह बात पहले ही बता दूं कि आपकी गिरफ्तारी के लिए जो पुलिस कार, आपके बंगले पर आएगी, वो सायरन बजाती आएगी। ताकि आपके आसपास रहने वालों को भी मालूम हो कि आपको गिरफ्तार किया जा...।"

"इंस्पेक्टर।" वधावन का झल्लाहट से भरा स्वर कानों में पड़ा—"मेरी पहुंच ऊपर तक...।"

"होगी। लेकिन वो पहुंच इस बात की इजाजत नहीं देती कि आप कार से लोगों को कुचलते रहें।"

"तुम गलत कर रहे हो इंस्पेक्टर, मैं...।"

"मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हूं।"

"देखूंगा तुम्हारी ड्यूटी को भी। मैं तुम्हें...।"

"आपको जो करना हो कर लीजिए।" बेदी ने तीखे स्वर में कहा—"इस वक्त आप शराफत से पुलिस स्टेशन आ रहे हैं या मैं आपकी गिरफ्तारी के लिए सायरन बजाती कार...।"

"मैं आता हूं।" वधावन की आवाज में गुस्सा भरा था।

बेदी ने रिसीवर रखा और बूथ से बाहर आ गया।

आंखों में चमक लिए वह शुक्रा के पास पहुंचा।"

"क्या रहा?"

"वधावन बंगले से बाहर आ रहा है।" बेदी कार में बैठता कह उठा।

"कैसे तैयार किया उसे?"

"अंदाज से डण्डा घुमाया था। इत्तफाक से पूरा घूमकर निशाने पर बैठा। तैयार रह, वो बाहर निकलने वाला होगा।"

दस मिनट में डॉक्टर वधावन कार पर, बंगले से निकला, जो खुद ही कार चला रहा था।

"कार में अकेला है।" बेदी के होंठों से निकला।

"ड्राइवर को साथ ले जाने की जरूरत नहीं समझी होगी।" शुक्रा उसके पीछे कार डालता हुआ बोला—"साले को गर्दन से पकड़ लेना है। छोड़ना नहीं इसे।"

मोड़ काटते ही आगे कार थी, वधावन फौरन कार पर कंट्रोल नहीं कर सका। उसकी कार सामने खड़ी कार से जा टकराई। अपना माथा कार की बॉडी से लगा तो, होंठों से कराह निकल गई।

वधावन ने खुद को संभाला और गुस्से में बाहर निकला।

तभी कार की ओर से बेदी और शुक्रा निकलकर सामने आ गए। कम रोशनी में भी वधावन ने उन्हें पहचाना और चौंक पड़ा।

"तुम?" उसके होंठों से निकला।

"हां।" बेदी ने शांत स्वर में कहा—"मैंने ही फोन करके तुम्हें बंगले से बाहर निकलवाया है।"

"क्यों?"

"इसका जवाब बाद में।" बेदी ने रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली—"कार में बैठो।"

"तुम मेरा अपहरण कर रहे हो।" वधावन गुस्से से चीखा।

"हां।" शुक्रा पास आया—"चल कार में बैठ।"

"तुम क्या सोचते हो कि रिवॉल्वर के दम पर मुझसे ऑपरेशन करवा लोगे।" वधावन उखड़ा पड़ा था।

"रिवॉल्वर के दम पर तेरे को साथ ले जा रहे हैं, लेकिन चिन्ता मत कर, ऑपरेशन तेरे से नोटों के दम पर ही कराएंगे।" कहते हुए शुक्रा ने उसकी बांह पकड़ी—"कार में बैठ।"

वधावन ने व्यंग्य भरी निगाहों से दोनों को देखा।

"तुम दोनों को मेरी जरूरत है, इसलिए रिवॉल्वर दिखाकर मुझे डराओ मत। जो बात करनी हो, सीधे-सीधे करो। मेरा

आराम करने का कीमती वक्त तुम लोगों ने खराब कर दिया।"

"इस वक्त यहां पर, हमने तेरे से कोई बात नहीं करनी डॉक्टर।" बेदी बोला।

"तो?"

"हम तेरे को ले जाने आए हैं। बातें बाद में होंगी।"

"मैं नहीं जा सकता।" वधावन दांत भींच कर कह उठा—"सुबह मुझे ऑपरेशन करना है। जरूरी ऑपरेशन है। मेरा वक्त और दिमाग खराब मत करो।" कहने के साथ ही वह अपनी कार की तरफ पलटा।

लेकिन शुक्रा ने सख्ती से उसकी बांह पकड़ी हुई थी।

"छोड़ो मुझे।" वधावन ने दांत भींचकर कहा।

शुक्रा ने बेदी को देखा।

"प्यार से तो नहीं मानता यह, जबरदस्ती कार में डालना पड़ेगा।" कहने के साथ ही शुक्रा ने डॉक्टर वधावन को खींचा और जबरदस्ती एम्बेसेडर की पीछे वाली सीट पर धकेलकर उस पर सवार हो गया।

वधावन चीखता-चिल्लाता ही रहा।

बेदी ड्राइविंग सीट पर बैठा और कार आगे बढ़ा दी।

"वक्त क्या हुआ है?" शुक्रा ने पूछा।

"डेढ़ बजा है। दिन और रात पूरी खराब हो गई, इसे पकड़ने में।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं, हाथ में तो आया।"

"मैं तुम्हारा ऑपरेशन नहीं करूंगा।" वधावन चीख उठा—"कभी नहीं करूंगा।"

"चुप!" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा—"ऑपरेशन करके गोली तो तेरा बाप भी निकालेगा।"

❑❑

रात के तीन बज रहे थे।

अंजना की आंखों में नींद का नामोनिशान नहीं था। कभी वहां पड़ी चारपाई पर लेट जाती तो कभी उठकर टहलने लगती। उसके मस्तिष्क में बेदी और शुक्रा थे कि कहीं वह डॉक्टर वधावन को उठाने के चक्कर में कोई नई मुसीबत न मोल ले लें।

इस दौरान वह जाने कितनी बार छप्पर के नीचे खड़े ट्रक का फेरा लगा आई थी कि वहां सब ठीक है। तिजोरी को हसरत भरी निगाहों से देख आती। अगर तिजोरी खुली होती तो बात

ही कुछ और थी। जब तक यह बंद है, तब तक उसके लिए बेकार है।

वातावरण में झींगुरों की आवाजें गूंज रही थीं। कभी-कभार गांव के कुत्ते के भौंकने या कराहने की आवाज कानों में पड़ जाती थी। सुबह से वह दोनों गए थे और अब रात भी बीतने पर थी।

तभी उसके कानों में इंजन की आवाज पड़ी। जो कि दूर थी लेकिन वह सतर्क हो गई। उसे समझते देर न लगी कि बेदी और शुक्रा ही आए हैं। वह तेजी से मकान के रास्तों को तय करती बाहरी द्वार पर आ खड़ी हुई। दूर उसे कार की हैडलाइट दिखी, जिससे उसने पहचान लिया कि वह उसी एम्बेसेडर की हैडलाइट है। व्याकुल निगाहों से कार को पास आते देखती रही।

पास आकर कार रुकी।

दरवाजा खुला, बेदी निकला। पीछे वाले दरवाजे से शुक्रा किसी व्यक्ति के साथ बाहर निकला। शुक्रा ने उसकी बांह पकड़ रखी थी। चन्द्रमा की रोशनी में स्पष्ट नजर आ रहा था।

"मैं तुम लोगों को छोडूंगा नहीं।" डॉक्टर वधावन ने चीखकर कहा—"पुलिस में दे दूंगा। तुम...।"

"चुप...।" शुक्रा गुर्राया—"नई बात बोल, कान पक गए हैं मेरे, वही शब्द बार-बार सुनते हुए।"

"अभी भी वक्त है, छोड़ दो मुझे, मैं...।"

"फिर बोला तू...।"

"मैंने सुबह जरूरी ऑपरेशन करना है। वो ऑपरेशन।"

"बोलता रह।"

वे लोग उसे पकड़कर आगे बढ़े।

दरवाजे पर अंजना को खड़ी पाकर डॉक्टर वधावन ठिठका।

"ये लड़की भी तुम्हारे साथ है।"

कोई कुछ न बोला।

"तो पूरा गैंग है तुम लोगों का, देखना तुम लोगों का हाल...।"

पीछे से शुक्रा ने धक्का दिया तो वधावन लड़खड़ाता हुआ, भीतर प्रवेश कर गया।

"धीरे।" बेदी बोला—"अभी गिर जाना था उसने।"

"गिरने दे, साला बकवास ही किए जा रहा है।" शुक्रा ने चिढ़कर कहा।

बेदी आगे बढ़कर डॉक्टर वधावन के पास पहुंचा।
"तुम अच्छी तरह जानते हो कि हम तुम्हें उठा लाए हैं और अब छोड़ने वाले नहीं।" बेदी ने सख्त स्वर में उसे समझाना चाहा—"अच्छा यही होगा कि चीखना-चिल्लाना छोड़ दो और जो हम कहें, वो शराफत से करो।"
"तुम गलत सोचते हो कि मैं तुम लोगों की बात मान लूंगा।" वधावन उखड़े स्वर में कह उठा।
"बात तो माननी पड़ेगी। प्यार से मान लो। डण्डे से मान लो। यह तुम्हारी मर्जी पर है।" बेदी ने सख्त आवाज में कहा।
"मैं नहीं करूंगा, तुम्हारा ऑपरेशन।"
"साले फिर उल्टा बोला तू...।" कहकर शुक्रा गुस्से से आगे बढ़ा।
लेकिन अंजना ने शुक्रा को रोक लिया।
"ये डॉक्टर शराफत की भाषा नहीं समझता।" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा—"ये इसी तरह बकवास करता रहा तो साले को सीधा ऊपर पहुंचा दूंगा। तब ऊपर वाला ही समझाएगा कि तूने ये गलती की, तभी मरा।"
"मेरे साथ आ।" बेदी वधावन को लेकर आगे बढ़ा।
हर तरफ बल्ब की मध्यम-सी रोशनी फैली थी।
"कैसी है यह जगह? हर तरफ बदबू फैली है।" वधावन ने मुंह बनाकर कहा।
"पहले यहां गाय-भैंसें बांधी जाती थीं। तबेला था यह...।"
"कहां ले आए हो मुझे, मैं...।"
बेदी डॉक्टर वधावन को लेकर ट्रक के पास पहुंचा।
"ट्रक के भीतर देखो।" बेदी ने कहा।
वधावन ने भीतर नजर मारी। अंधेरा ही दिखा।
"क्या देखूं?" वधावन ने दांत भींचकर कहा—"खाली है।"
"यह देखो।" कहने के साथ ही बेदी ने जेब से माचिस निकाली। उसकी दो तीलियां एक साथ जलाईं।
पल भर के लिए रोशनी हुई।
वधावन को बख्तरबंद में पड़ी तिजोरी नजर आई।
"देखा?"
"हां, भीतर तिजोरी है। मुझे क्यों दिखा रहे हो?" वधावन का स्वर पहले जैसा ही था।
"इसलिए कि इस तिजोरी में करोड़ से ऊपर की रकम है।"

बेदी अपने शब्दों पर जोर देकर बोला—"एक करोड़ से ऊपर की रकम। तुम ऑपरेशन के लिए बारह लाख कह रहे थे। तुम्हें बारह लाख मिलेंगे। साथ में पांच लाख टिप के मिलेंगे। मैं दूंगा, किसी तरह तिजोरी खुल जाए। फिर तुम्हें मिल जाएंगे।"
"खुल जाए।" वधावन की आंखें सिकुड़ीं।
बेदी उसे देखता रहा।
अगले ही पल वधावन की आंखें फैल गईं।
"ओह, यह तिजोरी, तुम लोगों ने चोरी की है, चोर हो तुम?"
"हां।" पीछे से आकर शुक्रा बोला—"तेरे जैसे कमीने डॉक्टर की बारह लाख फीस देनी थी ऑपरेशन के लिए। जो बारह से एक पैसा भी कम लेने को तैयार नहीं है। नोटों का इंतजाम तो करना ही था। कर लिया। तेरे साथ-साथ अब अपने लिए भी नोटों का इन्तजाम कर लिया। चिन्ता मत कर यह तिजोरी न तो तेरी है और ना ही तेरे बाप की है। तू अपनी फीस से मतलब रख।"
"ओह! तुम लोग तो बहुत खतरनाक लोग हो।"
"हां, अब समझ में आ गया कि हम बहुत खतरनाक हैं।" शुक्रा तीखे स्वर में बोला—"संभलकर रह हमसे। वरना खतरा तेरे सिर पर भी आ सकता है। चल तेरा बेडरूम दिखा दूं।"
वह दोनों वधावन को लेकर भूसा रखने वाली कोठरी में पहुंचे।
"यह क्या है?" बरबस ही वधावन के होंठों से निकला।
"यह...।" शुक्रा ने तीखे स्वर में कहा—"इस वक्त तो तुम्हारा बेडरूम है, फिर...।"
"क्या?" वधावन हत्थे से उखड़ा—"मेरा बेडरूम।" निगाह वहां पड़ी चारपाई पर गई।
"हां।" शुक्रा पहले वाले ही स्वर में बोला—"वक्त आने पर इसे ऑपरेशन थियेटर बना दिया जाएगा। जहां तुम मेरे यार के सिर का ऑपरेशन करके उसके दिमाग में फंसी गोली निकालोगे।"
"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?" वधावन सकपकाकर कह उठा—"गाय-भैंसों के तबेले में ऑपरेशन? ऑपरेशन ऐसे होते हैं, इसके लिए साफ-सुथरा थियेटर होता है। जिसकी सफाई इस तरह रखी जाती है कि वहां कोई कीटाणु भी न रहे और फिर चोरी-छिपे ऑपरेशन करवाने की क्या जरूरत है? तुम...।"

"वो तिजोरी तो आप देख ही चुके हैं।" बेदी बोला—"कल को बात बाहर भी निकल सकती है कि हमने तिजोरी चोरी की है। ऐसे में मैं ऑपरेशन करवाकर निकलूं और पुलिस मुझे पकड़ ले। क्या फायदा ऐसे ऑपरेशन का।"

"लेकिन...!"

"लेकिन को बाद में देखेंगे।" शुक्रा ने वधावन को चारपाई पर धकेला तो वह उस पर जा गिरा—इसके साथ ही पास रखी नायलोन की डोरी का बंडल उठाकर उसे चारपाई से बांधने लगा।

"ये-ये क्या कर रहे हो? मैं...।"

"तुम शरारत न करो, भाग न जाओ यह इसलिए किया जा रहा है।" शुक्रा अपने काम में व्यस्त कहा।

"बेवकूफी वाली बातें मत करो। मैं डॉक्टर हूं, तुम मुझसे ऑपरेशन करवाना चाहते हो और मुझे इस तरह चारपाई पर बांध रहे हो, कुछ तो सोचो कि...।"

"जब ऑपरेशन का वक्त आएगा तो तुम्हारी इस राय पर भी गौर कर लेंगे।" शुक्रा ने कड़वे स्वर में कहा—"दिन भर तुम भागते रहे। रात भी बीतने को जा रही है। तुम सोए नहीं। अब आराम करो। खाने-पीने को तुम्हें मिलता रहेगा।" उसे बांधकर दोनों बाहर निकल गए।

अब हालत यह थी कि वधावन चारपाई पर सीधा लेटा था। चारपाई के साथ ही नाइलोन की डोरी से उसे इस तरह बांधा गया था कि खुद को आजाद करवाने के लिए वह कुछ नहीं कर सकता था। करवट भी नहीं ले सकता था। वह जैसे भारी-मजबूत चारपाई का ही हिस्सा बनकर रह गया था।

"हे भगवान!" वधावन बड़बड़ा उठा—"ये तू मुझे कहां ले आया? उधर मेरी बेटी मेरी चिन्ता कर रही होगी।" फिर वह एकाएक जोरों से चीखा—"पागल लोगों खोलो मुझे।"

लेकिन खोलने कोई नहीं आया।

❑❑

झींगुरों की आवाजें अभी भी गूंज रही थीं।

अंजना ने चाय बना ली थी। तीनों बैठे चाय पी रहे थे। चीख-चिल्लाकर डॉक्टर वधावन जैसे सो गया था। क्योंकि अब उसकी आवाजें आनी बंद हो गई थीं। करीब के गांव के लोग भी अब जागना शुरू कर देंगे। उनका तो दिन निकलने वाला था।

बेदी ने घूंट भरकर दोनों को देखा।

"डॉक्टर वाला काम तो निपट गया।" शुक्रा ने बेदी और अंजना पर निगाह मारी।

"जब ऑपरेशन का वक्त आएगा, तो वह हो जाएगा।" अंजना बोली—"इस बात की तो कोई चिन्ता नहीं। सवाल यह पैदा होता है कि तिजोरी कैसे खुले। तिजोरी खुले बिना, हमारे काम आगे नहीं बढ़ेंगे।"

बेदी ने दोनों को देखा।

"दूसरा काम भी निपट जाएगा।" बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा—"जल्दी ही कहीं न कहीं से कम्बीनेशन नम्बर मिल जाएगा। दिन में ऑफिस जाऊंगा किसी तरह वहां से मालूम करूंगा कि हैड-क्वार्टर से पिशोरीलाल के सेफ की फाइल कब ब्रांच में आ रही है। उसमें कम्बीनेशन नम्बर मौजूद होगा। यह भी हो सकता है कि अब तक फाइल ऑफिस के स्ट्रांग रूम में पहुंच चुकी हो। दिन में ही इस बात की खबर लगेगी।"

सब चाय की आधी-आधी प्याली खत्म कर चुके थे।

"मैं कुछ कहूं।" शुक्रा बोला।

"कम्बीनेशन नम्बर मालूम करने के बारे में...?" अंजना बोली।

"हां।"

"बताओ।"

"सबसे आसान रास्ता है सेठ पिशोरीलाल को उठाकर यहां लाया जाए।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा।

"आइडिया बुरा नहीं।" अंजना कह उठी।

"मतलब कि तीसरा अपराध?" बेदी के होंठों से निकला।

"विजय।" शुक्रा गम्भीर स्वर में बोला—"यह तो सीढ़ियां हैं, अपराध की सीढ़ियां, चढ़ते जाओ। कभी खत्म नहीं होतीं। जब तक तुम्हारे सिर का ऑपरेशन नहीं होता। दिमाग में फंसी गोली नहीं निकलती, तब तक के लिए सीढ़ियां गिनना छोड़ दो कि कितनी सीढ़ियां तय कर चुके हो। सिर्फ अपने काम की तरफ ध्यान दो।"

"अजीब रास्ता है अपराध का। एक करो तो दूसरा करना पड़ता है। दूसरा करो तो तीसरा।" बेदी गहरी सांस लेकर कह उठा—"लेकिन मैं पिशोरीलाल को उठा लाने के हक में नहीं हूं।"

"क्यों?" अंजना ने उसे देखा।

"वो सेफ का कम्बीनेशन किसी कीमत पर नहीं बताएगा

और यह भी जान लेगा कि उसकी तिजोरी किसने उड़ाई है। ऐसे में हम और भी फंस जाएंगे।" बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा।

"तुम्हारे पास रिवॉल्वर है ना?" अंजना ने उसे देखा।

"हां, क्यों?"

"जब रिवॉल्वर उसके सिर पर रखी जाएगी तो बता देगा। जान सबको प्यारी होती है।" अंजना बोली।

बेदी ने गहरी निगाहों से अंजना को देखा। उसकी आवाज और आंखों में अजीब-सा बदलाव देखा था उसने। जबकि ऐसी बात उसे अंजना के मुंह से अच्छी नहीं लगी थी।

"पिशोरीलाल को छोड़ो हमारा काम उसके बिना भी हो जाएगा।" बेदी ने फैसला सुनाने वाले ढंग में अपनी बात कही—"ऑफिस के स्ट्रांग रूम में उसकी फाइल आ चुकी होगी।"

"कोई हर्ज नहीं, यही रास्ता ठीक रहेगा।" शुक्रा ने कहा।

बेदी ने अंजना को देखा।

"तुम डॉक्टर का ख्याल रखना। किसी भी तरफ से उसके साथ रियायत मत बरतना। अगर वह यहां से भाग निकला तो सारा काम गड़बड़ा जाएगा। मेहनत बेकार हो जाएगी।" बेदी ने कहा—"वो बहुत चालाक है और किसी भी बात पर तुम्हें आसानी से बेवकूफ बनाकर, निकल सकता है।"

"फिक्र मत करो।" अंजना मुस्कराई—"इतना आसान नहीं है, मुझे बेवकूफ बनाना।"

"तुम...।" बेदी ने चाय का खाली प्याला रखकर अंजना को देखा—"इस बारे में सोचना छोड़ दो कि तिजोरी कैसे खुलेगी। वो खुल जाएगी। जो काम तुम्हें करने को कहा जाए, उसे मन लगाकर करो।"

"वही काम तो मैं मन लगाकर कर रही हूं।" अंजना गहरी सांस लेकर भारी स्वर में कह उठी—"मुझे तिजोरी से क्या लेना-देना। मैं चाहती हूं जल्दी से सब ठीक हो जाए। अपने विजय को मैं पहले की ही तरह हंसता-खेलता देखूं। मेरे लिए तो दुनिया की सबसे बड़ी दौलत तुम हो। तुमसे ज्यादा कुछ कीमती है क्या?"

"सॉरी।" बेदी मुस्कराया—"मुझे लगा कि जैसे तुम तिजोरी खुलने में ज्यादा दिलचस्पी ले रही हो।"

"हां। तिजोरी खुलने में ज्यादा दिलचस्पी है मुझे।" अंजना फौरन कह उठी—"क्योंकि तिजोरी के पैसों में तुम्हारी जिन्दगी बंद है और तुम्हारी जिन्दगी में ही हमारी खुशियां हैं।"

तभी शुक्रा उठा और कह उठा।

"मैं तो चला सोने। नींद आ रही थी। भूसे के दूसरे कमरे में सो जाता हूं। चारपाई वहां भी है।"

"मच्छरों से जरा बचकर रहना।" बेदी मुस्कराया।

"नींद में होश ही कहां रहनी है।" शुक्रा भी मुस्कराया—"कल मेरे लिए कोई खास काम?"

"अभी तो नहीं।"

"तो शायद मैं उदय के पास हो आऊं। उसकी कार ले रखी है तीन दिन से। कोई खबर भी नहीं दी।" शुक्रा ने कहा।

"वो कार की परवाह नहीं करने वाला।"

शुक्रा सोने चला गया।

अंजना ने फालतू की लाइट बंद की और विजय की चारपाई पर ही पहुंच गई।

□□

अगले दिन सुबह ठीक दस बजे बेदी रायल सेफ कम्पनी में था।

"हैलो सपना।" भीतर प्रवेश करते ही रिसेप्शन पर बैठी सपना को देखकर वह मुस्कराया—"कैसी हो, मैं आया था, तुम उस दिन ऑफिस नहीं आई थी। आज तो ज्यादा खूबसूरत लग रही हो।"

"अंजना से भी ज्यादा।" सपना ने छेड़ा।

"अंजना का और तुम्हारा मुकाबला क्या?" बेदी ने गहरी सांस ली।

"क्यों?" सपना ने आंखें नचाई।

"अंजना-अंजना है, सपना-सपना-सपना है।" बेदी ने शरारत भरे स्वर में कहा।

"तुम सुधरोगे नहीं।"

"सुधर जाऊंगा, पहले तुम...।"

"तुम्हें गोली लगी थी, उसका क्या हुआ, सुना है...।"

"सुनी बातों की बात मत किया करो।" बेदी वहां से हटता हुआ बोला—"अभी आता हूं। मल्होत्रा साहब से मिल आऊं। वो आ गए या...।"

"अपने केबिन में हैं।" सपना ने मुस्कराकर कहा।

"ओ.के., मिलकर अभी आया।" कहकर बेदी पलटा तो पीछे संतोष सिंह को खड़े पाया—"तुम?"

"हां, मैं।"

"हटो, जल्दी है।"

"वो तो ठीक है।" संतोष सिंह सुलगाने वाले अंदाज में कह उठा—"विजय बाबू, आप ऑफिस आए, सपना मेम साहेब से मिल लिए। जय राम जी की हो गई। अब यह कहना कि अभी आया, समझ में नहीं आया।"

बेदी के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे।

"तुम जब बीवी से मिलते हो तो कहते हो, मैं अभी आया।" बेदी मुंह बनाकर बोला।

"नहीं, मैं तो कहता हूं दूर जा। आराम करने दे।"

"यही तेरे को समझाना चाहता हूं कि तेरी शादी हो गई है और मेरी अभी होनी है। तूने लड्डू खा लिए हैं और मैंने अभी खाने हैं। समझा क्या?" बेदी ने होंठ सिकोड़े।

"नहीं।" संतोष सिंह के चेहरे पर उलझन के भाव उभरे।

सपना खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"नहीं समझे तो, अपनी सपना मेमसाहेब से समझ लेना, ऑफिस के जासूस।" कहने के साथ ही बेदी आगे बढ़ता चला गया। कुछ ही पलों में उसने प्राणनाथ मल्होत्रा के ऑफिस में प्रवेश किया।

"आओ विजय आओ।" प्राणनाथ मल्होत्रा उसे देखते ही बोला—"बैठो।"

"थैंक यू सर।" बेदी बैठता हुआ कह उठा।

"दो दिन से कहां थे। कल भी ऑफिस नहीं आए। परसों भी नहीं। कम-से-कम खबर तो कर दिया करो।"

"तबीयत खराब थी सर। संभली तो हाजिर हो गया।" बेदी ने जरा-सा मुस्कराकर कहा।

"सेठ पिशोरीलाल के बारे में सुना...।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने कहा—"उसकी तिजोरी...।"

"यस सर, बहुत बुरा हुआ पिशोरीलाल के साथ।"

"हां, करोड़ से ऊपर की रकम होगी। तिजोरी में।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने अफसोस भरे स्वर में कहा।

"सर ये किसी जान-पहचान वाले का ही काम है। किसी

भीतर के आदमी का।" बेदी ने शांत स्वर में कहा।

"तुम ठीक कहते हो। यह इनसाइड जॉब है। सेफ पर हाथ डालने पर पहले लूटने वालों ने पहले हर तरह की पूरी जानकारी ली है। तभी वो इतनी आसानी से अपने काम में सफल हो गए हैं। पुलिस भी साथ थी। तब भी वह लोग डरे नहीं कि जैसे उन्हें पूरा विश्वास था कि वह कामयाब होकर ही रहेंगे।" कहने के साथ ही प्राणनाथ मल्होत्रा मुस्कराया—"लेकिन अब सेफ उड़ाने वाले परेशान हो रहे होंगे।"

"क्यों सर।"

"वह सेफ हमारी कम्पनी की है और रायल सेफ कम्पनी की सेफ को बिना कम्बीनेशन नम्बर खोल पाना बहुत कठिन है।" प्राणनाथ मल्होत्रा की आवाज में विश्वास के भाव थे—"हमारी कम्पनी के सेफों-तिजोरियों का लॉक सिस्टम बहुत ही उम्दा और मजबूत होता है। तुम तो जानते ही हो।"

"जी, लेकिन अब सेठ पिशोरीलाल को खतरा हो सकता है।" बेदी ने सामान्य स्वर में कहा।

"क्यों?"

"सर, तिजोरी ले जाने वालों को कम्बीनेशन नम्बर का मालूम नहीं। किसी और तरह वह तिजोरी न खोल पाए तो कम्बीनेशन नम्बर जानने के लिए वह लोग पिशोरीलाल पर हाथ डाल सकते हैं।"

"ओह! यस, ऐसा हो सकता है।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने फौरन सिर हिलाया—"तुम्हारा क्या ख्याल है। पिशोरीलाल ऐसा होने पर कम्बीनेशन नम्बर बता देगा?"

"क्या कह सकता हूं। लेकिन जान तो सबको प्यारी होती है।" बेदी ने संभलकर कहा।

"हां, यह बात तो सही है। मेरे ख्याल में इस बारे में पिशोरीलाल को सतर्क कर देना चाहिए।" कहने के साथ ही प्राणनाथ मल्होत्रा ने रिसीवर उठाया और पिशोरीलाल का नम्बर मिलाकर उससे बात की।

"ओ मल्होत्रा।" पिशोरीलाल का लुटा-पिटा स्वर कानों में पड़ा—"थारी सेफ अम को रास नेई आई। उसमें म्हारा डेढ़ करोड़ का माल था। वो सब चलो गयो। मैं बरबाद हो गयो। पब्लिक को पैसा देना है भायो। अब वो कौन देगा। म्हारा बिस्तरा तो गोल हो गयो।"

"सुनकर वास्तव में अफसोस हुआ सेठ जी, मैं...।"
"थारे को तो अफसोस हो गया, पण मैं क्या करूं। लेनदार मेरी गर्दन पकड़ो, थारी नहीं। मैं तो लुटो गयो। म्हारे को भी अपणों यां रख ले भायो। झाड़ू-पौछा मारो मैं।"
"ऐसी बात मत कीजिए। देर-सबेर में आपकी तिजोरी मिल जाएगी। पुलिस...।"
"पता हौवे भायो। पुलिस तिजोरी ढूंढ़ लायो। पण वो ढोलक की तरह खाली हौवो। सारो खजाना तो तिजोरी ले जाणें वालों ने हजम कर लियो हौवो।"
"मैंने आपको खास बात कहने के लिए फोन किया था।"
"ईब खासो में बचा ही क्या हौवे, जो तू कहो।"
"तिजोरी ले जाने वालों के पास तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर नहीं है। ऐसे में वह तिजोरी नहीं खोल सकते। उस नम्बर को पाने के लिए वो आपका अपहरण कर सकते हैं।" मल्होत्रा ने कहा।
"भायो, तू तो नेई मुसीबत मेरे गलो में लटकायो।"
"इसलिए आप अपना ध्यान रखिए। किसी भी अजनबी से मत मिलिए। बाहर आना-जाना भी कम कर दीजिए। अपने दरबानों को भी सावधान...।"
"वो तो मैं बता दयो। पण म्हारी तिजोरी मिलो कि नहीं, अम...।"
"इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता, आप पुलिस से बात कीजिए।"
पिशोरीलाल से बात करने के बाद प्राणनाथ मल्होत्रा ने रिसीवर रखा।
"तुम सुनाओ कैसे हो?"
"सर आजकल तबीयत ठीक नहीं रहती। कुछ दिन की छुट्टी चाहता हूं।" बेदी ने कहा।
"क्या हुआ तबीयत को?"
"सिर में दर्द रहता है। कभी-कभी तो जोरों से उठता है।" बेदी ने बोझिल स्वर में कहा।
"दिमाग में फंसी गोली की वजह से यह सब होगा।"
"शायद।"
"कितने दिन की छुट्टी चाहते हो?"
"दो-चार दिन की सर।"

"ठीक है, मैं तुम्हारी छुट्टी मंजूर कर लेता हूं। कुछ दिन तुम आराम कर लो।"
"थैंक यू सर।"
"लेकिन परसों कुछ घंटों के लिए तुम्हें जरूर आना पड़ेगा।"
"खास काम है?"
"हां, परसों शाम की फ्लाइट से हमारी कम्पनी के जनरल मैनेजर हेमन्त लाल आ रहे हैं। जैसा कि उनका रूटीन है कि हर दो महीने में एक बार वे आते ही हैं। तुम पहले भी कई बार उन्हें रिसीव कर चुके हो। इस बार भी उन्हें रिसीव करने का काम तुम्हें ही करना है। हर बार की तरह उसी होटल में उनका कमरा बुक हो चुका है। उन्हें वहां पहुंचा कर आ जाना।"
"यह काम तो मैं कर दूंगा सर।"
"हेमन्त लाल जी, कुछ सेफों के कम्बीनेशन नम्बरों की फाइलें भी साथ ला रहे हैं। कुछ हमारी ब्रांच की हैं तो कुछ दूसरी ब्रांच की। शायद आते-आते उनका प्रोग्राम बना होगा कि फाइलें भी लेता चलूं। नहीं तो खासतौर से किसी और को भेजना पड़ेगा। बहरहाल परसों तुम जनरल मैनेजर साहब को रिसीव करना मत भूलना।"
"मुझे याद रहेगा सर।"
खुशी से बेदी का दिल धड़क रहा था। जनरल मैनेजर बिक चुकी सेफों की फ़ाइल लेकर आ रहा था। जिसमें उनके कम्बीनेशन नम्बर भी होते हैं। उन फ़ाइलों में पिशोरीलाल की सेफ की फाइल भी होगी। मतलब कि तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर जानना अब कठिन नहीं रहा।
तभी फोन की बैल बजने पर प्राणनाथ मल्होत्रा ने रिसीवर उठाया।
"हैलो।"
आधा मिनट बात करने के बाद प्राणनाथ मल्होत्रा ने रिसीवर रख दिया।
"विजय, पूना से फोन था। हैडक्वार्टर से। जनरल मैनेजर साहब किसी काम की वजह से परसों नहीं आ रहे हैं। कहा गया है कि अगले प्रोग्राम की खबर दे दी जाएगी।"
बेदी की सारी खुशी मिट्टी में मिल गई।
"तुम हर रोज मुझे फोन कर लिया करो। ताकि जनरल मैनेजर साहब आ रहे हों तो मैं तुम्हें रिसीव करने के लिए कह

हूं।" प्राणनाथ मल्होत्रा बोला।

"जी।" बेदी जैसे खुद को थका-थका-सा महसूस करने लगा था।

"तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?"

"जी सर, कभी-कभी ऐसे ही बिगड़ जाती है। मैं चलता हूं सर।" बेदी उठ खड़ा हुआ।

"दो-चार दिन आराम करो, ठीक हो जाओगे।"

"यस सर!" कहने के बाद बेदी मल्होत्रा के केबिन से बाहर निकल आया। उसे लगा वक्त ही खराब चल रहा है। अच्छा-भला जनरल मैनेजर फाइलों के साथ आ रहा था। उसे रिसीव करने का काम भी उसके ही हवाले था। पिशोरीलाल के सेफ की फाइल भी उसके पास होनी थी। ऐसे में जुगाड़ भिड़ाकर वह आसानी से पिशोरीलाल की तिजोरी को खोलने का नम्बर जान सकता था।

लेकिन अचानक ही जनरल मैनेजर का आना रुक गया।

"हैलो विजय साहब।"

रिसेप्शन के करीब पहुंचा तो सपना के पुकारने पर वह सोचों से बाहर निकला।

"जा रहे हो फील्ड में?" सपना मुस्कराई।

"फील्ड, नहीं। तबीयत ठीक नहीं चल रही, दो-चार दिन की छुट्टी ली है।" बेदी ने गहरी सांस ली।

"चाय चलेगी।"

"चल जाएगी।" कहने के साथ ही बेदी रिसेप्शन डैस्क के पीछे सपना के पास जा बैठा।

सपना ने बेल मारकर संतोष सिंह को बुलाया और चाय के लिए कहा।

"चाय तो मैं ला देता हूं।" संतोष सिंह ने कहा फिर बेदी को घूरा—"साहेब जी, बड़े साहेब पसन्द नहीं करते कि सपना मेम साहेब के पास, डैस्क के पीछे कोई बैठे।"

"मैं नहीं बैठा।" बेदी ने उसे देखा—"बैठने का बुलावा दिया गया है।"

"किसने दिया?"

"जो पास बैठी है।"

संतोष सिंह ने सपना को देखा, फिर बड़बड़ाकर पलट गया।

"लेही कागज को चिपके या कागज लेही से। बात तो एक

ही है। शादी के बाद भी मैं इस तरह अपनी बीवी के पास नहीं बैठ सकता था। डर लगता था कि कहीं ऊपर से बाप न आ जाए।"

❑❑

बेदी वापस अपने गांव वाले मकान पर पहुंचा। शुक्रा वहीं था। अंजना खाना बना चुकी थी। जैसे-तैसे डॉक्टर वधावन को खाना खिला दिया था। खाना खाने के दौरान गुस्से में वह चीखता-चिल्लाता रहा। इसके अलावा वो कर भी क्या सकता था। उसके बाद उसने बाथरूम जाने को कहा तो शुक्रा ने सावधानी से उसे खोलकर बाथरूम से फारिग कराया और पहले की तरह बांध दिया।

गुस्से में बोलता रहा था डॉक्टर वधावन।

बेदी शुक्रा को देखते ही बोला।

"तुम तो उदय के पास जाने को कह रहे थे।" बेदी बैठता हुआ बोला।

"हां।" शुक्रा लापरवाही से बोला—"लेकिन मन नहीं किया। सोचा भाभी से गप्पे मार लूं।"

"खाना लगाऊं।" अंजना, बेदी से बोली—"तैयार है और लंच का वक्त हो चुका है।

बेदी ने सहमति से सिर हिला दिया।

अंजना सामने पड़ा खाना, पुराने बर्तनों में डालने लगी। वो बर्तन जो बेदी बचपन में इस्तेमाल करता था। जिसे उसके मां-बाप-दादा इस्तेमाल किया करते थे।

"ऑफिस में क्या हुआ? कम्बीनेशन नम्बर का नहीं पता चला?" शुक्रा ने पूछा।

"नहीं, वो फाइल अभी तक हैड ऑफिस से नहीं आई।" बेदी व्याकुल स्वर में कह उठा—"परसों आ रही थी। जनरल मैनेजर आ रहा था। वही ला रहा था। परन्तु किसी वजह से वक्ती तौर पर उसका प्रोग्राम बदल गया। अब वह कब आता है, कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"यह तो गड़बड़ हो गई।" शुक्रा बोला।

अंजना ने उखड़ी निगाहों से बेदी को देखा।

"हो सकता है जनरल मैनेजर दो-तीन दिन बाद आ जाए फाइल लेकर।" शुक्रा ने कहा।

"और यह भी हो सकता है कि वह बीस दिन न आए।"

बेदी ने पहलू बदला—"जबकि हमारा एक-एक दिन कीमती है। डॉक्टर वधावन को ज्यादा देर इस तरह कैद में नहीं रख सकते। इस तरह बंधा-बंधा वह बीमार हो सकता है। ऐसे में क्या वह ठीक तरह से ऑपरेशन कर पाएगा? मैं सब कुछ जल्दी करना चाहता हूं। लेकिन काम में, तिजोरी खुलने में उतनी ही देर होती जा रही है।"

अंजना पुराने से टेबल पर खाना रखते कह उठी।

"तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते विजय।"

"कौन-सी बात?"

"सेठ पिशोरीलाल को पकड़ लो। जब वह देखेगा कि बचने का कोई रास्ता नहीं तो खुद ही तिजोरी खोलेगा।"

"मैं भी अब इसी नतीजे पर पहुंचा हूं। पिशोरीलाल से ही यह काम करवाना पड़ेगा।"

तीनों ने खाना-खाना शुरू कर दिया।

"पिशोरीलाल पर हाथ डालने का मतलब है, खुले में आना।" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अभी तक पुलिस नहीं जान पाई कि तिजोरी कौन ले उड़ा। बात खुलते ही पुलिस पीछे लग जाएगी।"

"तो तुम क्या चाहते हो, हाथ पर हाथ रखे, हम तिजोरी को देखते रहें।" अंजना तीखे स्वर में कह उठी।

शुक्रा ने अंजना को देखा, कहा कुछ नहीं।

"शुक्रा ठीक कहता है। पुलिस की निगाहों में आते ही हम पक्के तौर पर कानून के अपराधी बन जाएंगे।" बेदी गम्भीर स्वर में कह उठा—"लेकिन इसके अलावा हमारे पास दूसरा रास्ता भी नहीं।"

"पिशोरीलाल को कैसे पकड़कर लाओगे?" शुक्रा ने बेदी को देखा।

"यह मेरे लिए मामूली काम है। क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं।"

"वो तो ठीक है, लेकिन पिशोरीलाल को यहां तक लाना...।"

"खाना खाओ, पिशोरीलाल पर कैसे कब्जा करना है, मैं इसी बात पर सोच रहा हूं। रास्ते में किसी नतीजे पर पहुंच जाएंगे। पिशोरीलाल को लाने के लिए उदय की कार का इस्तेमाल करना ठीक नहीं। कार के दम पर पुलिस उस तक पहुंच सकती है।" बेदी ने शुक्रा को देखा।

"तो?"

"शहर जाकर पहले उदय की कार वापस करनी है। उसके बाद तुम्हें कहीं से कोई कार उठानी होगी।" कहने के साथ ही बेदी, शुक्रा को प्रश्नभरी निगाहों से देखने लगा।

"चिन्ता मत करो। कोई कार तो उठा लूंगा।" शुक्रा सिर हिलाकर कह उठा।

"विजय।" अंजना कह उठी—"मैं चाहती हूं, जल्द-से-जल्द तुम्हारा ऑपरेशन हो और तुम अच्छे हो जाओ और यह तभी हो सकता है, जब तिजोरी खुल जाए।"

"तिजोरी जल्दी खुलेगी।" बेदी सोच भरे स्वर में कह उठा।

❑ ❑

उदयवीर उन्हें देखते ही खुश हो उठा।

"आओ दोस्तो, कहां रहते हो? कभी तो मुझे भी याद कर लिया करो।" उसने बेदी को देखा—"कल तुम्हारे फ्लैट पर गया था, लेकिन बंद मिला।"

"मैं लेट घर पहुंचा था।"

वे तीनों केबिन में जाकर बैठे, उदय ने छोकरे को चाय लाने को बोल दिया था।

"सुना तेरी तबीयत का क्या हाल है?" उदय ने पूछा।

"बढ़िया।"

"दिमाग के बीच फंसी गोली का क्या हुआ?"

"वह अपनी जगह है।" बेदी ने अपने सिर पर हाथ फेरा।

"पैसे का इन्तजाम नहीं हुआ ना?"

"नहीं, कहां से होना है?" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—"हममें से किसी के पास भी नहीं है।"

उदयवीर का चेहरा दुख और अफसोस से भर उठा।

"यार विजय-मेरे दोस्त-मेरे भाई।" उदय की आवाज में तड़प थी—"काश मेरे पास पैसा होता और मैं तेरे काम आ सकता। कैसी बुरी किस्मत है। यार को जरूरत पड़ी और मैं कुछ नहीं कर सका।" उदय की आंखों में पानी चमक उठा था।

तभी छोकरा चाय लाया, कपों में डालकर चला गया।

उदयवीर ने गीली आंखों को साफ किया और चाय के कप दोनों की तरफ सरकाता कह उठा।

"पिओ यार, चाय तो पिओ।"

"उदय।" बेदी समझाने वाले स्वर में कह उठा—"मैं जानता

हूं, अगर तेरे बस में होता तो तू मुझे मुसीबत से निकलवाने में पीछे नहीं हटता, जो होगा देखा जाएगा, छोड़ इन बातों को।"

"राघव कहां है।" शुक्रा बात बदलने वाले लहजे में कह उठा।

"कल आया था, वह भी विजय की बात करता है। कुछ करना चाहता है, लेकिन कर नहीं पा रहा।"

चाय खत्म होने तक इधर-उधर की बातें होती रहीं।

"तुम्हारी कार बाहर खड़ी है।" बेदी उठता हुआ बोला।

"जरूरत है तो रख लो, मेरा काम तो कस्टमर की कारों से चल जाता है।" उदयवीर ने कहा।

"नहीं, अभी जरूरत नहीं।"

दोनों ने उदयवीर से इजाजत ली और गैराज से बाहर आ गए।

❑❑

कार उठाने में उन्हें करीब एक घंटा लग गया।

बैंक के बाहर आती-जाती कारों पर उनकी निगाहें टिकी रहीं। एक कार वाला बैंक पहुंचकर, कार को वैसे ही छोड़कर भीतर चला गया। शायद उसे भीतर एक-आध मिनट का काम रहा होगा। चाबी कार में ही लगी रह गई थी।

इससे बढ़िया मौका और क्या हो सकता था।

शुक्रा फौरन आगे बढ़ा, कार में बैठा और स्टार्ट की, तब तक बेदी भी कार में आ बैठा था। शुक्रा ने कार आगे बढ़ा दी, शुक्रा मुस्कराकर कह उठा—

"यह काम भी हो गया।"

"हूं, कार को पिशोरीलाल के बंगले पर लो। कुछ पहले ही रोक देना।" बेदी ने कहा।

शुक्रा कार आगे बढ़ाता रहा।

"हमने कितने अपराध—कितने गैरकानूनी काम कर लिए हैं।" बेदी गहरी सांस लेकर बोला।

"मैंने गिनती नहीं की, लेकिन जिस बात के लिए गैरकानूनी काम किए हैं, वह बात अभी पूरी नहीं हुई।"

बेदी का हाथ सिर पर गया।

"अब ज्यादा देर नहीं है। ऑपरेशन भी हो जाएगा।" बेदी के स्वर में विश्वास था।

"पिशोरीलाल को संभाल लोगे ना?"

"तेरे को बताया तो है, कि कैसे संभालना है।"

"उसे शक न हो।"

"चिन्ता मत कर, सामने वाले को बातों में फंसाना ही मेरी नौकरी का हिस्सा था।"

आधे घंटे बाद शुक्रा ने कार को पिशोरीलाल के बंगले से कुछ पहले रोकी।

"यहीं रहना।" बेदी बाहर निकलता हुआ बोला—"जब तुम मुझे और पिशोरीलाल को बंगले से बाहर निकलते देखो तो तुरन्त कार को पास ले आना।"

शुक्रा ने सिर हिलाया, बेदी बंगले की तरफ बढ़ गया।

बेदी बंगले के बाहर पहुंचा तो बाहर खड़े दरबान ने सलाम मारा।

"कैसे हो?" बेदी मुस्कराकर बोला।

"दया है आपकी।"

"सेठजी का क्या हाल है?"

"ठीक नहीं हैं साहब जी, जब से उनकी तिजोरी कोई ले गया है, तब से ही उनके बुरे हाल हैं।" दरबान ने दुख भरे स्वर में कहा।

बेदी ने भी अफसोस भरे ढंग में सिर हिलाया।

"सेठ जी भीतर हैं?"

"जी हां।"

बेदी भीतर की तरफ बढ़ गया।

बंगले में प्रवेश करते ही उसका सामना सबसे पहले राधा से हुआ।

"ओह! विजय जी।" राधा भागी आई और बेदी के सीने से लग गई—"कहां थे आप, हर रोज आपके फ्लैट पर जाती हूं। कहीं न पाकर, मेरी तो जान ही निकल गई थी।"

बेदी ने उसे बांहों के घेरे में कसा, प्यार किया।

"तुमसे ज्यादा जान तो मेरी निकली हुई है।" बेदी ने मुंह लटकाकर कहा।

"क्यों?"

"सुना है, सेठ जी की तिजोरी कोई ले गया है?"

"हां, वो...।"

"और उस तिजोरी में मेरा पांच लखा खानदानी हार था और तुम तो जानती ही हो कि उस हार के बिना मैं शादी नहीं कर सकता।" बेदी ने अपनी आवाज में दुख ही दुख भर लिया था।

"ऐसे मत कहिए। मैं तो दिल से आपको पति... ।"

"वो तो मैं भी जानता हूं। मैं भी तुम्हें दिल से सब कुछ मान चुका हूं।" बेदी ने हाथ बढ़ाकर उसके गाल को छुआ—"लेकिन तुम चिन्ता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। मैं गांव गया था। मां-बाप से शादी की बात करने। वो दस-बीस दिन में हमारा ब्याह पक्का करने आएंगे।"

"सच!" राधा के दांत खूबसूरती से चमक उठे।

"सेठ जी कहां हैं?"

"खाना खाकर आराम कर रहे हैं।" राधा ने कहा।

"उन्हें उठाओ, कुछ बात करनी है।"

"उठाती हूं, लेकिन शादी में एक बात की परेशानी आएगी।" राधा को अपनी पड़ी थी।

"क्या?"

"दहेज। मेरे पास तो देने को... ।"

"पागल हो तुम।" बेदी ने प्यार से कहा—"मैंने तुमसे शादी करनी है, दहेज से नहीं। ऐसी बेकार की बातों का जिक्र भी मेरे सामने मत करना। जाओ, सेठ जी को मेरे आने की खबर दो।"

जाने से पहले राधा ने बेदी के गाल पर चुम्मा लिया, फिर आगे बढ़ गई।

बेदी गहरी सांस लेकर, राधा को जाते देखता रहा।

"आ भायो, तू भी आ।" सेठ पिशोरीलाल तीखे स्वर में कह उठा—"थारी शक्ल ही देखनी बाकी थी। तन्ने ही तो म्हारे को वो तिजोरी चेपी थी। लुटा दिया तन्ने तो मेरे को, पैले उसका जीरो अटको। पण दिल को तो तसल्ली थी कि सामने है। ईब तो सब कुछ ही खत्म हो गयो। ईब तू नेई तिजोरी बेचने को आया है तो दस साल रुक जा। माल-पाणी तो इकट्ठा कर लूं।"

"मुझे बहुत दुख है सेठजी।"

"थारे ये शब्दों से म्हारी तिजोरी तो वापस नहीं आयो। तन्ने बुरी नजर से म्हारे को तिजोरी दयो।"

"सेठ जी, जब मैंने आपकी तिजोरी चोरी होने के बारे में सुना तो आपको क्या बताऊं कि मेरे दिल पर क्या गुजरी। मेरी तो हिम्मत नहीं हुई कि आपके सामने आकर दुख जाहिर कर

सकूं क्योंकि मैं आपकी परेशानी नहीं देख सकता था।"

"भायो, अब हिम्मत आ गयो क्या?" पिशोरीलाल की आवाज में जहरीलापन था।

"पुलिस क्या कर रही है, तिजोरी ढूंढने के लिए?" बेदी ने पूछा।

"पुलिस तिजोरी ढूंढो और ढूंढते ही रहिए। म्हारा डेढ़ करोड़ का माल लुट गयो। जो आवे पीठो पर हाथ फेरकर चल्लो-चल्लो करे। अम तो मजाक बनकर रै गयो हो।" पिशोरीलाल की आवाज में गुस्सा था।

बेदी ने आसपास देखा फिर सिर आगे करके धीमे स्वर में बोला।

"सेठ जी, अगर मैं आपकी तिजोरी ढूंढ दूं तो मुझे क्या इनाम मिलेगा?"

पिशोरीलाल हड़बड़ाकर उछल पड़ा।

"तू क्या कहो भायो, कानों ने काम नहीं कियो, फिर बोलियो।"

"सेठ जी।" बेदी ने जानबूझकर अपनी आवाज धीमी कर ली—"एक जगह पर मैंने आप जैसी ही सेफ देखी है। मुझे लगता है वो आपकी ही सेफ है।"

"सच कह रहो है भायो।"

"सच झूठ तो आप ही सेफ देखकर बता सकेंगे।" बेदी का स्वर धीमा ही था।

"कहां देखो है तन्ने म्हारी—म्हारा मतलब है वो सेफ?"

"सेठजी, मैं अपने गांव गया था, वहीं शोलापुर, जो पास में ही है। जंगल में बख्तरबंद ट्रक खड़ा था। उसके भीतर आपकी जैसी ही सेफ पड़ी देखी और... ।"

पिशोरीलाल आपे से बाहर हो गया जैसे।

"भायो, वो म्हारी ही सेफ हौवे। म्हारी सेफ वोई है। सुसरे म्हारी सेफ को थारे गांव में छिपाकर रखो है। अम अभी पुलिस को फोन।"

"ऐसे नहीं सेठ जी। पुलिस को फोन तो मैं भी कर सकता था।" बेदी जल्दी से कह उठा।

"थारा मतलब?"

"कहीं पुलिस हमारी बात पर हंसे नहीं। हमारा मजाक न उड़े। एक बार आप चुपचाप चलकर वो सेफ देख लीजिए कि

वो आपकी ही है या नहीं। आपकी हुई तो मैं फौरन पुलिस को बुला लूंगा।''

''ये बात भी ठीक है भायो। अम तो म्हारी सेफ को देखते ही बता दयो कि यो म्हारी है कि नहीं।'' पिशोरीलाल उठता हुआ बोला—''चल, तन्ने अभ्भी चलना हौवे म्हारे साथो।''

''अभी तो नहीं-जा...।''

''मन्ने बोला ना, थारे को अभ्भी चलना हौवे।'' पिशोरीलाल जिद्द और आदेश भरे स्वर में कह उठा।

''सेठ जी, मेरे साथ बाहर मेरा दोस्त है कार में। कहीं जरूरी काम से जाना...।''

''म्हारी सेफ से ज्यादा दुनिया में कोई जरूरी काम न हौवे। अम...।''

''ठीक है।'' बेदी जैसे हारने वाले स्वर में कह उठा—''चलिए! आप मेरे दोस्त की कार पर चलिए। वापसी पर उसने यहीं आना है। वो आपको छोड़ देगा।''

''भायो, कार म्हारी हौवे या थारे दोस्त की, म्हारे को तो बैठना ही हौवे, चल अम।''

''किसी को बताना नहीं कि आप कहां जा रहे हैं। कहीं खबर लीक होकर सेफ चोरों तक यह बात पहुंच गई तो वो सेफ को शोलापुर के जंगलों में कहीं और ले जाएंगे।''

''ठीको है भायो, तू भी चुप, मैं भी चुप।''

दोनों बंगले से बाहर निकले।

''थारे दोस्त की कार तो नजर न आवे।''

''वो रही।''

उन्हें बाहर आते पाकर, शुक्रा ने कार उनकी तरफ बढ़ाई और पास पहुंचते ही कार को रोका। दोनों पीछे वाली सीट पर बैठे। अगले ही पल शुक्रा ने कार को दौड़ा दिया।

❑❑

बेदी के गांव वाले मकान के पास कार जाकर रुकी तो पिशोरीलाल जल्दी से बाहर निकला और इधर-उधर देखने लगा। फिर गर्दन घुमाकर, कार से बाहर निकलते व्याकुल निगाहों से देखा।

''भायो, मन्ने तो यहां कोई टरक-वरक नाही दिख रयो। तू म्हारे को गलत जगह ले आयो का?''

''सेठ जी।'' बेदी का दिल धड़क रहा था—''तसल्ली रखिए।

सब आपके सामने आ जाएगा।''

''क्या सामने आयो, भायो? मन्ने से अब और सब्र ना ही हौवे।''

शुक्रा भी कार से बाहर आ गया था।

पिशोरीलाल ने धोती संभालते हुए व्याकुल निगाह हर तरफ घुमाई।

''सेठ जी, इस तरह देखने से ट्रक नजर नहीं आएगा।''

''तो भायो का, आंखें बंद करके नजर आएगा।''

तभी मकान के दरवाजे पर अंजना नजर आई।

उस पर निगाह पड़ते ही पिशोरीलाल ने अजीब-सी निगाहों से बेदी और शुक्रा को देखा।

''सेठ जी को ले आए।'' अंजना ने दो कदम आगे बढ़ाए।

बेदी ने पिशोरीलाल को देखा। पिशोरीलाल ने उसे।

''यो छोरी थारी तो जान-पहचान वाली लगो। खूबसूरत भी हौवो। पण टरक कहा है। म्हारे को तो गड़बड़ लगे। सच बता तू म्हारे को या क्यों लायो?''

''ट्रक दिखाने।''

''जो म्हारे को दिखे ही नाही।''

''आओ दिखाता हूं।'' कहता हुआ बेदी मकान की तरफ बढ़ा।

धोती संभालता पिशोरीलाल जल्दी से उसके पीछे हो गया।

शुक्रा और अंजना उसके पीछे।

वे सब पिशोरीलाल को छप्पर के नीचे खड़े ट्रक के पास ले गए।

बख्तरबंद ट्रक को देखते ही पिशोरीलाल उसकी तरफ ऐसा लपका जैसे कुम्भ के मेले में बिछड़ा बेटा मिल गया हो। आंखों में तीव्र चमक थी।

''यो तो चोखी बात हो गइ भायो। टरक मिल गयो। म्हारी जान बच गइ भायो।'' पिशोरीलाल जैसे अपने होश खो चुका था। वह अपनी धोती संभालना भी भूल गया, जो खुलकर लम्बी होती जा रही थी। ट्रक पर चढ़ने से पहले जल्दी से उसने अपने मटके को संभाला। हैरानी थी कि इतना बड़ा मटका होने के बावजूद भी वह फटाफट ट्रक पर जा चढ़ा था।

फिर सेफ के पास पहुंचते ही दोनों बांहों में उसे जकड़कर गले मिला।

"आह! ठण्ड पड़ो है कलेजे में। भगवन थारे घर में देरी तो हौवे। पर अंधेरी न हौवे। आज तो ये बात मन्ने अपनी आंखों से देख लयो। तूने म्हारी सेफ लौटा दयो। थारा बोत-बोत शुक्रिया। मैं थारे मन्दिर में पूरे सवा रुपये का प्रसाद, हर हफ्ते चढ़ाऊं।"

शुक्रा शांत निगाहों से सेठ को देख रहा था।

अंजना की आंखों में तीव्र चमक लहरा रही थी।

तभी बेदी बोला।

"सेठजी, ये आपकी ही सेफ है।"

"म्हारी, अरे भायो, पूरी की पूरी म्हारी ही हौवे। ये ई तो हौवे जो म्हारा दिल धड़काकर भाग गई थी। अब मिलो है। इब छोड़े ना ही इसको धोती से बांधकर रखो।" पिशोरीलाल का चेहरा खुशी से चमक रहा था।

"फिर भी सेठ जी, पूरा यकीन हो जाए तो ठीक रहता है। एक बार खोलकर देख लीजिए।"

"अपणा माल हौवे। अकेले में खोलूं। जा म्हारी सेफ ही है। सक की कोई गुंजाइश नहीं। अपणी सेफ तो मैं लाखों में भी पिचान सकता हूं। भायो, थारा भौत-भौत शुक्रिया औवे। तन्ने म्हारे को, म्हारी जान लौटा दी।"

"फिर भी खोलकर देख लेते तो...।"

"का जरूरत है भायो। सारा माल भीतर ही है। खुश्बू आ रई मन्ने। समझ रयो कि नई समझ रयो। वैसे भी इसो में पूरा डेढ़ करोड़ हौवे। का मालूम थारी नियत बिगड़ो जाए। न भायो किसी के सामने तो कब्बी न खोलूं।"

बेदी के होंठ भिंच गए। चेहरे पर गुस्से के भाव उभरे।

"मैं आपको चोर नजर आता हूं?"

"ये!" अंजना खतरनाक स्वर में कह उठी, "ये ऐसे नहीं बताएगा। डण्डा लेकर इसकी धुनाई शुरू कर दो। तब खोलेगा सेफ। इसके हाथ-पांव काट दो। तब खोलगा सेफ।"

बेदी ने गर्दन घुमाकर अजीब-सी निगाहों से अंजना को देखा।

शुक्रा ने बेदी को देखा। फिर अंजना को। फिर पिशोरीलाल को देखने लगा।

बेदी के इस तरह देखने पर अंजना सकपका-सी उठी।

"सेठ जी।" बेदी ने शांत स्वर में कहा—"ट्रक से बाहर आ जाओ।"

"हां भायो।" शायद अंजना के शब्द उसने नहीं सुने थे—"तम ये ई खड़े रहो। मैं अभ्भी कहीं से पुलिस को खबर करके आता हूं।" कहने के साथ ही वह ट्रक से उतरा। मटका जोरों से हिला।

"भीतर चलिए, बात करनी है।" बेदी गम्भीर था।

"लेकिन...।"

"आओ।" विजय सख्ती से पिशोरीलाल की कलाई थामता भीतर ले गया।

पिशोरीलाल उलझन भरी निगाहों से कुर्सी पर बैठा कभी बेदी को, कभी शुक्रा, अंजना को देख रहा था। जो उसके सामने ही कुर्सी पर बैठे थे।

"बात करो भायो, का बात करणी हौवे?" पिशोरीलाल के स्वर में बेचैनी थी।

"जानते हो यह सेफ किसने उड़ाई है?" बेदी का स्वर शांत था।

"चोरों ने, पण मन्ने तो मिल..।"

"मेरी बात सुन।" बेदी का स्वर कठोर हो गया—"सबसे पहले तो अपने दिमाग में यह बिठा ले कि तुम्हारे सामने सेफ उड़ाने वाले ही बैठे हैं, हम ही सेफ ले भागे थे।"

पिशोरीलाल को ऐसा लगा जैसे किसी ने दसवीं मंजिल से उसे धक्का दे दिया हो। वह आंखें फाड़े बेदी को देखता रहा। हैरानी से फटी आंखों में अविश्वास के भाव थे।

बेदी का चेहरा गुस्से से भरता जा रहा था।

"इस तिजोरी की दौलत हासिल करने के लिए मैंने जिन्दगी में पहली बार अपराध किया। अपनी मरती हुई, जाती हुई जान को भी खतरे में डाला, सिर्फ इस तिजोरी में रखी दौलत पाने के लिए।"

"तू तो बोत शरीफ बंदा हौवे। थारे को...।"

"चुप!" बेदी दहाड़ा।

पिशोरीलाल ने अपने मटके पर हाथ फेरा। आंखें सिकोड़कर उसे देखा।

"अब समझ गया कि थारे इरादे नेक नहीं हैं। ईब मैंने थारे को पूरा पहचान लिया है। मैं थारी रिपोर्ट पुलिस में करूंगा।

थारे ऑफिस में करूंगा। थारे को फांसी पर लटका दूंगा। थारे को...।"

"सेठ!" बेदी कठोर स्वर में बोला—"ट्रक में रखी तिजोरी खोल दे।"

"मैं थारे को पागल दिखूं क्या?" पिशोरीलाल कड़वे स्वर में कह उठा।

बेदी के दांत भिंच गए।

"पिशोरीलाल! मेरे सिर में, दिमाग में, रिवॉल्वर की गोली फंसी हुई है। अगर वह गोली न निकाली गई तो मैं दो महीनों में मर जाऊंगा और मैं मरना नहीं चाहता।" बेदी का अंदाज समझाने वाला था—"गोली निकलवाने के लिए आपरेशन का खर्चा बारह लाख रुपये है, समझे। मुझे पैसे की सख्त जरूरत है। इसलिए तुम्हारी तिजोरी पर हाथ डालना पड़ा। ऐसे में तुम्हारी यह बात किसी कीमत पर नहीं मानी जा सकती कि तुम तिजोरी नहीं खोलोगे। समझे पिशोरीलाल, तुम्हारी तिजोरी में रखा पैसा मेरी जिन्दगी बचा सकता है। इसलिए तुम्हें तिजोरी खोलनी पड़ेगी।"

"देख भायो, थारी खोपड़ी का मुझे बोत दुख हौवे सुनकर। म्हारे को नेई पता था कि गोली सिरों में भी अटके हो।" पिशोरीलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"पण ये कहां की अकलमंदी हौवे कि मैं थारे को डेढ़ करोड़ से भरी तिजोरी खोलकर दे दियो। अम पागल तो न हौवे।"

"पिशोरीलाल!" बेदी ने सख्त स्वर में कहा—"मुझे अपनी जान बहुत प्यारी है।"

"वो तो मन्ने भी पियारी है।"

अगले ही पल बेदी ने रिवॉल्वर निकाल कर हाथ में ली। पिशोरीलाल के चेहरे पर घबराहट उभरी।

"प्यारी है तो तिजोरी खोल दे।"

"तू म्हारे को गोली मारेगा?" पिशोरीलाल ने बेदी को घूरा।

बेदी का रिवॉल्वर वाला हाथ स्पष्ट तौर पर कांप रहा था।

"तू म्हारे को डरा मत। अम थारे से न डरो। थारे को तो रिवॉल्वर पकड़नी न आवे। गोली क्या चलाएगा तू। पैले कभी चलाई हो का? हाथ तो थारा कांपे है। माथे पर पसीना फूटे है और तन्ने यो भी मालूम हौवे कि अम मर गयो तो, तिजोरी कौण खोलन आवे।" पिशोरीलाल बेदी को घूर रहा था—"म्हारे

को यो भी मालूम हौवे कि जब तक तिजोरी बंदो है म्हारी जिन्दगी की बचत हौवे। तिजोरी खुलते ही तो वो म्हारी जान ले लेगा। म्हारे को बेवकूफ मत समझियो।"

"मैं तेरे को नहीं मारूंगा।" बेदी हारे स्वर में कह उठा—"भगवान के लिए, ज्यादा नहीं तो सिर्फ बारह लाख मुझे दे दे ताकि मैं ऑपरेशन कराकर अपनी जान बचा सकूं। मैं तेरे से वायदा करता हूं कि ये बारह लाख भी जिन्दगी में कभी मौका मिला तो वापस लौटा दूंगा।"

अंजना के दांत भिंच गए। चेहरे पर गुस्सा नाच उठा।

"बोत अजीब बंदा है तू। मन्ने तो थारे जैसा पैले नेई देखा। कभी रिवॉल्वर दिखायो। धमी दयो, तो कभो हाथ जोड़ के पीसा मांगो। थारा कोई कैरेक्टर हौवे कि नाही?"

बेदी ने रिवॉल्वर जेब में डाली और ढीले स्वर में बोला।

"सेठजी—मैं सिर्फ अपनी जान बचाना...।"

"बारह लाख नहीं।" एकाएक अंजना गुर्रा उठी—"तुम सारी तिजोरी खोलकर हमारे हवाले करोगे। हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करके...।"

"खामोश रहो।" बेदी अंजना को देखकर चीख उठा।

अंजना ने होंठ बंद कर लिए।

"तम इतनी खबसूरत नहीं हो कि तिजोरी थारे कदमों में रख दूं।" पिशोरीलाल कड़वे स्वर में कह उठा—"तम खबसूरत होती भी तो तब भी थारे को एको हार भी न देता।"

"क्या कहा।" अंजना गुस्से से भर उठी—"मैं खूबसूरत नहीं।"

बेदी कुर्सी से उठा और घूमकर अंजना को घूरने लगा।

"तुम्हें मेरी जान से प्यार है या तिजोरी में रखी दौलत से?" बेदी ने दांत भींचकर कहा।

"तुम्हारी जान से बढ़कर मेरे लिए कुछ भी नहीं है।" अंजना अपने गुस्से पर काबू पाते कह उठी—"तभी तो सेठ की बातों पर गुस्सा आ गया कि ये बारह लाख तुम्हें नहीं दे रहा।"

"तुम अभी बीच में मत बोलना।" बेदी ने उसे घूरा।

अंजना खामोश रही।

"शुक्रा।" बेदी ने भारी स्वर में कहा—"पिशोरीलाल को तैयार कर कि यह तिजोरी खोल दे।"

चेहरे पर सख्ती लिए शुक्रा उठ खड़ा हुआ।

"भायो क्यों जुल्म ढा रहे हो? कौन फायदा नेई होणों वाला। मेरी चमड़ी ले लो। उफ भी न करूं। लेकिन दमड़ी लेने की बात न करिए। जान निकलती है बेकार की मारा-पीटी का कौन फायदा नेई होण वाला।"

❑❑

पिशोरीलाल को कुर्सी पर बांध रखा था। उसका मटका बड़ा होने की वजह से उसे बांधने में काफी दिक्कत आई थी। नाइलोन की रस्सी बार-बार फिसल जाती थी।

"भायो, म्हारी बात भी सुन लो। खामखाह ही चढ़े जा रहे हो।" पिशोरीलाल घबराया-सा कह उठा—"तिजोरी का माल मेरा नाही है। ग्रिहाकों का है। म्हारा होता तो थारे सिर पर वार देता। यो तिजोरी मैं किसी भी कीमत पर नहीं खोल सकता। म्हारी बातों का सच मानो और म्हारे को छोड़ दो।"

"सेठ।" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा—"तिजोरी तो तेरे को खोलनी पड़ेगी।"

"मैं नहीं खोल सकता।"

"तो उसका कम्बीनेशन नम्बर बता दे।"

"बात तो एको ही है भायो। कान इधर को न पकड़ो तो उधर को पकड़ो।"

तभी दांत पीसती अंजना आगे बढ़ी और पागलों की तरह पिशोरीलाल पर थप्पड़, लात-घूसे बरसाने लगी। पिशोरीलाल गला फाड़कर चीखने लगा।

अंजना ने तभी बस की जब वह खुद ही थक गई।

पिशोरीलाल की नाक से खून बहने लगा था। होंठ फट गए थे। एक आंख सूजी-सूजी-सी दिखने लगी थी। थोड़ी मार में ही बुरा हाल हो गया था।

"मारो भायो, मारो! गरीबों को और मारो। म्हारे को बांधकर मारो।" पिशोरीलाल फंसे स्वर में कह उठा—"गोली मार दो, चाकू लेकर काट दो। पण अम तिजोरी नेई खोलगा। यो ग्राहकों का माल हौवे।"

शुक्रा ने दांत भींचकर उसके सिर के बाल मुट्ठी में पकड़े और चेहरे पर घूंसे मारने लगा।

पिशोरीलाल की चीखें गूंजने लगीं।

शुक्रा ने देर तक बस नहीं की। पिशोरीलाल का बुरा हाल हो गया था। बेदी को उसकी बुरी हालत देखकर अच्छा नहीं

लगा। लेकिन वह भी मजबूर था। बारह लाख की सख्त जरूरत थी।

"रहने दो, मार से यह मुंह नहीं खोलगा। शुक्रा, कोई और तरीका इस्तेमाल करना चाहिए।"

गहरी-गहरी सांसें लेता शुक्रा पीछे हटा।

"सलाख गर्म करके इसकी आंख में डालो।" अंजना ने कठोर स्वर में कहा—"फिर यह...।"

"होश में आओ अंजना।" बेदी ने नापसन्दगी वाले स्वर में कहा—"ऐसी बातें तुम्हें शोभा नहीं देतीं।"

"तुम समझते नहीं विजय। हमारी सारी मेहनत बेकार जा रही है। यह तिजोरी नहीं खोल रहा।" अंजना झुंझला कर कह उठी—"किसी तरह इसे तैयार करो, तिजोरी खोलने के लिए।"

"ना भायो।" बुरे हाल पिशोरीलाल बोला, चेहरा सूजा पड़ा था—"अम तिजोरी न खोलो। गर्म सलाख डालो या डण्डा। कोण फायदा नेई होने का।"

"पिशोरीलाल!" बेदी कह उठा—"तुम बारह लाख मुझे उधार क्यों नहीं दे देते? सारी जिन्दगी मैं तुम्हारा एहसान मानूंगा और काबिल बना तो वापस भी कर...।"

"भायो! एहसान डाल चूल्हे में। बारह लाख का मतबल समझो हो?" दर्द में डूबा पिशोरीलाल कह उठा—"कभी देखे हैं तन्ने बारह लाख या यो ही सुन रखो हो। यों बोत बड़ी रकम हौवे हो। मन्ने तो यो भी न समझ आवे कि बारह लाखों का कौन-सा स्पेशल ऑपरेशन हौवे हो। दिमाग में गोली फंसे हो तो डण्डा मार के बाहरो को निकल आवे। म्हारे जमानो में तो इसी तरह ही ऑपरेशन हौवो।"

शुक्रा ने बेदी को देखकर इन्कार में सिर हिलाया।

बेदी समझ नहीं पा रहा था कि तिजोरी खोलने के लिए पिशोरीलाल को कैसे तैयार करे।

"ये मानने वाला बीज नहीं है।" शुक्रा कह उठा—"पैसे से इसे बहुत प्यार है। कम्बीनेशन नम्बर नहीं बताएगा।"

"बंधा रहने दो इसे।" बेदी झुंझलाकर कह उठा—"कभी तो तिजोरी खोलने को तैयार होगा।"

"लगता तो नहीं।" शुक्रा के चेहरे पर गम्भीरता थी।

❑❑

अंजना रात का खाना बनाने की तैयारी में लग गई थी।

अंधेरा हो चुका था। बेदी कमरे में अकेला ही सोचों में डूबा बैठा था। शुक्रा तब से ही पिशोरीलाल के पास भूसे वाली कोठरी में था।

मकान में बल्बों की मध्यम रोशनी फैल चुकी थी।

सोचों से बाहर आते हुए बेदी ने गहरी सांस ली और सिगरेट सुलगाकर, माचिस की तीली फेंकी जो सामने की चारपाई के नीचे जा गिरी। कश लेते बेदी की निगाह तीली पर जा अटकी। तीली के पास ही चारपाई के नीचे सिगरेट के टोटे पड़े नजर आए। कई पलों तक वह उन्हें देखता रहा। फिर कुर्सी से उठा और आगे बढ़कर सिगरेट के तीन टुकड़ों को उठाया। उन्हें ध्यान से देखा।

वह किंग साइज सिगरेट के टुकड़े थे। जबकि वह छोटी सिगरेट पीता था और शुक्रा भी छोटी सिगरेट ही पीता था। फिर यह सिगरेट किसने पिए। उनके पीछे से कौन आया? आया तो अंजना ने नहीं बताया।

बेदी हथेली में सिगरेट के टुकड़े थामे वापस कुर्सी पर आ बैठा। आंखों में सिकुड़न थी। चेहरे पर अजीब से भाव उभर आए थे। तभी कदमों की आहट गूंजी। बेदी ने हथेली बंद कर ली।

शुक्रा ने भीतर प्रवेश किया और कुर्सी पर आ बैठा। वह थका-थका-सा लग रहा था।

''पिशोरीलाल नहीं माना?'' बेदी ने पूछा।

''नहीं।'' शुक्रा ने गहरी सांस ली—''और वह मानेगा भी नहीं।''

''लेकिन तिजोरी का नम्बर जानने के लिए उसे तैयार करना बहुत जरूरी है।'' बेदी कह उठा।

''वह तैयार नहीं होता तो मैं क्या करूं? तू ही बता उसकी जान ले लूं क्या?''

बेदी व्याकुल हो उठा।

''शुक्रा। अब ज्यादा देर नहीं की जा सकती।'' बेदी ने परेशान स्वर में कहा—''डॉक्टर को इतनी देर कैद नहीं रखा जा सकता। उसे देखकर आया है, कैसा है वह?''

''ठीक है, बंधा हुआ है। बुरे हाल में है।'' शुक्रा ने कहा।

''पिशोरीलाल का किसी तरह मुंह खुलवा।''

''मैं पूरी कोशिश करके आया हूं। वो नहीं मानने वाला।''

शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा, ''उसकी हालत देख ले, जाकर। मेरी मान तो उसे कुर्सी पर ही बंधा रहने दे। शायद रो-पीटकर, तंग आकर वो बता दे।''

बेदी हताश-सा नजर आने लगा।

''वक्त खराब चल रहा है।'' एकाएक शुक्रा मुस्कराकर कह उठा—''पत्ते सारे हाथ में हैं लेकिन उल्टे हैं।''

बेदी ने एकाएक मुट्ठी खोली। सिगरेट के टुकड़े नजर आने लगे।

''शुक्रा! तू कौन-सी सिगरेट पीता है?''

''क्या मतलब?''

''किंग साइज तो नहीं पीता?''

''नहीं, छोटी पीता हूं। क्यों, क्या बात है?'' शुक्रा की निगाह बेदी पर जा टिकी।

''बात कुछ खास नहीं, लेकिन बहुत ही खास है।'' बेदी ने धीमे स्वर में कहा—''हमारे पीछे से यहां कोई आया था। वह आराम से बैठा। तीन सिगरेट उसने पी।''

''अंजना ने नहीं बताया कौन आया था?'' शुक्रा के होंठों से निकला।

''नहीं!'' बेदी ने सिर हिलाया—''उसने नहीं बताया। मैंने सिगरेट के टुकड़े से यह अनुमान लगाया है। जबकि इन हालातों में यहां किसी को नहीं आना चाहिए। किसी को मालूम भी नहीं है कि हम यहां हैं। फिर भी कोई आया। आराम से तीन सिगरेट पी।''

शुक्रा बेदी को देखता रहा।

''इस बात के साथ यह बात भी लगा ले कि हमसे ज्यादा तकलीफ अंजना को हो रही है कि तिजोरी नहीं खुल रही। कई बार उसकी बातों से मुझे इस बात का एहसास हुआ है।''

''तू अंजना पर शक कर रहा है बेदी?'' शुक्रा के होंठों से उलझन-भरा स्वर निकला।

''अगर मेरा शक सही है तो तुझे बहुत जल्द विश्वास करना पड़ेगा।'' बेदी की आवाज में तीखापन था—''जरूरी नहीं कि मेरा कहना सही हो। मुझे गलती भी हो सकती है।''

शुक्रा कुछ नहीं बोला।

□□

अगला दिन भी बीत गया।

बेदी ने, शुक्रा ने और अंजना ने पूरी कोशिश कर ली। लेकिन पिशोरीलाल ने तिजोरी का नम्बर नहीं बताया। गुस्से में अंजना ने सब्जी काटने वाले चाकू से, पिशोरीलाल की बांह भी घायल कर दी थी। बेदी उसे न रोकता तो गुस्से में अंजना शायद उस वक्त और भी कर गुजरती।

पिशोरीलाल ने अपनी हालत बुरी करवा ली थी। लेकिन तिजोरी का नम्बर नहीं बताया था।

तीनों कमरे में पहुंचे तो बेदी ने हारे स्वर में कहा।

"वो तिजोरी नहीं खोलेगा।"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था।" शुक्रा ने सिगरेट सुलगाई।

"अब क्या किया जाए?" अंजना की आवाज में गुस्सा था।

"करने को बाकी कुछ नहीं रहा।" बेदी ने फीके स्वर में कहा—"दिमाग के बीचोंबीच फंसी गोली मेरी जान ले लेगी। मैं मर जाऊंगा, सब कुछ खत्म हो जाएगा।"

"ऐसा मत कहो विजय।" अंजना के होंठों से निकला—"मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी।"

"जो होना है वो तो होकर ही रहेगा, मैं...।"

"विजय!" शुक्रा ने गम्भीर स्वर में टोका।

बेदी ने उसे देखा।

"अब हमारे सामने दो ही रास्ते हैं।" शुक्रा ने कश लेकर कहा—"एक तो यह कि किसी तिजोरी खोलने वाले को लाकर, यह तिजोरी खुलवाई जाए।"

"नहीं। इस तिजोरी को खोल पाना आसान काम नहीं।" बेदी ने सिर हिलाया—"हमारी कम्पनी विदेशी कम्पनी के साथ मिलकर ऐसा लॉक सिस्टम बनाती है, जिसे इस तरह नहीं खोला जा सकता।"

"मैं नहीं मानता। कोई तो खोल सकेगा इसे।"

"हां! लेकिन उस कोई को तलाश करना आसान नहीं।" बेदी ने गंभीर स्वर में कहा—"और जो खोलेगा तिजोरी को। वह क्या अपना मेहनताना लेकर आराम से चला जाएगा।"

शुक्रा को बात सही लगी। तब कोई और मुसीबत खड़ी हो सकती थी।

"दूसरा रास्ता क्या है?" बेदी ने पूछा।

"वो ही फाइल। जो तुम्हारी कम्पनी के हैड-ऑफिस से आनी थी।"

"हां।" बेदी ने गम्भीरता से सिर हिलाया—"लेकिन मालूम नहीं वह फाइलें कब आती हैं, हैड ऑफिस से। कल ऑफिस फोन करके बात करूंगा।"

"इस बात का भी क्या भरोसा कि हैड ऑफिस से पिशोरीलाल की तिजोरी वाली फाइल आए और तुम्हारे हाथ जरूर लगे।" अंजना कह उठी।

बेदी ने उसे देखा।

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"मैं...।" अंजना के दांत भिंच गए—"मैं कहना चाहती हूं कि दो घंटों के लिए पिशोरीलाल को मेरे हवाले कर दो और बीच में कोई दखल न दे। मैं वायदा करती हूं कि वो तिजोरी खोल देगा।" कहते हुए अंजना का चेहरा लाल सुर्ख हो उठा था। गुस्से में हाथ की मुट्ठियां भिंच गई थीं।

बेदी और शुक्रा की निगाहें मिलीं।

"अंजना।" बेदी नापसन्दगी वाले स्वर में कह उठा—"अपनी जान बचाने के लिए मैं दूसरों की जान लूं या उन्हें उसी बुरी हालत तक पहुंचा दूं, यह मुझे पसन्द नहीं।"

"तो फिर क्या करोगे? तिजोरी कैसे खोलोगे?" अंजना ने तीखी निगाहों से उसे देखा।

"कुछ तो करना ही पड़ेगा।" कहने के साथ ही बेदी ने आंखें बंद कर ली।

❑ ❑

अगले दिन सुबह बेदी ने रायल सेफ कम्पनी फोन किया।

"ओह विजय तुम कहां हो?" प्राणनाथ मल्होत्रा का स्वर कानों में पड़ा—"कहां हो तुम...?"

"अपने घर पर हूं सर।" बेदी ने संभलकर कहा—"आराम कर रहा हूं।"

"अब कैसी तबीयत है?"

"पहले से ठीक है सर। आपने कहा था कि मैं फोन करके मालूम कर लूं कि...।"

"हां, वही तुम्हें बताने जा रहा हूं कि आज शाम आठ बजे की फ्लाइट से कम्पनी के पर्सनल मैनेजर पूना से आ रहे हैं। तुम उन्हें एयरपोर्ट से रिसीव करके होटल तक पहुंचा देना।"

बेदी का दिल जोरों से धड़का। परन्तु खुद पर काबू ही रखा।

"ठीक है सर। शाम को मैं हेमन्त साहब को रिसीव करके

होटल पहुंचा दूंगा।" बेदी को जाने क्यों ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आवाज बदल गई हो।

"कोई लापरवाही न हो, ध्यान रखना।" मल्होत्रा का स्वर कानों में पड़ा।

"यस सर!" बेदी के होंठ हिले, दिल जोरों से धड़क रहा था।

❑❑

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने राधा को घूरा।

राधा का चेहरा फक्क पड़ा हुआ था। आंखों में घबराहट थी।

"एक आदमी बंगले में आया।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने सख्त स्वर में कहा—"और वह तुम्हारे सेठ को ले गया और तुम नहीं जानती कि वह कौन था?"

"न...हीं, वो...?"

"झूठ मत बोलो।"

"म...मैंने उसे ठीक से नहीं देखा था।" राधा हड़बड़ाहट में कह उठी।

"ठीक से नहीं देखा?" जय नारायण मुस्कराया।

"नहीं।"

"थोड़ा-सा देखा था?"

"ह...हां।"

"तो वो देखने में कौन लगता था?" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने पुनः उसे घूरा और सख्त स्वर में कह उठा—"झूठ मत बोलो।"

"वो...वो कम्पनी वाले सेल्स-मैन की तरह लग रहे थे।" राधा की आवाज में घबराहट उभरी।

"कौन-सी कम्पनी।"

"सेफ वाली। रॉयल सेफ कम्पनी, जिनसे सेठ जी ने सेफ खरीदी थी।" राधा ने हाथ हिलाकर कहा।

"हूं, तो वो उस सेल्समैन जैसा लगता था जिसके साथ कल से सेठजी गए हुए हैं।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने एक-एक शब्द चबाकर कहा—"उस सेल्समैन का कोई नाम तो होगा?"

"वि...विजय बेदी।" राधा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"मतलब कि विजय बेदी, रायल सेफ कम्पनी में काम करता है। वो कल आया। सेठ पिशोरीलाल उसके साथ चले गए और अभी तक नहीं आए, यही बात है ना?"

राधा ने फौरन सहमति में गर्दन हिलाई।

"हां।"

"और ये बात तूने बहुत घुमा-फिराकर बताई। क्यों छिपा रही थी?"

"मैं-मैंने क्या छिपाना है?" राधा हड़बड़ा उठी।

"तिजोरी चुरा ले जाने में तू, उन लोगों की साथी है ना?" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने सख्त स्वर में कहा।

"नहीं! मैं-मैं तो बोत शरीफ हूं।"

"ये तो मैं बाद में देखूंगा कि तू कितनी शरीफ है। बता वो सेठ जी को कहां ले गया?"

"मुझे क्या मालूम।"

"झूठ मत बोल, तेरे को पता है, वो कहां ले गया?"

"मुझे क्या पता?" पुलिस वाले की पूछताछ से राधा, बहुत घबरा चुकी थी।

"उसी ने सेठ की तिजोरी चुराई है।"

"ये नहीं हो सकता। वो तो बोत शरीफ बाबू है। आप-आप किसी को भी चोर ठहरा देते हैं।"

"मेरी बात सुन।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने दांत भींचकर कहा—"तिजोरी उड़ा ले जाने के बाद वो सेठ को तिजोरी खुलवाने के लिए ले गया है।"

"नहीं, मैं नहीं मानती।"

"विजय बेदी कहां रहता है?"

"म...मैं नहीं जानती।"

"वो यहां आया। उसने सेठ को तिजोरी बेची। पांच-सात चक्कर तो लगे ही होंगे उसके। ऐसे में उसने एक-दो बार अपना विजिटिंग कार्ड तो दिया होगा। उस कार्ड को ढूंढ़ो।"

राधा खड़ी सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को देखती रही।

"सुना नहीं तुमने।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने दांत भींचकर कहा।

राधा हड़बड़ाकर वहां से चली गई।

करीब मिनट भर बाद वापस आई।

"यह लीजिए।" राधा विजिटिंग कार्ड उसकी तरफ बढ़ाती हुई बोली। माथे पर पसीने की बूंद थी।

जय नारायण ने कार्ड लेकर उस पर नजर मारी फिर राधा को देखा।

"तेरा क्या लगता है यह बेदी?"

"मेरा?" राधा को अपनी सांस रुकती-सी लगी।
"तेरे से ही पूछ रहा हूं। तेरे पीछे कोई नहीं खड़ा। क्या लगता है यह तेरा?"
"म...मेरा क्या लगेगा?" राधा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।
"कुछ तो लगता ही है, जो सीधे-सीधे तूने नहीं बताया कि सेठ कल से इसके साथ गया है और उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं। बता दे, क्या लगता है तेरा।"
"जो मेरे आप लगते हैं, वही ये लगता है।" राधा ने खुद में हिम्मत बांधी।
सब-इंस्पेक्टर जय नारायण की आंखें सिकुड़ीं।
"मैं...मैं तेरा क्या लगता हूं।" उसके होंठों से निकला।
"मेहमान।" राधा ने उसकी आंखों में झांका—"जो यहां आता है, उसे चाय-पानी पिलाना मेरा काम है।"
"बहुत तेज है तू।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने खा जाने वाले स्वर में कहा—"अगर मुझे मालूम हो गया कि तू तिजोरी ले उड़ने वालों की साथी है तो तब तुझे अपनी तेजी दिखाऊंगा।"
"सेठ जी को आने दीजिए।" राधा ने उखड़े स्वर में कहा—"उन्हें बताऊंगी कि आप मुझसे कैसे बातें कर रहे थे। सेठ जी मुझे अपनी बेटी की तरह मानते हैं।"
सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने राधा को घूरा फिर पलट कर बाहर निकलता चला गया।

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण बेदी के फ्लैट पर पहुंचा।
फ्लैट बंद मिला।
आसपास से पूछने पर मालूम हुआ कि पिछले दो-तीन-चार दिन से फ्लैट बंद है और विजय बेदी को किसी पड़ोसी ने नहीं देखा। जय नारायण के होंठ सिकुड़ गए। वह रायल सेफ कम्पनी पहुंचा।

□□

बेदी ने जब प्राणनाथ मल्होत्रा से बात की तो उसके बाद यूं ही ताजा हालातों की जानकारी पाने के लिए पिशोरीलाल के बंगले पर फोन किया तो राधा ने रिसीवर उठाया था।
"राधा, मैं बोल रहा हूं, तुम्हारा विजय।"
"ओह! विजय बाबू।" राधा की आवाज में खुशी झलकी—"कैसे हैं आप?"

"बिल्कुल ठीक हूं तुम...।"
"अभी वो इंस्पेक्टर आपके बारे में पूछताछ कर रहा था।" एकाएक राधा की आवाज उसके कानों में पड़ी।
बेदी को अपने पैरों के नीचे से जमीन निकलती-सी महसूस हुई। पुलिस उसके बारे में पूछती फिर रही है? उसे कंपा देने के लिए यही बात बहुत थी।
"पुलिस इंस्पेक्टर मुझे पूछ रहा था?"
"हां।"
"क्यों?"
"सेठ जी कल आपके साथ गए थे और अभी तक नहीं लौटे। इसलिए वो पुलिसवाला।"
"सेठ जी को तो मैंने रास्ते में, मन्दिर में छोड़ दिया था। क्या तब से वह वापस नहीं आए।" बेदी ने जल्दी से धड़कते दिल से कहा—"ऐसा कैसे हो सकता है?"
"ऐसा ही हुआ है।" राधा की आवाज कानों में पड़ी—"वो पुलिस वाला तो जाने क्या-क्या कह रहा था। कह रहा था आपने ही सेफ चोरी की है और अब उसे खुलवाने के लिए, सेठ जी को ले गए।"
बेदी को खेल खत्म होता नजर आया। रिसीवर पकड़े हाथ में पसीना-सा महसूस होने लगा। वह तो पुलिस की वर्दी से खौफ खाता था और पुलिस उसे तलाश कर रही है।
"मैं...मैं सेफ चोरी करूंगा।" बेदी बौखलाकर बोला—"मैं सेठ को ले जाऊंगा। वो पुलिस वाला पागल तो नहीं हो गया। तुमने उसे कहा नहीं कि मैं शरीफ आदमी हूं।"
"कहा, बहुत कहा। तो वो कहने लगा, मैं भी तुम्हारी साथी हूं। जाने क्या-क्या बोलता रहा।"
बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।
"तुम...तुम...!" बेदी की आवाज में दम नहीं था—"फिक्र मत करो। घबराना मत राधा। मैं पुलिस वाले से मिलकर, उसे विश्वास दिला दूंगा, कि वो गलतफहमी में है। मेरा इन बातों से कोई वास्ता नहीं है।"
"वो तो आपको ढूंढ़ता फिर रहा है। आपका कार्ड मेरे से लेकर गया है। आपके पास पहुंचा नहीं था?"
"न...हीं।" बेदी के होंठों में फंसा-फंसा स्वर निकला—"म...मैं घर में नहीं हूं। मिल लूंगा उससे।"

"अगर आप ऑफिस में हैं तो वो पुलिस वाला वहीं आपको मिल लेगा।" पिघले शीशे की तरह राधा की आवाज उसके कानों में पड़ रही थी—"मैंने उसे बताया कि आप कहां काम करते हैं।"

"ब...बहुत अच्छा किया।" बेदी को अपनी टांगें कांपती-सी महसूस हो रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे ज्यादा देर खड़ा नहीं रह पाएगा—"अच्छा राधा। फोन रखता हूं। फिर बात करूंगा।"

"जल्दी मिलना।"

"हां, जल्दी मिलूंगा।" बेदी ने मरे स्वर में कहा और रिसीवर रख दिया।

वह समझ नहीं पा रहा था कि पुलिस वाले को इतनी जल्दी उस पर शक कैसे हो गया। वह उसकी तलाश में ऑफिस भी गया होगा। ऐसे में उसने प्राणनाथ मल्होत्रा को भड़काया होगा। कहीं ऐसा न हो कि मल्होत्रा, जरनल मैनेजर हेमन्त लाल को रिसीव करने, एयरपोर्ट पर किसी और को भेज दे। मल्होत्रा का शक दूर करने के लिए, फौरन मल्होत्रा से मिलना जरूरी था।

पुलिस को बाद में देखेगा। पहले दिमाग में फंसी गोली तो निकलवा ले।

❑❑

प्राणनाथ मल्होत्रा ने निगाहें उठाकर सामने बैठे सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को देखा।

"इंस्पेक्टर साहब, आपको भारी तौर पर गलतफहमी हो रही है। आप विजय को नहीं जानते। वो एक नेक, शरीफ, ईमानदार लड़का है। उस पर शक करना तो...।"

"मल्होत्रा साहब।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण अपने शब्दों पर जोर देकर बोला—"मैं पुलिस वाला हूं। मैंने बड़े-बड़े अजीब केस देखे हैं। ऐसा इन्सान जिसने कभी मक्खी न मारी हो, वह वो कर जाता है, जो बड़े-बड़े नहीं कर सकते।"

"लगता है आप मेरी बात समझेंगे नहीं?"

"मैं क्या, इन हालातों में कोई भी पुलिसवाला नहीं समझेगा। आप तो...।"

"इंस्पेक्टर, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप हालातों को समझने की गलती कर रहे हों।"

"हो सकता है, आखिर हम भी इन्सान हैं। गलती कर ही जाते हैं और अगर विजय बेदी के बारे में गलती कर रहा हूं

तो बाद में सुधर जाएगी। उसने कुछ नहीं किया तो कानून उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

प्राणनाथ मल्होत्रा ने सोच भरी निगाहों से इंस्पेक्टर जय नारायण को देखा।

"किस बिना पर आ विजय पर शक कर रहे हैं?"

"कल विजय, सेठ पिशोरीलाल के यहां पहुंचा और उन्हें अपने साथ ले गया। उसके बाद तब से पिशोरीलाल वापस नहीं लौटे। उनकी कोई खबर, फोन कुछ भी नहीं आया।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?"

"यही कि विजय ने पिशोरीलाल जी का अपहरण किया है।"

"किसी ने रिपोर्ट दर्ज कराई है क्या?"

"नहीं, मैं पिशोरीलाल जी से मिलने गया तो यह सब मालूम हुआ।" जय नारायण ने कहा।

"लेकिन विजय, पिशोरीलाल का अपहरण करके करेगा क्या?"

"वही तो मैं आपको बताना चाहता हूं।" जय नारायण ने सिर हिलाकर कहा—"मुझे पूरा विश्वास है कि विजय ने ही पिशोरीलाल की तिजोरी चोरी की है, और...।"

"समझा।" प्राणनाथ मल्होत्रा उसकी बात काटकर मुस्कराए—"तुम यह कहना चाहते हो कि विजय ने तिजोरी चोरी की और फिर पिशोरीलाल को ले गया, तिजोरी खुलवाने के लिए।"

"ठीक, बिल्कुल ठीक, यही मैं कह रहा था।"

"विजय तिजोरी चोरी क्यों करेगा। वह शरीफ इन्सान...।"

"मल्होत्रा साहब!" जय नारायण गम्भीर स्वर में बोला—"सुना है विजय के दिमाग के दोनों हिस्सों के ठीक बीच रिवॉल्वर की गोली फंसी है। वह गोली जो बगल के बैंक में डकैती होने के दौरान लगी।"

प्राणनाथ मल्होत्रा ने सहमति में सिर हिलाया।

"और उस गोली को निकलवाने के लिए, उसे पैसों की जरूरत है।"

"हां, वह तो ऑफिस से भी लोन लेने की कोशिश में था, लेकिन इतना लोन उसे नहीं मिल सकता।"

"कितना मांग रहा था, वह?"

"बारह लाख।"

"बारह लाख!" जय नारायण की आंखों में चमक उभरी—"मुझे नहीं मालूम उसे बारह लाख की जरूरत क्यों है, यह तो वही जाने। जबकि ऐसे ऑपरेशन के लिए बीस-पच्चीस हजार भी बहुत होते हैं। बहरहाल उसे पैसों की जरूरत थी। जिसका इन्तजाम कहीं से भी नहीं हो पा रहा था और वो तिजोरी उसने ही पिशोरीलाल को बेची थी। यकीनन उसे मालूम होगा कि तिजोरी में बहुत ज्यादा रकम...।"

"बेकार की बातें मत करो इंस्पेक्टर।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने उखड़े स्वर में कहा—"विजय ऐसा कुछ नहीं कर सकता। ये आप की हवाई सोचे हैं, जो हवा में ही रहेंगी।"

जय नारायण ने प्राणनाथ मल्होत्रा को घूरा।

"तो विजय कहां है?"

"कहां क्या?"

"तीन-चार दिन से अपने फ्लैट में नहीं है या फिर यूं समझ लीजिए कि जिस दिन से तिजोरी पर हाथ डाला गया है, तब से वो किसी को नजर नहीं आया।"

"ठीक कह रहे हो। उसकी तबीयत खराब थी। वह आराम करना चाहता था। मैंने उसे छुट्टी दे दी। अब वह अपने फ्लैट पर आराम करे या कहीं और, यह तो उसकी मर्जी पर है।"

"तिजोरी चोरी करने के लिए छुट्टी लेनी ही पड़ती है। उसके बाद उसे खोलने की तरकीब भी लगानी पड़ती है, तब भी वक्त चाहिए मल्होत्रा साहब।" जय नारायण तीखे स्वर में कह उठा।

"तुम बहुत शक्की हो, मैं...।"

"मल्होत्रा साहब, मैं इस वक्त अपनी नौकरी को, वर्दी को अंजाम दे रहा हूं। किसी शक को नहीं। अच्छा यही होगा कि आप मुझे समझाने की कोशिश मत कीजिए। मुझे अपनी तसल्ली कर लेने दीजिए।"

"कर लो।" मल्होत्रा ने उसे टालने वाले ढंग से कहा।

"आपका फर्ज बनता है कि आप अच्छे शहरी होने के नाते कानून का साथ दें।"

"बताइए, मैं क्या कर सकता हूं?"

"मैं विजय से मिलना चाहता हूं और आप मुझे विजय से मिलवा सकते हैं।"

"ठीक है।" मल्होत्रा ने लापरवाही से कहा—"विजय जब आएगा मैं आपको फोन कर दूंगा। अपना नम्बर आप मुझे दे

दीजिए।"

जय नारायण ने अपना कार्ड देते हुए कहा।

"इस पर मेरे ऑफिस और घर दोनों का नम्बर है। मैं न मिलूं तो आप मैसेज छोड़ दीजिएगा।"

"ठीक है।" मल्होत्रा ने कार्ड ले लिया।

"एक बात का खास ध्यान रखिएगा कि विजय से मत कहें कि मैं उसे ढूंढ़ रहा हूं। ऐसा होने पर वो भाग भी सकता है, फिर उसे ढूंढ़ने में और दिक्कत होगी।"

प्राणनाथ मल्होत्रा मुस्करा पड़ा।

"बेहतर होगा कि तुम अपने शक की मात्रा को कुछ कम करने की कोशिश करो।"

"क्यों?" जय नारायण ने उसकी आंखों में देखा।

"क्योंकि जब तुम्हें मालूम होगा कि विजय पर तुम खामखाह शक कर रहे हो तो तुम्हें अफसोस होगा कि तुमने अपना वक्त खराब किया। वो तो खुद किस्मत का मारा, दिमाग में फंसी गोली की वजह से डरा बैठा है कि...।"

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण उठ खड़ा हुआ।

"मैं चलता हूं मल्होत्रा साहब। आपके फोन का इन्तजार करूंगा।"

"चिन्ता मत कीजिए, विजय के आते ही आपको फोन कर दूंगा।"

जय नारायण चला गया।

❑ ❑

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को गए पांच मिनट ही बीते होंगे कि बेदी ने प्राणनाथ मल्होत्रा के केबिन में प्रवेश किया। मल्होत्रा उसे देखते ही मुस्कराया।

"आओ विजय! पांच मिनट पहले आते तो पुलिस वाले से मुलाकात हो जाती।" मल्होत्रा मुस्करा रहा था—"क्या किया है तुमने, जो पुलिस को अपने पीछे लगवा लिया।"

"म...मैंने।" हड़बड़ाया-सा बेदी कुर्सी पर बैठा—"मैंने क्या किया है सर?"

"मालूम नहीं, वो पुलिस वाला कह रहा था कि तुमने सेठ पिशोरीलाल की तिजोरी चोरी की, उसके बाद पिशोरीलाल का अपहरण कर लिया कि तुम उससे तिजोरी खुलवा सको।"

बेदी को अपना गला सूखता और टांगें कांपती-सी महसूस हुईं।

"वो पागल है।" बेदी की आवाज में गुस्सा आ गया—"मैं तिजोरी चोरी करूंगा। मैं...मैं अपहरण करूंगा। खूब उसने कहा और आपने मान लिया सर, सर आप तो...।"

"विजय, गुस्सा मत खाओ। अपने दिमाग पर काबू रखो। मैं तुम्हें इंस्पेक्टर की बात बता रहा था।"

गुस्से पर काबू पाता बेदी गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। दिल जोरों से धड़क रहा था कि पुलिस वाला खामखाह शक करने वाला नहीं। कोई तो पक्का सबूत उसे मिला ही होगा।

"सर।" बेदी की हालत अजीब-सी थी—"उसकी हिम्मत कैसे हो गई, ऐसी बात करने की। मैं उसे छोडूंगा नहीं। उसके ऑफिसर को रिपोर्ट करूंगा। मैं उसे, मैं...।"

"विजय, प्लीज शांत हो जाओ। पुलिस वाले केस की तहकीकात करते वक्त पचासों पर खामखाह का शक करते हैं। तुम्हें क्या जरूरत है उसकी रिपोर्ट करने की। असल बात सामने आएगी तो खुद ही ठीक हो जाएगा।"

"आपने उसे क्या कहा?"

"मैंने समझाया है उसे कि यह सब बेकार की बातें हैं। तुम तो ऐसा काम करने की सोच भी नहीं सकते।"

"ठ...ठीक कहा सर।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"वैसे...।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने बेदी को देखा—"मुझे तो वो पुलिस वाला पागल लगता है।"

"क्यों सर?"

"वो मानता ही नहीं कि तुम बेगुनाह हो। तुमसे मिलने की जिद्द किए बैठा है जबकि तुम्हारे बारे में मैंने उसे हर तरह से विश्वास दिलाना चाहा। लेकिन उसका दिमाग तो खास तरह का जिद्दी है।"

"मुझे तो समझ नहीं आता सर कि क्या करूं?" बेदी टटोलने वाले अंदाज में कह उठा।

"विजय, वो इंस्पेक्टर कह रहा था कि तुम कल सेठ पिशोरीलाल को उसके बंगले से ले गए थे।"

"क्या मतलब?" बेदी ने कठिनता से अपने दिल पर काबू पाया।

"मतलब कि पिशोरीलाल अभी तक वापस नहीं आया। वह...।"

"सर, मैंने तो पिशोरीलाल को मन्दिर में छोड़ दिया था। वो

कोई बच्चा तो है नहीं।" बेदी ने अपनी आवाज में तीखापन लाकर कहा—"जो खो जाएगा। अगर वह नहीं लौटा तो मैं क्या कर सकता हूं। वाह, इस बात से इंस्पेक्टर ने अंदाजा लगा लिया कि मैं पिशोरीलाल को ले भागा हूं।"

"मैंने तो पहले ही कहा था कि वो पुलिस वाला मुझे पागल लगता है।" प्राणनाथ मल्होत्रा ने मुंह बनाकर कहा—"जाते-जाते मुझे अपना कार्ड दे गया। पक्का कर गया कि तुम आओ तो तुम्हें बिठाकर रखूं और फौरन उसे खबर कर दूं। वो तो ऐसे बात कर रहा था कि जैसे तुम फरार न हो जाओ।"

बेदी ने जोरों से धड़कते दिल पर काबू पाया। हालात ज्यादा अच्छे नहीं लग रहे थे।

"सर, पिशोरीलाल अपने घर पर ही होगा। मैं अभी उसे फोन करके...।"

"छोड़ो विजय, यह बे-सिर-पैर की बातें हैं। मैं इन बातों में अपना वक्त खराब नहीं करना चाहता। न ही इस बात में मेरी कोई दिलचस्पी है कि मैं तुम्हारी खबर इंस्पेक्टर को दूं। इन पागलों वाली बातों में मैं नहीं आने वाला। तुम सुनाओ, अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?" मल्होत्रा ने सामान्य स्वर में कहा।

"पहले से ठीक है सर। लेकिन पूरी तरह ठीक नहीं हूं।" बातों का रुख बदलते देखकर, बेदी ने राहत की सांस ली।

"कोई बात नहीं, अभी तुम आराम करो। तो शाम को जरनल मैनेजर साहब को रिसीव करने एयरपोर्ट जाओगे?"

"श्योर सर, इस काम से मुझे कोई परेशानी नहीं होगी।"

"ध्यान रहे, सर हेमन्त लाल को भी कोई परेशानी न हो। तुम पहले भी उन्हें रिसीव करने एयरपोर्ट जा चुके हो। इसलिए मैं तुम्हें ही भेजना चाहता हूं ताकि उनके सब काम तुम ठीक तरह कर सको।"

"आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा सर।"

❑❑

शुक्रा और अंजना ने बेदी के जाने के बाद, पिशोरीलाल पर कोशिश की कि वह किसी तरह तिजोरी खोलने पर तैयार हो जाए, परन्तु पिशोरीलाल यातना सहकर भी अड़ा रहा। शुक्रा ने तो ऐसी कोई यातना नहीं दी, लेकिन अंजना पागलों की तरह उसे तकलीफ देती रही। उसके सिर के बाल खींचती रही।

पिशोरीलाल पीड़ा में चीखता-तड़पता रहा।

शुक्रा ने अंजना को ऐसा करने पर कई बार मना किया लेकिन अंजना तो जैसे तिजोरी के न खुलने पर पागल-सी हुई पड़ी थी।

अंजना का गुस्सा शांत करके शुक्रा ने पिशोरीलाल वाली कोठरी को बाहर से बंद कर दिया। वह नहीं चाहता था कि अंजना, पिशोरीलाल को कोई बड़ा नुकसान पहुंचा दे।

❑ ❑

बेदी वापस पहुंचा तो उसके चेहरे के भाव देखकर शुक्रा के माथे पर बल पड़े।

"क्या हुआ विजय?"

अंजना भी पास ही थी।

बेदी ने गहरी सांस लेकर दोनों को देखा, फिर कुर्सी पर बैठ गया।

"बहुत मुसीबत वाली खबर है।" बेदी की आवाज में थकापन था।

"क्या?"

"सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मुझे तलाश करता फिर रहा है?"

"क्या?" शुक्रा और अंजना जोरों से चौंके।

"हां, मेरी तलाश में वह मेरे फ्लैट पर भी गया। ऑफिस भी गया। मेरे बॉस को कह आया है कि जब मैं आऊं तो उसे फौरन खबर कर दे।" बेदी ने कहते हुए सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"लेकिन ऐसा क्यों हुआ?"

"मालूम नहीं उसे कैसे शक हो गया। पिशोरीलाल के बंगले से, राधा से पूछने पर पता चला होगा कि मैं पिशोरीलाल को ले गया हूं। शायद राधा की ही किसी बात से मुझ पर शक आ गया हो। मुझे लगता है वो बहुत तेज पुलिस वाला है। मामले को शायद पहचान गया है।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ।" शुक्रा के होंठों से निकला—"ऐसे वक्त में पुलिस का ध्यान तुम्हारी तरफ होना ठीक नहीं। वह हमारे कामों में अड़चन डाल सकता है।"

अंजना होंठ भींचे दोनों की बातें सुन रही थी।

"मुझे तो समझ नहीं आता कि ऐसे वक्त में क्या किया जाए।" बेदी का स्वर हारा हुआ था।

"अगर...?" अंजना शब्दों को चबाकर कह उठी—"पिशोरीलाल

तिजोरी खोल दे तो हमारी सारी परेशानी दूर हो जाए। तब सब कुछ ठीक हो जाएगा। समझ नहीं आता कि उसे कैसे तैयार किया जाए।"

"मैं बात करता हूं पिशोरीलाल...।" बेदी ने कहना चाहा।

"कोई फायदा नहीं।" शुक्रा ने अंजना पर निगाह मारकर बेदी से कहा—"हमने कोशिश कर ली है।"

"मतलब कि नहीं मानता?" बेदी ने फीके स्वर में कहा।

"नहीं।"

बेदी का शरीर कांपा। हाथ खुद-ब-खुद ही सिर पर पहुंच गया।

"इसका मतलब मैं बच नहीं पाऊंगा। दिमाग में फंसी गोली, मेरी जान ले लेगी। मैं तो...।"

"हौसला मत छोड़ो विजय।" शुक्रा ने आगे बढ़कर उसका कंधा थपथपाया—"सब ठीक हो जाएगा।"

"कुछ ठीक नहीं होगा। मैं जानता हूं कुछ ठीक नहीं होगा। मैं मर जाऊंगा।"

"विजय...।" अंजना एकाएक प्यार भरे स्वर में कह उठी—"तुम मेरे हो, मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी। अगर तुम मरे तो उससे पहले मैं अपनी जान दूंगी। मैं...।"

"ऐसा मत कहो अंजना। मरने वाले के साथ नहीं मरा जाता।"

"मैं मरूंगी। दिखा दूंगी सबको कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूं।" अंजना भावुक स्वर में कह उठी।

बेदी ने निगाहें उठाकर अंजना को देखा। आंखों में पानी चमक उठा।

"विजय!" शुक्रा भारी स्वर में बोला—"अगर तुम हिम्मत हारोगे तो हमें कौन तसल्ली देगा।"

"मैं क्या करूं शुक्रा? सब कुछ पास में है। जिसने ऑपरेशन करना है। वहां वो तिजोरी, जिसका ऑपरेशन होना है यानी कि मैं। इस पर सब काम वैसे ही रुके हुए हैं, जैसे पहले। इतनी मेहनत करने के बाद भी कुछ नहीं हो सका और पुलिस ने मेरी तलाश शुरू कर दी है।"

शुक्रा और अंजना खामोश रहे।

कुछ लम्बी खामोशी के बाद बेदी फीके स्वर में कह उठा।

"अब तो एक ही आखिरी रास्ता बचा है।"

"क्या?" अंजना के होंठों से निकला।

"पिशोरीलाल अब तक तैयार नहीं हुआ तो आगे भी क्या होगा। हम शरीफ लोग ज्यादा सख्ती बरत नहीं सकते और हमारे पास अब ज्यादा वक्त नहीं रहा।" बेदी टूटे स्वर में कहा—"डॉक्टर बधावन, सेठ पिशोरीलाल और तिजोरी को हम कब तक इस तरह यहां रख सकते हैं।"

"वो तो ठीक है।" अंजना के स्वर में बेसब्री झलकी– "लेकिन तुम किस रास्ते की बात कर रहे हो?"

"आज रात पूना से हैड ऑफिस से कम्पनी का जनरल मैनेजर हेमन्त लाल आ रहा है। उसे रिसीव का काम ऑफिस की तरफ से मुझे सौंपा गया है।"

"ओह!" अंजना की आंखों में चमक उभरी।

शुक्रा गम्भीर हो उठा।

"खबर के मुताबिक उसने अपने साथ बिकी सेफों की फाइलें भी लेकर आनी थी और मुझे पूरा विश्वास है कि वो जो फाइलें ला रहा है, उसमें पिशोरीलाल के सेफ की भी फाइल है यानी कि उस फाइल में से पिशोरीलाल के सेफ का कम्बीनेशन नम्बर मिल...।"

"आज आ रहा है, हेमन्त लाल।" शुक्रा ने उसे देखा।

"हां। आज रात करीब नौ बजे की फ्लाइट से।" बेदी ने गहरी सांस लेकर उसे देखा।

"तुम उसे रिसीव करोगे?"

बेदी ने सहमति मे सिर हिलाया।

"अगर वो फाइलें ला रहा है। उन फाइलों में सेठ पिशोरीलाल की फाइल है तो फिर उस पर हाथ डालने में हमें पीछे नहीं हटना चाहिए।" शुक्रा कह उठा।

"मतलब कि एक और अपराध?" बेदी ने अजीब से स्वर में कहा।

"ओह विजय!" अंजना मुंह बनाकर कह उठी—"तुम तो खामखाह, बात-बात पर घबरा जाते हो। दुनिया तुम्हारा साथ छोड़ सकती है लेकिन मैं नहीं। डरा मत करो। ये शुक्रा भैया है ना।" एकाएक अंजना मुस्कराई—"कोई बड़ी मुसीबत आने पर सबसे पहले यही तुम्हारा साथ छोड़कर भागेंगे। लेकिन अंजना को, मुझे तुम हर वक्त अपने करीब पाओगे। रही बात एक और अपराध की तो, इस बारे में तुम फिक्र मत करो। सोचो

भी नहीं। जब तक तुम्हारे दिमाग में फंसी गोली ऑपरेशन से बाहर नहीं निकाल ली जाती। तब तक हम पीछे हटने वाले नहीं। जब पहला अपराध किया था तो तुम्हें ठीक करने के लिए। जब आखिरी अपराध करेंगे तो वह भी तुम्हारी सेहत के लिए ही होगा। क्यों शुक्रा भैया।" अंजना ने शुक्रा को देखा।

"हां।" शुक्रा ने हौले से सिर हिलाया—"हम तो यही चाहते हैं कि इसके दिमाग में फंसी गोली निकल जाए और अपना यार पहले की तरह सामान्य जिन्दगी बिताए।"

बेदी ने आंखें बंद कर ली।

शुक्रा ने कुर्सी को उसके पास खिसकाया और अंजना से बोला—

"भाभी तुम चाय बनाकर लाओ। इससे मैं बात करता हूं।"

अंजना वहां से चली गई।

"वो डॉक्टर कैसा है?" बेदी ने आंखें खोली।

"एकदम ठीक।"

"खाना-पीना उसे बराबर मिल रहा है?"

"हां, उसकी तुम फिक्र न करो। वह सिर्फ गुस्से में है। वो भी बाद में ठीक हो जाएगा।" शुक्रा ने कहा और सिगरेट सुलगा ली—"तुम हेमन्त लाल के बारे में बताओ। उसकी फ्लाइट कितने बजे आ रही है।"

बेदी ने भरपूर निगाहों से शुक्रा को देखा।

"शुक्रा तू बहुत साथ दे रहा है मेरा। तू न होता तो...।" बेदी ने कहना चाहा।

"मैं तो सिर्फ यारी निभा रहा हूं प्यारे। इसके अलावा और कुछ नहीं कर रहा।" शुक्रा मुस्कराया।

"वो इंस्पेक्टर मुझे ढूंढ रहा है, वो पुलिस वाला...।"

"ढूंढ़ने दे। तेरे दिमाग में फंसी गोली निकल जाए। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा। देख लेंगे। तो आज हेमन्त लाल पर हाथ डाला जाए। उसे रिसीव करने का काम भी तुम्हारा है तो ऐसे में उस पर हाथ डालने में ज्यादा दिक्कत नहीं आएगी। यह काम सबसे आसान रहेगा।"

"हां।"

"उसके पास पिशोरीलाल की सेफ से वास्ता रखती फाइल तो पक्का होगी ना?" शुक्रा ने पूछा—"कहीं ऐसा न हो कि हेमन्त लाल पर हाथ डालने की हमारी सारी मेहनत बेकार चली जाए।"

"उसके पास फाइल होगी, दो-चार और फाइलें भी होंगी। यह ऑफिस की भीतरी खबर है।" बेदी ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"लेकिन जाने क्यों मुझे डर लग रहा है।"

"तू डरा मत कर। जब तक मैं साथ हूं। डर को अपने पास भी न आने दे।" शुक्रा मुस्कराया।

बेदी के होंठों पर भी भारी-सी मुस्कान उभरी।

तभी अंजना चाय ले आई।

"तू कुछ थका-सा लग रहा है।" शुक्रा ने चाय का घूंट भरा—"चाय पीकर कुछ देर आराम कर ले। ठीक हो जाएगा। हेमन्त लाल पर हाथ डालने के लिए हमें उदय की कार की जरूरत पड़ेगी। शहर पहुंचकर उदय से कार ले लेंगे। तो क्या सोचा, हेमन्त लाल को कैसे कब्जे में करना है?"

"अभी नहीं सोचा।" बेदी ने चाय का घूंट भरा।

"तो सोच, ताकि हम तैयारी पूरी कर लें।"

तभी अंजना कह उठी।

"हेमन्त लाल पर हाथ कैसे डालना है। यह तो मैं बता सकती हूं।"

दोनों की निगाह अंजना की तरफ उठी।

"कैसे?" बेदी बोला। अंजना ऐसे बताने लगी, जैसे सब कुछ उसने पहले ही सोच रखा हो। तय कर रखा हो।

❑❑

शाम के पांच बज रहे थे।

रॉयल सेफ कम्पनी के कर्मचारी छुट्टी करके जाने की तैयारी में थे। कुछ जा भी रहे थे। ऑफिस के मैनेजर प्राणनाथ मल्होत्रा ने भी आज काम निपटाकर चलने की सोची तो तभी सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने भीतर प्रवेश किया। उस पर निगाह पड़ते ही मल्होत्रा के माथे पर बल उभरे।

"तुम, अभी कुछ घंटे पहले तो आए थे।" मल्होत्रा के होंठों से निकला।

"हां।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण कुर्सी पर बैठता हुआ मुस्कराया—"मैं आया था।"

"अब फिर आ गए।"

"हां, अब फिर आ गया।" वो उसी ढंग में बोला।

प्राणनाथ मल्होत्रा के चेहरे पर नापसन्दगी वाले भाव उभरे।

"इंस्पेक्टर!" प्राणनाथ मल्होत्रा ने कुछ सख्त स्वर में कहा,

"यह ऑफिस है। चाय की दुकान नहीं कि जब दिल किया आ गए और बैठ गए। हमें अपने काम करने होते हैं। तुम क्या समझते हो, हम यहां, आराम से बैठे रहते हैं जो...।"

"मल्होत्रा साहब।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मुस्कान के साथ बोला—"मुझे आपके कीमती वक्त का पूरी तरह एहसास है, लेकिन दूसरों के वक्त की कीमत भी आपको समझनी चाहिए।"

"क्या मतलब?"

जय नारायण ने सिगरेट सुलगाई।

"मैं सिगरेट नहीं पीता।" प्राणनाथ मल्होत्रा तीखे स्वर में कह उठा।

"मैंने आपको ऑफर नहीं की।"

"लेकिन इसकी स्मैल मुझे...।"

"कभी-कभी न चाहते हुए भी कोई चीज पसन्द करनी पड़ती है।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने प्राणनाथ मल्होत्रा की आंखों में झांका—"मैं आपके पास दिन में आया?"

"तो?"

"तो आपने क्या सोचा कि मैं फुर्सत में हूं। वर्दी पहनकर, बेकार इधर-उधर घूम कर रोब झाड़ता रहता हूं या फिर आपने मेरी बातों को बे-फिजूल की समझ कर कूड़े की टोकरी में डाल दिया।"

"मैं समझा नहीं। तुम कहना क्या चाहते हो?" मल्होत्रा की आंखें सिकुड़ीं।

"सबसे पहले तो यह समझ लीजिए कि जो बात मैं करने यहां आया हूं। उसके लिए आपको थाने में भी बुलवा सकता था। दो-चार घंटे वहां बिठाकर, अच्छी तरह परेशान करने के बाद आपसे बात करता। तब आपको पता चलता कि मैं कितना शरीफ बंदा हूं।"

"तुम मुझे थाने बुलवाते?"

"हां, क्यों, कोई शक है क्या?"

"बात क्या है?" मल्होत्रा ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

"दोपहर को आपसे जो बातें करके गया था। वो सब याद है आपको।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने चुभते स्वर में पूछा।

"हां।"

"बेहतर। नहीं तो वो बातें मुझे फिर याद दिलानी पड़ती।"

जय नारायण का स्वर अभी भी चुभ रहा था—''तो मेरे जाने के बाद मिस्टर विजय बेदी यहां तशरीफ लाए थे?''

प्राणनाथ मल्होत्रा मन-ही-मन सतर्क हुआ। उसके पूछने का ढंग ही साफ बता रहा था कि वह जानता था कि विजय यहां आया था। मल्होत्रा को समझते देर न लगी।

''हां, तुम्हारे जाने के कुछ देर बाद ही आया था।'' मल्होत्रा ने स्पष्ट कहा।

''आपने मुझे खबर की?''

''कहां खबर करता।'' मल्होत्रा फौरन बोला—''तुम तो तब रास्ते में थे। इसलिए...।''

''मैं कह कर गया था कि फोन पर मैसेज छोड़ देते। मैसेज मिलता तो मैं उलटे पांव वापस आ जाता। मिस्टर प्राणनाथ मल्होत्रा, आपने एक अपराधी को बचाने में उसकी पूरी सहायता की। उसे...।''

''मैंने किसी की कोई सहायता नहीं की। तुम खामखाह ही यह बात मुझे कहने पर तुले हुए हो।''

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मुस्कराया।

''मल्होत्रा साहब। कभी मैं बहुत शरीफ हुआ करता था। लोगों की बातों में आ जाता था। लेकिन इस वर्दी ने धीरे-धीरे सिखा-समझा दिया कि इस तरह जिन्दगी नहीं कटेगी। आदमी के अन्दर घुसना सीखो और मैंने सीख लिया। मैं आपके भीतर भी घुस चुका हूं और आपके भीतरी विचार के मुताबिक, आपको लग रहा है कि मिस्टर विजय बेगुनाह है और मैं उसे तंग करने पर लगा हूं।''

''तो इसमें गलत ही क्या है।''

''अगर मिस्टर विजय बेगुनाह है तो मैं उसे खा नहीं जाऊंगा। यह तो आप भी जानते हैं। आप मुझे पागल-बेवकूफ-गधा कुछ भी समझ सकते हो। मुझे कोई एतराज नहीं। लेकिन मुझे मिस्टर विजय चाहिए। यह तो था, मेरा बात करने का शराफत से भरा ढंग। अब अगर आपको मेरा दूसरा ढंग देखना है तो थाने ले चलता हूं। फिर देखिए कितना मजा आता है।''

''तुम मुझे धमकी दे रहे हो?''

''समझा रहा हूं। पुलिस वाले समझाते हैं। धमकी नहीं देते।''

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे को देखते रहे।

''क्या चाहते हो?'' मल्होत्रा बोला।

''विजय से मिलना है।''

''मैं नहीं जानता कि इस वक्त वो कहां...।''

''मिस्टर मल्होत्रा, अब मैं नहीं सुनूंगा कि वह कहां है या कहां नहीं। अगर आप नहीं जानते तो मेरे साथ थाने चलिए। वहां बैठिए। तब तक बिठाए रखूंगा, जब तक कि विजय मेरे सामने...।''

''तुम्हें किसने बताया कि तुम्हारे जाने के बाद, विजय यहां आया था।'' एकाएक मल्होत्रा ने पूछा।

''हम पुलिसवाले हैं। एक पर विश्वास करके नहीं चलते। किसी की तलाश होती है तो आस-पास के लोगों को भी फिट करके रखते हैं, जिन्हें हमारी भाषा में मुखबिर कहा जाता है। यहां से जाते वक्त आपके ऑफिस के ही किसी बंदे को भी फिट करता गया था कि विजय आए तो फोन पर खबर कर दे। उसने खबर तो की लेकिन बहुत देर बाद। इस बात में उसकी लापरवाही ही समझो।''

''कौन है मेरे ऑफिस का वो आदमी।''

''इसलिए पूछ रहे हैं कि उसे नौकरी से निकाल सके।''

प्राणनाथ मल्होत्रा ने होंठ भींच लिए।

''चलिए मिस्टर मल्होत्रा। आपको मैं अपना थाना दिखाता हूं। बना तो वो अंग्रेजों के जमाने का है। लेकिन मुझे विश्वास है कि आपको पसन्द आएगा। वहां चाय-पानी से आपकी पूरी खातिरदारी करूंगा।''

''इंस्पेक्टर।'' मल्होत्रा ने शांत स्वर में कहा—''आज शाम नौ बजे की फ्लाइट से हमारी कम्पनी के जनरल मैनेजर आ रहे हैं। विजय उन्हें रिसीव करने एयरपोर्ट जाएगा। आप उससे वहां मिल सकते हैं।''

''गुड, यह बात आप सीधे-सीधे मुझे पहले भी बता सकते थे।''

''विजय ने कुछ नहीं किया। अगर तुमने उसके साथ कोई ज्यादती करने की चेष्टा की तो, मैं उसके लिए बड़े-से-बड़ा वकील कर लूंगा।'' मल्होत्रा का स्वर सख्त हुआ—''तुम उसे बिना वजह फंसा नहीं सकते।''

जय नारायण मुस्कराता हुआ कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

''मल्होत्रा साहब। जब सेठ पिशोरीलाल का तिजोरी वाला ट्रक उड़ाया गया तो उस ट्रक की निगरानी पर मैं था। मामूली-सा

काम था। जो जाने कैसे मेरे से पूरा नहीं हो सका। शायद इसलिए कि ट्रक ले जाने वाले ने वहां हालात ही ऐसे पैदा कर दिए थे कि, जब वो ट्रक ले भागे तो, पुलिस उसके पीछे न जा सके। बहरहाल, मेरे ऑफिसरों ने इस वक्त मुझे डण्डे पर लटका रखा है कि मैं तिजोरी को और तिजोरी ले जाने वाले को कहीं से भी तलाश करूं। मेरी स्थिति को आप नहीं समझ सकते, क्योंकि यह सेफ बेचने का नहीं, उसे ढूंढ़ने का मामला है। सब जगह भागदौड़ करने के बाद, मेरे सामने एक शख्स आया है, जिस पर मुझे पूरा-पूरा शक है और वह है मिस्टर विजय बेदी। आपकी कम्पनी का बेहतरीन सेल्समैन।''

''क्यों उसके पीछे पड़े हो। वह तो हद से ज्यादा मासूम इन्सान...।''

''उस मासूम इन्सान की तस्वीर होगी आपके पास, ताकि उसे एयरपोर्ट पर पहचान सकूं।''

''नहीं।''

''शुक्रिया। फिर भी मैं उसे एयरपोर्ट पर ढूंढ़ लूंगा।'' सब-इंस्पेक्टर जय नारायण के चेहरे पर कड़वी मुस्कान उभरी और पलटकर बाहर निकलता चला गया।

''ऐसे बेवकूफ पुलिस वाले मैंने पहले कभी नहीं देखे।'' प्राणनाथ मल्होत्रा गहरी सांस लेकर कह उठा—''अच्छा हुआ जो मेरा लड़का पुलिस वाला नहीं बना।''

❑ ❑

शाम के आठ बज रहे थे।

एयरपोर्ट पर दीवाली जैसा माहौल था। लोगों की भागदौड़, एनाउंसमेंट की मधुर आवाजें और कानों में पड़ती विमानों के इंजन की आवाजें बहुत भली लग रही थीं। अजीब-सी दुनिया वहां नजर आ रही थी।

दुनिया भर के देशों के अलग-अलग चेहरे। अलग-अलग भाषाएं।

और वहां पूरी वर्दी में, दो हवलदारों के साथ सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मौजूद था। उसकी सतर्कता भरी निगाह, हर तरफ फिर रही थी। नौ बजे आने वाली फ्लाइटों के बारे में उसने मालूम कर लिया था। पूना से उस वक्त सीधी फ्लाइट कोई नहीं थी। अलबत्ता बाम्बे से आने वाली उस वक्त तीन फ्लाइटें थीं।

एक पौने नौ बजे, दूसरी नौ बजे और तीसरी नें नौ बजकर

दस मिनट पर लैंड करना था।

जय नारायण को पूरा विश्वास था कि इन्हीं तीन फ्लाइटों में से किसी में हेमन्त लाल आएगा। परन्तु उसे सबसे बड़ी दिक्कत आ रही थी कि वह न तो हेमन्त लाल को जानता था और न ही उसने विजय बेदी का चेहरा देखा था। ऐसे में उन लोगों को तलाश कर पाना आसान काम नहीं था। किस-किससे पूछता फिरेगा कि क्या वह रॉयल सेफ कम्पनी का सेल्समैन विजय बेदी है।

बहरहाल जय नारायण एयरपोर्ट लाउंज में मौजूद लोगों को पैनी निगाहों से देख रहा था जो रिसीव करने के लिए वहां आए हुए लग रहे थे। उनमें कोई भी विजय बेदी हो सकता था।

उस वक्त नौ बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे। क्लीयरेंस से निपटकर खूबसूरत-सा ब्रीफकेस थामे, हेमन्त लाल ग्रीन चैनल से निकलकर एयरपोर्ट के लाउंच में पहुंचा। इधर-उधर निगाह मारी। उसे मैसेज को दिया जा चुका था कि विजय बेदी, उसे रिसीव करने आ रहा है। परन्तु बेदी कहीं भी नजर नहीं आया, उस वक्त। दो पल तो अनिश्चित-सा हेमन्त लाल वहीं खड़ा रहा।

फिर मन-ही-मन फैसला किया कि पांच-सात मिनट वह विजय बेदी का इन्तजार करेगा। शायद वह इधर-उधर हो। न मिला तो खुद ही टैक्सी पर होटल रवाना हो जाएगा।

बेदी साढ़े आठ बजे एयरपोर्ट पर पहुंच गया था। उसके धड़कते दिल में इस बात की तसल्ली थी कि बहुत जल्द उसे पिशोरीलाल के सेफ की फाइल मिलने वाली है। उसके बाद सारी तकलीफें दूर हो जाएंगी। सब ठीक हो जाएगा। जो मेहनत की वह सफल होगी और दिमाग में फंसी गोली ऑपरेशन से बाहर निकाल दी जाएगी।

पहले की अपेक्षा इस वक्त वह बहुत कम तनाव में था।

बेदी ने रिसेप्शन काउंटर पर प्लेन के बारे में मालूम किया तो वह सही वक्त पर आ रहा था। बेदी लाउंच में पहुंचा और वहां मौजूद कुर्सियों में से एक पर बैठने के पश्चात उसने सिगरेट

सुलगा ली।

सिर्फ दो मिनट ही बीते होंगे कि बेदी के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा। वह बुत की तरह बैठा रहा। दिल का धड़कना दो-चार पल के लिए रुका, फिर रफ्तार के साथ धड़कने लगा।

वह सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ही था। वर्दी में था। एक बार में ही उसने पहचान लिया था जबकि एक ही बार, जरा-सा उसे तब देखा था जब वह तिजोरी वाला ट्रक ले भागने की तैयारी में था।

जय नारायण यहां? इस वक्त एयरपोर्ट पर?

जाहिर था कि उसे मालूम हो गया था कि वह एयरपोर्ट पर आएगा। यह बात यकीनन उसे ऑफिस में से ही, किसी से मालूम हुई होगी। लेकिन अब क्या होगा?

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण उसकी तलाश में ही यहां था?

बेदी ने जल्दी से खुद को संभाला। पूरी कोशिश की कि वह सामान्य ही लगे। कश लेते धड़कते दिल के साथ छिप-छिपकर वह बार-बार जय नारायण को ही देख रहा था, जिसकी खोजी निगाह हर तरफ घूम रही थी। जाहिर है वह उसे ही तलाश कर रहा होगा।

इस बीच उसने देखा जय नारायण की निगाह उस पर भी पड़ी है। लेकिन उसकी तरफ उसने कोई खास तवज्जो नहीं दी। बेदी के दिल की तेज रफ्तार थोड़ी कम हुई।

जरा-सा सुकून मिला यह सोचकर कि यह पुलिसवाला उसकी तलाश में है जरूर, परन्तु उसके चेहरे से वाकिफ नहीं है। अगर होता तो अब तक उसकी गर्दन पकड़ ली होती।

इस बात से बेदी को बहुत तसल्ली मिली।

क्या यह कम्पनी के जनरल मैनेजर हेमन्त लाल को जानता है?

नहीं, भला उसे कैसे जानता होगा। वह तो तीन महीनों में एक-दो दिन के लिए आते हैं और व्यस्तता के दौर से गुजर कर वापस चले जाते हैं। इसका मतलब जब वह हेमन्त लाल को रिसीव करेगा, तब भी हेमन्त लाल के दम पर यह पुलिसवाला उसे नहीं पहचान पाएगा।

बेदी को तसल्ली मिली कि सब-इंस्पेक्टर जय नारायण उसे नहीं पहचान पाएगा।

लेकिन अपने धड़कते दिल का क्या करे, जिसमें डर घुस चुका

था। रह-रहकर टांगों में कम्पन हो उठता था। अपने बदन में दौड़ते खून का क्या करे, जिसमें शराफत कूट-कूटकर भरी पड़ी थी। पुलिस को देखकर तो वह बचपन में ही डर जाता था और अब पुलिस उसे ढूंढ़ रही है। उसकी हालत खराब करने के लिए इससे बड़ी और क्या बात हो सकती थी।

हिम्मत थोड़ी-बहुत बंधी हुई थी तो सिर्फ एक ही चीज से कि अभी उसे जीना है। वह मरना नहीं चाहता और जी तभी सकता है, जब उसके दिमाग में फंसी गोली सफल ऑपरेशन करके बाहर निकाल दी जाएगी और यह तभी होगा, जब उसके पास बारह लाख होगा और अब उस बारह लाख को पाने का आखिरी मौका उसे मिलने वाला था। जानकारी के मुताबिक हेमन्त लाल बिक चुकी तिजोरियों की फाइलें ब्रांच ऑफिस के हवाले करने के लिए साथ ला रहा था और उसमें पिशोरीलाल की फाइल भी है, जिससे पिशोरीलाल की तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर जाना जा सकेगा।

बेदी ने खुद को संभाला।

सोचों से पुलिस का डर निकालने की कोशिश की। परन्तु इसका भी क्या करे कि इधर-उधर निगाह घुमाई तो सब-इंस्पेक्टर जय नारायण किसी अजगर की भांति वहां टहलता नजर आया।

बेदी ने अपना ध्यान जय नारायण से हटाने की कोशिश की। साथ में यह भी सोचा कि तिजोरी की दौलत हाथ में आते ही खामोशी से ऑपरेशन कराकर दिमाग में फंसी गोली निकलवाकर, हमेशा-हमेशा के लिए इस शहर से बहुत दूर चला जाएगा। तब कुएं में जाए यह पुलिसवाला। सारी उम्र उसे ढूंढ़ता ही रहेगा और वह कहीं चैन की जिन्दगी बसर कर रहा होगा। साथ में अंजना होगी, बच्चे होंगे। सुख-चैन और खुशी-ही-खुशी होगी। कोई डर-खौफ नहीं होगा।

वक्त काफी आगे सरक चुका था।

बेदी सोचों में ऐसा डूबा कि हेमन्त लाल के विमान के लैंड होने की घोषणा भी वह नहीं सुन सका। हेमन्त लाल पर उसकी निगाह तो तब पड़ी जब वह लाउंज में खड़ा इधर-उधर देख रहा था। बेदी हड़बड़ाकर फौरन उठ खड़ा हुआ। इधर-उधर निगाह मारी तो सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को दो हवलदारों के साथ परेशानी भरे अंदाज में इधर-उधर टहलते पाया।

बेदी जानता था कि हेमन्त लाल उन लोगों में से नहीं है जो किसी का इन्तजार करे। वह फौरन एयरपोर्ट से होटल टैक्सी में ही रवाना हो जाएगा। बेदी ने खुद को संभाला। अपने पर काबू पाया। सोचों में से सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को बाहर निकाला और सामान्य ढंग से कदम उठाते हुए हेमन्त लाल की तरफ बढ़ा।

❑ ❑

"गुड इवनिंग सर।"

मिस्टर हेमन्त लाल ने फौरन गर्दन घुमाई तो पास में बेदी को खड़े पाया।

"ओह मिस्टर विजय।" हेमन्त लाल मुस्कराया—"कैसे हैं आप?"

"ठीक हूं सर।" बेदी ने हाथ मिलाते हुए कहा—"आप कैसे हैं, यात्रा कैसी रही?"

"बहुत बढ़िया। मैं तो सोच रहा था कि तुम शायद एयरपोर्ट का रास्ता भूल गए हो जो वक्त पर नहीं...।"

"ऐसी बात नहीं सर।" बेदी ने हेमन्त लाल के हाथ से ब्रीफकेस लेते हुए कहा—"दरअसल रास्ते में कम्पनी की कार खराब हो गई। इसी वजह से लेट हो गया। यह तो अच्छा हुआ कि मेरा दोस्त मिल गया। जिसकी कार में मैं यहां पहुंचा। अब उसी की कार में होटल तक जाना होगा सर।"

"डोंट वरी, कम ऑन।"

दोनों बाहर जाने वाले रास्ते पर बढ़ गए।

बेदी का दिल उत्तेजना से धड़क रहा था। वह जानता था कि जो ब्रीफकेस उसके हाथ में है, उसमें सेफ सम्बंधी फाइलें हैं और उनमें से एक फाइल पिशोरीलाल की सेफ की भी है।

"ऑफिस कैसा चल रहा है?" चलते-चलते हेमन्त लाल ने पूछा।

"ठीक सर, सब कुछ ठीक है।" बेदी ने मुस्कराकर कहा।

कुछ कदम आगे बढ़ने के बाद बेदी ने चोर निगाहों से दूसरी तरफ देखा तो दिल तेजी से धड़क उठा। सब-इंस्पेक्टर जय नारायण उसी की तरफ बढ़ा आ रहा था।

"यह इंस्पेक्टर इस तरफ क्यों आ रहा है?" बेदी बड़बड़ा उठा—"मुझे पहचान तो नहीं लिया?"

बेदी और हेमन्त लाल दरवाजे से बाहर निकले। सामने जाने

वाले लोगों की चहल-पहल थी। टैक्सियां आ-जा रही थीं।

"सर, मैं अभी कार लेकर आता हूं।" बेदी ने कहा।

"ओ.के., ब्रीफकेस मुझे दे दो।"

"श्योर सर।" बेदी ने हेमन्त लाल को ब्रीफकेस थमाया और आगे बढ़ गया।

अभी आठ-दस कदम ही आगे बढ़ा था कि पीछे से जय नारायण की आवाज आई—

"मिस्टर विजय।" बेदी जानता था कि वह पीछे है, इसलिए पुकारने पर भी नहीं रुका। चलता रहा।

"मिस्टर विजय बेदी।" इस बार जय नारायण की आवाज करीब से आई।

बेदी के चलने के ढंग पर कोई फर्क नहीं आया।

तभी बेदी के कंधे पर हाथ आया।

बेदी का दिल जोरों से धड़का। वह जानता था कि यह जय नारायण का हाथ है। हाथ कंधे पर आते ही वह फौरन ठिठका और पलटकर सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को देखा।

जय नारायण मुस्कराया।

"मैं आपको कब से पुकार रहा हूं, मिस्टर विजय बेदी।"

"मुझे?" बेदी ने अजीब-सी निगाहों से सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को देखा।

"जी हां, आपको।"

"क्या नाम लिया आपने मेरा?" बेदी के माथे पर बल नजर आने लगे। दिल में घबराहट थी।

"विजय—मिस्टर विजय बेदी।"

"सॉरी इंस्पेक्टर, मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा। वैसे मेरा नाम सतीश सक्सेना है।" बेदी मुस्कराया।

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने उसे तीखी निगाहों से देखा।

"झूठ मत बोलिए आप मिस्टर विजय।"

"इंस्पेक्टर।" बेदी ने भी आवाज में सख्ती भर ली—"आप खामखाह एक शरीफ को तंग ही नहीं कर रहे, उसका वक्त भी खराब कर रहे हैं। मैं सतीश सक्सेना हूं।"

जय नारायण की आंखें सिकुड़ीं।

"कोई और बात करनी है आपको?"

"आपके पास ड्राइविंग लाइसेंस होगा। मैं आपके नाम की तसदीक करना चाहता हूं।"

"मैं ड्राइव करना नहीं जानता। इसलिए लाइसेंस बनवाने की कभी जरूरत ही नहीं पड़ी।"

"पासपोर्ट?"

"एयरपोर्ट पर मैं फ्लाइट लेने नहीं आया। वैसे अभी तक मैंने पासपोर्ट के लिए अप्लाई भी नहीं किया।"

"आप रॉयल सेफ कम्पनी में काम करते हैं?" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को महसूस होने लगा कि उसने गलत बंदे पर हाथ रख दिया है। वह विजय बेदी नहीं।

"इंस्पेक्टर।" बेदी ने जय नारायण को घूरा—"मैं बैंक में काम करता हूं। समझे आप. मैं फिर कह रहा हूं कि आप बेकार में मेरा वक्त खराब कर रहे हैं। शायद आपको किसी और की तलाश है और गलती से मुझे, वह समझ रहे हैं।"

जय नारायण ने हारी हुई मुस्कान के साथ सिर हिलाया।

"हो सकता है, आपकी बात सही हो। सॉरी फार...।"

"कोई बात नहीं।" कहने के साथ बेदी पलटा और आगे बढ़ गया। उसके बाद एक बार भी पीछे नहीं देखा। जबकि उसे महसूस हो रहा था कि जैसे उसकी टांगें कांप रही हों।

पांच मिनट में ही वह एम्बेसेडर कार के साथ हेमन्त लाल के पास था। कार की ड्राइविंग सीट पर शुक्रा मौजूद था।

हेमन्त लाल और बेदी कार की पीछे वाली सीट पर बैठे। शुक्रा ने कार आगे बढ़ा दी।

"सॉरी सर, आपको ऐसी कार में सफर करना पड़ रहा है। अगर ऑफिस वाली कार खराब...।"

"कोई बात नहीं विजय।" हेमन्त लाल मुस्कराया—"मैं इसमें खुश हूं।"

"थैंक्यू सर।"

"वो पुलिस वाला तुमसे क्यों बात कर रहा था?" हेमन्त लाल ने बेदी पर निगाह मारी।

"सर वो तो मेरे पड़ोस में रहता है। पड़ोसी है।" बेदी मुस्कराकर बोला—"कई दिनों बाद उसकी-मेरी मुलाकात हुई।"

जवाब में हेमन्त लाल सिर हिलाकर रह गया।

बेदी मन-ही-मन हैरान था कि सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को उसने इतनी आसानी से कैसे संभाल लिया। जबकि वह अभी तक जय नारायण के प्रति घबराहट महसूस कर रहा था कि आज की बात से जाहिर है कि वह हाथ झाड़कर उसके पीछे है। यानी

कि आसानी से उसका पीछा छोड़ने वाला नहीं।

शुक्रा कार दौड़ाए जा रहा था।

❑ ❑

आधा घंटा यूं ही इधर-उधर की बातों में बीता। जब हेमन्त लाल ने महसूस किया कि कार किसी दूसरे रास्ते पर जा रही है तो वह कह उठा।

"होटल तो इस तरफ नहीं पड़ता मिस्टर विजय।"

"सर।" बेदी फौरन कह उठा—"हम उस होटल में नहीं जा रहे, जहां आप हमेशा ठहरते हैं। इस बार नए होटल में आपका कमरा बुक किया गया है। बहुत शानदार होटल है सर, अमेरिकन कम्पनी ने बनाया है।"

"कब बना यह होटल—मैंने तो नहीं सुना।"

"कमाल है सर। इस नए होटल के बारे में तो सब जानते हैं। अखबारों में अक्सर इसका जिक्र आता रहता है। मिस्टर मल्होत्रा ने तो खासतौर से मुझे कहा था कि आपके लिए रूम, नये होटल में बुक किया जाए।"

"मुझे तो इस बारे में कोई खबर नहीं।" हेमन्त लाल ने हैरानी जाहिर की।

शुक्रा कार दौड़ाए जा रहा था।

"ये तुम मुझे कहां ले आए मिस्टर विजय?"

बेदी के गांव वाले मकान के बाहर शुक्रा ने कार रोकी तो बेदी और हेमन्त लाल बाहर निकले। आस-पास देखने पर हेमन्त लाल कह उठा था।

"होटल में सर।" बेदी ने सब्र के साथ कहा।

"कहां है होटल?" हेमन्त लाल ने हैरानी से, अंधेरे में उसे देखा।

"आपके सामने, यह।"

हेमन्त लाल ने घूरकर बेदी को देखा और सख्त स्वर में कह उठा।

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है। तुम मुझे यहां ले आए और कहते हो कि ये शानदार होटल है।"

"आपके लिए इस वक्त इसी होटल में कमरा बुक है। भीतर चलिए।" बेदी की आवाज बदल चुकी थी।

"मिस्टर विजय, मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम क्या कर रहे हो? मैं रॉयल सेफ कम्पनी का जनरल मैनेजर हूं। तुम्हारी यह हरकत, तुम्हारी नौकरी ले सकती है और...।"

"अन्दर चलो।"

हेमन्त लाल ने हैरानी से बेदी को देखा। बेदी का यह व्यवहार उसकी समझ से पूरी तरह बाहर था। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है?

"तुम...।" हेमन्त लाल ने कहना चाहा।

बेदी ने रिवॉल्वर निकालकर हेमन्त लाल को झलक दिखाई।

हेमन्त लाल की आंखें हैरानी से फट गईं।

"ये-ये क्या?"

"ये आपका अपहरण है।"

"अपहरण?" हेमन्त लाल हक्का-बक्का रह गया।

"हां, सिर्फ कुछ देर के लिए, अगर आप मेरी बात मानते रहे, नहीं तो कुछ भी हो सकता है।" बेदी का स्वर कठोर था।

हेमन्त लाल हैरानी से उसके हाथों में दबी रिवॉल्वर को देख रहा था।

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है, तुम...।"

"मेरा दिमाग बिल्कुल ठीक है। आपसे भी ज्यादा ठीक। जो मैं कहता हूं वही करो, भीतर चलो।"

"अच्छी बात है लेकिन मेरा अपहरण करके तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। यह ठीक है कि कम्पनी में मेरा ओहदा बहुत बड़ा है। लेकिन मेरे पास ऐसी कोई रकम नहीं है, जो कि तुम मेरा अपहरण करके ले सको। मैं...।"

"ये बातें भीतर जाकर करेंगे, चलो।"

हेमन्त लाल के पास इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था कि वह बेदी की बात माने। वह अपना ब्रीफकेस थामे उसके साथ चल पड़ा। बेदी ने रिवॉल्वर जेब में डाल ली।

शुक्रा उसके साथ था।

तब तक कार की आवाज सुनकर अंजना दरवाजा खोल चुकी थी। भीतर बल्ब मध्यम-सी रोशनी फैला रहा था। हेमन्त लाल ने अंजना को देखा, लेकिन बोला कुछ नहीं। यह समझने की कोशिश कर रहा था कि बात क्या है? विजय उससे क्या चाहता है?

"वहां बैठो, सामने कुर्सी पर।" बेदी ने सख्त स्वर में कहा।

हेमन्त लाल ने उलझन-भरी निगाहों से, बेदी को देखा।

तभी शुक्रा आगे बढ़ा और हेमन्त लाल की बांह पकड़कर उसे कुर्सी के पास लेता चला गया और उसे कुर्सी पर लगभग जबरदस्ती ही बिठा दिया।

"यह तुम ठीक नहीं कर रहे विजय, मैं...।"

"चुप रहो।" बेदी ने दांत भींचकर कहा।

हेमन्त लाल समझ रहा था कि वह फंस चुका है।

"ब्रीफकेस खोलो।" बेदी का स्वर कठोर ही था।

"क्या?"

"जो कहा है वही करो।" बेदी दांत किटकिटाकर कह उठा।

हेमन्त लाल ने खामोशी से ब्रीफकेस खोला। मध्यम-सी रोशनी में ब्रीफकेस में पड़ी पतली-पतली फाइलें और अन्य सामान नजर आया।

फाइलों को देखते ही, तीनों की आंखों में चमक आ गई।

बेदी फौरन आगे बढ़ा और ब्रीफकेस में नजर आ रही फाइलें उठा लीं। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। मेहनत कामयाब हो गई थी। अब वह बच जाएगा। पिशोरीलाल की तिजोरी खुल जाएगी। डॉक्टर वधावन को उसकी फीस मिल जाएगी और वह ऑपरेशन करके उसके दिमाग में फंसी गोली निकाल देगा।

बेदी जल्दी से फाइलों को देखने लगा।

फाइलों के ऊपर ही नामों की स्लिप लगी थी।

एक फाइल पर पिशोरीलाल के नाम की स्लिप भी थी।

"मिल गई।" बेदी के होंठों से कांपता स्वर निकला—"पिशोरीलाल की तिजोरी की फाइल मिल गई।"

"स...सच!" अंजना खुशी से चीखी और पीछे से जाकर बेदी को भींच लिया।

शुक्रा के चेहरे पर शुक्र के भाव उभरे और चेहरे पर मुस्कान।

हेमन्त लाल नहीं समझ पाया कि यह सब क्या हो रहा है, क्यों खुश हो रहे हैं।

"कुछ मुझे भी तो बताओ कि क्या हो रहा है? तुम लोग क्या करने जा रहे हो?" हेमन्त लाल के होंठों से निकला।

"सर।" बेदी का चेहरा चमक रहा था—"कुछ देर और फिर आप खुद ही समझ जाएंगे कि क्या हो रहा है। शुक्रा तुम इसका ध्यान रखना, अंजना तुम मेरे साथ आओ।"

❑ ❑

वह पतली-सी फाइल मात्र छः पेजों की थी। बेदी अंजना

के साथ जल्दी से बख्तरबंद ट्रक में चढ़ा और तिजोरी के पास जा पहुंचा। अंजना के हाथ में टार्च थी।

बेदी ने जल्दी से फाइल का वह पेज खोला जिस पर कम्बीनेशन होता था। उसने नम्बर देखा और सामने मौजूद पिशोरीलाल की तिजोरी के नम्बर मिलाते हुए उसे खोलने लगा।

एक मिनट, दो मिनट, तीन मिनट बीत गए।

लेकिन तिजोरी नहीं खुली।

बेदी के चेहरे पर पसीना झलक उठा। अजीब-सी झुंझलाहट उस पर सवार हो गई।

"अंजना!" बेदी के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"क्या हुआ?"

"तिजोरी नहीं खुल रही।"

"यह कैसे हो सकता है?" अंजना जैसे तड़प उठी।

"तुम्हारे सामने ही तो हो रहा है।" बेदी खीझ भरे स्वर में कह उठा।

"यह फाइल पिशोरीलाल की तिजोरी की ही है ना?"

बेदी ने फौरन फाइल के बाहर लगी स्लिप देखी, नाम पढ़ा—

"हां, फाइल तो पिशोरीलाल की ही है।"

"फिर तो तिजोरी खुलनी चाहिए।"

बेदी ने फिर कोशिश की, परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ।

"कहीं-न-कहीं गड़बड़ है।" बेदी गुस्से में उठता हुआ बोला—"हेमन्त लाल से पूछना पड़ेगा।"

दोनों बख्तरबंद से उतरकर वापस कमरे में पहुंचे।

"क्या रहा?" शुक्रा ने दोनों को देखते ही पूछा।

उसकी बात का जवाब न देकर, बेदी दांत भींचे, कुर्सी पर बैठे हेमन्त लाल के पास पहुंचा—

"यह फाइल पिशोरीलाल की है।" बेदी ने कठोर स्वर में कहा—"फाइल के बाहर पिशोरीलाल के नाम की स्लिप लगी है, लेकिन इसमें लिखे नम्बर से, पिशोरीलाल की तिजोरी क्यों नहीं खुल रही?"

हेमन्त लाल चौंका।

"तिजोरी, कहां है तिजोरी?"

"सवाल मत पूछो, जो मैंने कहा है, उसका जवाब दो।" बेदी गुर्रा उठा।

हेमन्त लाल ने गहरी निगाहों से बेदी को देखा।

"अब समझा, तुम क्या कर रहे हो। तुमने पिशोरीलाल की तिजोरी चोरी कर ली और अब नम्बर हासिल करके उसे खोलकर उसमें रखा कीमती सामान ले लेना चाहते हो। तिजोरी के चोरी होने की खबर मुझे मिली थी। लेकिन मुझे हैरानी है कि तिजोरी चोरी करने वाले तुम हो।"

"मालूम हो गया ना?" बेदी कड़वे स्वर में कह उठा।

"तुम बहुत गलत काम कर रहे हो विजय। मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा कि...।"

"विश्वास?" बेदी गुस्से में कह उठा—"तुम भी यही काम करते और मुझे भी विश्वास नहीं होता, अगर तुम्हारे दिमाग के बीच वाले हिस्से में गोली फंसी होती और ऑपरेशन द्वारा, सही-सलामत उसे निकलवाने में बारह लाख लगता, जो कि तुम्हारे पास न होता और तुम्हें मालूम होता कि दो महीनों में तुमने मर जाना है। मैं पूछता तुमसे, जब मौत को हर पल साथ लिए तुम घूम रहे होते। जिस तरह आज चमकती दुनिया मुझे मौत के डर से काली स्याह लग रही है, उस तरह तुम्हें भी ऐसा ही महसूस होता तो तब मैं पूछता तुमसे। जिस इन्सान को पता हो कि महज बारह लाख की कमी की खातिर, साठ दिन के भीतर उसने मर जाना है तो तब मैं पूछता तुमसे कि क्या तुम अपनी जान बचाने के लिए चाहे कैसे भी बारह लाख का इन्तजाम न करते। अपनी जिन्दगी को बचाने के लिए, इन्सान जो-जो कर सकता है, वही मैं कर रहा हूं। मुझे मरने से बहुत डर लगता है। मैं मरना नहीं चाहता। इसलिए बारह लाख का इन्तजाम करने के लिए हाथ-पैर मार रहा हूं। तुम बोलते हो कि तुम्हें विश्वास नहीं आ रहा। इसलिए नहीं आ रहा कि तुम्हारे दिमाग में गोली नहीं फंसी। तुम मरने नहीं जा रहे। अगर तुम्हारे साथ भी यही सब हुआ होता और मेरी जगह पर खड़े होते तो विश्वास आता कि जब जान पर बन आती है तो, तब जान ही सबसे कीमती चीज होती है और उसे बचाने के लिए इन्सान कुछ भी कर सकता है।"

हेमन्त लाल, बेदी को देखे जा रहा था।

"देखता क्या है, मेरी बात समझ में नहीं आई क्या?" बेदी चीखा।

"तुम्हारे दिमाग में गोली फंसी है?" हेमन्त लाल का स्वर गम्भीर था।

"हां और दो महीनों में मरने वाला हूं, अगर गोली न निकाली गई तो। इसके लिए मुझे बारह लाख की जरूरत है। बोलो देते हो बारह लाख। छोड़ देता हूं यह सब हरकतें।" गुस्से से बेदी का चेहरा लाल हो रहा था।

"मेरे पास इतनी बड़ी रकम नहीं है।" हेमन्त लाल का स्वर गम्भीर था।

"मैं जानता हूं किसी के पास भी नहीं है।" बेदी चिल्ला उठा—"सब खाली हैं, भूखे हैं। कोई यह भी कहने को तैयार नहीं कि उसके पास बारह लाख हैं, लेकिन वह देगा नहीं। क्योंकि तुम लोगों के दिमाग में गोली नहीं फंसी। तुम लोग मौत के करीब नहीं हो। तुम लोग मरने वाले नहीं हो। इस दहशत से दूर हो। लेकिन मैं तो मौत की दहशत के समन्दर में डूबा हुआ हूं और वहां से निकलने के लिए मुझे जरूरत है बारह लाख की। हर हाल में मुझे बारह लाख का इन्तजाम करना है ताकि मैं सुख से भरी लम्बी जिन्दगी जी सकूं।" कहकर बेदी गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

हेमन्त लाल गम्भीर निगाहों से उसे देख रहा था।

"मुझे नहीं मालूम था कि तुम किस स्थिति से गुजर रहे हो?"

"अब तो मालूम हो गया ना?" बेदी पुनः चीखा।

"लेकिन विजय...।" हेमन्त लाल के स्वर में गम्भीरता थी—"मान लो तुमने बारह लाख का इन्तजाम करके अपने दिमाग में फंसी गोली निकलवा भी ली, तो उस स्थिति में तुम्हें कानून छोड़ेगा? तुम अपराधी बन चुके होगे। कई गलत काम कर चुके...।"

"तो क्या मरने दूं अपने को?" बेदी दांत पीस कर कह उठा—"खुली आंखों से मौत के कुएं में छलांग लगा दूं। मैं ठीक हो गया, उसके बाद मुझे कानून पकड़ लेगा तो क्या हुआ, दस-बीस साल के लिए जेल में भेज देगा तो क्या हुआ। जिन्दा तो रहूंगा। अपनी जिन्दगी तो बचा ली मैंने।"

हेमन्त लाल उसे देखता रहा।

शुक्रा के चेहरे पर दुख और व्याकुलता नजर आ रही थी।

"विजय!" अंजना कह उठी—"इसके साथ बातों में वक्त बरबाद मत करो। इससे पूछो कि पिशोरीलाल की फाइल होने पर भी, उसके नम्बरों से वह तिजोरी क्यों नहीं खुल रही।"

हेमन्त लाल ने अंजना पर निगाह मारी।

"जवाब दो।" बेदी सिर से पैर तक गुस्से में डूबा हुआ था।

"फाइल मुझे दो।" हेमन्त लाल गम्भीर ही था। अपने पर काबू पा चुका था।

बेदी ने आगे बढ़कर फाइल उसे थमाई।

हेमन्त लाल ने फाइल खोलकर, कम रोशनी में उस पर नजर मारी।

"तुम!" हेमन्त लाल ने उसे देखा—"किस पिशोरीलाल की बात कर रहे हो?"

"किस?" बेदी चौंका—"किस का क्या मतलब?"

"पिछले दिनों हमारी कम्पनी ने दो पिशोरीलाल नाम के व्यक्तियों को सेफे बेचीं। एक तुम्हारी वाली ब्रांच से इस नाम पर तिजोरी बिकी थी। दूसरी इसी नाम पर दूसरी ब्रांच से...।"

"मैं...!" बेदी को अब मामला समझ में आया—"उस पिशोरीलाल की तिजोरी की बात कर रहा हूं, जो मेरे वाले ऑफिस ने उसे बेची थी। जो मैं ही बेचकर आया था, तिजोरी को।"

"यह फाइल दूसरे पिशोरीलाल की है। इस पर लिखा पता देख लो।" हेमन्त लाल ने फाइल उसकी तरफ की।

बेदी ने उस पर लिखा पिशोरीलाल का पता देखा, जो कहीं और का था।

"तो दूसरे पिशोरीलाल की फाइल कहां है?" बेदी ने झल्लाकर कहा।

"मेरे ख्याल में हैड-ऑफिस से ही गलती से नामों के फेर में फाइल बदल गई है।" हेमन्त लाल ने कहा—"तुम्हारे वाले पिशोरीलाल की फाइल दूसरे ऑफिस में पहुंच गई है और यह फाइल दूसरे ऑफिस में पहुंचने वाली थी।"

"कौन से दूसरे ऑफिस में वह फाइल पहुंची है।"

"ग्रीन पार्क वाले ऑफिस में।"

"मुझे वो फाइल अभी चाहिए मिस्टर हेमन्त लाल, मैं...।"

"ऑफिस बंद हो चुका होगा। रात हो गई...।"

बेदी ने गुस्से में डूबे रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

"मैं बाहर का बंदा नहीं हूं। तुम्हारे ऑफिस का ही बंदा हूं।" बेदी ने दांत भींचकर कहा—"ऑफिस बंद हो चुका है तो खोला भी जा सकता है। तुम ग्रीनपार्क वाली ब्रांच के मैनेजर को फोन करो। वह ऑफिस पहुंचेगा। वहां से वह फाइल मुझे देगा। कह सकते हो कि गलत फाइल उसके पास पहुंच गई। जिसकी इसी

वक्त जरूरत है। आप कम्पनी के जनरल मैनेजर हैं। आपसे ज्यादा सवाल करने की वह हिम्मत नहीं करेगा।''

''तुम रिवॉल्वर के दम पर यह काम कराना चाहते हो विजय?''

''हां और तुम करोगे। नहीं तो मरोगे। मैं तो दो महीने बाद मरूंगा, लेकिन तुम पहले ही मरोगे।'' बेदी चीखा।

हेमन्त लाल देख रहा था कि बेदी किस कदर पागल हुआ पड़ा है।

''फोन कहां है?'' हेमन्त लाल ने शांत स्वर में कहा।

''फोन यहां नहीं है।'' शुक्रा कह उठा—''कार में बिठाकर यहां से दो किलोमीटर दूर पैट्रोल पम्प है। वहां से तुम्हें फोन करा देते हैं। लेकिन किसी तरह की चालाकी या होशियारी दिखाने की कोशिश मत करना।''

सिर हिलाते हुए हेमन्त लाल उठ खड़ा हुआ।

हेमन्त लाल ने ग्रीन पार्क की कम्पनी वाले मैनेजर को फाइल की बाबत फोन कर दिया था। बेदी उसे वापस अंजना के पास छोड़ गया। पहरे के तौर पर शुक्रा को भी हेमन्त लाल के पास छोड़ा और खुद कार पर ग्रीन पार्क की ब्रांच की तरफ रवाना हो गया, वहां उस ब्रांच का मैनेजर पहुंचकर, ऑफिस खोलकर, उस पिशोरीलाल की फाइल उसके हवाले करने वाला था।

रात के बारह के ऊपर का वक्त हो रहा था।

☐ ☐

तब करीब तीन बजने जा रहे थे, जब बेदी लौटा। अंजना बाहर ही टहलती हुई, उसके इन्तजार में बेचैन हुई जा रही थी। बेदी के यहां पहुंचते ही वह उसकी तरफ दौड़ी।

बेदी कार से बाहर निकला।

''विजय वो फाइल...।'' अंजना ने पूछना चाहा।

''मिल गई।''

''ओह विजय!'' अंजना झपट्टा मारकर बेदी से जा चिपकी। उसे चूमने लगी। उसके दोनों हाथ बेदी के शरीर के हर हिस्से पर फिर रहे थे। कई पलों तक अंजना ने उसे नहीं छोड़ा।

''प्लीज अंजना।'' बेदी कह उठा—''मुझे तिजोरी के पास जाने दो।''

उसी वक्त अंजना अलग हो गई। बेदी भीतर प्रवेश करता चला गया। अंजना की प्यारभरी चूमा-चमटी में बेदी यह महसूस न कर सका कि अंजना ने उसकी जेब से रिवॉल्वर निकाल ली है। बेदी के भीतर जाने पर अंजना की आंखों में जंगली बिल्ली जैसी चमक आ गई। हाथ में दबी रिवॉल्वर को उसने अपने कपड़ों में छिपाया और भीतर प्रवेश करती चली गई।

शुक्रा सतर्कता से हेमन्त लाल की रखवाली में व्यस्त था। दोनों की निगाहें उसकी तरफ उठीं।

''फाइल मिल गई है शुक्रा। हेमन्त साहब को बांध दो।'' बेदी ने कहा।

शुक्रा ने कहीं—वहीं से रस्सी तलाश की और हेमन्त लाल को बांधने लगा।

''विजय।'' हेमन्त लाल ने गम्भीर स्वर में कहा—''यह सब तुम ठीक नहीं कर रहे। अभी भी अपने कदमों को रोक लो। वरना एक दिन ऐसा भी आएगा कि तुम अपने कदमों को वापस लौटाना चाहोगे, लेकिन लौटा नहीं पाओगे।''

तब तक अंजना भी पास आ चुकी थी।

''सर।'' विजय की आवाज में ठहराव था—''मैं नहीं जानता कि आने वाले वक्त में क्या होगा। हो सकता है आप ठीक कह रहे हों या फिर आपका कहा गलत भी हो सकता है। लेकिन इस वक्त मैं पीछे नहीं हट सकता। मेरी मजबूरी से आप बाखूबी वाकिफ हो चुके हैं।''

''मैं सब समझता हूं लेकिन तुम...।''

शुक्रा बंधन कसकर सीधा हुआ।

''चलो।'' शुक्रा बोला।

''सॉरी सर।'' विजय बोला—''मेरी वजह से आपको जो तकलीफ पहुंची। उसके लिए।''

''कम ऑन विजय।'' अंजना उसकी बांह खींचती हुई ले गई।

शुक्रा ने वह छोटी-सी टॉर्च थामी थी। ट्रक के बाहर ही वह खड़ा रहा था। अंजना, विजय के साथ ट्रक में चढ़ी और वे तिजोरी के पास जा पहुंचे।

''खोलो विजय।'' अंजना का स्वर उत्तेजना से कांप रहा था।

"शुक्रा।" बेदी फाइल खोलता हुआ बोला—"टॉर्च की रोशनी इधर करना।"

शुक्रा ने टॉर्च की रोशनी उनकी तरफ करते हुए कहा—"छोटी टॉर्च है। रोशनी कम है, कहो तो ऊपर आ जाऊं।"

"ऐसे ही ठीक है। तुम रोशनी इसी तरफ रखो।" कहने के साथ ही बेदी ने फाइल खोली और वो पेज निकाला, जिस पर तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर मौजूद था।

नम्बर को देखते हुए बेदी के हाथ तिजोरी के कम्बीनेशन पर चलने लगे।

"तिजोरी खुल रही है विजय?" अंजना ने जल्दी से पूछा।

"हां।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"नम्बर लग रहे हैं।"

"जल्दी खोलो।" अंजना की बेसब्री सिर पर सवार होकर नाच रही थी।

उस कम रोशनी में सिर्फ एक मिनट लगा तिजोरी खुलने में।

कम्बीनेशन नम्बरों को मिलाने के बाद, बेदी ने हैंडिल दबाकर उसे नीचे किया और खींचा तो उसका दरवाजा खुलता चला गया।

अंजना के होंठों से खुशी भरी चीख निकल गई।

शुक्रा की टॉर्च की रोशनी, खुली तिजोरी में पड़ी।

तीनों की आंखें फैलती चली गईं।

तिजोरी के भीतर हर जगह में कीमती जेवरात भरे पड़े थे। कुछ खानों में तो जेवरातों को ठूस-ठूसकर कर भरा गया था। कुछ तो ऐसे भी थे जो अंधेरे में चमक मार रहे थे।

"हे भगवान!" शुक्रा के होंठों से निकला—"विजय तुमने कभी इतनी दौलत देखी है?"

और बेदी उसके दिमाग में तो सिर्फ एक ही बात टकरा रही थी कि वह चोर है। ये सब जेवरात उसने चोरी किए हैं। किसी का हक मारा है। बहुत गलत काम किया है उसने।

अंजना तो जैसे तिजोरी में रखे जेवरातों पर कूद पड़ी। उसमें रखे जेवरात-गहने निकाल-निकालकर पहनने लगी। वह पागल-सी हो रही थी। इस वक्त उसकी सांसें किसी सीटी की तरह निकल रही थीं।

शुक्रा आंखें फैलाए सारे जेवरातों को देखे जा रहा था।

बेदी अजीब-सी निगाहों से अंजना को देखे जा रहा था।

अंजना का दौलत से इतना ज्यादा प्यार उसे अच्छा नहीं लग रहा था। जाने क्यों उसकी आंखों में वितृष्णा के भाव उभरने लगे। अंजना सेफ से निकालकर हार, कंगन, सोने की अंगूठियां और भी कई तरह के जेवरातों को अपने शरीर पर लाद चुकी थी। उसके बाद वह बेदी की तरफ घूमी और दोनों हाथ हिलाते हुए इठला कर बोली।

"मैं कैसी लग रही हूं डियर?"

बेदी ने नापसन्दगी से भरी निगाहों से उसे देखा।

"मेरे ख्याल से तुम यह भूल रही हो कि अभी सजने-संवरने का वक्त नहीं आया।" बेदी बोला।

"क्यों?" अंजना के होंठों से निकला।

"हमें यहां से निकलना है। भीतर डॉक्टर वधावन, पिशोरीलाल और हेमन्त लाल कैद हैं। यह जगह जितनी जल्दी छोड़ दें उतना ही अच्छा है। वधावन को साथ ले चलना है। उससे ऑपरेशन करवाना है।"

"अब क्या दिक्कत है ऑपरेशन होने में।" अंजना हंसी।

तभी पॉवर फुल टॉर्च की रोशनी में वे तीनों चमक उठे।

उन्होंने चौंक कर रोशनी की तरफ देखा। परन्तु टॉर्च की तीव्र रोशनी के पीछे खड़ा चेहरा उन्हें नजर नहीं आया। वे बुत से बने रह गए। दिल जोरों से धड़क उठा।

बेदी के दिमाग में सिर्फ एक ही नाम उभरा सब-इंस्पेक्टर जय नारायण।

"मजा आ गया विजय भाई। वास्तव में मजा आ गया। इस तिजोरी में पड़े गहनों की कीमत डेढ़-दो करोड़ से कम नहीं। वैसे मुझे आशा नहीं थी कि तुम कामयाब हो जाओगे। लेकिन जोड़-तोड़ लगाकर हो ही गए। तुम्हारी मेहनत भी खराब नहीं गई और मेरी मेहनत भी, क्योंकि मैं हर पल तुम लोगों पर नजर रखे हुए था।"

दो पल के लिए वहां सकते में डाल देने वाला सन्नाटा छा गया।

"बिजली वाले तू...?" ट्रक के पास ही खड़े शुक्रा के होंठों से फटा-फटा-सा स्वर निकला।

"हां मैं।" इस बार राघव के जोरों से हंसने की आवाज आई।

"राघव!" बेदी को जैसे होश आया—"य...यह तू क्या कर रहा है।"

"क्या गलत कर रहा हूं विजय।" राघव की आवाज में व्यंग्य के भाव थे।

"तू तो हमारा दोस्त है।" बेदी अभी तक अपने पर काबू नहीं पा सका था—"तू हम पर नजर रख रहा था, क्यों?"

"क्यों?" राघव का जहरीला स्वर वहां गूंजा—"इसी वक्त के लिए नजर रख रहा था कि तुम लोग तिजोरी खोलो और मैं सब कुछ समेट कर करोड़पति बन जाऊं। फिर...।"

"राघव!" शुक्रा दहाड़ उठा—"बकवास मत कर कुत्ते।"

"चिल्ला मत।" राघव का स्वर खतरनाक हो उठा—"वरना तेरी लाश यहीं पड़ी होगी।"

"तू मारेगा मुझे।" शुक्रा जैसे पागल हो रहा था।

"हां।"

"ले मार।" शुक्रा पागल हुआ उसकी तरफ बढ़ा—"मार देखता हूं तू...।"

"शुक्रा।" तभी अंजना का खतरनाक स्वर वहां गूंजा।

सबकी निगाहें अंजना की तरफ उठीं।

यह बेदी और शुक्रा के लिए दूसरा जबरदस्त झटका था।

अंजना के हाथ में रिवॉल्वर दबी थी। जिसका रुख शुक्रा की तरफ था। अंजना के चेहरे पर जलजले के भाव थे। वास्तव में इस समय वह दौलत के नशे में इतनी चूर थी कि कुछ भी कर सकती थी।

"आगे मत बढ़ना शुक्रा।" अंजना भिंचे स्वर में कह उठी।

"भाभी!" शुक्रा को अपना सिर घूमता-सा महसूस हुआ।

"ठीक कहा तुमने। कभी गलत नहीं कहा। भाभी ही हूं मैं तुम्हारी। लेकिन बीवी विजय की नहीं। राघव की हूं। राघव भी तो तुम्हारा दोस्त है। उसकी पत्नी भी तुम्हारी भाभी ही लगी शुक्रा।" अंजना जहरीले स्वर में कह उठी।

शुक्रा के मुंह से बोल न फूटा।

"शुक्रा।" बेदी के होंठों से थरथराता स्वर निकला—"यह सब क्या हो रहा है?"

"माई डार्लिंग विजय!" अंजना खिलखिला उठी—"मुझसे पूछो, मैं बताती हूं, यह सब क्या हो रहा है।"

"होश में आओ अंजना।" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"तुम...।"

"होश में आ चुकी हूं, तभी तो यह सब कर रही हूं।" अंजना

ने रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाया, अभी भी वह गहनों से लदी हुई थी—"पिशोरीलाल के करोड़ों के जेवरात सिर्फ मेरे और डियर राघव के हैं। तुम खाली रह गए डार्लिंग विजय। फिर भी जाते-जाते यह खाली तिजोरी तुम्हारे लिए छोड़ जाएंगे। मैं तो कब से इस ताक में थी कि तिजोरी खुले और मैं दौलत लेकर फुर्र उड़ जाऊं।"

"दगाबाज, तुम...।" बेदी ने गुस्से में अंजना पर झपटना चाहा।

अंजना फौरन तिजोरी के पीछे हो गई।

टॉर्च की रोशनी में सब साफ दिख रहा था।

"खबरदार जो एक कदम भी आगे बढ़ाया। गोली चला दूंगी। माना कि निशाना लगाना नहीं आता। लेकिन छः गोलियां रिवॉल्वर में हैं। एक तो ठीक जगह लगेगी।" अंजना गुर्रा उठी—"चलो ट्रक से नीचे उतरो, जल्दी करो, वरना...।"

बेदी काठ के बुत की तरह खड़ा रहा।

"गोली चलाऊं।" अंजना की आवाज में दरिन्दगी भर आई।

"विजय!" शुक्रा ने ऊंचे स्वर में कहा—"ट्रक से नीचे आ जाओ।"

बेदी ने गहरी सांस ली और कांपती टांगों से आगे बढ़ता ट्रक से नीचे आ गया।

"अंजना।" बेदी कांपते स्वर में बोला—"तुम तो मेरी हो। हमने साथ जीने-मरने की कसमें...।"

"पागल—पागल हो तुम। क्रेक हो। तुममें बचा ही क्या है जो मैं तुमसे प्यार करूं। सारी जिन्दगी तुम्हारे साथ बिताऊं। तुम सिर्फ जिन्दा लाश हो। तुम्हारे दिमाग में गोली फंसी है। कभी भी तुम मर सकते हो। गोली तुम्हारे दिमाग को नुकसान पहुंचा सकती है। तुम पागल हो सकते हो और वैसे भी तुम इतने कीमती नहीं कि तुम पर बारह लाख जैसी बड़ी रकम खर्च की जाए। किसलिए की जाए कि तुम मेरे साथ शादी करो। मैं तुम्हारे बच्चे पैदा करूं। इस काम के लिए राघव क्या बुरा है। उस पर बारह लाख तो खर्च नहीं करना पड़ेगा। बारह लाख भी बच जाएगा और मैं उसके बच्चे भी पैदा कर दूंगी। हमारी गृहस्थी में कोई दुख नहीं होगा।"

"कमीनी!" बेदी दांत किटकिटा उठा।

"मान गए कि औरत जब बेशर्मी पर उतरती है तो लज्जा

में मर्दों को भी मुंह छिपाना पड़ता है।" शुक्रा घृणा भरे स्वर में कह उठा—"तू तो शर्मों की हदो-हद पार कर गई। लोग गिरते और उठते तो रहते ही हैं। लेकिन तू तो इतना गिर गई कि अब चाहकर भी तेरे को नहीं उठाया जा सकता।"

"गिरने-उठने की बात तुम क्या जानो।" अंजना खिलखिला उठी—"अब मैं इतना ऊपर उठ चुकी हूं कि तुम जैसे फकीरों के हाथ मुझ तक पहुंच ही नहीं सकते। मेरे गिरेपन को मेरी ऊंचाई कहो। मैं...।"

"अंजना।" तभी राघव का स्वर गूंजा—"तुम वक्त बरबाद कर रही हो।"

"हां, अब हमें यहां से निकल चलना चाहिए। दिन निकलने वाला है।" अंजना कह उठी—"इन दोनों को संभालो। मरो हुओ को क्या मारना। हाथ-पांव चलाए तो गोली मार दो। नहीं तो बेहोश कर देना।"

"इन दोनों को पेट के बल नीचे लेटने को कहो।"

अंजना की रिवॉल्वर दोनों की तरफ गई।

"नीचे लेटो। पेट के बल, जल्दी।" अंजना ने खतरनाक लहजे में कहा।

शुक्रा दांत पीसकर रह गया।

बेदी दयनीय निगाहों से अंजना को देख रहा था और सोच रहा था सिर्फ बारह लाख के बारे में।

दोनों नीचे लेटे, पेट के बल। राघव के हाथ में थमी पावर फुल टॉर्च उन दोनों की तरफ हुई और अगले ही पल वह उनकी तरफ बढ़ने लगा। टॉर्च की तीव्र रोशनी के पीछे नजर नहीं आ रहा था कि उसके हाथ में क्या है। पास पहुंचकर वह नीचे झुका और बारी-बारी दो जबरदस्त वार उन दोनों के सिरों पर हुए।

दोनों के होंठों से पीड़ा भरी चीखें निकलीं और बेहोश होते चले गए।

"यह लो।" ट्रक के नीचे पास आकर राघव ने उसे तिरपाल के कपड़े का बोरा दिया—"सारे जेवरात इसमें भर लो और रिवॉल्वर मुझे दे दो।"

अंजना ने बोरा थामा और रिवॉल्वर उसे देकर तिजोरी के पास पहुंची और वहां मौजूद सारे बोरों को तिरपाल वाले बोरे में भरने लगी। तिजोरी खाली करने के बाद पहन रखे सारे जेवरातों को भी उसने बोरे में डाला और बोरे की डोरी खींचकर

उसका मुंह बंद कर दिया।

"आओ।" राघव का स्वर उसके कानों में पड़ा।

अंजना बोरा खींचते हुए ट्रक के किनारे पर पहुंची, फिर नीचे कूद गई। राघव ने हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर बेहोश हुए बेदी और शुक्रा के पास फेंक दी।

"रख लेते।" अंजना कह उठी।

"क्या जरूरत है। हम शरीफ लोग हैं। हमें अपनी जिन्दगी शराफत से बितानी है।" कहने के साथ ही राघव ने अंजना को बांहों में लिया। होंठों पर तगड़ी 'किस' की उसके बाद, उसने बोरा उठाकर कंधे पर लादा और फिर अंधेरे में गुम होते चले गए।

❑ ❑

भोर का उजाला फैलने के साथ ही शुक्रा को होश आया। सिर पीड़ा से फटा जा रहा था। चक्कर से आ रहे थे। कुछ पल तो याद ही न आया कि क्या हुआ था। फिर धीरे-धीरे याद आने लगा। सिर से निकलने वाले खून में अभी भी चिपचिपाहट थी। खून की एक लाइन गालों तक, लम्बी होकर सरक आई थी।

शुक्रा ने पास पड़े बेदी को देखा, उसे हिलाया।

"विजय, विजय।"

परन्तु बेदी के शरीर में कोई हरकत न हुई।

शुक्रा किसी तरह उठा। पास ही खड़े ट्रक को पकड़कर संभाला। नहीं तो गिर जाता। ट्रक के भीतर नजर मारी तो खाली तिजोरी ही देखने को मिली। सिर में उठने वाली पीड़ा के कारण रह-रहकर चक्कर आ रहे थे। परन्तु वह खुद को किसी तरह संभाले रहा।

इस दौरान वह किसी तरह मकान के भीतर का भी चक्कर लगा आया। हेमन्त लाल उसी तरह कुर्सी पर बंधा नींद में था। उधर डॉक्टर वधावन और सेठ पिशोरीलाल बंधे बुरे हाल में थे।

शुक्रा वापस आया। यूं तो वह खुद भी चलने के काबिल नहीं था। लेकिन यहां से निकल जाना जरूरी था। कोई नई मुसीबत आ सकती थी। उसने किसी तरह बेहोश बेदी को उठाया। कंधे पर लादा और मकान के बाहर खड़ी एम्बेसेडर की पीछे वाली सीट पर डाला। फिर अजीब-सी निगाहों से मकान को देखा और कार को ड्राइव करते आगे बढ़ गया।

आंखों के सामने रह-रहकर अंजना और राघव के चेहरे नाच रहे थे।

शहर पहुंचते-पहुंचते बेदी को होश आ गया। उसके होंठों से पीड़ा भरी कराहटें निकलने लगी। शुक्रा ने कार को सड़क के किनारे रोका और पीछे वाली सीट पर लेटे बेदी को संभाला।

"विजय, अब कैसा है तू?"

बेदी ने पीड़ा से भरी आंखें खोलकर उसे देखा।

"शुक्रा।"

"हां, मैं हूं, तेरा यार। कैसी है तबीयत तेरी, ठीक है ना?"

बेदी ने आंखें बंद कर ली। कई पलों बाद आंखें खोलकर शुक्रा को देखा।

"हम कहां हैं?"

"शहर में प्रवेश करने जा रहे हैं।"

"वो तिजोरी-अंजना-राघव?"

"वो दोनों हरामजादे माल ले भागे हैं। इस वक्त एक-दूसरे की गोदी में बैठे, प्यार की पींगे बढ़ा रहे होंगे।" शुक्रा कड़वे स्वर में कह उठा—"वो तो हमें बेहोश करते ही, माल लेकर दफा हो गए होंगे।"

"बहुत बुरा हुआ।" बेदी का स्वर भर्रा उठा।

"हौसला रख। अभी फालतू बात मत कर। हम दोनों के सिरों पर गहरी चोटें हैं। खून काफी बह चुका है। मुझे रह-रहकर चक्कर आ रहा है। सरकारी हस्पताल में जाना ठीक नहीं। वह बेकार की पूछताछ करेंगे। सुबह के इस वक्त किसी डॉक्टर की दुकान भी नहीं खुली होगी। किसी नर्सिंग होम में जाकर सिर की दवा-दारू करा लेनी चाहिए।"

"शुक्रा मैं...।"

"विजय अभी कोई बात नहीं, पहले डॉक्टर से सिर की देखभाल करा लें।

नर्सिंग होम से सिर की पट्टी कराकर, दवाई वगैरह खाई तो उन्हें राहत मिली। वहां से चले तो शुक्रा ने एक चाय वाले के पास कार रोकी, जो फुटपाथ पर ही स्टोव लिए बैठा था। उसे चाय के लिये बोल दिया। दोनों ने सिगरेट सुलगाई।

विजय का चेहरा पीला-सा पड़ा हुआ था, जबकि शुक्रा के

चेहरे पर गुस्सा था।

"शुक्रा।" बेदी का हाथ सिर पर गया—"मेरा ऑपरेशन नहीं हो सका।"

"बहुत बड़ी कमीनी निकली अंजना।" शुक्रा गुर्रा उठा—"और वह भी यार बनता था राघव। उससे बड़ा कुत्ता तो इस दुनिया में नहीं। मैं उन्हें छोड़ूंगा नहीं। विजय, याद रख यह दुनिया ऐसी है कि कहीं-न-कहीं एक बार फिर इन्सानों का सामना होता है। अंजना और राघव भी मिलेंगे। तब चीर कर रख दूंगा दोनों को। जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। वह दोनों सिर्फ मेरे ही हाथों से मरेंगे।"

"शुक्रा!" बेदी की आवाज में गुस्सा था—"मुझे सिगरेट के उन टुकड़ों को देखकर ही अंजना पर शक पड़ गया था कि उसके साथ कोई है। तिजोरी न खुलने पर उसे जो बेचैनी होती थी। उसे देखकर ही मुझे हरदम शक होता था कि अंजना बहुत बदल गई है।"

"तो उस वक्त ही क्यों न काटकर फेंक दिया साली को।" शुक्रा गुर्राया।

बेदी गहरी सांस लेकर रह गया।

चाय वाला गिलासों में चाय दे गया।

दोनों चाय पीने लगे।

"शुक्रा।" बेदी चाय का घूंट लेते थके स्वर में कह उठा—"मुझे जितना देखना है देख ले। अब मैं जिन्दा नहीं बचूंगा।"

"क्यों?"

"दिमाग में फंसी गोली मेरी जान ले लेगी, मैं...।"

"चुप रह।" शुक्रा तड़प उठा—"ऐसी बातें मत कर, तुझे कुछ नहीं होने वाला।"

"झूठी तसल्ली देता है।" बेदी ने मुस्कराने की कोशिश की।

"सच कहता हूं। तुझे कुछ नहीं होने दूंगा।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा—"अभी हमारे पास वक्त है। इतना वक्त है कि बारह लाख का इन्तजाम किया जा सकता है। तुम्हारा ऑपरेशन होगा और जरूर होगा। तुम ठीक होकर रहोगे। अपने शुक्रा पर भरोसा रखो। अभी बहुत हिम्मत है तेरे इस यार में।"

"अंजना-राघव मिल जाएं तो ऑपरेशन हो सकता है।" बेदी फीके स्वर में कह उठा।

"गोली मारो उन्हें। वह नहीं मिलेंगे। कम-से-कम अभी नहीं

मिलेंगे। लेकिन मेरा दिल कहता है कि एक दिन-एक दिन वे मिलेंगे। तब सामने शुक्रा होगा और होगा उनका भयानक अंजाम।''

बेदी गहरी सांस लेकर रह गया।

शुक्रा ने जेब से वही पुरानी वाली रिवॉल्वर निकाली।

''यह तेरे को कहां से मिली?'' बेदी ने रिवॉल्वर पर निगाह पड़ते ही कहा।

''जाते हुए वह रिवॉल्वर हमारे पास ही फेंक गए थे। पास रखने की जरूरत नहीं समझी होगी। या यूं समझ लो कि इसलिए रिवॉल्वर छोड़ गए कि जब वे मिलें तो उन्हें इसी से गोली मारी जाए।''

दोनों चाय पीते रहे। उनके बीच चुप्पी रही।

''शुक्रा।'' बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा।

''हां।''

''कहीं से पुलिस को फोन करके, मेरे गांव वाले मकान के बारे में बता देना। वहां डॉक्टर, पिशोरीलाल और हेमन्त लाल बंधे हैं। अगर उन्हें कुछ हो गया तो हमारे सिर पर खून भी आ जाएगा।''

शुक्रा ने सहमति में सिर हिला दिया।

''परन्तु अब क्या करें?''

''क्या मतलब?''

''वो सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मुझे ढूंढ रहा है।'' बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—''मैं जानता हूं वो मेरा पीछा छोड़ने वाला नहीं और हमारे पास छिपने की जगह नहीं है। मैं अपने गांव वाले मकान पर भी अब नहीं जा सकता और फ्लैट पर भी नहीं। खुले में रह नहीं सकते। ऐसे में जाएंगे कहां?''

दोनों ने एक-दूसरे को देखा।

''तो क्या करें?''

''हमें, जगह का इन्तजाम, छिपने वाली जगह का इन्तजाम तो करना ही होगा कि जहां कुछ दिन निश्चित होकर रह सकें और सोच सकें कि आगे क्या, कैसे करना है।'' शुक्रा बोला।

''लेकिन ऐसी जगह अब मिलेगी कहां?''

''मेरे ख्याल में कहीं किराए पर ही मिल सकेगी।''

''इस तरह रहना तो खतरनाक होगा।'' बेदी ने पहलू बदला—''शुक्रा मेरी बात मान। मैं नहीं बच सकता। मेरे साथ

रहकर खतरा मत उठा। छोड़ दे मुझे, जो होगा...।''

''जुबान बंद।'' शुक्रा ने तीखे स्वर में कहा—''ऐसी बात दोबारा नहीं बोलना।''

बेदी ने थके-टूटे अंदाज में आंखें बंद कर ली। फिर फौरन ही आंखें खोली—

''उदय के गैराज पर चलते हैं।''

''उदयवीर?'' शुक्रा की आंखें सिकुड़ी।

''हां, उसका गैराज हमारे छिपने की सबसे बढ़िया जगह हो सकती है।'' बेदी ने कहा—''वो मना नहीं करेगा।''

''हां, मना नहीं करेगा।'' कड़वे स्वर में कहा शुक्रा ने—''सिर्फ पुलिस को खबर कर देगा कि...।''

''ऐसा मत कह, वो हमारा दोस्त है।''

''दोस्त-दोस्त तो राघव भी था, जो...।''

''दोस्त तो तुम भी हो शुक्रा। हर कोई एक जैसा नहीं होता। वक्त आने पर, जरूरत पड़ने पर ही मालूम होता है कि कौन क्या है? राघव ने दगाबाजी की तो क्या यह जरूरी है कि उदय भी वैसा ही करेगा।''

''मेरा दिल नहीं मानता, वहां जाने का।'' शुक्रा बोला।

''तू वहीं चल, मेरे कहने पर चल।''

शुक्रा ने बेदी को देखा।

''जो थोड़ा बहुत बचा है, तू उसे भी बरबाद करके रहेगा विजय।'' शुक्रा के होंठ भिंच गये।

''मैंने तेरे को बोला है, उदय के गैराज पर चल, तो चल। वो अच्छा इन्सान है।''

''लगता है तू गोली की वजह से नहीं, दोस्तों की दगाबाजी वाली मार से, वक्त से पहले ही मरना चाहता है। कर ले अपना शौक पूरा।'' शुक्रा ने चाय वाले को पैसे दिए और चल पड़े।

रास्ते के पुलिस को गुमनाम फोन करके, गांव वाले मकान के हालात बता दिए।

❑ ❑

नौ बजे वो दोनों उदयवीर के गैराज पर पहुंच गये। गैराज बंद था। वह जानते थे कि नौ बजे के आस-पास गैराज खुल जाता है। उदय आने ही वाला होगा।

एम्बेसेडर कार को एक तरफ खड़ी करके दोनों लोहे की पेटी पर बैठ गये। जो पहले से ही तेल-आयल से काली—मैली हो

रही थी।
शुक्रा के चेहरे पर तनाव और गुस्सा था।
जबकि बेदी उदास, थका और टूटा-टूटा-सा नजर आ रहा था।
"शुक्रा।" बेदी अपनी आंखें मलते हुए कह उठा।
"हां।"
"यार वो अंजना–अंजना ने जो किया मुझे अभी विश्वास नहीं आ रहा कि...।"
"फिक्र मत कर उस हरामजादी का...।"
बेदी ने शुक्रा के तपते चेहरे पर निगाह मारी फिर गहरी सांस लेकर रह गया।
"राघव के किए पर भी विश्वास नहीं आ रहा।" बेदी ने सिर हिलाया–"हैरानी है, दोनों एक साथ ही मेरे खिलाफ दगाबाजी पर उतर आए।"
"क्यों नहीं उतरेंगे।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा–"वो औरत थी। खूबसूरत औरत। जिसे दौलत और जेवरातों की चाह थी। वो अमीर बनना चाहती थी और वो कुत्ता राघव जिसे अंजना जैसी खूबसूरत युवती पल्ले पड़ रही थी। साथ में करोड़ों मिल रहा था। उसके लिए दगाबाजी करने के लिए इतना ही काफी था। एक बार इशारा दिया होगा उसे अंजना ने। एक बार उसकी गोदी में बैठी होगी। उसके बाद उस कमीने में इतनी हिम्मत ही कहां बची होगी कि अंजना जैसी शह की बात को वह मना कर सके।"
बेदी ने शुक्रा के सुर्ख हो रहे चेहरे पर नजर मारी।
"अगर वो तेरी गोदी में बैठती तो...?" बेदी बोला।
"विजय!" शुक्रा दांत पीस उठा।
"उसने वो सब तेरे साथ किया होता, जो राघव के साथ किया और तैयार हो गया राघव। साथ ही तेरे को मालूम होता कि करोड़ों की दौलत भी साथ में है तो तू क्या करता?" बेदी का स्वर धीमा था।
"होश में आ विजय।" शुक्रा सिर से पांव तक सुलग उठा–"तू पागल हो गया है।"
"मेरी बात का जवाब दे शुक्रा।"
"विजय...।"
"जवाब दे शुक्रा।" बेदी की आवाज में सख्ती आ गई।

शुक्रा खा जाने वाली निगाहों से उसे देखता रहा।
"नहीं है ना तेरे पास, मेरी बात का जवाब।"
"जवाब तो है, बहुत कड़वा है। न ही सुन तो ठीक रहेगा।" शुक्रा गुर्रा उठा।
"मैं सुनना चाहता हूं।"
"तो सुन! अंजना जैसी औरतें एक रुपये में बीस मिलती हैं। मेरे को देखकर वो समझ चुकी थी कि मेरे से उसको कोई भाव नहीं मिलने वाला। मैं उसे भाव देता तो वो राघव से भी बढ़िया तरीके से मेरी गोदी में बैठती। क्योंकि मैं दौलत के ज्यादा करीब था। मेरा चेहरा भी राघव से बढ़िया है। उसकी सेहत से डेढ़ गुणा हूं। किसी तरफ से कम नहीं। लेकिन मैंने उसे हमेशा देखा ही भाभी की निगाहों से। तेरी होने वाली बीवी की नजरों से उसे देखा। उसके चेहरे से नीचे कभी मेरी निगाह ही नहीं गई।"
शुक्रा के सुर्ख चेहरे को देखे जा रहा था बेदी।
"और फिर तिजोरी की दौलत मैंने पानी होती तो मुझे उस कमीनी के साथ की जरूरत ही क्या थी? मैं अकेला भी उस सारी दौलत का मालिक बन सकता था।" शुक्रा ने दांत पीसकर कहा–"समझा–उस बेगैरत औरत में इतनी हिम्मत नहीं थी कि मुझे अनजाने में भी अपनी टांगें दिखाने की कोशिश कर पाती। इसलिए तेरा सवाल बेकार है कि वो मेरी गोदी में बैठती। शुक्रा यारों की यारी को कभी गोदी में नहीं बिठाता।"
बेदी ने गहरी सांस लेकर निगाहें फेर ली।
सवा नौ बजे उदयवीर पैदल ही गैराज पर पहुंचा।
❑❑
"मर जावां।" उदयवीर उनकी हालत देखते ही चौंका–"ये क्या हो गया, सिर पर चोट?"
"उदय, गैराज खोल। हमें भीतर जाना है।" बेदी पेटी से उठते हुए कह उठा।
उदयवीर ने गहरी निगाहों से दोनों को देखा। फिर चंद कदमों के फासले पर खड़ी अपनी एम्बेसेडर को देखा। उसके बाद जेब से चाबियां निकालते हुए, गैराज के ताले खोलने लगा।
जब तक वह गैराज खोलकर फारिग हुआ बेदी और शुक्रा उसके केबिन में पहुंच चुके थे।
उदयवीर उलझन में घिरा वहां पहुंचा।

"क्या हुआ तुम दोनों को?" उदयवीर कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—"एक्सीडेंट मारा क्या?"

"नहीं।" शुक्रा उखड़े स्वर में कह उठा।

"तो हुआ क्या?" उदयवीर ने दोनों को देखा।

बेदी और शुक्रा की निगाहें मिलीं।

अगले ही पल बेदी उठा और एक तरफ पड़ी चटाई फर्श पर बिछाकर लेट गया। कई दिनों की भागदौड़ और रात भर का जगा होने के कारण वह बेहद थकान महसूस कर रहा था।

"मुझे नहीं बताओगे कि क्या बात है?" उदयवीर बेचैनी से कह उठा।

शुक्रा ने उसकी आंखों में झांका।

"विजय को ऑपरेशन के लिए बारह लाख चाहिए थे।" शुक्रा शब्दों को चबाकर बोला।

"हां, मालूम है मुझे, फिर?"

"हमने बारह लाख के बदले डेढ़-दो करोड़ का इन्तजाम कर लिया था।" शुक्रा का चेहरा सुर्ख हो उठा।

"डेढ-दो करोड़?" उदयवीर का मुंह खुला-का-खुला रह गया।

"हां।"

"कहां है?"

"तेरा यार ले गया।" शुक्रा ने कड़वे स्वर में कहा।

उदयवीर के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा।

"मेरा यार?"

"राघव।"

उदयवीर उछल पड़ा।

"क्या कहता है तू? क्या बोला—मैं समझा नहीं।" उदयवीर को अपना दिमाग बंद होता-सा महसूस हुआ।

"साथ में विजय की मंगेतर यानी कि अंजना को भी ले उड़ा। अब तक तो दोनों हरामजादों ने दस बार हनीमून भी मना लिया होगा। वो मां भी बनने वाली हो बच्चा भी पैदा कर दिया हो तो कोई बड़ी बात नहीं।"

"क्या बकवास कर रहा है तू शुक्रा?" उदयवीर के चेहरे पर तनाव आ गया था—"साफ-साफ बता।"

"नहीं समझा?" शुक्रा ने जहरीले स्वर में कहा।

"समझा हूं, लेकिन फिर भी कुछ नहीं समझा।"

शुक्रा ने आधे घंटे में उदयवीर को सब कुछ समझा दिया।

❑ ❑

कई पलों तक उदयवीर के होंठों से बोल न फूटा।

शुक्रा कड़वी निगाहों से उसे देखता रहा।

"विश्वास नहीं आ रहा।" आखिरकार उदयवीर के होंठों से निकला।

"किस बात का?"

"किसी भी बात का?" उदयवीर ने पहलू बदला—"एक बात तो बता शुक्रा।"

"क्या?"

"तेरे को कभी लगा कि राघव-अंजना के फेर में है।"

"नहीं, लगा होता तो फिर बात ही क्या थी।" राघव ने दांत भींचकर कहा—"ना ही कभी लगा कि अंजना, उस कुत्ते के फेर में है। वरना इस वक्त नक्शा ही कुछ और होता।"

उदयवीर के चेहरे पर अजीब से भाव थे।

"मुझे तो...।" उदयवीर ने दायें-बायें सिर हिलाया—"विश्वास नहीं आ रहा अभी भी।"

"यही कहते रहना।" शुक्रा सुलगते स्वर में कह उठा।

"तुम्हारी सिर की चोटों का क्या हाल है?" उदयवीर वास्तव में नहीं समझ पा रहा था कि क्या कहे?

"ठीक है, हफ्ता-दस दिन लग जाएंगे, पूरी तरह ठीक होने में।"

"यार शुक्रा, राघव ने ऐसा किया, विश्वास नहीं आता कि वह...।"

"उसने तेरे सिर पर चोट नहीं मारी। नहीं तो तेरे विश्वास पर सरकारी मुहर लग चुकी होती।"

"वो!" उदयवीर ने पहलू बदला—"राघव ही था ना? तुमसे पहचानने में गलती तो नहीं हुई?"

"बेवकूफों वाली बातें मत कर।" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा।

"तू ठीक कहता है। मैं वास्तव में पागल-सा हो रहा हूं। सच पूछ तो अभी तक भी मेरी समझ में कुछ नहीं आया। जबकि मैं सब कुछ समझ चुका हूं।" उदयवीर ने अजीब से स्वर में कहा—"यह तो बता कि राघव और अंजना का गहरा मेल कब हुआ होगा।"

"अपने विजय को गोली लगने के बाद।" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा।

"गोली लगने के बाद...हूं।"

"गोली लगने के बाद खासतौर से तब जब वह दोनों कई बार हस्पताल में विजय को देखने-मिलने आए थे। उसके बाद जब पिशोरीलाल की तिजोरी पर हाथ डालने की सोची गई। बस इसी वक्त के दरम्यान वो राघव की गोदी में बैठ गई होगी और उसका सिखाया राघव पढ़-लिख गया होगा। दोनों ही बेगैरत थे। कसम से दिल में आता है कि उस वक्त मौका क्यों न मिला कि उनकी जान ले पाता।"

उदयवीर ने कठोर निगाहों से उन्हें देखा।

"बहुत गलत किया है राघव और अंजना ने।" कहने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ।

"कहां जा रहा है?"

"तुमने जो कुछ भी बताया, उन बातों ने मेरे दिमाग को उलझा दिया है।" उदयवीर ने शब्दों को चबाकर खा जाने वाले स्वर में कहा—"मैं जरा बिजली वाले की दुकान का फेरा लगाने जा रहा हूं।"

"राघव अब वहां कहां होगा?" शुक्रा ने व्यंग से कहा—"वह तो...।"

"वह कहीं भी हो, मैं उस कुत्ते को ढूंढ़कर...।"

"मुझे नींद आ रही है।" शुक्रा ने केबिन की खाली जगह पर नजर दौड़ाते हुए कहा—"मैं यहीं नीचे नींद ले लेता हूं।"

उदयवीर ने चटाई पर सोए बेदी को पुकारा।

"विजय-विजय।"

"उसे सोने दे, कई दिन से सोने को नहीं मिला।"

उदयवीर केबिन से बाहर निकल आया। चेहरे पर कई तरह के भाव गुड़मुड़ हो रहे थे। तभी गैराज में काम करने वाले तीन छोकरे आ पहुंचे।

"जल्दी आया करो।" उदयवीर यूं ही कह उठा—"उसे तो कहीं नहीं देखा, राघव को।"

"वो आपका दोस्त?" एक छोकरा बोला।

"हां।"

"नहीं, वो परसों तो आए थे आपके पास।"

"उल्लू के पट्ठों मैं अब की बात कर रहा हूं कि कहीं रास्ते

में नजर आया हो। चलो कपड़े बदलो और जल्दी से उस मारुति को फिट कर दो और हां गलती से मेरे जाने के बाद पीछे से वो मेरा दोस्त राघव आ जाए तो सारे काम छोड़कर उसे पकड़कर दबा लेना। जाने मत देना।"

"कोई खास बात है उस्ताद।"

"तू सवाल बहुत करता है।" उदयवीर ने सिर हिलाया—"केबिन में विजय और शुक्रा सो रहे हैं, शोर कम करना। कोशिश करना उनकी नींद खराब न हो।"

उदयवीर गैराज से बाहर निकलकर एम्बेसेडर की तरफ बढ़ा। शुक्रा से सारी बात सुनकर वह परेशान हो उठा था। अभी भी इन बातों को वह हजम नहीं कर पा रहा था।

❑❑

उदयवीर, राघव की बिजली की दुकान पर पहुंचा। वहां राघव तो नजर नहीं आया, अलबत्ता वो लड़का वहां अवश्य दिखा जो उस दिन राघव को मामा कह रहा था।

"ओए पुतरा।" कार से उतरकर उदयवीर दुकान की तरफ बढ़ता हुआ बोला—"पहचाना मुझे?"

"नमस्ते जी।" वो लड़का हाथ जोड़कर बोला—"आप मामा जी के दोस्त हैं। उस दिन भी आए थे।"

"वो तो आया था, तेरे मामे का नाम क्या है?" दुकान पर पहुंचकर उदयवीर ने पूछा।

"राघव, राघव मामा।"

"फिर ठीक है। मैंने सोचा नाम पूछ लूं। आजकल मामों का भी पता नहीं चलता कि कौन किसका है?"उदयवीर कह उठा—"अब ये बता कि तेरा मामा है कहां?"

"यह तो मुझे भी नहीं पता।"

"क्या मतलब। मामा तेरा है और उसके बारे में तेरे को नहीं पता।" उदयवीर ने उसे देखा।

"जी वो दो-तीन दिन से घर नहीं आए। मम्मी भी परेशान हैं कि अचानक मामा जी, कहां चले गये?"

उदयवीर को लड़का सच बोलता लगा।

"आखिरी बार तेरा मामा कब घर आया था?"

"तीन दिन हो गए।" लड़का सोचकर बोला।

"बेटे, तेरे मामे ने जब दुकान खोली थी, तब तो तुम यहां नहीं थे। अब कहां से प्रकट हो गए।"

"जी मेरे पिताजी मिलट्री में थे। दो महीने पहले ही गोली लगने से वो चल बसे। उसके बाद और कोई तो हमारा दुनिया में नहीं है। मम्मी मुझे लेकर यहां आ गई। मैं दुकान संभालने लगा।"

"तेरी मां वहीं रहती हैं, जहां राघव रहता है?"

"जी हां।"

उसके बाद उदयवीर राघव के घर का भी चक्कर लगा आया। राघव की बहन मिली। जो कि राघव के घर न लौटने से पहले से ही परेशान थी।

सोचों में डूबा उदयवीर गैराज पर लौट आया।

बेदी और शुक्रा गहरी नींद में थे।

❑❑

शाम को पांच बजे बेदी और शुक्रा नींद से उठे। उदयवीर टेबल पर बोतल और गिलास रखे, सोच में डूबा बैठा था।

"उठ गये, मेरे शेरो।" उदयवीर की आवाज में किसी तरह का भाव नहीं था—"पानी पड़ा है। पीछे की तरफ नहा-धो लो। सिर पर पानी मत डालना। ताजा जख्म है।

बेदी ने शुक्रा को देखा।

"इसे क्या बताया?" बेदी ने पूछा।

"सब कुछ।" शुक्रा के चेहरे पर कड़वे भाव आ गए।

बेदी गहरी सांस लेकर उठ खड़ा हुआ।

"मैं राघव की दुकान पर गया था।" उदयवीर ने टेबल पर पड़ी व्हिस्की की बोतल को थपथपाते हुए कहा—"उसके घर भी गया था। दुकान पर भांजा और घर पर उसकी विधवा बहन मिली। राघव तीन दिन से घर नहीं आया। वो लोग खुद उसके न आने से परेशान हैं।"

"घर कैसे आता?" शुक्रा ने दांत भींचकर कहा—"तब वो हरामजादा, वहां पर तिजोरी खुलने की ताक में मंडरा रहा था। हमारे न होने पर, अंजना की गोदी में भी जरूर बैठता होगा।"

उदयवीर ने सिर हिलाकर, बेदी को देखा।

"इस मामले में राघव कम गलत है और अंजना ज्यादा। क्योंकि वह खूबसूरत है और सामने वाले का दिमाग खराब करने का दम रखती है। खासतौर से तब जबकि साथ में डेढ़-दो करोड़ की दौलत का भी मामला हो। उसने जब राघव को ऑफर दी होगी तो दो दिन राघव को अपनी जिन्दगी का सबसे बढ़िया

दिन लगा होगा।" उदयवीर गम्भीर-शांत स्वर में कह उठा—"ये जो भी हुआ, इसमें कुछ नया नहीं हुआ। ऐसा होता रहता है। अगर कुछ नया हुआ तो यह कि यह बात तुम लोगों के साथ हुई।"

"तेरे साथ यह सब नहीं हुआ।" शुक्रा ने उसे घूरा।

"नहीं।"

"तभी तेरे को यह बात मामूली लग रही...।"

"बात-बात पर गुस्सा मत खाया कर शुक्रा। अब तू बड़ा हो गया है। मेरे को यह बात मामूली नहीं लगी। तभी तो मेरे से कुछ कहते नहीं बन पा रहा। जो हुआ बहुत गलत हुआ। इस हद तक गलत हुआ कि राघव और अंजना की हरकत पर विश्वास करने को मन नहीं कर रहा। लेकिन इन्कार करने का भी सवाल नहीं पैदा होता, क्योंकि तुम कह रहे हो। सोच-सोच कर ही मुझे राघव और अंजना से नफरत हो रही है। वो सामने आएंगे तो मैं नहीं जानता कि उनके साथ क्या व्यवहार करूंगा।" उदयवीर के होंठों पर मुस्कान फैल गई।

"मुस्कराता क्यों है?"

"मुस्कराना पड़ता है। दुःख, झल्लाहट और गुस्से के बाद होंठों पर मुस्कान ही आती है कि इतनी देर बंदा हमारे साथ रहा, लेकिन हम बेवकूफ यह न जान सके कि वह कमीनगी की किस हद तक पहुंच सकता है। मतलब कि वो तो अपनी जगह ठीक था। हम ही बेवकूफ रहे कि उसे पहचान न सके।"

"मुझे तो अभी भी यह सब सपना लग रहा है।" बेदी टूटे स्वर में कह उठा—"विश्वास नहीं आता कि अंजना मेरे साथ ऐसा भी कर सकती है। मेरे दिमाग में गोली ही तो फंसी है। मैं मर तो नहीं गया। पैसा हाथ में था। ऑपरेशन से दिमाग में फंसी गोली को डॉक्टर वधावन बाहर निकाल देता। सब ठीक हो जाता। लेकिन वो तो...।"

"वो कमीनी नहीं चाहती थी कि तिजोरी में पड़ी दौलत में से बारह लाख खर्च होकर तुम्हारे ऑपरेशन पर लगे। उसकी निगाहों में, ऑपरेशन पर लगने वाले बारह लाख पानी में जा रहे हैं। कमीनी सिर्फ दौलत की थी। दौलत की है और दौलत की ही रहेगी। इसके अलावा और किसी की नहीं हो सकती। राघव क्या सोचता है, वो उसकी हो जाएगी। नहीं, बहुत जल्द बुरा अंजाम राघव के साथ होगा। लेकिन मैं इन दोनों को छोडूंगा

नहीं, ढूंढ़कर इतनी बुरी मौत...।''

''गुस्सा नहीं शुक्रा, गुस्सा नहीं।'' उदयवीर ने कहा फिर बेदी को देखा—''अंजना को उसके घर पर देखा।''

''घर पर?'' बेदी का स्वर फौरन तीखा हो गया—''सोचकर बात किया कर। इस वक्त वो दोनों हवाई घोड़े पर सवार होकर इस शहर से जाने कितनी दूर निकल चुके होंगे। उनके बारे में सोचने या उन्हें तलाश करने का कोई फायदा नहीं। वो कभी नहीं मिलेंगे। कभी मिलें तो यू ही इत्तफाक से मिलेंगे।''

''मेरा दिल कहता है कि वो दोनों मिलेंगे और मैं तब उन्हें सजा दूंगा।'' शुक्रा दांत भींचकर कह उठा।

उदयवीर ने बोतल को उंगलियों से थपथपाया।

''नहा-धो लो। बाकी बातें फिर, छोकरे को भेजा है। तुम दोनों का कुर्ता-पायजामा लाने के लिये, दुकान से। बाकी के कपड़े कल आ जाएंगे।''

❑❑

पैंतालीस मिनट बाद ही बेदी और शुक्रा नहा-धोकर, केबिन में कुर्सियों पर बैठे थे। उनके बदन पर नया कुर्ता-पायजामा था। गैराज के छोकरे जा चुके थे।

''उदय।'' बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा—''सच बात तो यह है कि इस वक्त मेरे पीछे पुलिस है। सब-इंस्पेक्टर जय नारायण को मेरी तलाश है। वह मुझे ढूंढ़ता फिर रहा है।''

''तो?''

''वह मुझे ढूंढ़ता हुआ यहां भी आ सकता है।'' बेदी ने उसकी आंखों में झांका।

''विजय।'' उदयवीर गम्भीर स्वर में बोला—''तू मेरी परवाह मत कर। पुलिस आती है, तुझे यहां से पकड़ लेती है तो क्या वो लोग मुझे फांसी पर चढ़ा देंगे। जो होगा देखा जायेगा। तू यहां आराम से रह। कल मैं छोकरों को भी समझा दूंगा कि तुम लोगों को कोई पूछे तो क्या कहना है।''

''पुलिस तुझे भी लपेटे में ले सकती...।''

''बोला तो, फांसी तो नहीं चढ़ा देगी और यह भी तो हो सकता है कि अगले सौ साल तक पुलिस इधर का रुख ही न करे। इस बात को छोड़। जब ऐसा कुछ होगा तो मैं संभाल लूंगा।''

बेदी ने कुछ नहीं कहा।

''बोतल खोल।'' शुक्रा उखड़े स्वर में कह उठा।

''अभी बोतल नहीं खुलेगी।'' उदयवीर ने उसे देखा।

''क्यों?''

''अभी मुझे कुछ बात करनी है।'' उदयवीर का स्वर गम्भीर था—''बोतल खुल गई तो सब गड़मड़ हो जायेगा।''

''क्या बात?''

उदयवीर की निगाह बेदी और शुक्रा पर फिरी।

''तिजोरी चोरी करने वाले काम में, तुम लोगों ने मुझे साथ क्यों नहीं लिया?'' उदयवीर तीखे स्वर में कह उठा।

''बकवास मत कर।'' शुक्रा भड़क उठा—''दस बार तेरे से कहा था। लेकिन तूने मना किया। सीधा-सीधा मना।''

''हां, इन्कार किया, इसलिए किया कि गलत काम में हाथ न डाला जाए।'' उदयवीर की आवाज भी तेज हो गई—''लेकिन तब तुम लोगों ने यह तो नहीं कहा कि तुम लोग ऐसा कुछ करके ही रहोगे। सब कुछ छिपा लिया मुझसे। अगर तुम लोग सब कुछ सच-सच बताते तो, मैं तुम दोनों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलता। पीठ नहीं दिखाता। मैंने तो सोचा, तुम लोग...।''

''रहने दे इन बातों को।'' शुक्रा ने दांत भींचकर कहा।

''क्यों रहने दूं।'' उदयवीर के दांत भिंच गये—''मैंने नहीं, तुमने चोर मारी की है, जो मुझसे छिपाया। बताया ही नहीं कि तुम लोग क्या कर रहे हो? सोचा कि...।''

''बताने का क्या फायदा होता?'' शुक्रा ने व्यंग से कहा—''तू भी राघव की तरह कोई कमाल दिखा देता।''

''कुछ-न-कुछ तो कमाल दिखाता ही। वक्त निकल चुका है। इसलिए अब कुछ नहीं दिखा सकता।'' उदयवीर ने उसे घूरा—''ज्यादा समझदारी अच्छी नहीं होती शुक्रा। तब मुझे कह देते कि तुम लोग अपने इरादे से पीछे नहीं हटने वाले, तब मैं सब कुछ भूलकर दिल से तुम लोगों का साथ देता।''

बेदी बेचैनी से पहलू बदलता हुआ कह उठा।

''बीती बातों को कुरेदने से कुछ नहीं मिलेगा। सोचना है तो आगे की सोचो। मेरे दिमाग में अभी भी गोली फंसी है। दस-ग्यारह दिन बीत चुके हैं और सब कुछ वैसा ही है। कुछ सोचो मैं कैसे इस मुसीबत से छुटकारा पा सकता हूं। मैं मरना नहीं चाहता तो हर बीतते दिन के साथ मौत के करीब जाता...।''

"तू नहीं मरेगा।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा।
"तू ऑपरेशन करेगा इसका?" उदयवीर ने उसे घूरा।
"जुबान मत चला।" शुक्रा गुस्से में भर उठा—"चाहे जैसे भी हो, मैं वक्त रहते, बारह लाख का इन्तजाम करके, डॉक्टर वधावन से इसका ऑपरेशन कराऊंगा। विजय को किसी भी हाल में मरने नहीं दूंगा।"
"तू बारह लाख इकट्ठे कर लेगा।" उदयवीर ने सिर हिलाया।
"हां।"
"कैसे?"
बेदी बारी-बारी दोनों को देख रहा था और सोच रहा था कि यह मुद्दे से हटकर खामखाह की बातें करके, वक्त बरबाद कर रहे हैं।
"मैं चोरी करूंगा। डाका डालूंगा। कुछ भी करूं, लेकिन विजय का ऑपरेशन करवा कर, दिमाग में फंसी गोली को निकलवाकर रहूंगा उदयवीर।" शुक्रा का चेहरा लाल सुर्ख हो उठा।
"फिर गुस्सा, तू आराम से बात क्यों नहीं करता। आवाज को धीमा रखा कर।" उदयवीर व्हिस्की की बोतल को थपथपाकर बोला—"तो तू चोरी-डाका मारेगा। लेकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि यह सब करके तू जिन्दा रहेगा और बारह लाख का इन्तजाम करके, विजय की जिन्दगी बचा लेगा।"
"गारण्टी तो इस बात की भी नहीं है कि मैं अगली सांस ले सकूं।" शुक्रा ने खा जाने वाली निगाहों से उदयवीर को देखा—"मैं सिर्फ कोशिश करना जानता हूं और वह करता रहूंगा, जब तक दम रहेगा।"
"हां यह बात कुछ ठीक कही।" उदयवीर मुस्कराया।
"तुम क्या बेवकूफों की तरह वक्त बरबाद कर रहे हो।" बेदी उखड़े स्वर में कह उठा—"आपस में बहसबाजी छोड़ो। सोचना है तो कुछ काम की, ढंग की बात सोचो। जिससे मैं बच सकूं।"
"मैं उधर ही आ रहा हूं विजय।" उदयवीर ने उसे देखा—"तू एक बात बता। कहीं चोरी-डाका डालकर ढेरों रुपये इकट्ठे करने का इरादा है या मकसद सिर्फ यह है कि दिमाग में फंसी गोली निकल जाए।"
"रुपये-पैसे हमने क्या करने हैं?" बेदी के होंठों से

निकला—"मैं तो गोली निकलवाना चाहता हूं।"
शुक्रा उदयवीर को देखे जा रहा था।
"यही मैं कहना चाहता हूं कि पिशोरीलाल की तिजोरी पर हाथ डालकर, तुम लोग अपने मकसद से भटक चुके हो।"
"क्या मतलब?" शुक्रा की आंखें सिकुड़ीं।
"मतलब कि बारह लाख के लिए, डेढ़-दो करोड़ पर हाथ डालने की क्या जरूरत थी। मकसद तो सिर्फ यह था कि दिमाग का ठीक-ठाक ऑपरेशन हो जाए और यह काम गारण्टी के साथ डॉक्टर वधावन कर सकता है। ऐसे में अपनी सोचें, अपना दिमाग डॉक्टर वधावन पर लगाते तो यकीनन कामयाब हो जाते।"
"कुछ नहीं होता।" बेदी गुस्से से टेबल पर घूंसा मारकर कह उठा—"वधावन डॉक्टर कम और बिजनेसमैन ज्यादा है। वह अपने उसूलों का पक्का है। अपनी जान दे देगा लेकिन वो कमीना बिना पैसे के ऑपरेशन नहीं करेगा। तीन दिन वह हमारी कैद में रहा। लाख कोशिश करने के बाद भी वह पैसे लिए बिना, ऑपरेशन करने को राजी नहीं हुआ।"
"तुमने बचपन में मां-दादी से वो कहानी तो सुनी होगी कि राक्षस की जान तोते में थी और तोता जब तक जिन्दा रहेगा। राक्षस का कुछ नहीं बिगड़ सकता। गला काटोगे तो गला जुड़ जाएगा। हाथ-पांव काटोगे तो हाथ-पांव जुड़ जाएंगे। ऐसे में राक्षस की नहीं, तोते की गर्दन तोड़नी चाहिए।"
बेदी और शुक्रा की निगाहें मिलीं।
"क्या कहना चाहता है तू?" बेदी के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।
"वधावन अपनी जान, अपने उसूलों के बारे में ढीठ हो सकता है, लेकिन उसके तोते की गर्दन पकड़ ली जाए तो वह तीर की तरह सीधा हो जायेगा।" उदयवीर मुस्कराया।
"तुम्हारा मतलब?" बेदी के होंठों से बरबस ही निकला—"वधावन की बेटी?"
"हां, डॉक्टर वधावन की बेटी। शुक्रा ने मुझे वधावन के परिवार के बारे में बताया था। तब से ही इस तरफ मेरा दिमाग घूम रहा था और यही एक रास्ता नजर आया।"
बेदी की आंखों में चमक उभरी।
शुक्रा मुस्कराया।

"ठीक बोलता है तू, इस तरफ तो हमने सोचा ही नहीं था, क्यों विजय?"

"हां।" बेदी भी मुस्करा पड़ा—"कभी-कभी बगल में ध्यान नहीं जाता। तो वधावन की बेटी का अपहरण करके उसे मजबूर किया जाए कि वह मेरे दिमाग का ऑपरेशन करके, वहां फंसी गोली निकाले।"

"हां, डॉक्टर वधावन की बेटी हमारे कब्जे में होगी तो वह हंसी-खुशी ऑपरेशन ही नहीं करेगा। खर्चे-पानी के लिए दो-चार लाख भी साथ में दे देगा क्योंकि उसको अपने प्यारे तोते की जान बहुत प्यारी होगी और वह किसी कीमत पर नहीं चाहेगा कि उसके तोते की गर्दन को कोई तोड़े-मरोड़े।"

"यह ठीक रहेगा।" शुक्रा की आवाज में खुशी थी।

उदयवीर बोतल थपथपाकर बोला।

"पहले तुम लोगों ने जो किया अकेले किया, तभी काम पूरा होते-होते रह गया। डॉक्टर वधावन की लड़की का अपहरण करने, सब काम करने में मैं तुम लोगों के साथ रहूंगा। अब देखना, सब कुछ कैसे चुटकियों में पूरा होता है। विजय का ऑपरेशन होगा और यह बचेगा। तुझे कुछ नहीं होगा विजय।"

बरबस ही बेदी की आंखों में आंसू आ गये। खुशी के आंसू।

"यारों के होते तू परवाह मत कर।" उसके आंसू देखकर उदयवीर की आवाज भी भर्रा उठी।

"पहले यह यार कहां मर गया था।" शुक्रा हंसा।

"यहीं था, लेकिन तुम लोगों ने मुझे अंधेरे में रखा। आधी-अधूरी बात बताई। कोई बात नहीं। देर आए दुरुस्त आए। अब ही सब कुछ बता दिया। यही बहुत अच्छा किया।"

"लेकिन...।" बेदी गीली आंखों को साफ करता हुआ कह उठा—"वधावन की लड़की को हम उठाएंगे कैसे? इस बारे में भी सोचना पड़ेगा। यह काम कोई आसान तो होगा नहीं।"

"हां, इसके लिए कोई तगड़ी योजना...।"

"राक्षस अपने तोते को छिपाकर रखता है। इस तरह कि उस तक कोई पहुंच न सके। लेकिन हमें पहुंचना है और हम पहुंच पाएंगे।" कहते हुए उदयवीर हौले से हंसा।

"लेकिन कैसे?"

"वह भी सोच लेंगे। आज यह तय हुआ कि क्या करना है? कल तय करेंगे कि कैसे करना है।" उदयवीर ने कहते हुए बेदी

और शुक्रा पर निगाह मारी।

एकाएक बेदी के चेहरे पर तड़प के भाव पैदा हुए।

"क्या हुआ?" उदयवीर ने पूछा।

"यूं ही, अंजना और राघव की याद आ गई कि...।"

"छोड़ उन कुत्तों को।" शुक्रा दांत भींचकर कह उठा—"एक दिन तो किसी मोड़ पर मिलेंगे। तब शुक्रा को शुक्र होगा कि जो कुत्ते काट कर भागे थे उनकी गर्दनें अब हाथों में हैं।"

और उसके बाद बोतल खुल गई।

❑❑

इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव ने बेल बजाकर चपरासी को बुलाया।

"साब जी।" चपरासी ने भीतर प्रवेश करके सलाम मारा।

"इंस्पेक्टर नारायण को भेजो।"

चपरासी बाहर निकल गया।

थाने में पैदा होने वाला हल्का-हल्का शोर उसके कानों में पड़ रहा था। इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव के चेहरे पर गम्भीरता थी। तब तक वह टेबल पर पड़ा पेपर वेट घुमाता रहा, जब तक सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने भीतर प्रवेश नहीं किया।

टेबल के करीब पहुंचकर जय नारायण ने सैल्यूट दिया।

"सर!"

"बैठो।"

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण बैठा।

"सेठ पिशोरीलाल वाले केस का क्या हुआ? तुम...।"

"सर, कोशिश जारी है, मैं...।"

"कोशिश जारी है।" इंस्पेक्टर यादव ने शब्दों को चबाकर उसे घूरा—"नारायण यह शब्द हम ऊपर वालों को कहते हैं। जब हमारे पास कोई जवाब नहीं होता। मत भूलो कि इस वक्त तुम मुझसे बात कर रहे हो और मेरे ही शब्दों को मेरे सामने मत दोहराओ।"

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण संभला और संभले स्वर में बोला।

"ऐसी बात नहीं है सर! विजय बेदी को गिरफ्तार करने की पूरी कोशिश की जा रही है। उसे हर तरफ तलाश किया जा रहा है, मैं अभी-अभी शोलापुर से लौटा हूं कि आप का बुलावा आ गया। वरना मैं तो खुद ही आप के पास, सब कुछ बताने के लिए आने वाला था।"

"मतलब कि बताने को कुछ है।"

"जी सर।"
"बताओ।"
"विजय बेदी ने सेठ पिशोरीलाल की तिजोरी पर हाथ मारा है। पहले मैं शक की बुनियाद पर उसे ढूंढ़ रहा था लेकिन अब शक की कोई गुंजाइश नहीं रही। विजय बेदी के शोलापुर गांव वाले मकान पर से सेठ पिशोरीलाल, डॉक्टर वधावन और रॉयल सेफ कम्पनी के जनरल मैनेजर को आजाद करवाया गया, जो कि वहां कैदी की स्थिति में बंधे हुए थे। उन तीनों ने स्पष्ट तौर पर विजय बेदी का नाम लिया। वहां से वह बख्तरबंद ट्रक भी मिला, जिसमें पिशोरीलाल की तिजोरी ले जाई जा रही थी कि विजय बेदी ट्रक ले भागा। परन्तु तिजोरी खाली मिली। उसमें करीब डेढ़ से दो करोड़ के जेवरात थे, जो कि गायब है और विजय बेदी अपने एक मर्द और एक युवती साथी के साथ वहां से गायब है। स्पष्ट है कि वह अपने मकसद में कामयाब हो चुका है।"

इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव ने सब-इंस्पेक्टर जय नारायण की आंखों में झांका।

"ये सब बातें कहने के लिए हैं या वास्तव में सच हैं।"
"सच हैं सर। आप चाहें तो खुद तहकीकात कर सकते हैं।"
"हूं।" इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव ने सिर हिलाया—"विजय बेदी जैसे नए रंगरूट से इतना बड़ा हाथ मारने की आशा रखना सम्भव नहीं। वह मामूली-सा सेल्समैन है, फिर भी।"
"सर, यह सब करने के पीछे उसकी मजबूरी है।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने कहा।
"क्या?"
"रॉयल सेफ कम्पनी के बगल के बैंक में जब डाका पड़ रहा था तो यही विजय बेदी इत्तफाक से वहां जा पहुंचा। डाके के दौरान रिवॉल्वर की एक गोली उसके सिर में आ लगी, जो कि दिमाग के दोनों हिस्सों के बीच की जगह में जा फंसी। वह उस गोली को ऑपरेशन करवाकर निकलवाना चाहता है। इसके लिए उसे पैसों की जरूरत है जो कि उसे कहीं से मिल नहीं रहे। इसलिए उसने यह सब किया। डॉक्टर वधावन, पिशोरीलाल और हेमन्त लाल के बयानों से यह बात स्पष्ट होती है सर।"

इंस्पेक्टर यादव ने अजीब-सी निगाहों से उसे देखा।

"तो विजय बेदी ने ऑपरेशन करवा कर, दिमाग में फंसी गोली निकलवानी है।"
"यस सर।"
"इसी वजह से उसने डेढ़-दो करोड़ पर हाथ मारा। तुम्हारा क्या ख्याल है, इस ऑपरेशन में कितने करोड़ का खर्चा होगा?" महेन्द्र यादव की आवाज में व्यंग के भाव थे।
"ये तो मैं नहीं जानता सर।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण गम्भीर स्वर में कह उठा—"लेकिन डॉक्टर वधावन के बयान से स्पष्ट है कि विजय बेदी, वधावन से ऑपरेशन कराना चाहता है, क्योंकि वधावन ऐसे ऑपरेशन करने में एक्सपर्ट है। जान को कोई खतरा नहीं और वधावन फीस के बारह लाख लेता है।"
"बारह लाख!"
"यस सर।"
"कमाल है।" इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव के होंठों से निकला।
"सर, एक बात मेरी समझ से बाहर है।" जय नारायण बोला।
"क्या?"
"विजय बेदी ने डॉक्टर वधावन का अपहरण करके, उसे इसलिए कैद कर रखा था कि पैसा आने पर उसकी फीस देकर उससे अपने दिमाग का ऑपरेशन कराकर गोली निकलवा लेगा। लेकिन बाद में तिजोरी खाली करके भाग गया। वधावन से उसने ऑपरेशन करने की कोशिश नहीं की।"
"तुम इस बात से क्या अंदाजा लगाते हो?"
"इस बारे में मैं ठीक से समझ नहीं पाया सर।"
"खैर, सबसे पहला काम तो यह है कि तुम अपनी रिपोर्ट तैयार करो ताकि ऊपर वालों को दिखाया-बताया जा सके कि हम इस मामले में कुछ ही नहीं, बहुत कुछ कर रहे हैं।"
"जी।"
"तुम्हें विजय बेदी और उसके दोनों साथियों के हुलिए मिल गये होंगे?"
"यस सर।"
"इनके हुलिए और पिशोरीलाल के जेवरातों के बारे में तमाम बड़े ज्वैलर्स को आगाह कर दो कि इन्हें बेचने के लिए कोई आए

तो फौरन पुलिस को खबर की जाए।''

"जी।"

"और एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, बस अड्डों पर इनके बारे में सतर्क कर दिया जाए, शायद ये लोग शहर छोड़ने की कोशिश करें।" कहने के साथ ही महेन्द्र यादव ने जय नारायण को देखा—"अगर तुम यह काम करते, डेढ़-दो करोड़ जैसी बड़ी रकम तुम्हारे पास होती तो तुम उस स्थिति में शहर से बाहर जाने के लिए कौन-सा रास्ता इस्तेमाल करते।"

"सड़क का रास्ता और अब तक मैं शहर से बहुत दूर निकल चुका होता।"

"मैं भी यही सोच रहा था। हो सकता है ये लोग निकल गये हों। तुम उनके बारे में हर जगह सतर्क कर दो। यह सोचकर लापरवाही मत बरतना कि वह तीनों शहर से निकल गए हो सकते हैं। इस छोटे से ग्रुप का हैड विजय वेदी है।"

"यस सर।"

"कहीं से विजय बेदी की तस्वीर पाने की कोशिश करो। इससे हमें आसानी होगी, उसे ढूंढ़ने में। वह शहर से बाहर भी निकल गया होगा, तो भी पुलिस की पकड़ में आ जाएगा। लेकिन तुमने इस बात को हर पल अपने दिमाग में रखना है कि वह इसी शहर में है। छिपा हुआ है। ये सब तैयारी करो। बाकी इस विजय बेदी के बारे में कुछ और सोचते हैं कि कानून की गिरफ्त में इसे कैसे लाया जा सकता है।"

"सर, उन लोगों के बयानों से एक बात और पता चली है।"

"क्या?"

"विजय बेदी के पास रिवॉल्वर भी है।"

"रिवॉल्वर!" इंस्पेक्टर महेन्द्र यादव के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे—"खूब, फिर तो अभी यह बहुत नाम कमाएगा। अपने मां-बाप का नाम भी रोशन करेगा। शादी हो गई इसकी, परिवार वगैरह?"

"नो सर, शादी नहीं हुई। मां-बाप इस दुनिया में नहीं हैं।" जय नारायण ने बताया।

"मां-बाप दुनिया में नहीं हैं, अच्छा है नहीं हैं। वरना अपनी औलाद के कारनामे देखकर उनका सीना गर्व से और भी चौड़ा हो जाता।" महेन्द्र यादव का स्वर कड़वा ही था—"जाओ, जो

कहा है, वही करो।"

सब-इंस्पेक्टर जय नारायण बाहर निकल गया।

❑ ❑

उदयवीर रात को अपने घर मां-बहन के पास घर चला गया था। रात का खाना तो उन्होंने पीने के बाद बाहर से मंगवा लिया था। उसके बाद बेदी और शुक्रा केबिन के भीतर ही फर्श पर सो गये थे। जाते वक्त उदयवीर गैराज को बाहर से बंद कर गया था।

अगले दिन सुबह नाश्ते के साथ उदयवीर आठ बजे ही गैराज पर आ पहुंचा था। तब तक बेदी और शुक्रा नहा-धो चुके थे।

"लो नाश्ता करो।" उदयवीर टिफिन टेबल पर रखता हुआ बोला—"आलू के परांठे हैं।"

"बहुत जल्दी आ गए आज?" बेदी बैठता हुआ बोला।

"क्यों नहीं आता, यारों को भूखा रखता क्या?" उदयवीर हंसा।

शुक्रा भी बैठ गया।

"तू नहीं करेगा?" शुक्रा ने पूछा।

"मैं करके आया हूं।"

बेदी और शुक्रा नाश्ता करने लगे।

उदयवीर ने सिगरेट सुलगा ली और चहलकदमी करने लगा।

नाश्ते के दौरान उनमें कोई बात नहीं हुई।

जब दोनों फारिग हो गए तो उदयवीर कुर्सी पर बैठता हुआ कह उठा।

"कल से सोच रहा हूं, लेकिन समझ नहीं आ रहा कि डॉक्टर वधावन की बेटी को कैसे उठाया जाए?"

"इस तरह सोच भी नहीं सकोगे।" बेदी कह उठा—"किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकोगे।"

"मैं समझा नही।"

"नतीजे पर तब पहुंचा जाता है जब हालात सामने हों। यहां तो कुछ भी सामने नहीं।" बेदी ने उदयवीर को देखा।

"कैसे हालात?"

"उदय।" बेदी गम्भीर स्वर में बोला—"सबसे पहले हमें यह देखना है कि डॉक्टर वधावन की लड़की करती क्या है। किस-किस से मिलती है। कब जाती है, कब आती है, ऐसी और

भी कई बातों की जानकारी हमारे पास होनी चाहिए। तभी तो हम सोच सकते हैं कि उस पर कैसे हाथ डाला जाए, जबकि हमें उसका नाम तक मालूम नहीं।''

''ठीक कहता है तू।'' शुक्रा ने सिर हिलाया।

''यह बात तो है।'' उदयवीर ने टेबल थपथपाया।

''इसके लिए हमें वधावन के बंगले पर नजर रखनी होगी।'' बेदी ने सोच भरे स्वर में कहा—''उसकी लड़की को पहचानना होगा। दो-चार दिन इस काम में लगाने होंगे।''

''कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लगा देंगे।''

तभी शुक्रा ने बेदी को देखा।

''इस हालत में हमारा बाहर निकलना ठीक नहीं।''

''क्या मतलब?''

''वो सब-इंस्पेक्टर तुम्हें अवश्य तलाश कर रहा होगा। तुम्हारे गांव वाले मकान से उन तीनों को, पुलिस ने छुड़ा दिया होगा। हुलिए की तो परवाह नहीं, लेकिन मेरे सिर पर बंधी पट्टिया दूर से ही दूसरों का ध्यान हमारी तरफ आकर्षित करेगी। इस तरह हमें जल्दी पहचाना जा सकता है।''

''फिर क्या करें?''

''हमें यही रहकर पांच-सात दिन का इन्तजार करना होगा। सिर को कम-से-कम इतना तो ठीक हो ही जाना चाहिए कि टोपी डालकर बाहर जा सकें। तेज धूप में सैकड़ों लोग टोपी डालकर घूमते हैं। ऐसे में किसी की निगाहों का हम केन्द्र नहीं बनेंगे।''

''कह तो तू ठीक रहा है, लेकिन इससे पांच-सात दिन खराब हो जाएंगे।'' बेदी बेचैनी से बोला।

''उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जहां तिजोरी के चक्कर में खामखाह बारह दिन ठुक चुके हैं। वहां पांच दिन और सही। क्यों उदय, ठीक बोला मैं?'' शुक्रा ने उदयवीर को देखा।

''सोलह आने ठीक।''

बेदी ने कुछ नहीं कहा।

''विजय!'' उदयवीर ने कहा—''तू शेव मत करना। दाढ़ी-मूंछे बढ़ने देना। तीन-चार दिन पहले के और पांच-सात दिन आगे के, थोड़ी-बहुत दाढ़ी-मूंछे तो आ ही जाएंगी। इससे तेरे को वो पुलिसवाला कम से कम देखते ही पहचान नहीं

सकेगा।''

बेदी का हाथ गालों पर बढ़ी शेव पर गया फिर उसने सिर हिला दिया।

''एक के बाद एक हमने कितने अपराध कर दिए कि अब पुलिस भी पीछे पड़ गई।'' बेदी ने गहरी सांस ली।

''अभी एक और करना है।'' शुक्रा ने सिर हिलाया—''डॉक्टर वधावन की बेटी का अपहरण।''

''शुक्रा।'' बेदी ने व्याकुल निगाहों से उसे देखा—''इसके बाद यह सिलसिला खत्म हो जाएगा ना?''

''क्यों नहीं खत्म होगा।'' शुक्रा ने उसका कंधा थपथपाया—''तेरे दिमाग में फंसी गोली निकलते ही सब ठीक हो जाएगा।''

''और पुलिस।''

''उसका भी देख लेंगे।'' शुक्रा ने गम्भीर स्वर में कहा—''तब शायद हमें शहर छोड़कर कहीं दूर जाना पड़े। कोई फर्क नहीं पड़ता। सारी जमीन एक जैसी है। एक जैसा पानी है। जहां किस्मत ले जाएगी, वहीं चल पड़ेंगे।''

''बहन की शादी करके, मां को साथ लेकर मैं भी तुम दोनों के पास आ जाऊंगा।'' उदयवीर बोला—''गैराज का क्या है, यह तो ऐसा काम है कहीं भी खोल लो। रोटी-पानी तो चल ही जाएगा।''

जवाब में शुक्रा ने सिर हिलाया।

''शुक्रा, डॉक्टर की बेटी को उठाने में हम सफल हो जाएंगे ना?'' बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

''क्यों नहीं होंगे।'' जवाब दिया उदयवीर ने—''पक्का होंगे यार। मत भूल इस बार मैं भी तेरे साथ हूं। काम पूरा न होने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। हम कामयाब होकर रहेंगे।''

''हां।'' शुक्रा दृढ़ता भरे स्वर में कह उठा—''इस बार हमें कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।''

❑❑

उस युवती की उम्र छब्बीस बरस थी। बहुत खूबसूरत थी। देखने वाला देखता ही रह जाये। देखने में उसमें सादापन झलकता था। लम्बे बाल, जो कि कूल्हों तक जा रहे थे। बालों की बहुत ही खूबसूरत लम्बी चुटिया बना रखी थी, जो कि चलते वक्त कूल्हों पर थपकी देकर अपनी मौजूदगी का अहसास करा

रही थी।
गोरा रंग, मोटी-मोटी काली आंखें। चौड़े कंधे, लम्बा कद, अजीब-सी कशिश थी उसमें कि देखने वाले को तभी चैन मिलता, जब दोबारा भी देख लेता।
बदन पर कॉटन की कमीज, सलवार और दुपट्टा बहुत अच्छे ढंग से छातियों पर ले रखा था।
इस वक्त शाम के पांच बज रहे थे और वह बहुत ही खूबसूरत पार्क में पेड़ों की छांव के नीचे टहल रही थी। उसका खूबसूरत चेहरा बिल्कुल शांत था। परंन्तु आंखों में सोच के भाव थे। जिससे इस बात का अहसास हो रहा था कि वह शायद किसी गहरी उलझन से निकलने की कोशिश में है।
"हाय!"
आवाज सुनते ही युवती ठिठकी। पलट कर देखा। छब्बीस-अट्ठाईस साल का लफंगा-सा नजर आने वाला लड़का उससे चंद कदमों की दूरी पर खड़ा दांत फाड़ रहा था।
"क्यों मेरी ज़ान, अकेले-अकेले किसका इन्तजार हो रहा है? मेरा चांस है क्या?"
युवती की आंखें सिकुड़ीं।
"बोल-बोल चांस लगेगा मेरा।"
"जा!" युवती हाथ हिलाकर कह उठी। चेहरे पर उखड़ेपन के भाव आ गये थे।
"ऐसे नहीं।" युवक दो कदम आगे बढ़ा—"सुनसान पार्क है। ठण्डी हवा है और तेरे जैसी खूबसूरत चीज सामने है। ऐसे कैसे जाऊं। चल पेड़ों की साइड में।" कहने के साथ ही उसने आगे बढ़कर युवती का हाथ पकड़ा।
दांत भींचकर युवती ने दूसरे हाथ का जबरदस्त चांटा उसके गाल पर दे मारा।
चांटा इतना जोरदार था कि युवक का सिर झनझना उठा। कलाई छोड़कर उसने गाल पर हाथ रख लिया और गुस्से से युवती को देखने लगा।
"देखता क्या है?" युवती ने आंखें सिकोड़कर कहा—"जा...।"
"हरामजादी!" एकाएक युवक ने गाल से हाथ हटाया और जेब से चाकू निकालकर उसका लम्बा फल खोल लिया—"मेरे पे हाथ उठाती है। समझती क्या है अपने आपको। मरेगी अब

तू, मरेगी। ले मर।" कहने के साथ युवक ने चाकू का फल पूरी शक्ति के साथ युवती के पेट में घुसेड़ना चाहा।
शांत मुद्रा में वहीं खड़ी युवती ने फुर्ती के साथ हाथ आगे बढ़ाया और युवक की चाकू वाली कलाई पकड़ ली। युवक ने चाकू वाली कलाई छुड़ानी चाही, लेकिन सफल न हो सका।
युवती के चेहरे पर कठोरता की परत आ चुकी थी। वह युवक की आंखों में देख रही थी। लाख प्रयासों के बाद भी वह अपनी कलाई आजाद नहीं करवा पा रहा था।
"छोड़ हरामजादी, तू बच नहीं सकेगी, मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े...।"
युवक अपने शब्द पूरे भी नहीं कर सका।
युवती ने उसी पल फुर्ती के साथ उसकी कलाई मोड़ी तो उसके हाथ में थमें चाकू के फल का रुख युवक के अपने ही पेट की तरफ हो गया। इससे पहले युवक कुछ समझ पाता। युवती ने अपने शरीर को खास अंदाज में झटका दिया, जैसे युवक के गले मिलने जा रही हो।
अगले ही पल चाकू का पूरा-का-पूरा फल युवक के पेट में धंस गया। युवक की आंखें हैरानी-पीड़ा और भय के कारण फैलती चली गई। युवती ने उसके कंधे पर हाथ रखकर धक्का दिया तो पीठ के बल नीचे जा गिरा और तड़पने लगा। उसका हाथ अपने पेट में धंसे चाकू की मूठ पर जमा हुआ था।
युवती ने निगाहें उठाकर पार्क में निगाहें घुमाई। अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ीं। पच्चीस-तीस कदमों की दूरी पर एक हवलदार डण्डा थामें खड़ा, सकते की-सी हालत में खड़ा था।
"इधर आ।" कहने के साथ ही युवती ने हाथ के इशारे से उसे पास आने को कहा।
दूसरे ही पल हवलदार उसके करीब था।
"जानता है मुझे?"
"हां शांता बहन।" हवलदार ने तुरन्त सिर हिलाया।
"इसने अपना चाकू निकालकर, तेरे देखते-ही-देखते खुद अपने पेट में घुसेड़ लिया। इसने आत्महत्या की है। अभी तो यह तड़प रहा है, लेकिन बचेगा नहीं। दो-चार मिनट में मर जाएगा। बोल, तू गवाह बनेगा, इसकी आत्महत्या का?" शांता की सीधी निगाह हवलदार के चेहरे पर थी।
"हां शांता बहन। मैं इसकी आत्महत्या का गवाह हूं।"

हवलदार ने पुनः सिर हिलाया।

शांता ने शांत भाव से अपना दुपट्टा ठीक किया और पार्क के बाहर जाने वाले गेट की तरफ़ बढ़ गई।

❑ ❑

यह शहर का पचास-साठ वर्ष पुराना इलाका था। वहां बने मकानों को देखकर ही इस बात का एहसास हो जाता था। बड़ी-बड़ी इमारतें आपस में साथ चिपकी हुई हैं। जिनके नीचे शहर का जाना-माना थोक व्यापार होता था। हर तरफ दुकानें ही दुकानें और भीड़ नजर आ रही थीं। किसी को किसी की तरफ देखने की फुर्सत नहीं थी।

उसी भीड़ में शांता सिर झुकाए आगे बढ़ी जा रही थी। जैसे उसे आने-जाने वालों से कोई मतलब ही न हो और मतलब था भी नहीं। दो-तीन आवाजें उसके कानों में अवश्य पड़ी जो, शांता बहन कहकर नमस्कार, सलाम कर रहे थे। लेकिन शांता ने एक बार भी आवाजों की तरफ न देखा।

उस व्यस्त बाजार में दुकानों के बीच दो फीट चौड़ी सीढ़ियां ऊपर जा रही थी। शांता सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए पल भर के लिए ठिठकी। ऊपर से तीस वर्षीय एक औरत आ रही थी। वो जल्दी से नीचे उतरी और हाथ जोड़कर शांता से बोली।

"शांता बहन। जब से आपने मेरे मर्द को समझाया है। तब से वह बिल्कुल ठीक हो गया है। अब मुझे मारता भी नहीं और घर पर भी वक्त से आ जाता है।"

शांता ने सिर हिलाया और सीढ़ियां चढ़ती चली गई।

सीढ़ियां समाप्त होने पर जरा-सा घूमकर ऊपर जाने वाली सीढ़ियां और भी थीं। परन्तु शांता ऊपर नहीं गई। सामने ही लोहे की ग्रिल के पास लगी बेल को दबाया। जवाब में कुछ ही पलों बाद पचपन बरस के करीब की औरत नजर आई। शांता को देखते ही, उसने ग्रिल के भीतर लगा ताला खोला फिर ग्रिल खोली तो शांता भीतर प्रवेश कर गई। औरत ने ग्रिल पर ताला लगाया और शांता के पीछे-पीछे खूबसूरत ड्राइंगरूम में जा पहुंची।

"इस तरह अकेले बाहर मत जाया कर शांता।" औरत ने सपाट स्वर में कहा।

"यूं ही घूमने का मन कर आया था मां।" शांता सोफे की

कुर्सी पर बैठती हुई बोली—"पानी पिला।"

यह औरत शांता की मां सत्या थी।

"तेरे को पता है कि इस तरह तेरा अकेले बाहर जाना ठीक नहीं। किसी दुश्मन ने देख लिया तो ठीक नहीं होगा। बाहर तो लोग कब से तेरी ताक में रहते हैं।"

"पानी पिला।" शांता ने उसकी बात अनसुनी करते हुए कहा।

सत्या ने उसके मूड को पहचाना तो फिर कुछ नहीं बोली। दूसरे कमरे में जाकर पानी लाकर दे दिया।

शांता ने सत्या को देखा।

"कोई नई बात मां?"

"नहीं, खास तो कुछ नहीं। तेरा बाप दिन में दारू पीकर झगड़ा कर आया है।

"मैंने नई बात पूछी है। पुरानी बातें मत दोहराया कर।" शांता की निगाह सत्या पर टिकी—"विष्णु कहा है?"

"आया नहीं, सुबह गया था।"

"मीना?"

"वो भी नहीं है। तूने कोई काम करने को बोला था। वो उसी के लिए गई हुई है।"

शांता उठ खड़ी हुई।

"दामोदर तेरा इन्तजार कर रहा है।"

"कहां है?"

"अपने कमरे में।"

"बुला कर ला उसे।" कहने के साथ ही शांता पुनः बैठ गई।

सत्या वहां से चली गई।

यह पांच कमरों का मकान इनका घर था। मां सत्या, बाप केदारनाथ, भाई दामोदर और विष्णु, बहन मीना। दामोदर बड़ा था, उसके बाद शांता, फिर विष्णु और मीना।

दामोदर वहां पहुंचा।

तीस बरस का खूबसूरत छः फीट लम्बा स्वस्थ युवक था। होंठों पर मूंछे थी। बदन पर जीन्स की पैंट और सफेद कमीज पहन रखी थी। हाथ में खाली रिवॉल्वर था, जिसका चैम्बर खोले

उसे साफ किए जा रहा था। एक बारगी देखने पर अच्छे घर का लगता था, लेकिन आंखों में बसी क्रूरता उसके असल चेहरे को दर्शा रही थी।

उसने शांता को देखा और सामने कुर्सी पर बैठ गया। उसके हाथ रिवॉल्वर को साफ करने में व्यस्त थे।

"तू हमेशा लफड़े वाले काम मेरे को देती है।" दामोदर ने मुंह बनाकर कहा।

"बात क्या है?" शांता की आंखें सिकुड़ी।

"सुमेर, दो लाख से ऊपर नहीं आ रहा।"

"दो लाख।" शांता का चेहरा सपाट रहा—"बात छः लाख की हुई थी।"

"हां, लेकिन अब वो दो लाख देता है। बोलता है, मेरा बेटा मेरे पास है। कोई फिक्र नहीं। मैं तो उसकी गर्दन काट देता, लेकिन इस बारे में एक बार तेरे से बात करना ठीक समझा।"

"और क्या बोला सुमेर।"

"यही बोला, ठीक तरह बात नहीं की।" दामोदर ने कहा—"जब वह मुझसे बात करने आया तो उसकी जेब में रिवॉल्वर भी पड़ा हुआ था। अब 'पर' निकल आए हैं उसके।"

"सिगरेट दे।" शांता की आवाज सपाट थी। उसने सत्या को देखा।

सत्या ने तुरन्त एक तरफ रखे पैकिट में से सिगरेट निकालकर उसे दी और लाइटर से उसकी सिगरेट सुलगा दी।

शांता ने सोच भरे अंदाज में कश लिया।

"वो बहुत पक्का दिख रहा था। दो लाख से ऊपर एक पैसा भी नहीं देगा।" दामोदर ने तीखे स्वर में कहा—"तू कहे तो उड़ा दूं साले को।"

शांता की निगाह दामोदर पर जा टिकी।

"मैंने तेरे से सलाह मांगी है।"

"किसी की सलाह लेती ही कब है।"

"कम बोला कर मेरे सामने।" शांता ने उसे घूरा तो दामोदर दूसरी तरफ देखने लगा।

शांता ने सत्या से कहा।

"फोन दे।"

सत्या तुरन्त आगे बढ़ी और फोन उठाकर, शांता की तरफ

बढ़ाया।

"मां।" शांता ने सत्या को घूरा—"उम्र बढ़ने के साथ-साथ तेरी अक्ल भी कम होती जा रही है। सुमेर का नम्बर मैं मिलाऊंगी क्या?"

सत्या ने फौरन सुमेर का नम्बर मिलाया।

"सुमेर से बात करा।" दूसरी तरफ से बात होते ही सत्या ने कठोर स्वर में कहा।

"तुम कौन हो?"

"मैं शांता की मां बोल रही हूं।"

दो पल लाइन पर खामोशी रही। फिर जब सुमेर की आवाज आई तो फोन शांता के हाथ में था।

"सुमेर!" शांता की आवाज बेहद शांत थी—"आजकल तुमने दान देना कब से शुरू कर दिया।"

"क्या मतलब?" मर्दाना आवाज उसके कानों में पड़ी।

"दामोदर तुमसे मिला तो तुम दो लाख का उसे दान देने लगे। दानवीर कब से बन गये?"

"शांता बहन मैं...।"

"तेरे बच्चे को कुछ लोगों ने उठा लिया था। तब तेरी हालत देखने वाली थी। तू छठी मंजिल से छलांग लगाने को तैयार था। मेरे पास आया तू, बोल पैरों से चल कर आया?" शांता का चेहरा सुर्ख हो उठा।

"ह...हां।"

"इसलिए कि मैं तेरे बच्चे को तलाश करके, वापस ला दूं। छः लाख में सौदा पटा। पांच दिन बाद तेरा बच्चा सही-सलामत वापस तेरे पास पहुंचा दिया और अब तू छः लाख देने से पीछे हटता है। कान खोलकर सुन ले। तेरे बच्चे को दो घंटों में दोबारा भी कोई उठा सकता है और तब मैं वापस लाकर नहीं दूंगी।"

"वो शांता बहन...।"

"तू रिवॉल्वर कब से रखने लगा? दामोदर से बात करता है और जेब में रिवॉल्वर रखता है। तब तेरे को मेरी याद नहीं आई। भूल गया था क्या तू मुझे।"

"म...मुझे माफ कर दो शांता बहन। फिर कभी ऐसा नहीं होगा। मैं अभी पैसे भिजवाता हूं।"

"दस लाख।"

"क्या?"

"छः लाख तेरे काम के और चार लाख तेरी दादागिरी के। तीन घंटों में पैसा मेरे पास पहुंच जाना चाहिए, नहीं तो चौथे घंटे मेरे आदमी तेरे पास पहुंच जाएंगे।" शांता ने कठोर स्वर में कहा और फोन बंद करके सत्या की तरफ बढ़ाया तो सत्या ने फोन लेकर वापस रख दिया।

दामोदर ने रिवॉल्वर बंद करके जेब में डाली। निगाह शांता पर थी।

"तेरे ऐसा कहने से वो दस लाख दे देगा। जो छः नहीं दे रहा था।" दामोदर बोला।

"देगा।"

"मैं शर्त लगाकर कहता हूं कि नहीं देगा। साला पैसे के मामले में कमीना—।"

"दामोदर!" शांता ने उसकी आंखों में झांका—"शर्त मत लगाया करो क्योंकि तुम कभी जीत नहीं पाए।"

दामोदर ने कुछ नहीं कहा और उठकर वहां से चला गया।

"शांता!" सत्या पास आकर बैठते हुए बोली—"आजकल विष्णु के रंग-ढंग ठीक नजर नहीं आ रहे।"

"क्यों?" शांता की निगाह सत्या पर गई।

"शायद इसलिए कि वो अंग्रेजी स्कूल में पढ़-लिख गया है और उसे हमारा पुश्तैनी काम पसन्द नहीं।"

"यह तुमसे विष्णु ने कहा?" शांता की आंखें सिकुड़ीं।

"नहीं, मैंने ही महसूस किया है।"

"विष्णु से मैं बात कर लूंगी।" शांता ने शांत भाव में सिर हिलाया—"वो ठीक है, उसकी परवाह मत कर।"

तभी कालबेल बजी।

सत्या उठकर गई तो साथ में आने वाला केदारनाथ था। उसके चेहरे पर चोट का ताजा निशान नजर आ रहा था। जिस पर बैंडिज लगी हुई थी।

शांता ने सख्त निगाहों से केदारनाथ को घूरा।

"आराम कर रही हो बेटी।" केदारनाथ बैठता हुआ बोला।

"पापा! आजकल तुम दिन में भी पीने लगे हो और सस्ते लोगों की तरह दारूखाने पर झगड़ा...।"

"ऐसे ही हाथ उठ गया था।" केदारनाथ ने गाल के जख्म

पर हाथ फेरा—"सामने वाला भी पिए हुए था। शीशे का गिलास मेरे मुंह पर दे मारा।"

"तुम इस तरह झगड़कर मेरी इज्जत मिट्टी में मिला रहे हो।" शांता ने सख्त स्वर में कहा—"लोग क्या कहेंगे कि शांता का बाप बेवड़ा हो गया है, दिन में पीता है। झगड़ा करता है।"

केदारनाथ, सत्या को देखकर मुस्कराया।

"मुझसे बात करो पापा।"

"जो हो गया, हो गया।" केदारनाथ ने लापरवाही से कहा।

"फिर से ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए, जो मेरी इज्जत खराब करे। पीना है तो, घर बैठकर पी। सड़क पर, दारूखाने में नहीं।"

"ठीक है, ठीक है।" कहने के साथ ही केदारनाथ उठा और बाहर निकल गया।

शांता ने सत्या को देखा।

"विष्णु कुछ कहकर गया था?"

"नहीं।"

शांता उठी और ड्राइंग रूम से निकलकर, अपने कमरे की तरफ बढ़ गई।

❑ ❑

अपने कमरे में पहुचंकर शांता ने दरवाजा बंद किया और दुपट्टा एक तरफ फेंक दिया। फिर उसके बाद कमीज-सलवार और बाकी कपड़े भी उतार फेंके। सामने ही दीवार पर लगा आदम कद-शीशा था। अपने शरीर के अंगों को वह शीशे में निहारने लगी।

हर रोज ही वह ऐसा करती थी।

शांता जानती थी कि वह खूबसूरत है। बहुत खूबसूरत है। चेहरे से ही नहीं। शरीर के अंगों से भी खूबसूरत है। उसके शरीर का जर्रा-जर्रा लाजवाब है। शीशे में देखते हुए कभी वह अपनी छातियों को टटोलने लगती तो कभी कुल्हों को। फिर पास ही के बाथरूम का दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गई। शॉवर खोला तो पानी गिरते ही धीरे-धीरे आग की तपिश कम होने लगी।

और जब देर बाद शांता बाथरूम से बाहर निकली तो आग ठण्डी हो चुकी थी।

एक तरफ मौजूद अलमारी से उसने दूसरा कमीज-सलवार निकाल कर पहना और बैड पर लेट गई। पास ही पड़े पैकिट में से सिगरेट निकालकर सुलगाई।

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई।

"कौन?"

सत्या ने दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश किया। हाथ में चाय का प्याला था। जो कि सत्या ने बैड के पास पड़ी तिपाई पर रखा और शांता से कह उठी।

"इंस्पेक्टर काली का फोन आया था।"

"क्या कह रहा था?" शांता ने कश लिया।

"बताया नहीं। तुम्हें पूछ रहा था।"

"दामोदर को भेजो।"

सत्या चली गई। दो मिनट बाद ही दामोदर ने भीतर प्रवेश किया।

"इंस्पेक्टर काली को पचास हजार रुपया पहुंचा दो।" शांता ने कहा।

"किस बात का?"

शांता ने कठोर निगाहों से दामोदर को देखा। दामोदर सिर हिलाकर बाहर निकल गया। शांता ने चाय का कप उठाया और सोच भरे अंदाज में घूंट भरने लगी।

आधा मिनट भी नहीं बीता होगा कि सत्या ने तेजी से भीतर प्रवेश किया।

"शांता, फोन आया है।" सत्या का स्वर कठोर था—"विष्णु को पास के चौराहे पर कुछ लोगों ने घेर लिया है।"

शांता के हाथ से चाय का प्याला नीचे जा गिरा। वह उछलकर खड़ी हुई।

"दामोदर बाहर जाने वाला है, उसे रोको।"

सत्या भागी।

शांता ने जल्दी से अलमारी में से काले रंग का बुर्का पहना कि दामोदर भागा आया—

"वो विष्णु?"

"रिवॉल्वर भरा हुआ है।" सत्या अलमारी में से रिवॉल्वर निकालते हुए बोली।

"हां।"

"चौराहे पर पहुंच। विष्णु को कुछ नहीं होना चाहिए। भाग दामोदर।" शांता गुर्राई।

अगले ही पल दामोदर कमरे से बाहर था। सत्या लोहे की ग्रिल खोले खड़ी थी। वह तेजी से सीढ़ियां उतरता चला गया। दूसरे ही पल बुर्के में छिपी शांता, सत्या के पास से गुजरी और सीढ़ियां उतरने लगी।

सत्या ने ग्रिल बंद करके ताला लगा दिया। उसके चेहरे पर कठोरता थी। भीतर कमरे में पहुंची तो केदारनाथ खड़ा था। उसने सत्या से पूछा।

"क्या बात है? यह भागदौड़ क्यों?"

"चौराहे पर विष्णु को कुछ लोगों ने घेर लिया है।" सत्या ने कहा।

केदारनाथ की आंखें सिकुड़ी।

"किसने?"

"कुछ नहीं मालूम।"

"कुछ नहीं मालूम!" केदारनाथ ने अपने नाक को मसला—"उन लोगों की इतनी हिम्मत कि पास के चौराहे पर विष्णु को घेरे। सत्या वो बैकुण्ठ होगा।"

"बैकुण्ठ?"

"हां, आजकल वो ज्यादा हवा में उड़ रहा है। इस इलाके में अपना सिक्का चलाना चाहता है। बेवकूफ है। शांता के सामने नहीं टिक पाएगा।" केदारनाथ बड़बड़ा उठा—"बेकार में खून-खराबा करवाएगा।"

"शांता के आगे वो बेशक न टिक पाए। लेकिन उसने अपने साथियों के साथ विष्णु को घेरा है जो ऐसे मामलों से निपटने में बिल्कुल अनाड़ी है। दामोदर होता तो देख लेता, उन सबको।"

केदारनाथ के माथे पर बल पड़े। उसने सत्या को देखा।

"तू विष्णु को क्या समझती है। मेरा बेटा है वो। समझी, जो खून दामोदर में है, विष्णु में भी वही है।"

❑ ❑

वह व्यस्ततम चौराहा था। रिक्शों और पैदल लोगों के ही इस्तेमाल में आता था। वहां ट्रैफिक वगैरहा नहीं चल सकता था। परन्तु इस वक्त चौराहे पर जैसे सब सिमटे पड़े थे। कई रिक्शों में माल लदा था। वह वहीं खड़े थे। न रिक्शा वाला था

और न ही माल वाला।

दो मिनट पहले ही दो गोलियां चली थीं और उसके बाद वहां अफरा-तफरी का आलम और फिर यह खामोशी, जो नजर आ रही थी।

वो चौबीस बरस का बेहद आकर्षक युवक था—विष्णु। विष्णु था वो। जो कि पैदल ही अपने घर की तरफ आ रहा था कि लगातार उस पर दो फायर हुए थे। लेकिन किस्मत अच्छी थी कि दोनों गोलियों से वह बच गया था। एक गोली कमीज को गर्माहट देते हुए निकल गई थी और दूसरी जाने किस तरफ गई। बहरहाल वो सलामत रहा।

विष्णु को समझते देर न लगी कि यह हमला है। एक पल की देरी किए बिना भागते लोगों में से होता हुआ, सड़क के किनारे खड़े मोटे तख्त के पीछे जा छिपा। इसके साथ उसने जेब से रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली। तख्त में छेद था। वहां आंख लगाए हर तरफ देखने लगा।

गोलियों की आवाजों से लोग छिटक कर दाएं-बाएं हो चुके थे।

अगले डेढ़ मिनट में विष्णु ने उन तीन को पहचाना जो किसी-न-किसी चीज की आड़ में थे और शायद उसे तलाश कर रहे थे कि वह कहां चला गया? उनमें से एक को उसने स्पष्ट पहचाना कि वह बैकुण्ठ था। उसी इलाके में रहता था और आजकल कोई-न-कोई कारनामा करके, अपनी धाक जमाने के लिए बेचैन हुआ पड़ा था।

विष्णु रिवॉल्वर थामे वैसे ही बैठा, उनकी तरफ से की जाने वाली हरकत का इन्तजार करने लगा। अगर वह उसके छिपने की जगह के बारे में नहीं जानते तो उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। वहां लोगों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि इशारा करके उसके बारे में बता सके।

सबको जान प्यारी थी। बीच में दखल देकर कोई खामखाह मरना नहीं चाहता था।

❑ ❑

दामोदर वहां पहुंचा। दोनों बांहों को छाती पर बांध रखा था। इसलिए रिवॉल्वर बगल में लगभग छिप चुका था। सामने भीड़ को देखकर वह पैदल ही आगे बढ़ा। पास पहुंचा और भीड़ का

हिस्सा बनकर, हर तरफ अपनी सुलगती निगाहें घुमाने लगा।

आधा मिनट बीत गया।

"वो बाटा की बगल में, फोन का जो बक्सा है, उसके पीछे बैकुण्ठ है।"

दामोदर के कानों में, शांता की सर्द-धीमी आवाज पड़ी।

दामोदर ने एक बार भी बुर्के में लिपटी, पास खड़ी शांता को नहीं देखा।

"बैकुण्ठ को संभाल ले। मामला ठीक हो जाएगा, उसे मारना नहीं जाने देना।"

दामोदर वहां से हटा और जगह बनाता, बाटा की तरफ बढ़ने लगा। उसकी आंखों में अंगारे भरे हुए थे। रिवॉल्वर वाला हाथ अभी भी बगल में था। भीड़ की आड़ लेता वह वहां पहुंच गया। जहां शांता ने कहा था। वहां छिपे बैकुण्ठ को उसने पहचाना। उसके हाथ में रिवॉल्वर देखी और उसके सिर पर सवार खून को भी पहचाना।

दामोदर ने बेहद सावधानी के साथ आगे बढ़कर बैकुण्ठ की पीठ से रिवॉल्वर सटा दी।

बैकुण्ठ ने फुर्ती से पलटना चाहा।

"हिल मत।"

"कौन है तू?" बैकुण्ठ गुर्राया।

"दामोदर। सामने आकर शक्ल दिखाऊं क्या?" दामोदर की आवाज में मौत के भाव थे।

"तुम?" बैकुण्ठ चौंका।

"क्या इरादे हैं, यहां तू मरा या मैं। एक ही बात है। मामला फंसने वाला हो जाएगा। ढेरों लोग, दो-चार पुलिसवाले भी। मैंने इस भीड़ में देखे हैं। समझदारी तो इसी में है कि खिसक ले।" दामोदर का स्वर खतरनाक था।

दो पल की सोच के बाद बैकुण्ठ दांत भींचकर बोला।

"ठीक है।"

"अपने रिवॉल्वर की सारी गोलियां गिरा दे।"

"और तू?"

"मैं भी गिरा देता हूं। उसके बाद यहां से ऐसे चलेंगे, जैसे दोस्त हैं और पंद्रह कदमों के बाद अलग-अलग रास्तों पर निकल जाएंगे। दोबारा समझाऊं क्या?" दामोदर ने खतरनाक स्वर में

कहा।

"ठीक है।"

"किस्मत वाला निकला।" दामोदर ने वहशी स्वर में कहा—"कोई और जगह पर हत्थे चढ़ा होता तो अब तक तेरी लाश नीचे होती और मैं यहां से एक किलोमीटर दूर पहुंच चुका होता।"

उसके बाद दोनों ने ऐसे ही किया, जैसा कि तय हुआ था। बैकुण्ठ ने अपने दोनों साथियों को कुछ न करने का इशारा कर दिया था।

सब ठीक रहा।

❑❑

दामोदर, विष्णु के साथ घर पहुंचा।

शांता अभी नहीं लौटी थी।

"क्या है ये जिन्दगी।" विष्णु गुस्से से कह उठा—"हर समय खून-खराबा, खतरा-गोली बारी, चैन से सड़क पर चला भी नहीं जा सकता।"

केदारनाथ-सत्या और दामोदर की निगाहें उस पर जा टिकीं।

"क्यों?" केदारनाथ की आंखें सिकुड़ी—"तेरे लिए यह सब नया है क्या?"

"हां, नया ही है। मैं हॉस्टल से पढ़कर लौटा हूं। इन सब चीजों से दूर रहा हूं।" विष्णु गुस्से से कह उठा—"अब यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"सुना तूने।" केदारनाथ ने सत्या से कहा—"अच्छा नहीं लगता इसे खानदानी धंधा। साहब बन गया है ये। नौकरी करेगा, बाबू बनेगा, दो हजार रुपया महीना पगार लाएगा।"

दामोदर हंस पड़ा, आगे बढ़कर उसने विष्णु का कंधा थपथपाया।

"शांति आए तो ये बांत उसे बोलना, मजा आएगा।" कहने के साथ ही दामोदर दूसरे कमरे में चला गया।

केदारनाथ भी उठ गया।

सत्या, विष्णु के पास पहुंची और कठोर स्वर में कह उठी।

"शांता को पसन्द नहीं आएंगी तेरी बातें। बेवकूफों वाली बातें मत कर। तेरे को हमारे साथ यही धंधा संभालना है।"

❑❑

बैकुण्ठ वहां से सीधा दारू के अड्डे पर पहुंचा। साथ में वही दोनों साथी थे। तीनों ही उखड़े हुए थे कि शिकार हाथ में आकर भी निकल गया। एक टेबल पर वे बैठ चुके थे। दारू की बोतल खुल चुकी थी।

"नशा नहीं चढ़ेगा।" एक ने कहा।

"क्यों?" दूसरा बोला।

"आज बैकुण्ठ की धाक जम जाती इलाके में, अगर विष्णु को खत्म कर देते।"

"हां।" उसने बैकुण्ठ को देखा—"आज गोल्डन चांस हाथ से निकल गया।"

"वो साला दामोदर बीच में जाने कैसे आ गया।" बैकुण्ठ गुर्रा उठा—"वरना विष्णु ने कहां बचना था।"

"कोई बात नहीं, कब तक बचेंगे ये साले।"

"मैं तो सीधा ही शांता को खत्म कर देना चाहता हूं।" बैकुण्ठ ने दांत भींचकर कहा—"लेकिन वो हाथ ही नहीं... ।"

बैकुण्ठ खामोश हो गया। उसने बुर्का पहने औरत को अपनी तरफ आते देखा और लोग भी देख रहे थे। दारूखाने में किसी औरत के आने का मतलब ही नहीं था फिर वह?

बुर्का पहने औरत उनकी टेबल के पास आकर रुकी। इससे पहले कि वह कुछ कहते-पूछते तभी बुर्के के भीतर से रिवॉल्वर से दो बार फायर हुए। दोनों गोलियां बैकुण्ठ के छाती में जा लगी। दारूखाने में गोलियों के तीव्र धमाके गूंज उठे थे। बुर्के में दो बड़े-बड़े छेद नजर आने लगे थे।

यह सब देखकर कुछ चीख भी पड़े।

बुर्के वाली औरत पलटी और तेज-तेज कदमों से बाहर की तरफ बढ़ गई। एक ने हौसला करके उसे पकड़ना चाहा कि बुर्के में से एक और फायर हुआ। गोली उसके पेट में जा लगी। उसके बाद कोई आगे नहीं आया। दारूखाने में सन्नाटा छा गया। औरत बाहर निकल गई। उसके पीछे भी कोई नहीं गया।

बुर्का पहने वह पैदल ही आगे बढ़ती रही फिर एक गली में मुड़ गई। गली लगभग खाली ही थी। उसने बुर्का उतारकर गली में फेंका और दुपट्टा ठीक करने के बाद आगे बढ़ गई। रिवॉल्वर सलवार में फंसा चुकी थी। वह शांता थी, इस वक्त उसका चेहरा शांत नजर आ रहा था।

□□

शांता की निगाहें विष्णु पर जा टिकीं।

शाम के आठ बज रहे थे। बाहर अंधेरा छा चुका था। केदारनाथ बोतल खोले बैठा था। सत्या भी अपना गिलास लिए उसके पास बैठी थी। दामोदर एक कुर्सी पर टांगें फैलाए था। छोटी बहन मीना भी आ चुकी थी और प्लेट में कुछ रखकर, उसे खाने में लगी हुई थी।

सबकी निगाहें शांता और विष्णु पर थीं।

"क्या बोला तू?" शांता का स्वर शांत था—"तेरे को ये काम अच्छा नहीं लगता।"

विष्णु चाहकर भी जवाब नहीं दे पाया।

"इसलिए अच्छा नहीं लगता कि हॉस्टल में शरीफों के साथ रहकर पढ़-लिख आया है। शरीफ बन गया है तू।" शांता की आवाज में किसी तरह का भाव नहीं था—"तेरा बाप सारी उम्र यही काम करता रहा। तब तो तू कभी नहीं बोला कि यह काम अच्छा नहीं है।"

"तब-तब मैं छोटा था।"

"तो अब बड़ा हो गया है तू?" शांता ने हौले से सिर हिलाया—"कितना बड़ा हो गया है। इतना कि मेरे सामने मुंह खोलने लगे। बोल खोलेगा मुंह?"

विष्णु चुप रहा।

"कान खोलकर सुन ले, तेरे को क्यों पढ़ाया, क्योंकि दामोदर पढ़ा-लिखा नहीं है। कोई एक ऐसा पढ़ा-लिखा होता हममें जो खास किस्म के मामले संभाल सके। तेरे को पढ़ाने नहीं, धंधे के हिसाब से ट्रेंड करने भेजा था और तू पूरी तरह तैयार होकर आ गया, समझा क्या?"

विष्णु होंठ भींचकर रह गया।

"तू हमारे खानदान का है। हमारे साथ जुड़ा हुआ है। हमसे अलग हो गया तो लोग तेरी बोटी-बोटी कर देंगे। दूसरे ही घंटे तेरी लाश कहीं पड़े होने की खबर आएगी। इस बात को अपनी खोपड़ी में बिठा ले। परिवार के साथ है तो सलामत है। नहीं तो तू कुछ भी नहीं। आज नहीं देखा, क्या हुआ? बैकुण्ठ ने घेर लिया। मार भी देता तेरे को अगर दामोदर वक्त पर वहां न पहुंच जाता तो।"

विष्णु ने बेचैनी से पहलू बदला।

"चुप क्यों है? बोल-बोलता क्यों नहीं।"

"तुम ठीक कहती हो।" विष्णु गहरी सांस लेकर कह उठा।

"ये बात अपनी समझ में रख, तेरा भला हमारे साथ है। जिस दिन हमसे अलग हुआ, मारा जायेगा।"

तभी फोन की घंटी बजी।

सत्या फौरन उठी, फोन उठाया। बात की, फिर फोन लेकर शांता के पास पहुंची।

"कौन है?" शांता ने उसे देखा।

"बात कर ले।"

शांता ने फोन थामा। आवाज पहचानते ही बोली।

"तू कहां मरा हुआ है चार दिन से। मैंने तेरे को आने के वास्ते बोला था...क्या—घर में मेरे घर वाले होते हैं। तो क्या हुआ...ज्यादा मत बोल, तू आ, शान से आ। मेरे घरवालों को इस बात से क्या मतलब, रात को मेरे साथ कौन सोता है। मैंने अपने कमरे का दरवाजा खुला तो नहीं रखना। वो बंद ही रहेगा। तेरे को कोई नंगा नहीं देखेगा। आजा।" कहने के साथ ही शांता ने फोन सत्या को दिया तो सत्या ने फोन को वापस रख दिया,

"एक पैग मुझे भी बना दे।" शांता बोली।

पाठकों जैसा कि आप भी महसूस कर हैं कि कहानी इस उपन्यास में समाप्त नहीं हो पाएगी, क्योंकि इधर तो शांति बहन, विष्णु के दम पर डॉक्टर वधावन की बेटी आस्था पर हाथ डालने की कोशिश में है और उधर विजय बेदी, शुक्रा और उदयवीर डॉक्टर वधावन की बेटी को अपने कब्जे में करना चाहते हैं ताकि वधावन को मजबूर करके बेदी के दिमाग का ऑपरेशन करवाकर, वहां फंसी गोली निकाली जा सके। जाहिर है कि अब उनकी राह में शांति बहन जैसे खतरनाक युवती आएगी और इन तीनों में तो इतना दम-खम दिखता नहीं कि उसका मुकाबला कर सकें। बहरहाल आगे जो भी होना है उसे जानने के लिये मनोज पब्लिकेशन्स के आगामी सैट में प्रकाशित अनिल मोहन का आगामी नया उपन्यास "चाबुक" अवश्य पढ़ें। अभी तो हमें यह भी देखना है कि विजय बेदी, अपने दिमाग में फंसी गोली नाम की मौत से मुक्ति पा सका या नहीं? अंजना और राघव, हो सकता है 'चाबुक' में इनसे भी आपकी मुलाकात हो

जाए। या फिर उससे आगे कहीं।

सत्या ने फौरन पैग तैयार करके शांता के हाथों में थमा दिया।

शांता ने घूंट भरकर, विष्णु को देखा।

"तेरे को उस छोकरी के पीछे लगाया था। उससे दोस्ती डालने को कहा था।" शांता बोली।

"डॉक्टर वधावन की लड़की?" विष्णु बोला।

"हां, क्या नाम है उसका?"

"आस्था।"

"तो याद हो गया नाम। उसे फांसा की नहीं?"

"यूं ही दो-चार किसी बहाने मुलाकात की है।" विष्णु बोला—"जल्दी फंस जाएगी।"

"देर मत लगाया कर। जो मैं बोलूं वो बात फौरन पूरी कर।" शांता ने उसे घूरा—"उसका बाप डॉक्टर वधावन चालीस-पचास करोड़ की पार्टी है। यह मेरी खबर है और ऐसी खबरें लाने में कौन-सी पार्टी पर हाथ डाला जाए, बहुत मेहनत लगती है। वक्त बरबाद होता है। वधावन की लड़की को अपने काबू में कर। प्यार का सिक्का चला दे। ऐसा कि जो तू कहे, वो वही करे। उसके बाद उसको ले उड़ना है। लड़की को वापस लेने के लिए डॉक्टर कम-से-कम पच्चीस करोड़ देगा। समझा क्या?"

"हां।"

"कब तक यह काम पूरा करेगा?"

"दस दिन और लगेंगे।"

"ग्यारहवां दिन न लगे। मैं तेरे को बता दूंगी कि छोकरी को कहां ले जाना है। मेरा काम पूरा होना चाहिए। यूं ही मैं तुम लोगों को नहीं पाल रही। कुछ करो, बड़ा करके दिखाओ। शांता सिर्फ उसी की इज्जत करती है, जो अपने कामों को पूरा करता है।"

तभी कालबेल बजी। सत्या उठकर गई। दो मिनट बाद ही वापस आई तो उसके हाथ में मीडियम साइज का ब्रीफकेस था।

"सुमेर ने दस लाख भेजा है।" कहने के साथ सत्या ब्रीफकेस सहित दूसरे कमरे में चली गई।

"जा अपने कमरे में आराम कर। कल से तेरे को उस छोकरी पर लगना है।" कहने के साथ ही शांता ने मीना को देखा।

विष्णु उठा और वहां से चला गया।

"तू काम पूरा कर आई है?" शांता ने मीना को देखा।

"हां।"

"ठीक है, कल तेरे को ए.सी.पी. पंडित से मिलना है। वो तेरे को याद कर रहा था, समझ गई?"

"हां।"

तभी दामोदर बोला।

"बैकुण्ठ ने आज बहुत हिम्मत वाला काम दिखाया।" दामोदर बोला—"ऐसी हरकत वो फिर करेगा। मेरा ख्याल है, कल उसका नाम काट ही दूं।"

"उठ, एक पैग बना।"

दामोदर उठा, शांता के हाथ से गिलास लिया और पैग तैयार करके उसे वापस थमा दिया।

"बैकुण्ठ को—।" दामोदर ने कहना चाहा।

"काट दिया है उसका नाम।" शांता ने सिर उठाकर पास खड़े दामोदर को शांत निगाहों से देखा, फिर हाथ में पकड़े गिलास में से घूंट भरा।

"नाम काट दिया।" दामोदर के होंठों से निकला। अगले ही पल गहरी सांस लेकर रह गया।

"अपने इलाके में किसी के नाम की हवा मत बनने दो।" केदारनाथ कह उठा—"धंधे में देर तक जमे रहना है तो, इस बात का हमेशा ध्यान रखो। दूसरों के भीतर अपना डर बनाये रखो।"

❑❑

"शुक्रा।" बेदी बोला—"मैं कैसा दिखता हूं?"

शुक्रा ने बेदी को देखा।

चेहरे पर दाढ़ी-मूंछे थीं हल्की-हल्की। सिर का जख्म काफी ठीक था। जो थोड़ा-बहुत बचा था उसे छिपाने के लिए सिर पर पी-कैप रख ली थी। शरीर पर कमीज-पैंट थी।

"पहचाना जाता हूं?"

"नहीं।" शुक्रा मुस्कराया—"आसानी से तेरे को कोई नहीं पहचान पायेगा, उदय कहां है?"

"बाहर है, मैं भी जूते पहनकर आता हूं।" बेदी बोला।

शुक्रा बाहर निकल गया।

उदयवीर बाहर खड़ा था। उसके तीनों छोकरें दो कारों में

लगे हुए थे। वह भी तैयार था। सुबह के ग्यारह बज रहे थे। शुक्रा उसके पास पहुंचा।

"डॉक्टर वधावन की लड़की के बारे में छोटी-से-छोटी बात भी मालूम करनी है।" शुक्रा बोला—"ताकि मौके पर जब उसे उठाएं तो हमसे कोई गलती न हो, सफल रहें।"

"चिन्ता मत कर।" उदयवीर ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"अब मैं साथ हूं। रास्ते में जो भी अड़चन आएगी, दूर कर दूंगा। पंद्रह दिन के भीतर ही विजय के दिमाग में फंसी गोली, वधावन ऑपरेशन से निकाल देगा।"

"ज्यादा तोप मत बन।" शुक्रा ने मुंह बनाया—"मुझे मालूम है, तू कितने पानी में है।"

"देखता रह।" उदयवीर मुस्कराया—"तूने तो तिजोरी चोरी करके, बड़ी तोप चला ली। अब मेरी तोप देख लेना।"

"देख लूंगा।"

तभी ठीक गैराज पर एक मोटर साइकिल आकर रुकी। वह पुलिस मोटर साइकिल थी और उस पर सब-इंस्पेक्टर जय नारायण मौजूद था। उसे देखते ही शुक्रा का दिल उछलकर मुंह में आ गया। जय नारायण उसे पहचानता था। जब कार की टक्कर मारी थी, पुलिस कार को तब......नहीं तब उसने चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ लगा रखी थी। अब क्लीन-शेव है। कैसे पहचानेगा? शुक्रा इन्हीं सोचों में उलझा रहा। वहां से हटने का वक्त ही नहीं मिला, क्योंकि जय नारायण ने मोटर साइकिल स्टैण्ड पर लगा कर उन्हें देखा।

"यह यहां क्या करने को आ गया।" उदयवीर बड़बड़ाया और आगे बढ़ता हुआ कह उठा—"नमस्कार इंस्पेक्टर साहब।"

"नमस्कार।" जय नारायण बोला—"मोटर साइकिल की ब्रेक बहुत ढीली हो गई है। देखना, टाइट हो सकती है।"

"क्यों नहीं साहब! हम तो बैठे ही आपकी सेवा के लिए हैं। मामूली-सा काम है। ओए, इधर आ।" उदयवीर ने छोकरे को बुलाया—"इंस्पेक्टर साहब की ब्रेक टाइट कर दे।"

छोकरा आया दो मिनट में ही उसने ब्रेक टाइट कर दी।

"कोई और सेवा साहब।"

"मेहरबानी।" सब-इंस्पेक्टर जय नारायण ने मुस्कराकर कहा और मोटर साइकिल स्टार्ट करके वहां से चला गया।

उदयवीर, शुक्रा के पास पहुंचकर बोला।

"मुहुर्त ठीक नहीं हुआ। निकलने से पहले ही पुलिस वाले के दर्शन हो गये।"

"यह वही पुलिस वाला था, जो विजय को ढूंढ़ता फिर रहा है।"

"ओह।"

तभी बेदी वहां आ पहुंचा।

"चलें?" पास आते ही वह दोनों को देखकर कह उठा।

"हां।"

तभी बेदी के सिर में जोरों का दर्द हुआ। उसने दोनों हाथों से सिर पकड़ लिया। चेहरे पर पीड़ा-ही-पीड़ा उभर आई। घुटने मुड़ने लगे। इससे पहले नीचे गिरता, उदयवीर ने फौरन उसे संभाल लिया। करीब मिनट भर में, वह पहले वाली स्थिति में आकर, गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

शुक्रा की उदास और बेचैन निगाह, बेदी पर ही थी।

"चिन्ता मत कर। सब ठीक हो जाएगा।" उदयवीर जैसे तड़प उठा।

फिर तीनों धीरे-धीरे गैराज से बाहर निकलते चले गये। डॉक्टर वधावन की बेटी आस्था के बारे में जानकारी पाने और उसका अपहरण करने के लिये।

"मैं...मैं ठीक तो हो जाऊंगा?" एकाएक बेदी ने ठिठक कर दोनों को देखा।

शुक्रा और उदयवीर की निगाहें बेदी पर गई।

बेदी की आंखों में पानी चमक रहा था।

❏❏❏
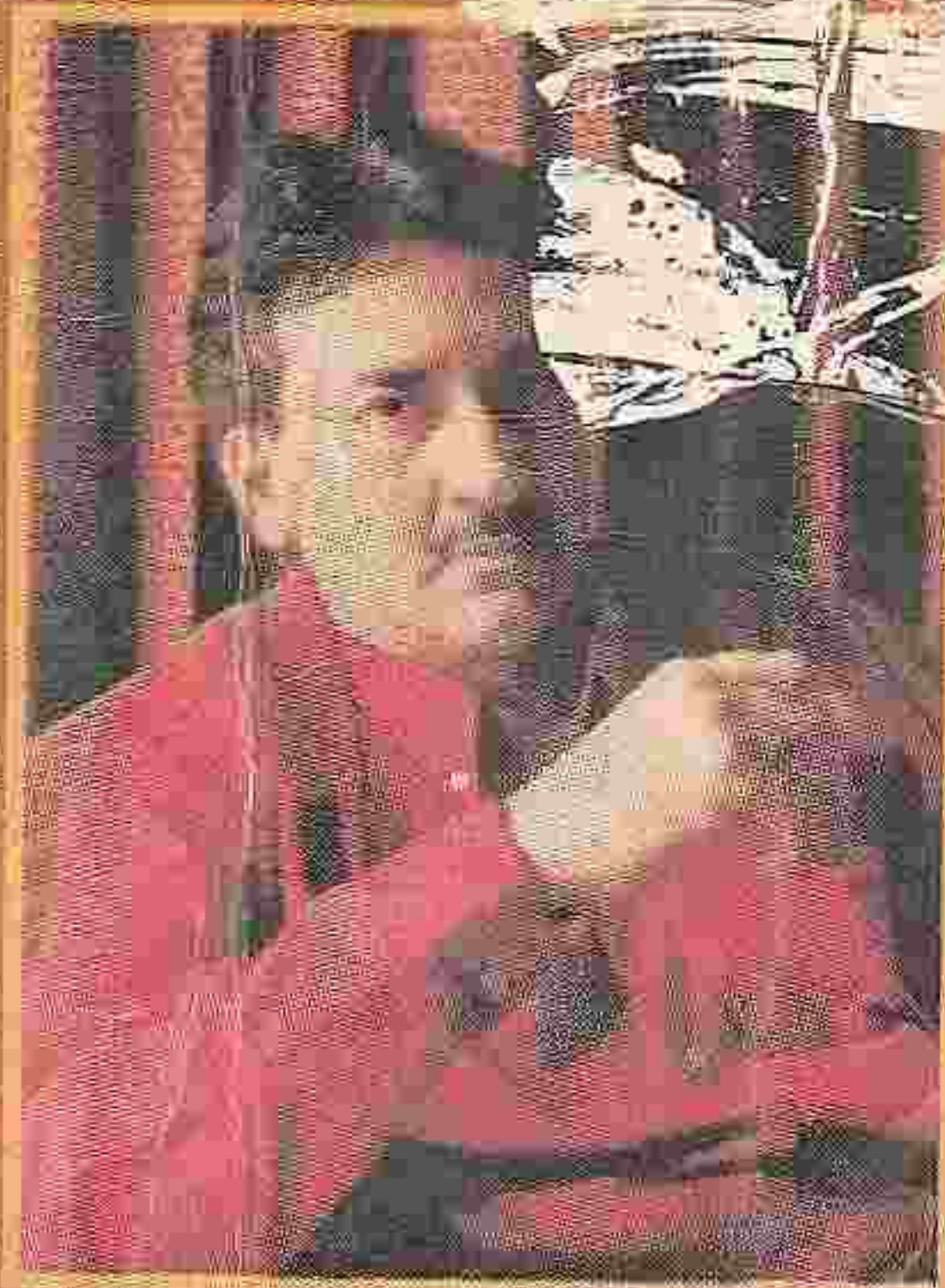
[illegible] जैसा शरीफ इन्सान [illegible]
मुसी[illegible] फंसा तो हालातों की जंजीर ने उसके हाथ-पांव बांध दिए। वह बेबसी में सिर्फ चिल्ला ही पाया। और जब हालातों की जंजीर ने उसके हाथ-पांव को आजाद किया तो वह सबकुछ कर गुजरने को तैयार हो गया ताकि बारह लाख का इन्तजाम कर सके।

मनोज पब्लिकेशन्स में

अनिल मोहन का

आगामी नया विशेषांक

जीत का ताज

देवराज चौहान और मोना चौधरी में जबरदस्त टक्कर

"देवराज चौहान! इस बार मौत के खेल में जीत का ताज मेरे सिर पर रखा जायेगा।"

"मैं जानता हूं मोना चौधरी। ताज तुम्हारे सिर पर अवश्य रखा जायेगा। लेकिन वह मौत का ताज होगा या जीत का? इस बात का फैसला तो आने वाला वक्त ही करेगा।"

एक बार फिर हंगामा करने आ रहे हैं–

देवराज चौहान और मोना चौधरी

मनोज पब्लिकेशन्स